कबीर साहेब की शब्दावली

॥ पहिला भाग ॥

pts. I-IV

जीवन-चरित्र सहित

जिसमें कबीर साहब के अति मनोहर पद
कितनी ही लिपियों से चुन कर शोध कर
और क्षेपक निकाल कर छापे गये हैं
और गूढ़ शब्दों के अर्थ और जहाँ
कहीं महा पुरुषों के नाम आये
हैं उनके कौतुक नोट में
लिख दिये गये हैं।

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

चौथा एडीशन] [मूल्य ।।।)

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हम ने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भरसक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत .फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से .फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् "संतबानी संग्रह" भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १६१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई हैं। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है, देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापी गई हैं जिसका दाम क्रमशः ॥ᛁ) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

जनवरी सं० १६३१ ई०

इलाहाबाद।

कबीर साहेब का

जीवन-चरित्र

संसार का ऐसा नियम सदा से चला आया है कि किसी महा पुरुष के जीवन समय में बहुत कम लोग इस बात के जानने की परवाह करते हैं कि वे कहाँ पैदा हुए, कैसी उनकी रहनी गहनी है, क्या उनमें विशेष गुण है और क्या गुप्त भेद मालिक और रचना का प्रकाश करने और परमार्थ का लाभ देने के लिये उन्होंने जीवन धारन किया है ? लेकिन जब वे इस पृथ्वी को छोड़ देते हैं और उन का अद्भुत तेज जिस से संसार के तिमर हटाने का लाभ प्राप्त होता था गुप्त होता है तब बहुत से लोग नींद से जाग उठते हैं और उन महापुरुष के सम्बन्ध में अपनी बुद्धि के अनुसार तरह तरह की कल्पानायें करने लगते हैं और बहुत सी बातें बढ़ावे के साथ या नई गढ़ कर मशहूर करते हैं। इन्हीं कारनों से प्राचीन महात्माओं का विशेष कर उन का जिन की बाबत उन के समय के लोगों ने कुछ नहीं बयान किया है ठीक ठीक जीवन-चरित्र लिखना बहुत कठिन हो जाता है।

कबीर साहेब का जीवन चरित्र भी इन्हीं कारनों से ठीक रीति से नहीं लिखा जा सकता परन्तु जहाँ तक मालूम हुआ वह संक्षेप में नीचे लिखते हैं।

ऐसा जान पड़ता है कि कबीर साहेब सिकंदर लोदी बादशाह के समय में बर्तमान थे। भक्त-माल और दूसरे ग्रंथों मे लिखा है कि सिकंदर लोदी ने कबीर साहेब के मरवा डालने का यत्न किया था, इस बात का इशारा कीन साहेब की पुस्तक "टेक्स्ट बुक आव इन्डियन हिस्टरी" में भी किया है।

"कबीर कसौटी" नाम की पुस्तक में एक साखी इस प्रकार की है—

पन्द्रहसो पचहत्तरा, कियो मगहर को गौन।
माघसुदी एकादशी, रलो पौन मे पौन॥

इसके अनुसार विक्रम सम्बत १५७५ अर्थात सन १५१८ ईसवी में कबीर साहेब का देहाँत हुआ। सिकंदर लोदी १५१० ईसवी में मरा था। इससे पक्का अनुमान होता है कि कबीर साहब सिकंदर लोदी के समय में थे। "कबीर कसौटी" में कबीर साहब की अवस्था देहान्त के समय १२० बरस की होना लिखा है यदि यह ठीक है तो कबीर साहेब का जन्म सम्बत १४५५ अर्थात १३९८ ईसवी में ठहरता है।

कबीर साहेब के पिता का नाम नूरअली और माता का नाम नीमा था जो काशी में रहते थे। किसी किसी का कथन है कि नीमा के पेट से कबीर साहेब पैदा हुए परन्तु विशेष कर ऐसा कहा

जाता है कि नूरअली जुलाहा गंगा नदी अथवा लहरतारा तलाव के किनारे सूत धो रहा था कि उस को एक बालक बहता दिखाई दिया उसने उसको निकाल लिया और अपने घर ला कर पाला पोसा। पंडित भानुप्रताप तिवारी चुनारगढ़ निवासी जिन्होंने इस बिषय में बहुत खोज किया है उन के अनुसार कबीर साहेब की असल मा एक हिन्दुनी विधवा थी जो सन १४१४ ई० में रामानंद स्वामी के दर्शन को गई। दंडवत करने पर रामानंद जी ने आशीर्वाद दिया कि तुम को पुत्र हो। स्त्री घबरा कर रोने लगी कि मैं तो बिधवा हूँ मुझे पुत्र क्योंकर हो सकता है। रामानंद जी बोले कि अब तो मुँह से निकल गया पर तेरा गर्भ किसी को लखाई न पड़ेगा। उसी दिन से उस बिधवा को गर्भ रहा और दिन पूरा होने पर लड़का पैदा हुआ जिसे उस ने लोक निन्दा के डर से लहरतारा के तलाव में डाल दिया जहाँ से उसे नूरू जुलाहा निकाल कर लाया। कबीर कसौटी के अनुसार जेठ की बड़सायत सोमवार के दिन नीरू ने बच्चे को पाया।

बालपने ही से कबीर साहेब ने बानी द्वारा उपदेश करना आरम्भ कर दिया था। ऐसा कहते हैं कि कबीर साहेब रामानन्द स्वामी के जो रामानुज मत के अवलंबी थे शिष्य हुए। यद्यपि कबीर साहेब स्वतः संत थे और उनकी गति रामानंद स्वामी से कहीं बढ़ कर थी तौ भी गुरू धारन करने की मर्यादा क़ायम रखने को उन्होंने इन को गुरू बना लिया। कहते हैं कि रामानन्द स्वामी को अपने चेले की कुछ ख़बर भी न थी। एक दिन वह अपने आश्रम में परदे के भीतर पूजा कर रहे थे। ठाकुर जी को स्नान करा के वस्त्र और मुकुट पहिरा दिया परन्तु फूलों का हार पहिराना भूल गये, इस सोच में पड़े थे कि यदि मुकुट उतार कर पहिरायें तो बेअदबी है और मुकुट के ऊपर से माला छोटी पड़ती थी कि इतने में ड्योढ़ी के बाहर से अवाज़ आई की गाँठ खोल कर पहिरा दो। रामानंद स्वामी चकित हो गये और बाहर निकल कर कबीर साहब को गले लगा लिया और कहा कि तुम हमारे गुरू हो।

कबीर साहेब के रामानंद जी का शिष्य होने से यह न समझना चाहिये कि वह उन के धर्म के अनुयायी थे—उन का इष्ट सत्य पुरुष निर्मल चेतन्य देश का धनी था जो ब्रह्म और पारब्रह्म सब से ऊँचा है। उसी की भक्ति और उपासना उन्होंने दृढ़ाई है और अपनी बानी में उसी परम पुरुष और उसके धुन्यात्मक "नाम" की महिमा गाई है और इस के व्यतिरिक्त जो शब्द कबीर साहेब के नाम से प्रसिद्ध हैं वह पूरे या थोड़े बहुत क्षेपक हैं।

कबीर साहेब ने कभी किसी प्रचलित हिन्दू या मुसलमान मत का पक्ष नहीं किया बरन सभों का दोष बराबर दिखलाया। उन का कथन है—

हिन्दू कहत हैं राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोउ लड़े मरत हैं, दुबिधा में लिपटाना॥
घर घर मंत्र जो देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरुवा सहित शिष्य सब डूबे, अंत काल पछिताना॥

कहते हैं कि रामानंद स्वामी ने जो कर्मकांड पर भी चलते थे एक बार अपने पिता के श्राद्ध के दिन पिंडा पारने को कबीर साहेब से दूध मँगाया। कबीर साहेब जाकर एक मरी गाय के मुँह में सानी डालने लगे। यह तमाशा देख उनके गुरु-भाइयों ने पूछा कि यह क्या कर रहे हो। मरी गाय कैसे सानी खायगी! कबीर साहेब ने जवाब दिया कि जैसे हमारे गुरु जी के मरे पुरषा पिंड खायँगे।

माँस, मद्य बरन हर प्रकार के नशे का कबीर साहेब ने अपनी बानी में निषेद किया है।

कबीर साहेब जुलाहा के घर में तो पले थे ही और आप कपड़ा बुनने का काम करते थे। वह गृहस्थ आश्रम में थे, और भेषों के डिम्भ पाखंड और अहंकार को बहुत निन्दनीय कहा है। कबीर साहिब की स्त्री का नाम लोई और बेटे और बेटी का कमाल और कमाली था। किसी २ ग्रंथकारों का कथन है कि कबीर साहेब बालब्रह्मचारी थे और कभी ब्याह नहीं किया, एक मुर्दा लड़के और लड़की को जिलाकर उनका नाम कमाल और कमाली रक्खा और उनके पालन का भार लोई को जो उनकी चेली थी सौंप दिया पर यह ठीक नहीं जान पड़ता।

जो कुछ हो लोई कबीर साहेब की सच्ची और ऊँचे दर्जे की भक्त थी। एक बार का ज़िकर है कि कबीर साहेब ने किसी खोजी को भक्ति का उदाहरण दिखाने के लिये अपने करगह में जहाँ वह लोई के साथ दोपहर को ताना बुन रहे थे धीरे से ढरकी अपनी बँहोली में छिपा ली और लोई से कहा कि देख ढरकी गिर गई उसे ज़मीन पर खोज। वह उसे ढूँढ़ने लगी। आख़िर को हार कर काँपती हुई उसने अर्ज़ की कि नहीं मिलती। इस पर कबीर साहेब ने जवाब दिया कि तू पागल है रात के समय बिना दिया बाले ढूँढ़ती है कैसे मिलै। अपने स्वामी के मुख से यह बचन सुनते ही उस को सचमुच ऐसा दरसने लगा कि अँधेरा है; बत्ती जलाकर ढूँढ़ने लगी जब कुछ देर हो गई कबीर साहेब ने ख़फ़ा होकर कहा कि तू अंधी है देख मैं ढूँढ़ता हूँ और उसके सामने ढरकी बँहोली से गिरा कर उठा लिया और उसे दिखा कर कहा कि कैसे झटपट मिल गई। इस पर लोई रोकर बोली कि स्वामी छिमा करो न जानें मेरी आँख में क्या पत्थर पड़ गये थे। तब कबीर साहेब ने उस जिज्ञासू से कहा कि देखो यह रूप भक्ति का है कि जो भगवंत कहै वही भक्त को वास्तविक दरसने लगे।

बहुत सी कथायें कबीर साहेब की बाबत प्रसिद्ध हैं जिन का लिखना अनावश्यक है क्योंकि यह समझ में नहीं आतीं। इस में संन्देह नहीं कि भक्तजन सर्व समर्थ हैं और उन के लिये कोई बात असंभव नहीं है पर इसी के साथ यह भी है कि संत करामात नहीं दिखलाते अपने भगवंत की भाँति अपने सामर्थ्य को प्रायः गुप्त रखते और साधारन जीवों की तरह संसार में बर्ताव करते हैं। तौभी थोड़े से चमत्कार जिन का भक्तमाल और दूसरे ग्रंथों में बर्णन है और महात्मा ग़रीबदास और दूसरे भक्तों ने भी उन को संकेत में अपनी बानी में कहा है नीचे लिखे जाते हैं क्योंकि उन्हें न केवल सर्व साधारन पसंद करेंगे बरन उन से महात्माओं की जहाँ यह कौतुक इशारे में लिखे हैं भली प्रकार से समझ में आवैगी।

॥ सूचीपत्र ॥

कबीर साहेब की शब्दावली

॥ पहिला भाग ॥

सतगुरु और शब्द महिमा

॥ शब्द १ ॥

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये ।
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये ॥ १ ॥
सतगुर सब कछु दीन्ह, देत कछु ना रह्यौ ।
हमहिं अभागिनि नारि, सुक्ख तज दुख लह्यो ॥ २ ॥
गई पिया के महल, पिया सँग ना रची ।
हिरदे कपट रह्यो छाय, मान लज्जा भरी ॥ ३ ॥
जहवाँ गैल सिलहली, चढ़ौं गिरि गिरि पड़ौं ।
उठहुँ सम्हारि सम्हारि, चरन आगे धरौं ॥ ४ ॥
जो पिया मिलन की चाह, कौन तेरे लाज है ।
अधर मिलो किन जाय, भला दिन आज है ॥ ५ ॥
भला बना संजोग, प्रेम का चोलना ।
तन मन अरपौं सीस, साहेब हँस बोलना ॥ ६ ॥
जो गुरु रूठे होयँ, तो तुरत मनाइये ।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाइये ॥ ७ ॥
जो गुरु होयँ दयाल, दया दिल हेरि हैं ।
कोटि करम कटि जायँ, पलक छिन फेरि हैं ॥ ८ ॥
कहैं कबीर समुझाय, समुझ हिरदे धरो ।
जुगन जुगन करो राज, अस दुर्मति परिहरो ॥ ९ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु चरन भजस मन मूरख, का जड़ जन्म गँवावस रे ॥टेक॥
कर परतीत जपस उर अंतर, निसि दिन ध्यान लगावस रे ॥१॥
द्वादस कोस बसत तेरा साहेब, तहाँ सुरत ठहरावस रे ॥२॥
त्रिकुटी नदिया अगम पंथ जहँ, बिना मेँह झर लावस रे ॥३॥
दामिनि दमकत अमृत बरसत, अजब रंग दरसावस रे ॥४॥
इँगला पिँगला सुखमन से घस, नभ मंदिर उठि धावस रे ॥५॥
लागी रहे सुरत की डोरी, सुन्न मेँ सहर बसावस रे ॥६॥
बंकनाल उर चक्र सोधि के, मूल चक्र फहरावस रे ॥७॥
मकर तार कै द्वार निरखि के, तहाँ पतंग उड़ावस रे ॥८॥
बिन सरहद अनहद जहँ बाजै, कौने सुर जहँ गावस रे ॥९॥
कहैँ कबीर सतगुरु पूरे से, जो परिचै सो पावस रे ॥१०॥

॥ शब्द ३ ॥

मैँ तो आन पड़ी चोरन के नगर, सतसंग बिना जिय तरसे ॥१॥
इस सतसँग मेँ लाभ बहुत है, तुरत मिलावै गुर से ॥२॥
मूरख जन कोइ सार न जाने, सतसँग मेँ अमृत बरसे ॥३॥
सब्द सा हीरा पटक हाथ से, मुट्ठी भरी कँकर से ॥४॥
कहैँ कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वहि घर से ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सतगुर अलख लखाया, जब आप आप दरसाया ॥टेक॥
बीज मध्य ज्योँ बृच्छा दरसै, बृच्छा मद्धे छाया ।
परमातम मेँ आतम तैसे, आतम मद्धे माया ॥१॥

ज्योँ नभ मद्धे सुन्न देखिये, सुन्न अंड आकारा ।
नि:अच्छर तेँ अच्छर तैसे, अच्छर घर बिस्तारा ॥ २ ॥
ज्योँ रबि मद्धे किरन देखिये, किरन मध्य परकासा ।
परमातम तेँ जीव ब्रह्म इमि, जीव मध्य तिमि स्वाँसा ॥ ३ ॥
स्वाँसा मद्धे सब्द देखिये, अर्थ सब्द के माहीँ ।
ब्रह्म तेँ जीव जीव तेँ मन योँ, न्यारा मिला सदाहीँ ॥ ४ ॥
आपहि बीज बृच्छ अंकूरा, आप फूल फल छाया ।
आपहि सूर किरन परकासा, आप ब्रह्म जिव माया ॥ ५ ॥
अंडाकार सुन्न नभ आपै, स्वाँस सब्द अरथाया ।
नि:अच्छर अच्छर छर आपै, मन जिव ब्रह्म समाया ॥ ६ ॥
आतम मेँ परमातम दरसै, परमातम मेँ झाँईँ ।
झाँईँ मेँ परछाँहीँ दरसै, लखै कबीरा साईँ ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

भाई कोई सतगुरु संत कहावै । नैनन अलख लखावै ॥टेक॥
डोलत डिगै न बोलत बिसरै, जब उपदेस दृढ़ावै ।
प्रान-पूज्य* किरिया तेँ न्यारा सहज समाधि सिखावै ॥१॥
द्वार न रूँधे पवन न रोकै, नहिँ अनहद अरुझावै ।
यह मन जाय जहाँ लग जबहीँ, परमातम दरसावै ॥२॥
करम करै नि:करम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै ।
सदा बिलास त्रास नहिँ मन मैँ, भोग मैँ जोग जगावै ॥ ३ ॥
धरती त्यागि अकासहुँ त्यागै, अधर मड़इया छावै ।
सुन्न सिखर के सार सिला पर, आसन अचल जमावै ॥४॥

* प्रान से पूजने योग्य सतगुरु ।

भीतर रहा सो बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै ।
कहत कबीर बसा है हंसा, आवागवन मिटावै ।। ५ ।।

॥ शब्द ६ ॥

जब तैं मन परतीति भई ।। टेक ।।
तब तैं अवगुन छूटन लागे, दिन दिन बाढ़त प्रीति नई ।।१।
सुरतिनिरति मिलि ज्ञान जौहरी, निरखि परखि जिन बस्तु लई
थोड़ी बनिज बहुत ह्वै बाढ़ी, उपजन लागे लाल मई ।।२।।
अगम निगम तू खोजु निरंतर, सत्त नाम गुरु मूल दई ।
कहैं कबीर साध की संगति, हुती बिकार सो छूटि गई ।।३।।

॥ शब्द ७ ॥

साधो सब्द साधना कीजै ।
जेहिं सब्द तैं प्रगट भये सब, सोइ सब्द गहि लीजै ।।टेक।।
सब्दहि गुरू सब्द सुनि सिष भे, सब्द सो बिरला बूझै ।
सोई सिष्य सोइ गुरू महातम, जेहिं अंतर गति सूझै ।।१।।
सब्दै बेद पुरान कहत है, सब्दै सब ठहरावै ।।
सब्दै सुर मुनि संत कहत है, सब्द भेद नहिं पावै ।।२।।
सब्दै सुनि सुनि भेष धरत हैं, सब्द कहै अनुरागी ।
षट दरसन सब सब्द कहत हैं, सब्द कहै बैरागी ।।३।।
सब्दै माया जग उतपानी, सब्दै केरि पसारा ।
कहैं कबीर जहँ सब्द होत है, तवन भेद है न्यारा ।।४।।

॥ शब्द ८ ॥

साधो सब्द सोँ बेल जमाई ।। टेक ।।
तीन लोक साषा फैलाई, गुरु बिन पेड़ न पाई ।। १ ।।

साषा के तर पेड़ छिपाना, साषा ऊपर छाई ।
साषा तैं बहु साषा उपजी, दुई साषा अधिकाई ॥ २ ॥
बेल एक साषा दुइ फूटी, ता तैं भइ बहुताई ।
साषा के बिच बेल समानी, दिन दिन बाढ़त जाई ॥ ३ ॥
पाँचो तत्त तीन गुन उपजे, फूल बास लपटाई ।
उपजा फल बहु रंग दिखावै, बीज रहा फैलाई ॥ ४ ॥
बीज माहिँ दुइ दाल बनाई, मध अंकूर रहाई ।
कह कबीर जो अंकुर चीन्है, पेड़ मिलैगा आई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९

साँई दरजी का कोइ मरम न पावा ॥ टेक ॥
पानी की सुई पवन कै धागा, अष्ट मास नव सीयत लागा ॥१॥
पाँच पेवँद की बनी रे गुदरिया, तामेँ हीरा लाल लगावा ॥२॥
रतन जतन का मकुट बनावा, प्रान पुरुष को ले पहिरावा ३॥
साहेब कबीर अस दरजी पावा, बड़े भाग गुरु नाम लखावा॥४॥

॥ शब्द १० ॥

साधो सब्द सभन से न्यारा। जानैगा कोइ जाननहारा ॥टेक॥
जोगी जती तपी सन्यासी, अंग लगावै छारा ।
मूल मंत्र सतगुरु दाया बिनु, कैसे उत्तरै पारा ॥ १ ॥
जोग जज्ञ व्रत नेम साधना, कर्म धर्म ब्योपारा ।
सो तो मुक्ति सभन से न्यारी, कस छूटै जम द्वारा ॥२॥
निगम नेति जा के गुन गावै, संकर जोग अधारा ।
ब्रह्मा बिस्नु जेहि ध्यान धरतु हैँ, सो प्रभु अगम अपारा ॥३॥
लागा रहे चरन सतगुरु के, चन्द चकोर की धारा ।
कहैँ कबीर सुनो भाई साधो, नषसिष सब्द हमारा ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

तोहिं मोरि लगन लगाये रे फिकिरवा ॥ टेक ॥
सोवत ही*मैं अपने मँदिर में, सब्दन मारि जगाये रे (फ०) ॥१
बूड़त ही भव के सागर में, बहियाँ पकरि सुमुझाये रे(फ०)२
एकै बचन बचन नहिं दूजा, तुम मोसे बंद छुड़ाये रे(फ०)॥३
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सत्तनाम गुन गाये रे(फ०) ॥४

॥ शब्द १२ ॥

गुरू मोहिं घुँटिया अजर पियाई ॥ टेक ॥
जब से गुरु मोहिं घुँटियापियाई, भई सुचित मेटी दुबिताई १
नाम औषधी अधर कटोरी, पियत अघाय कुमति गइ मोरी२॥
ब्रह्मा बिस्नु पिये नहिं पाये, खोजत संभू जन्म गँवाये ॥३॥
सुरत मिरत कर पियै जो कोई, कहैं कबीर अमर होय सोई॥४

॥ शब्द १३ ॥

जिनकी लगन गुरू सों नाहीं ॥ टेक ॥
ते नर खर कूकर सम जग में, बिरथा जन्म गँवाहीं ॥१॥
अमृत छोड़ि विषय रस पीवैं, घृग घृग तिन के साईं ॥२॥
हरी बेल की कोरी तुमड़िया, सब तीरथ करि आई ॥३।
जगन्नाथ के दरसन करके, अजहुँ न गई कड़ुवाई ॥४॥
जैसे फल उजाड़ को लागो, बिन स्वारथ झरि जाई ॥५॥
कहैं कबीर बिन बचन गुरू के, अंत काल पछिताई ॥६॥

---

* थी, रही।

बिरह और प्रेम

॥ शब्द १ ॥

॥ चौपाई ॥

दरसन दीजे नाम सनेही । तुम बिन दुख पावे मेरी देही ॥टेक॥

॥ छंद ॥

दुखित तुम बिन रटत निस दिन, प्रगट दरसन दीजिये ॥
बिनती सुन प्रिय स्वामियाँ, बलि जाउँ बिलँब न कीजिये।१।

॥ चौपाई ॥

अन्न न भावे नींद न आवे । बार बार मोहिं बिरह सतावे॥२॥

॥ छंद ॥

बिबिध बिधि हम भई ब्याकुल, बिन देखे जिव ना रहे ।
तपत तन जिव उठत झाला, कठिन दुख अब को सहे ॥३॥

॥ चौपाई ॥

नैनन चलत सजल जल धारा । निसिदिनपंथनिहारौंतुम्हारा॥४

॥ छंद ॥

गुन अवगुन अपराध छिमाकर, औगुन कछु न बिचारिये ।
पतित-पावन राख परमति, अपना पन न बिसारिये ॥५॥

॥ चौपाई ॥

गृह आँगन मोहिं कछु न सोहाई ।
बज्र भई और फिरयो न जाई ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

नैन भरि भरि रहे निरखत, निमिख नेह न तोड़ाइये ।
बाँह दीजे बंदी-छोड़ा, अब के बंद छोड़ाइये ॥ ७ ॥

❀ उच्च मति या भाव ।

॥ चौपाई ॥

मीन मरै जैसे बिन नीरा । ऐसे तुम बिन दुखित सरीरा ॥८॥

॥ छंद ॥

दास कबीर यह करत बिनती, महा पुरुष अब मानिये ।
दया कीजे दरस दीजे, अपना कर मोहिँ जानिये ।९।

॥ शब्द २ ॥

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ॥ टेक ॥
हीरा पायो गाँठ गठियायो, बार बार वा को क्यों खोले ॥१॥
हलकी थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोले ॥२॥
सुरत कलारी भइ मतवारी, मदवा पी गइ बिन तोले ॥३॥
हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोले ॥४॥
तेरा साहब है घट माहीं, बाहर नैना क्यों खोले ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहेब मिल गये तिल ओले*॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु दयाल कब करिहौ दाया ।
काम क्रोध हंकार बियापै, नाहीं छूटै माया ॥१॥
जौं लगि उतपति बिंदु रचो है, साँच कभूँ नहिँ पाया ।
पाँच चोर सँग लाय दियो है, इन सँग जन्म गँवाया ॥२॥
तन मन डस्यो भुवँगम† भारी, लहरै वार न पारा ।
गुरु गारुड़ी‡ मिल्यो नहिँ कबहीं, बिष पसर्यो बिकरारा§ ३
कहैं कबीर दुख कासे कहिये, कोई दरद न जाने ।
देहु दीदार दूर करि परदा, तब मेरो मन माने ॥४॥

* ओट † साँप । ‡ जिसको साँप के बिष उतारने का मंत्र आता है । § भारी ।

॥ शब्द ४ ॥

बालम आओ हमारे गेह रे। तुम बिन दुखिया देह रे ॥ टेक
सब कोइ कहै तुम्हारी नारी, मो को यह संदेह रे।
एकमेक ह्वै सेज न सोवै, तब लग कैसो सनेह रे ॥ १ ॥
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह बन धरै न धीर रे।
ज्यौं कामी को कामिनि प्यारी, ज्यौं प्यासे को नीर रे ॥२॥
है कोइ ऐसा पर उपकारी, पिय से कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भये हैं, बिन देखे जिउ जाय रे ॥३॥

॥ शब्द ५ ॥

सतगुरु हो महाराज, मो पै साँई रँग डारा ॥ टेक ॥
सब्द की चोट लगी मेरे मन मैं, बेध गया तन सारा ॥१॥
औषध मूल कछू नहिं लागे, क्या करे बैद बिचारा ॥२॥
सुर नर मुनि जन पीर औलिया, कोइ न पावे पारा ॥३॥
साहेब कबीर सर्ब रँग रँगिया, सब रँग से रँग न्यारा ४॥

॥ शब्द ६ ॥

भींजै चुनरिया प्रेम रस बूँदन ॥ टेक ॥
आरत साज के चली है सुहागिन, पिय अपने को ढूँढ़न ॥ १ ॥
काहे की तोरी बनी है चुनरिया, काहे के लगे चारो फूँदन २
पाँच तत्त की बनी है चुनरिया, नाम के लागे फूँदन ॥ ३ ॥
चढ़िगे महल खुल गई रे किवरिया, दास कबीर लागे झूलन ४

॥ शब्द ७ ॥

दुलहिन गावहु मंगलचार।
हम घर आये परम पुरुष भरतार ॥ १ ॥

तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पंच तत्व तब राती।
गुरू देव मेरे पाहुन आये, मैं जोबन मैं माती ॥ २ ॥
सरीर सरोवर बेदी करिहौं, ब्रह्मा बेद उचार।
गुरूदेव सँग भाँवरि लेइहौं, घन घन भाग हमार ॥ ३ ॥
सुर तैंतीसो कौतुक आये, मुनिवर सहस अठासो।
कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरुष एक अबिनासी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं अपने साहेब संग चली ॥ टेक ॥
हाथ मैं नरियर मुख मैं बीड़ा, मोतियन माँग भरी ॥१॥
लिल्ली घोड़ी जरद बछेड़ो, तापै चढ़ि के चली ॥ २॥
नदी किनारे सतगुरु भैंटे, तुरत जनम सुधरी ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, दोउ कुल तारि चली ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

सखियो हमहूँ भई ससुरासी ॥ टेक ॥
आयो जोबन बिरह सतायो, अब मैं ज्ञान गली अठिलाती१
ज्ञान गली मैं सतगुरु मिलिगे, सो दइ हमैं पिया की पाती२
वा पाती मैं अगम सँदेसा, अब हम मरने को न डेराती ॥३
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बर पाये अबिनासी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

कैसे जीवेगी बिरहिनी पिया बिन, कीजै कौन उपाय ॥ टेक ॥
दिवस न भूख रैन नहिं सुख है, जैसे कलिजुग जाम।
खेलत फाग छाँड़ि चलु सुंदर, तज चलु धन औ धाम ॥१

बन खँड जाय नाम लै लावो, मिलि पिय से सुख पाय।
तलफत मीन बिना जल जैसे, दरसन लीजै धाय ॥२॥
बिना अकार रूप नहिं रेखा, कौन मिलैगो आय।
आपन पुरुष समझि ले सुंदरी, देखो तन निरताय ॥३॥
सब्द सरूपी जिव पिव बूझो, छाँड़ो भ्रम की टेक।
कहैं कबीर और नहिं दूजा, जुग जुग हम तुम एक ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

कैसे दिन कटिहैं जतन बताये जइयो ॥टेक॥
येहि पार गंगा ओहि पार जमुना,
बिचवाँ मड़इया हमकाँ छवाये जइयो ॥ १ ॥
अँचरा फारि के कागज बनाइन,
अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
बहियाँ पकरि के रहिया बताये जइयो ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु मोरी चूक सँभारो।
हौं अधीन हीन मति मोरी। चरनन तें जिन टारो ॥टेक॥
मन कठोर कछु कहा न माने। बहु वा को कहि हारो ॥१॥
तुम हीं तें सब होत गुसाँईं। या को वेग सँवारो ॥२॥
अब दीजे संगत सतगुर की। जा तें होय निसतारो ॥३॥
और सकल संगी सब बिसरैं। होउ तुम एक पियारो ॥४॥

कर देख्यो हित सारे जग से। कोइ न मिल्यो पुनि भारो॥५॥
कहैं कबीर सुनो प्रभु मेरे। भवसागर से तारो ।६॥

॥ शब्द १३ ॥

मिलना कठिन है, मिलौंगी पिय जाय ॥ टेक ॥
समझि सोचि पग धरौं जतन से, बार बार डिग जाय।
ऊँची गैल राह रपटीली, पाँव नहीं ठहराय ॥ १ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, देखत मन सकुचाय।
नैहर बास बसौं पीहर मैं, लाज तजी नहिं जाय ॥२॥
अधर भूमि जहँ महल पिया का, हम पै चढ़ो न जाय।
धन भइ बारी पुरुष भये भोला, सुरत झकोला खाय ॥३॥
दूती सतगुर मिलै बीच में, दीन्हो भेद बताय।
साहेब कबीर पिया से भेटे, सीतल कंठ लगाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

गुरू ने मोहिं दीन्ही अजब जड़ी ॥ टेक ॥
सो जड़ी मोहिं प्यारी लगतु है, अमृत रसन भरी ॥ १ ॥
कायानगर अजब इक बँगला, ता में गुप्त धरी ॥ २ ॥
पाँचो नाग पचीसो नागिन, सूँघत तुरत मरी ॥ ३ ॥
या कारे ने सब जग खायो, सतगुर देख डरी ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ले परिवार तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु हमें सजीवन मूर दई ॥ टेक ॥
जल थोड़ा बरषा भइ भारी, छाय रही सब लालमई ॥१॥
छिन छिन पाप कटन जब लागे, बाढ़न लागी प्रीति नई ॥२

* गुरू, गहिर गंभीर।

अमरापुर में खेती कीन्हा, हीरा नग तें भेंट भई ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मन की दुबिधा दूर भई ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

गगन की ओट निसाना है ॥ टेक ॥
दहिने सूर चन्द्रमा बायें, तिन के बीच छिपाना है ॥१॥
तन की कमान सुरत का रोदा, सब्द बान ले ताना है ॥२
मारत बान बिंधा तनही तन, सतगुरु का परवाना है ॥३॥
मार्‍यो बान घाव नहिं तन में, जिन लागा तिन जाना है ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

जा के लगी सब्द की चोट ॥ टेक ॥
का पोखर का कुवाँ बावड़ी, का खाईं का कोट ॥१॥
का बरछी का छुरी कटारी, का ढालन की ओट ॥२॥
या तन की बारूद बनी है, सत्तनाम की तोप ॥३॥
मारा गोला भरमगढ़ टूटा, जीत लिया जम लोक ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तरिहैं सब्द की ओट ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

साँईं बिन दरद करेजे होय ॥ टेक ॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, कासे कहूँ दुख रोय ॥१॥
आधी रतियाँ पिछले पहरवाँ, साँईं बिन तरस तरस रही सोय।
पाँचो मारि पचीसो बस करि, इन में चहै कोइ होय ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु मिले सुख होय ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

हमरी न नँद निगोड़िन जागे ॥ टेक ॥
कुमति लकुटिया निसि दिन ब्यापे, सुमति देखि नहिँ भावे ।
निसि दिन लेत नाम साहब को, रहत रहत रँग लागे ॥१॥
निस दिन खेलत रही सखियन सँग, मोहिँ बड़ा डर लागे ।
मोरे साहेब की ऊँची अटरिया, चढ़त में जियरा काँपे ॥२॥
जो सुख चहै तो लज्जा त्यागे, पिय से हिल मिलि लागे ।
घूँघट खोल अंग भर भेंटे, नैन आरती साजे ॥ ३ ॥
कहैँ कबीर सुनो भाई साधो, चतुर होय सो जाने ।
जिन प्रीतम की आस नहीं है, नाहक काजर पारे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अमरपुर ले चलु हो सजना ॥ टेक ॥
अमरपुरी की सँकरी गलियाँ, अड़बड़ है चलना ॥ १ ॥
ठोकर लगी गुरु ज्ञान सब्द की, उघर गये झपना ॥ २ ॥
वोहि रे अमरपुर लागि बजरिया, सौदा है करना ॥ ३ ॥
वोहि रे अमरपुर संत बसतु हैं, दरसन है लहना ॥ ४ ॥
संत समाज सभा जहँ बैठी, वहीं पुरुष अपना ॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भवसागर है तरना ॥ ६ ॥

॥ शब्द २१ ॥

भक्ती का मारग झीना रे ॥ टेक ॥
नहिँ अचाह नहिँ चाहना चरनन लौलीना रे ॥ १ ॥

साध के सतसँग मैं रहे निस दिन मन भीना रे ॥ २ ॥
सब्द मैं सुर्त ऐसे बसे जैसे जल मीना रे ॥ ३ ॥
मान मनी को यों तजे जस तेली पीना रे ॥ ४ ॥
दया छिमा संतोष गहि रहे अति आधीना रे ॥ ५ ॥
परमारथ में देत सिर कछु बिलँब न कीना रे ॥ ६ ॥
कहैं कबीर मत भक्ति का परगट कह दीना रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

ऋतु फागुन नियरानी, कोइ पिया से मिलावे ॥ टेक ॥
सोइ तो सुँदर जाके पिय को ध्यान है,
सोइ पिया के मन मानी ।
खेलत फाग अंग नहिं मोड़े, सतगुर से लिपटानी ॥ १ ॥
इक इक सखियाँ खेल घर पहुँची, इक इक कुल अरुझानी ।
इक इक नाम बिना बहकानी, हो रही ऐंचा तानी ॥ २ ॥
पिया को रूप कहाँ लग बरनौं, रूपहि माहिं समानी ।
जो रँग रँगे सकल छबि छाके, तन मन सभी भुलानी ॥३॥
यों मत जाने यहि रे फाग है, यह कछु अकथ कहानी ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह गति बिरले जानी ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

पिया मेरा जागे मैं कैसे सोई री ॥ १ ॥
पाँच सखी मेरे सँग की सहेली,
उन रँग रँगी पिया रँग न मिली री ॥ २ ॥

---

* मोटा ।—कथा है कि एक तेली ने सब चिन्ता और मान बड़ाई त्याग दी थी यहाँ तक कि अपनी आलसी स्त्री को जिस काम के लिए वह चाहती बाज़ार में बेधड़क अपने कंधे पर चढ़ा कर ले जाता, इस कारण वह खूब हृष्ट पुष्ट और मोटा हो गया था ।

सास सयानी ननद दौरानी,
उन डर डरी पिया सार न जानी री ॥ ३ ॥
द्वादस ऊपर सेज बिछानी,
चढ़ न सकौं मारी लाज लजानी री ॥ ४ ॥
रात दिवस मोहिं कूका मारे,
मैं न सुनी रचि रहि सँग जार री ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सुनु सखी सयानी,
बिन सतगुर पिय मिले न मिलानी री ॥ ६ ॥

॥ शब्द २४ ॥

मोरे लगि गये बान सुरंगी हो ॥ टेक ॥
धन सतगुर उपदेस दियो है, होइ गयो चित्त भिरंगी हो ॥१॥
ध्यान पुरुष की बनी है तिरिया, घायल पाँचो संगी हो ॥२॥
घायल की गति घायल जाने, का जानै जात पतंगी हो ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, निस दिन प्रेम उमंगी हो ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

हमन हैं इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या ।
रहैं आज़ाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या ॥१॥
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते ।
हमारा यार है हम में, हमन को इंतिज़ारी क्या ॥२॥
खलक़ सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है ।
हमन गुर नाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या ॥३॥
न पल बिछुड़ें पिया हम से, न हम बिछुड़ें पियारे से ।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेक़रारी क्या ॥ ४ ॥

कबीरा इश्क़ का माता, दुई को दूर कर दिल से ।
जो चलना राह नाज़ुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

मन लागो मेरो यार फकीरी में ॥ टेक ॥
जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहिँ अमीरी में १
भला बुरा सब को सुन लीजैं, कर गुजरान गरीबी में ॥२॥
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ॥३॥
हाथ में कूँड़ी बगल में सोटा, चारो दिसा जगीरी*में ॥४॥
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरी में ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहेब मिलै सबूरी में ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

कोइ प्रेम की पेंग झुलाओ रे ॥ टेक ॥
भुज के खंभ प्रेम की रसरी, मन महबूब झुलाओ रे ॥१॥
सूहा चोला पहिर अमोला, निज घट पिय को रिझाओ रे ॥२
नैनन बादर की झर लाओ, श्याम घटा उर छाओ रे ॥३॥
आवत जावत सुत के मग पर, फिकिर पिया को सुनाओ रे ४
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, पिय को ध्यान चित लाओ रे ५।

॥ शब्द २८ ॥

नाचु रे मेरो मन नट होय ॥ टेक ॥
ज्ञान के ढोल बजाय रैन दिन, सब्द सुनैं सब कोई ।
राहू केतु नवग्रह नाचैं, जमपुर आनँद होई ॥ १ ॥
छापा तिलक लगाय बाँस चढ़ि, होइ रहु जग से न्यारा।
सहस कला कर मन मेरो नाचै, रीझै सिरजनहारा ॥२॥

---

* मुआफ़ी ज़मीन।

जो तुम कूदि जाव भवसागर, कला बदौं मैं तेरो ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, हो रहु सतगुर चेरो ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

गुर बिन दाता कोइ नहीं जग माँगनहारा ।
तीन लोक ब्रह्मंड म सब के भरतारा ॥ १ ॥
अपराधी तीरथ चले का तीरथ तारे ।
काम क्रोध मद ना मिटा का देंह पखारे ॥ २ ॥
कागद की नौका बनी बिच लोहा भारे ।
सब्द भेद जाने नहीं मूरख पचि हारे ॥ ३ ॥
बाँछ*मनोरथ पिय मिले घट भया उजारा ।
सतगुरु पार उतारि हैं सब संत पुकारा ॥ ४ ॥
पाहन को का पूजिये या में का पावै ।
अठसठ† के फल घर मिलैं जो साध जिमावै ॥ ५ ॥
कहैं कबीर बिचार के अंधा खल डोलै ।
अंधे को सूझै नहीं घट ही में बोलै ।

॥ शब्द ३० ॥

साधो सहज समाधि भली ।
गुर प्रताप जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली ॥१॥
जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कुछ करौं सो सेवा ।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा ॥ २ ॥
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावँ पियौं सो पूजा ।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव मिटावौं दूजा ॥ ३ ॥

---

* इच्छा अनुसार † अड़सठ तीरथ ।

आँख न मूँदौं कान रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं ।
खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं ॥४॥
सबद निरन्तर से मन लागा, मलिन बासना त्यागी ।
ऊठत बैठत कबहुँ न छूटै, ऐसी तारी लागी ॥ ५ ॥
कहैं कबीर यह उनमुनि रहनी, सो परगट कर गाई ।
दुख सुख से कोइ परे परम पद, तेहि पद रहा समाई ॥६॥

॥ शब्द ३१ ॥

गुर बड़े भृंगी हमारे गुर बड़े भृंगी ।
कीट सौं ले भृंग कीन्हा आप सौं रंगी ॥ टेक ॥
पाँय औरै पंख औरै और रँग रंगी ।
जाति कुल ना लखै कोई, सब भये भृंगी ॥ १ ॥
नदी नाले मिले गंगै कहावैं गंगी ।
दरियाव दरिया जा समाने, संग मैं संगी ॥२॥
चलत मनसा अचल कीन्हो मन हुआ पंगी* ।
तत्त मैं निःतत्त दरसा संग मैं संगी ॥ ३ ॥
बंध तैं निर्बंध कीन्हा तोड़ सब तंगी ।
कह कबीर किया अगम गम नाम रँग रंगी ॥४॥

॥ शब्द ३२ ॥

मैं का से बूझौं अपने पिया की बात री ॥टेक॥
जान सुजान प्रान-प्रिय पिय बिन, सबै बटाऊ जात री ॥१॥
आसा नदी अगाध कुमति बहै, रोकि काहू पै न जात री ॥२॥
काम क्रोध दोउ भये करारे, पड़े बिषय रस मात† री ॥३॥

---

* पंगुल । † माते ।

ये पाँचो अपमान के संगी, सुमिरन को अलसात री ॥४॥
कहैं कबीर बिछुरि नहिं मिलिहौ, ज्यौं तरवर बिनपात री ५

॥ शब्द ३३ ॥

नारद साध सोँ अंतर नाहीं ।
जो कोइ साध सोँ अंतर राखै, सो नर नरकै जाहीं ॥टेक॥
जागै साध तो मैं हूँ जागूँ, सोवै साध तो सोऊँ ।
जो कोइ मेरे साध दुखावै, जरा मूल से खोऊँ ॥ १ ॥
जहाँ साध मेरो जस गावै, तहाँ करौं मैं बासा ।
साध चलै आगे उठ धाऊँ, मोहिं साध की आसा ॥२॥
माया मेरी अर्ध-सरीरी, औ भक्तन की दासी ।
अठसठ तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी ॥३॥
अंतरध्यान नाम निज केरा, जिन भजिया तिन पाई ।
कहैं कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुख गाई ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

मोहिं तोहिं लागी कैसे छूटै, जैसे हीरा फोरे न फूटै ॥टेक॥
मोहिं तोहिं आदि अंत बन आई, अब कैसे कै दुरत दुराई १
जैसे कँवल-पत्र जल बासा, ऐसे तुम साहेब हम दासा ॥२॥
जैसे चकोर तकत निसि चंदा, ऐसे तुम साहेब हम बंदा ॥३॥
जैसे कीट भृंग लौ लाई, तैसे सलिता सिंधु समाई ॥४॥
हम तो खोजा सकल जहाना, सतगुर तुम सम कोउ न आना
कहैं कबीर मोरा मन लागा, जैसे सोनैं मिला सुहागा ॥६॥

॥ शब्द ३५*॥

सतगुर के सँग क्यौं न गई री ॥ टेक ॥
सतगुर सँग जाती सोना बनि जाती,
अब माटी के मैं मोल भई री ॥ १ ॥
सतगुर हैं मेरे प्रान-अधारा,
तिनकी सरन मैं क्यौं न गही री ॥ २ ॥
सतगुर स्वामी मैं दासी सतगुर की,
सतगुर न भूले मैं भूल गई री ॥ ३ ॥
सार के छोड़ि असार से लिपटी,
धृग धृग धृग मतिमंद भई र ॥ ४ ॥
प्रान-पती को छोड़ि सखी री,
माया के जाल में अरुझ रही री ॥ ५ ॥
जो प्रभु हैं मेरे प्रान-अधारा,
तिन की मैं क्यौं ना सरन गही री ॥ ६ ॥

चितावनी और उपदेश

॥ शब्द १ ॥

बिन सतगुर नर रहत भुलाना, खोजत फिरत राह नहिं जाना।
केहर-सुत† ले आयो गरड़िया, पालपोस उन कीन्ह सयाना॥१
करतकलोल रहत अजयन‡ सँग, आपन मर्म उनहुँ नहिं जाना॥२
केहर इक जंगल से आयो, ताहि देख बहुते रिसियाना॥३

* इस शब्द में कबीर साहेब की छाप नहीं है परन्तु जो कि अति मनोहर है और लाहौर के कबीर पंथी महंत ने कबीर साहेब का करके दिया है हम उसे छापते हैं। † शेर का बच्चा। ‡ बकरी।

पकरि के भेद तुरत समुझाया, आपन दसा देख मुसक्याना॥४
जसकुरंग* बिच बसत बासना, खोजत मूढ़ फिरत चौगाना॥५
कर उपवास† मनै में देखै, यह सुगंधि धौं कहाँ बसाना॥६
अर्ध उर्ध बिच लगन लगी है, छक्यो रूप नहिं जात बखाना॥७
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, उलटि आपु में आपु समाना॥८

॥ शब्द २ ॥

बिन सतगुर नर भरम भुलाना ॥ टेक ॥
सतगुर सब्द क मर्म न जाना, भूलि परा संसारा ॥ १ ॥
बिना नाम जम धरि धरि खैहै, कौन छुड़ावन हारा ॥ २ ॥
सिरजनहार का मर्म न जाने, धृग जीवन जग तेरा ॥ ३ ॥
धरमराय जब पकरि मँगैहै, परिहै मार घनेरा ॥ ४ ॥
सुत नारी को मोह त्यागि कै, चीन्हो सब्द हमारा ॥ ५ ॥
सार सब्द परवाना पावो, तब उतरो भव पारा ॥ ६ ॥
इक-मत ह्वै के चढ़ो नाव पर, तब सतगुर खेवनहारा ॥ ७ ॥
साहेब कबीर यह निर्गुन गावैं, संतन करो बिचारा ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

टुक जिंदगी बँदगी कर लेना, क्या माया मद मस्ताना ॥टेक॥
रथ घोड़े सुखपाल पालकी, हाथी और बाहन नाना ।
तेरा ठाठ काठ की टाटी, यह चढ़ चलना समसाना‡ ॥१॥
रूम पाठ पाटम्बर अम्बर, जरी बफ़्र§ का बाना ।
तेरे काज गजो गज चारिक‖, भरा रहे तोसखाना ॥२॥
खर्च की तदबीर करो तुम, मंजिल लंबी जाना ।
पहिचन्ते का गाँव न मग में, चौकी न हाट दुकाना ॥३॥

* मृग । † सोच । ‡ समसान । § ऊनी कपड़ा । ‖ चार एक ।

जीते जी ले जत जनम को, यही गोय यहि मैदाना ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नहिं कछि तरनजतन आना ॥४

॥ शब्द ४ ॥

सुगवा पिंजरवा छोरि करि भागा ॥ टेक ॥
इस पिंजरे में दस दरवाजा ।
दसो दरवाजे किवरवा लागा ॥१॥
अँखियन सेती नीर बहन लाग्यो ।
अब कस नाहिं तू बोलत अभागा ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो ।
उड़िगे हंस टूटि गयो तागा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कै ठगवा नगरिया लूटल हो ॥टेक॥
चंदन काठ कै बनल खटोलना । ता पर दुलहिन सूतल हो ॥१
उठोरी सखी मोरी माँग सँवारो । दूलहा मो से रूसल हो ॥२
आये जमराज पलँग चढ़ि बैठे । नैनन आँसू टूटल हो ॥३
चारि जने मिलि खाट उठाइन । चहुँ दिस धूधू ऊठल हो ॥४
कहत कबीर सुनो भाइ साधो । जग से नाता छूटल हो ॥५

॥ शब्द ६ ॥

हम काँ ओढ़ावे चदरिया, चलती बिरिया ॥टेक॥
प्रानराम जब निकसन लागे, उलट गईं दूनों नैन पुतरिया १
भीतर से जब बाहर लाये, छूटि गई सब महल अटरिया २
चार जने मिलि खाट उठाइन, रोवत ले चले डगर डगरिया ३
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, संगचलेगी वहि सूखी लकरिया ४

॥ शब्द ७ ॥

क्या देख दिवाना हूआ रे ॥टेक॥
माया सूली सार बनी है, नारी नरक का कूवा रे ॥१॥
हाड़ मास नाड़ी का पिंजर, ता मैं मनुवाँ सूवा रे ॥२॥
भाई बंद और कुटुँब कबीला, तामैं पचि पचि मूवा रे ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, हार चला जग जूवा रे ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

बीती बहुत रहि थोरी सी ॥टेक॥
खाट परे नर झोंखन लागे, निकर प्रान गयो चोरी सी १
भाई बंद कुटुँब सब आये, फूँक दियो मानो होरी सी २
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सिर पर देत हैं भौंरी सी ३

॥ शब्द ९ ॥

सोच समुझ अभिमानी, चादर भइ है पुरानी ॥टेक॥
टुकड़े टुकड़े जोड़ि जुगत सौं, सी के अँग लिपटानी ।
कर डारी मैली पापन सोँ, लोभ मोह मैं सानी ॥ १ ॥
ना यहि लगो ज्ञान कै साबुन, ना धोई भल पानी ।
सारी उमिर ओढ़ते बीती, भली बुरी नहिं जानी ॥ २ ॥
संका मान जान जिय अपने, यह है चीज बिरानी ।
कहत कबीर घर राखु जतन से, फेर हाथ नहिं आनी ॥३॥

॥ शब्द १० ॥

खेल ले नैहरवाँ दिन चार ॥टेक॥
पहिली पठौनी तीन जने आये, नौवा बाम्हन बारि ॥१॥
बाबुल जी मैं पैयाँ तोरी लागौं, अब की गवन दे टारि ॥२॥

दुसरी पठौनी आपै आये, लेके डोलिया कहार ॥ ३ ॥
धरि बहियाँ डोलिया बैठाइन, कोऊ न लागै गोहार ॥४॥
ले डोलिया जाय बन में उतारिन, कोइ नहिं संगी हमार ५
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, इक घर है दस द्वार ॥६॥

॥ शब्द ११ ॥

डँड़िया फँदाय धन चलु रे, मिलि लेहु सहेली ।
दिनाँ चारि को संग है, फिर अंत अकेली ॥ १ ॥
दिन दस नैहर खेलि ले, सासुर निज भरना ।
बहियाँ पकरि पिय ले चले, तब उजुर न करना ॥२॥
इक अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती ।
देहिँ उतारि ताही घराँ, जहँ संग न साथी ॥ ३ ॥
इक अँधियारी कुइयाँ, दूजे लेजुर* टूटी ।
नैन हमारे अस ढुरैं, मानो गागर फूटी ॥ ४ ॥
दास कबीरा यों कहै, जग नाहिन रहना ।
संगी हमरे चलि गये, हमहूँ को चलना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साईं के सँग सासुर आई ॥ टेक ॥
संग न सूतो स्वाद न जान्यो, गयो जोबन सुपने को नाँई ॥१
जना चारि मिलि लगन सोधाई, जना पाँच मिलि मंडप छाई
सखी सहेली मंगल गावैं, दुख सुख माथे हरदी चढ़ाई ॥२॥
नाना रूप परी मन भाँवरि, गाँठि जोरि भइ पति की आई।
अरघै दैदै चली सुबासिन, चौकहिं राँड़ भई सँग साँई ॥३॥
भयो बियाह चली बिन दूलह, बाट जात समधी समुझाई ।
कहैं कबीर हम गवने जैबै, तरबं† कंत लै तूर बजाई ॥४॥

---

* रस्सी । † तरेंगे ।

॥ शब्द १३ ॥

बहुरि नहिं आवना या देस ॥ टेक ॥

जो जो गये बहुरि नहिं आये, पठवत नाहिं सँदेस ॥१॥
सुर नर मुनि औ पीर औलिया, देवी देव गनेस ॥ २ ॥
धरि धरि जनम सबै भरमे हैं, ब्रह्मा बिस्नु महेस ॥ ३ ॥
जोगी जंगम औ सन्यासी, डीगम्बर दुरवेस ॥ ४ ॥
चुंडित मुंडित पंडित लोई, सुर्ग रसातल सेस ॥ ५ ॥
ज्ञानी गुनी चतुर औ कविता, राजा रंक नरेस ॥ ६ ॥
कोइ रहीम कोइ राम बखाने, कोइ कहै आदेस ॥ ७ ॥
नाना भेष बनाय सबै मिलि, ढूँढ़ि फिरे चहुँ देस ॥ ८ ॥
कह कबीर अंत ना पैहौ, बिन सतगुर उपदेस ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

वा दिन की कछु सुध कर मन माँ ॥ टेक ॥

जा दिन लैचलु लैचलु होई, ता दिन संग चलै नहिं कोई ।
तात मात सुत नारी रोई, माटी के सँग दिये समोई ।
सो माटी काटेगी तन माँ ॥ १ ॥

उलफत नेहा कुलफत नारी, किसकी बीबी किसकी बाँदी ।
किसका सोना किसकी चाँदी, जा दिन जमले चलि है बाँधी ।
डेरा जाय परै वहि बन माँ ॥ २ ॥

टाँड़ा तुम ने लादा भारी, बनिज किया पूरी ब्यौपारी ।
जूवा खेला पूँजी हारी अब चलने की भई तयारी ।
हित चित मत तुम लाओ धन माँ ॥ ३ ॥

जो कोइ गुरु से नेह लगाई, बहुत भाँति सोई सुख पाई।
माटी में काया मिलि जाई, कहैं कबीर आगे गोहराई
साँच नाम साहेब को सँग माँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जोगी जन जागत रहो मेरे भाई।
जागत रहियो सोय मत जैयो, चोर मूसि लै जाई ॥१॥
बिरह फाँसि डालै हित चित करि, मारै ढिंग बैठाई।
बाजीगर बन्दर करि राखै, ले जाय संग लगाई ॥२॥
रस कस लेत निचोरि कामिनी, बुधि बल सब छलि खाई।
गाँडे की छोई करि डारै, रहन न देत मिठाई ॥ ३ ॥
तसकर तरज* हरन† मृग-चितवन, कंदर्प‡ लेत चुराई।
घृत पावक निज नारि निकट ढिंग, कोइ बिरले जन ठहराई ४
बन के तपसी नागा लूटे, सुर नर मुनि छलि खाई।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, जग लूटा ढोल बजाई ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

हमारे मन कब भजिहो गुरु नाम ॥ टेक ॥
बालापन जनमत हीं खोयो, ज्वानी में ब्यापा काम।
बूढ़ भये तन थाकन लागे, लटकन लागे चाम ॥ १ ॥
कानन बहिर नैन नहिं सूझै भये दाँत बेकाम।
घर की त्रिया बिमुख होइ बैठी, पुत्र कियो कलकान§ ॥२॥
खटिया से भुइयाँ कर दीन्हो, जम का गड़ा निसान।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, दुबिधा में निकसत प्रान ॥३॥

---

* चोर की तरह। † हर लेने वाली। ‡ बीर्य्य। § झगड़ा।

॥ शब्द १७ ॥

मन हलवाई हो, सत्तनाम बिमल पकवान ॥ टेक ॥
काया कराही कर्म घृत भरु, मन मैदा को सानु ।
ब्रह्म अगिन उदगारि* के, तू अजब मिठाई छानु ॥१॥
तन हमारो ताखरी† हो, मन हमारो सेर ।
सुरति हमरी डाँड़िया हो, चित हमारो फेर ॥२॥
गगन मँडल में घर हमारो, त्रिकुटी मोर दुकान ।
रहनि हमरी उनमुनी, तातें लागि बस्तु बिकान ॥३॥
लोभ लहर नदिया बहै हो, लख चौरासी धार ।
बिन गुरु साकित बूड़ि मुए, कोइ गुरमुख उतरे पार ॥४॥
कहैं कबीर स्वामी अगोचरा, तुम गति अगम अपार ।
संतन लाद्यो सत्तनाम, सब बिष लाद्यो संसार ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

करो जतन सखी साँईं मिलन की ॥ टेक ॥
गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया,
तजि दे बुधि लरिकैयाँ खेलन की ॥१॥
देवता पित्तर भुइयाँ भवानी,
यह मारग चौरासी चलन की ॥ २ ॥
ऊँचा महल अजब रँग बँगला,
साँईं की सेज वहाँ लगी फूलन की ॥ ३ ॥
तन मन धन सब अर्पन कर वहँ,
सुरत सम्हार परु पइयाँ सजन की ॥ ४ ॥

* जगा कर । † पलरा ।

कहैं कबीर निर्भय होय हंसा,
कुँजी बता दयौं ताला खुलन की ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

अपने घट दियना बारु रे ॥ टेक ॥
नाम कै तेल सुरत कै बाती, ब्रह्म अगिन उदगारु रे ॥१॥
जगमग जोत निहारु मँदिर मँ, तनमन धन सब वारु रे ॥२॥
झूठी जान जगत की आसा, बारंबार बिसारु रे ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, आपन काज सँवारु रे ॥४॥

॥ शब्द २० ॥

मन तुम नाहक दुंद मचाये ॥ टेक ॥
करि असनान छुवो नहिं काहू, पाती फूल चढ़ाये ॥१॥
मूरति से दुनिया फल माँगै, अपने हाथ बनाये ॥ २ ॥
यह जग पूजै देव देहरा, तीरथ बर्त अन्हाये ॥ ३ ॥
चलत फिरत मैं पाँव थकित भे, यह दुख कहाँ समाये ॥४॥
झूठी काया झूठी माया, झूठे झूठ लखाये ॥ ५ ॥
बाँझिन गाय दूध नहिं देहै, माखन कहँ से पाये ॥ ६ ॥
साँचे के सँग साँच बसत है, झूठे मारि हटाये ॥ ७ ॥
कहैं कबीर जहँ साँच बस्तु है, सहजै दरसन पाये ॥८

॥ शब्द २१ ॥

मन फूला फूला फिरै जक्त मँ, कैसा नाता रे ॥ टेक ॥
माता कहे यह पुत्र हमारा, बहिन कहै बिर* मेरा ।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारि कहै नर मेरा ॥ १ ॥
पेट पकरि के माता रोवै, बाँहि पकरि के भाई ।
लपटि झपटि के तिरया रोवै, हंस अकेला जाई ॥ २ ॥

---

* बीर= ।

जब लग जीवै माता रोवै, बहिन रोवै दस मासा ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर बासा ॥ ३ ॥
चार गजी चरगजी मँगाया, चढ़ी काठ की घोड़ी ।
चारो कोने आग लगाया, फूँक दियो जस होरी ॥ ४ ॥
हाड़ जरै जस लाह कड़ी को, केस जरै जस घासा ।
सोना ऐसी काया जरि गइ, कोई न आयो पासा ॥ ५ ॥
घर की तिरिया ढूँढ़न लागी, ढूँढ़ि फिरी चहुँ देसा ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, छाँड़ो जग की आसा ॥ ६ ॥

॥ शब्द २२ ॥

छाँड़ि दे मन बौरा डगमग ॥ टेक ॥

अब तो जरे मरे बनि आवै, लीन्हो हाथ सिंधोरा ।
प्रीत प्रतीत करो दृढ़ गुरु की, सुनो सब्द घनघोरा ॥ १ ॥
होइ निसंक मगन ह्वै नाचे, लोभ मोह भ्रम छाँड़े ।
सूरा कहा मरन सों डरपे, सती न संचय भाँड़े ॥ २ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, यही गले मैं फाँसी ।
आगे ह्वै पग पाछे धरिहो, होय जक्त मैं हाँसी ॥ ३ ॥
अगिन जरे ना सती कहावै, रन जूझे नहिं सूरा ।
बिरह अगिन अंतर में जारै, तब पावै पद पूरा ॥ ४ ॥
यह संसार सकल जग मैला, नाम गहे तेहि सूँचा ।
कहैं कबीर भक्ति मत छाँड़ो, गिरत परत चढ़ु ऊँचा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

भूला मन समुझाव जो पै, भूला मन समुझावै ॥ टेक ॥
अरब खरब लौं दर्ब गाड़े, खरिचन खान न पावै ।
जब जम आइ करै कंठ घेरो, दै दै सैन बुझावै ॥ १ ॥

बोइ बबूर अँब फल चाहस, सो फल कैसे पावै ।
खोँटा दाम गाँठि लै डोलस, भलि भलि बस्तु मोलावै ॥२॥
गुरु परताप साध की संगति, मन-बांछित* फल पावै ।
जाति जोलाहा नाम कबीरा, बिमल बिमल गुन गावै ॥३॥

॥ शब्द २४ ॥

मन बनियाँ बानि न छोड़ै ॥ टेक ॥
जनम जनम का मारा बनियाँ, अजहूँ पूर न तौलै ।
पासँग कै अधिकारी लै लै, भूला भूला डोलै ॥ १ ॥
घर में दुबिधा कुमति बनी है, पल पल में चित तोरै ।
कुनबा वाके सकल हरामी, अमृत में विष घोरै ॥ २ ॥
तुमहीं जल में तुमहीं थल में, तुमहीं घट घट बोलै ।
कहैं कबीर वा सिष को डरिये, हिरदे गाँठि न खोलै ॥३॥

॥ शब्द २५ ॥

उठि पछिलहरा पिसना पीस ॥ टेक ॥
ढोरु पछोरु पलक छिन दम दम ।
अनहद जाँत गड़ा तोरे सीस ॥ १ ॥
कर बिन चलै झोंक बिन निघरै† ।
बंकनाल चलै बिस्वा बीस ॥ २ ॥
मन मैदा मीहीं कर चाली ।
चोकर तजि दो पाँच पचीस ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ।
आपुइ आय मिलैं जगदीस ॥ ४ ॥

---

* जो चाहै सो । † चक्की में जो पीछे से थोड़ा सा अन्न रह जाता है उसे चोकर या कोई अनाज डाल कर और चक्की को तेज़ चलाकर साफ़ कर लेते हैं ।

॥ शब्द २६ ॥

तुम जाइ अंजोरे बिछावो, अँधेरे में का करिहो ॥ टेक ॥
जब लग स्वाँसा दीप जरतु है, जैसे बनै तो बनावो ॥१॥
गुन के पलँग ज्ञान के तोसक, सूरति तकिया लगावो ॥२॥
जो सुख चाहो सो सतमहले*, बहुरि दुक्ख नहिं पावो ॥३॥
दास कबीर गुरु सेज सँवारो, उनकी नारि कहावो ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, आवा गवन मिटावो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

कहै कोइ लाखौं, करैया कोइ और है ॥ टेक ॥
कंसा कहै बसुदेव को निरबंस करौं† ।
रुकमा कहै सिसुपाल के सिर मौर है‡ ॥ १ ॥

---

* परम और अबिनाशी सुख सातवें लोक में पहुँचे बिना नहीं प्राप्त हो सकता ।

† राजा कंस से नारद मुनि ने कहा था कि अपने बहनोई बसुदेव जी को किसी औलाद के हाथ से तुम मारे जावगे इसलिये अपनी बहिन की सब औलाद को ज्यों ही उत्पन्न हुई मारता गया केवल आठवीं औलाद श्रीकृश्न अचरज रीति से बच गये जिन्हों ने बाल अवस्था ही में अपने मामा कंस का बध किया ।

‡ रुक्मिनी जी के भाई रुकम ने अपने बल घमंड में अपनी बहिन और पिता की इच्छा के बिरुद्ध रुक्मिनी जी का ब्याह राजा शिशुपाल से ठहराया। जब बरात आई श्रीकृश्न ने रुकम शिशुपाल और दूसरे शूरबीर राजाओं का घमंड तोड़ने और अपने भक्त रुक्मिनी जी और उनके पिता की मनोकामना पूरी करने के हेतु रुक्मिनी को हर कर अपने साथ ब्याह कर लिया। कुछ काल पीछे शिशुपाल और रुकम दोनों भिन्न भिन्न अवसर पर श्रीकृश्न के हाथ से मारे गये। शिशुपाल के पूर्व जन्म की कथा यों है कि जय बिजय बैकुंठ के द्वारपाल थे जिन्हों ने सनकादिक को एक समय में बैकुंठ के द्वारे पर रोक दिया। इस पर सनकादिक ने सराप दिया जिसके प्रभाव से उन दोनों ने पहिले हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप का चोला पाया, दूसरे जन्म में रावन और कुंभकरन हुए और तीसरे जन्म में शिशुपाल और दन्तवक्र।

रावना* कहै मैं तो जम को भी मारि डारौं ।
मेघनाद* कहै अपार बल मोर है ॥ २ ॥
कसिपा† कहै पहलाद को मैं मारि डारौं ।
देखो मेरे भाई याही मेरो कौल है ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ।
भक्त-बछल सतनाम माहीं ठौर है ॥ ४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

नागिन ने पैदा किया नागिन डँसि खाया ।
कोइ कोइ जन भागत भये गुरु सरन तकाया ॥ १ ॥
सिंगी रिषि† भागत भये बन माँ बसे जाई ।
आगे नागिन गाँसि के वोहीं डँसि खाई ॥ २ ॥
नेजा धारी सिव बड़े भागे कैलासा ।
जोति रूप प्रगट भई परबत परकासा ॥ ३ ॥
सुर नर मुनि जोगी जती कोइ बचन न पाया ।
नोन तेल ढूँढ़े नहीं कच्चे धरि खाया ॥ ४ ॥
नागिन डरपै संत से उहवाँ नहिँ जावै ।
कहैं कबीर गुरु मंत्र से आपै मरि जावै ॥ ५ ॥

---

* रावन लंका का राजा और मेघनाद उसका बेटा दोनों भारी जोधा थे अंत को रावन श्रीरामचन्द्र के हाथ से और मेघनाद लछमन जी के हाथ से मारे गये।

† हिरण्यकश्यप बड़ा ईश्वर द्रोही था और अपने भगवत भक्त बेटे प्रहलाद को भक्ति के अपराध में मार डालने पर तत्पर था। ईश्वर ने नरसिंगावतार धर कर अपने नख से हिरण्यकश्यप का पेट फाड़ कर उस का बध किया।

† श्रंगी ऋषी की कथा मिश्रित अंग के आख़िर शब्द की पहली कड़ी के नोट मे देखिये।

॥ शब्द २९ ॥

पानी बिच मीन पियासी। मोहिँ सुनि सुनि आवत हाँसी।टेक
आतम ज्ञान बिना सब झूठा, क्या मथुरा क्या कासी ॥१॥
घर में बस्तु धरी नहिँ सूझै, बाहर खोजन जासी ॥ २ ॥
मृग के नाभि माहिँ कस्तूरी, बन बन खोजत बासी* ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सहज मिलै अबिनासी ॥४॥

॥ शब्द ३० ॥

अवधू निरंजन जाल पसारा ॥ टेक ॥
स्वर्ग पताल जीव मृत-मंडल, तीन लोक बिस्तारा।
ब्रह्मा बिस्नु सिव प्रगट कियो है, ताहि दियो सिर भारा ॥१॥
ठाँव ठाँव तीरथ ब्रत थाप्यो, ठगने को संसारा।
माया मोह कठिन बिस्तारा, आपु भयो करतारा ॥ २ ॥
सतगुरु सब्द को चीन्हत नाहीं, कैसे होय उबारा।
जारि भूँजि कोइला करि डारै, फिरि फिरि लै अवतारा ॥३॥
अमर लोक जहाँ पुरुष बिराजै, तिन का मूँदा द्वारा।
जिन साहेब से भये निरंजन, सो तो पुरुष है न्यारा ॥४॥
कठिन काल तैं बाचा चाहो, गहो सब्द टकसारा।
कहैं कबीर अमर करि राखौं, मानो सब्द हमारा ॥५॥

॥ शब्द ३१ ॥

चंदा झलकै यहि घट माहीं। अंधी आँखन सूझै नाहीं ॥१
यहि घट चंदा यहि घट सूर। यहि घट गाजै अनहद तूर॥२॥

---

* सुगंधि।

यहि घट बाजे तबल निसान। बहिरा सब्द सुनै नहिँकान ३
जब लग मेरी मेरी करै। तब लग काज न एकौ सरै ॥४॥
जब मेरी ममता मरि जाय। तब प्रभु काज सँवारै आय ५
जब लग सिंघ रहै बन माहिँ। तब लग वह बन फूलै नाहिँ ६
उलट स्यार सिंघ को खाय। उकिठा*बन फूलै हरियाय ७
ज्ञान के कारन करम कमाय। होय ज्ञान तब करम नसाय ८
फल कारन फूलै बनराय। फल लागे पर फूल सुखाय ॥९॥
मिरग पास कस्तूरी बास। आपु न खोजै खोजै घास ॥१०॥
पारे पिंड† मीन लै खाई। कहैँ कबीर लोग बौराई ॥११॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुनता नहीँ धुन की खबर अनहद का बाजा बाजता।
रसमंद मंदिर बाजता बाहर सुने तो क्या हुआ ॥ १ ॥
गाँजा अफीम और पोसता भाँग और सराबैँ पीवता।
इक प्रेम रस चाखा नहीँ अमली हुआ तो क्या हुआ ॥२॥
कासी गया और द्वारिका तीरथ सकल भरमत फिरै।
गाँठी न खोली कपट की तीरथ गया तो क्या हुआ ॥३॥
पोथी किताबैँ बाँचता औरौँ को नित समुझावता।
त्रिकुटी महल खोजै नहीँ बक बक मरा तो क्या हुआ ॥४॥
काजी किताबैँ खोजता करता नसीहत और को
महरम नहीँ उस हाल से काजी हुआ तो क्या हुआ ॥५॥
सतरंज चौपड़ गंजिफा इक नर्द है बदरंग की।
बाजी न लाई प्रेम की खेला जुआ तो क्या हुआ ॥ ६ ॥

---

* सूखा। † पिंडा।

जोगी दिगम्बर सेवड़ा कपड़ा रँगे रँग लाल से ।
वाकिफ नहीं उस रँग से कपड़ा रँगे से क्या हुआ ॥७॥
मंदिर झरोखे रावटी गुल चमन में रहते सदा ।
कहते कबीरा हैं सही घट घट में साहेब रम रहा ॥८॥

॥ शब्द ३३ ॥

जोगिया खेलियो बचाय के, नारि नैन चलैं बान ॥ टेक ॥
सिंगी*की भिंगी करि डारी, गोरख† के लिपटान ॥१॥
कामदेव महादेव* सतावै कहा कहा करौं बखान ॥ २ ॥
आसन छोड़ि मुछंदर‡ भागे, जल माँ मीन समान ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन लिपटान ॥ ४ ॥

---

* शृंगी ऋषि और महादेव जी को जिस जिस प्रकार से माया ने छला वह कथायें मिश्रित अंग के आखिर शब्द की पहली और चौथी कड़ियों में लिखी हैं।

† कहते हैं कि गोरखनाथ जोगी बन में तपस्या करते थे। एक रोज़ माया स्त्री का रूप धारन करके उनके पास आई और कहा कि मेरे पति को जङ्गल में शेर खा गया अब मैं अकेली बन में डरती हूँ दया करके रात को यहां रहने दो सुबह को मैं चली जाऊँगी। उन्होंने कहा अच्छा और एक कोठरी में किवाड़ भीतर से बन्द करा के बैठा दिया और कह दिया कि अगर मैं भी आकर कहूँ कि खोलो तो भी किवाड़ मत खोलना। उसने कहा अच्छा। ऋषि जी बैठे भजन करने तो ध्यान में वह स्त्री सनमुख आने लगी उसका नक़्श हृदय पर पड़ गया था बार बार उसी का रूप नज़र आने लगा, भजन से उठ बैठे, आवाजें दीं कुंडी खोलो। उसने कहा हम नहीं खोलेंगे तुमने मना किया था। फिर बेचारे ऐसे काम बस हो गये कि छत तोड़ के कोठे में कूद पड़े। दूसरे रोज़ नदी के पार उसको कंधे पर बैठा कर ले जाना पड़ा उसने खूब एड़ लगाई और कहा बड़ा टर्रा घोड़ा था इसके लिए मैं ने लोहे की लगाम बनवाई थी यह तो हाथ नहीं आता था अब देखो मैं उसके सिर पर सवार हूँ। सुनते ही होश आया तब माया रूपी स्त्री को छोड़ कर भागे।

‡ मुछन्दर नाथ का ज़िक्र है कि एक रोज़ किसी ने कहा कि राज का रस और आनन्द बड़ा मीठा है, मुछन्दरनाथ बोले अच्छा तजरबा करना चाहिए। जोगी

॥ शब्द ३४ ॥

तेरे गवने का दिन नगिचाना, सोहागिन चेत करौ री ॥टेक॥

बालापन तन खेल गँवायौ, तरुनै चाल कुचाल ।
का उत्तर देइहौ रे सजनी, पिय पूछै जब हाल ।
समुझ मन का करिहौ री ॥ १ ॥

भौसागर औगाध भँवर है, सूझै वार न पार ।
केहि बिधि पार उतरबौ सजनी, नहिं खेवट नहिं नाव ।
खेवैया बिन का करिहौ री ॥ २ ॥

सील सुमति की चुनरी पहिरो, सत मति रंग रँगाय ।
ज्ञान तेल सोँ माँग सँवारौ, निर्भय सँदुर लाय ।
कपट पट खोल धरौ री ॥ ३ ॥

पिय घर चेत करौ री सजनी, नैहर नाहिं निबाह ।
नैहर नाम कहा ले करिहौ, मरिहौ भर्म भुलाय ।
पुरुष बिन का करिहौ री ॥ ४ ॥

गति तो थी ही दूसरी देह में अपने जीव को प्रवेश करने की सामरथ रखते थे, एक राजा मरता था उसकी देह में प्रवेश किया और अपने चेले गोरखनाथ को कह दिया कि भोग बिलास में अगर हम भूल जावें तो तुम यह मंत्र आ के पढ़ना । राजा जो मरता था उठ खड़ा हुआ, रानी सब .खुश हुई । एक बरस उनके संग भोग बिलास किया मगर ख़ौफ़ था कि किसी वक़्त गोरखनाथ आ जायगा इस लिये हुक्म दिया कि कोई कनफटा जोगी शहर में न आने पावे । राग सुनने का राजा को बड़ा शौक़ था इस लिये गोरखनाथ गाना बजाना सीख कर गाने वालों के संग दरबार में गये और जब मंत्र पढ़ा तब मुछन्दर नाथ को होश आया—फिर अपने पुराने चोले में आ गये ।

सासुर सत्त सब्द निर्बानी, त्रिकुटी संगम ध्यान ।
झिलमिल जोत जहँ निसु दिन झलकै, तीन बसै इक ठाम ।
सुरत दे निरत करौ री ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सोई सतवंती, पिय के रंग रँगाय ।
अमर लोक हाथै करि लैइ है, तेरो सोहाग सोहाय ।
महल बिसराम करौ री ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

हंसा हंस मिले सुख होई ॥टेक॥
इहाँ तो पाँती है बगुलन की, कदर न जानै कोई ॥१॥
जो हंसा तोरे प्यास छीर की, कूप नीर नहिं होई ।
यह तो नीर सकल ममता को, हंस तजा जस चोई* ॥२॥
षट दरसन पाखंड छानबे, भेष धरे सब कोई ।
चार बरन औ बेद किताबैं, हंस निराला होई ॥ ३ ॥
यह जम तीन लोक को राजा, बाँधे अस्त्र सँजोई† ।
सब्द जीत चलो हंस हमारे, तब जम रहि है रोई ॥४॥
कहैं कबीर प्रतीत मान ले, जिव नहिं जाय बिगोई ।
लै बैठारौं अमर लोक में, आवागवन न होई ॥५॥

॥ शब्द ३६ ॥

माया महा ठगनी हम जानी ॥ टेक ॥
तिरगुन फाँसि लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी ॥ १ ॥

---

* चोकर । † हथियार को ठीक करके ।

केसव के कमला होइ बैठी, सिव के भवन भवानी ॥ २ ॥
पंडा के मूरत होइ बैठी, तीरथ हूँ मैं पानी ॥ ३ ॥
जोगी के जोगिन होइ बैठी, राजा के घर रानी ॥ ४ ॥
काहू के हीरा होइ बैठी, काहू के कौड़ी कानी ॥ ५ ॥
भक्तन ये भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥ ६ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, यह सब अकथ कहानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

अवधू अमल करै सो गावै ।
जौं लग अमल असर ना होवै, तौं लग प्रेम न आवै ॥ टेक ॥
बिन खाये फल स्वाद बखानै, कहत न सोभा पावै ।
बिन गुरु ज्ञान गाँठि के हीने, नाहक बस्तु भुलावै ॥ १ ॥
आँधर हाथ लेय कर दीपक, करि परकास दिखावै ।
औरन आगे करै चाँदना, आपु अँधेरे धावै ॥ २ ॥
आँधर आप आँधर दस गोहने,* जग में गुरू कहावै ।
मूल महल की खबर न जानै, औरन को भरमावै ॥ ३ ॥
ले अमृत मूरख रँड सींचै, कलप-बृच्छ बिसरावै ।
लैके बीज ऊसर में बोवै, पाहन पानी नावै† ॥ ४ ॥
लागी आग जरै घर आपन, मूरख घूर बुतावै‡ ॥ ।
पढ़ा गुना जो पंडित भूलै, वाको को समुझावै ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, यह संतन नहिं भावै ।
है कोइ सूर पूर जग माहीं, जो यह पद अर्थावै ॥ ६ ॥

---

* साथ में । † पत्थर की मूरत पर पानी चढ़ाता है । ‡ घर में आग लगी है और घूर पर पानी डालता है ।

॥ शब्द ३८ ॥

तन धर सुखिया कोइ न देखा, जो देखा सो दुखिया हो ।
उदय अस्त की बात कहतु हैं, सब का किया बिबेका हो ॥१॥
घाटे बाढ़े सब जग दुखिया, क्या गिरही बैरागी हो ।
सुकदेव* अचारज दुख के डर से, गर्भ से माया त्यागी हो ॥२॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना हो ।
आसा तृस्ना सब को ब्यापै, कोइ महल न सूना हो ॥३॥
साँच कहौं तो कोई न मानै, झूठ कहा नहिं जाई हो ।
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर दुखिया, जिन यह राह चलाई हो ॥४॥
अवधू दुखिया भूपति दुखिया, रंक दुखी बिपरीती हो ।
कहैं कबीर सकल जग दुखिया, संत सुखी मन जीती हो ॥५॥

॥ शब्द ३९ ॥

मानुष जनम सुधारो साधो, धोखे काहे बिगाड़ो हो ।
ऐसा समय बहुर नहिं पैहो, जनम जुआ मति हारो हो ॥१॥
गुड़ा गुड़ी खियाल जिन भूलो, मूल तत्त लौ लाओ हो ।
जब लग घट सौं परिचे नाहीं, तब लग कछु नहिं पाओ हो ॥२॥
तीरथ ब्रत और जप तप संजम, या करनी मत भूलो हो ।
करम फंद में जुग जुग पड़िहो, फिर फिर जोनि में भूलो हो ॥३॥
ना कछु न्हाये ना कछु धोये, ना कछु घंट बजाये हो ।
ना कछु नेती ना कछु धोती, ना कछु नाचे गाये हो ॥४॥
सिंगी सेल्ही† भभूत औ बटुआ, साँई स्वाँग से न्यारा हो ।
कहैं कबीर मुक्ति जो चाहो, मानो सब्द हमारा हो ॥५॥

---

* सुकदेव मुनि जी बारह बरस गर्भ में रहे पैदा होते ही जंगल को माया के भय से भागे। † सिंगी मुँह से बजाने का बाजा और सेल्ही नाम साधुओं के पहिरने की मेखली का है।

॥ शब्द ४० ॥

जिन के नाम ना है हिये ॥ टेक ॥

क्या होवै गल माला डाले, कहा सुमिरनी लिये ॥१॥
क्या होवै पुस्तक के बाँचे, कहा संख धुन किये ॥२॥
क्या होवै कासी में बसि के, क्या गंगा जल पिये ॥३॥
होवै कहा बरत के राखे, कहा तिलक सिर दिये ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, जाता है जम लिये ॥५॥

॥ शब्द ४१ ॥

साधो पाँड़े निपुन कसाई ॥ टेक ॥

बकरी मारि भेड़ि को धाये, दिल में दरद न आई ॥१॥
करि अस्नान तिलक दै बैठे, बिधि सों देबि पुजाई ॥२॥
आतम मारि पलक में बिनसे, रुधिर की नदी बहाई ॥३॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभा माहिं अधिकाई ॥४॥
इन से दिच्छा* सब कोइ माँगे, हँसी आवै मोहिं भाई ॥५॥
पाप कटन को कथा सुनावैं, करम करावैं नीचा ॥६॥
बूड़त दोऊ परस्पर देखे, गहे बाँहि जम खींचा ॥७॥
गाय बधै सो तुरुक कहावै, यह क्या इन से छोटे ॥८॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, कलि में बाम्हन खोटे ॥९॥

॥ शब्द ४२ ॥

को सिखवै अधमन को ज्ञाना ॥ टेक ॥

साध की संगत कबहुँ न कीन्हो, रटत रटत जग जन्म सिराना† ॥१॥
दया धर्म कबहूँ नाहिं चीन्हा, नहिं गुरु सब्द समाना ॥२॥
कर्जा करि के बेस्या राखै, साध आय तो नहिं घर दाना ॥३॥
कहैं कबीर जब जमपुर जैहै, मारहि मार उठै घमसाना ॥४॥

* मंत्र। † बीता।

॥ शब्द ४३ ॥

भक्ति सब कोइ करै भरमना ना टरै,
भरम जंजाल दुख दुन्द भारी ॥ १ ॥
काल के जाल मैं जक्त सब फँसि रहा,
आस की डोरि जम देत डारी ॥ २ ॥
ज्ञान सूझै नहीं सब्द बूझै नहीं,
सरन ओटा नहीं गर्व धारी ॥ ३ ॥
ब्रह्म चीन्है नहीं भर्म पूजत फिरै,
हिये के नैंन क्यों फोरि डारी ॥ ४ ॥
काटि सरजीव धरि थाप निरजीव को,
जीव के हतन अपराध भारी ॥ ५ ॥
जीव का दर्द बेदर्द कसकै नहीं,
जीभ के स्वाद नित जीव मारी ॥ ६ ॥
एक पग ठाढ़ कर जोर बिनती करै,
रच्छ बल जाउँ सरना तिहारी ॥ ७ ॥
वहाँ कछु है नहीं अरज अंधा करै,
कठिन डंडौत नहिं टरत टारी ॥ ८ ॥
यहीं आकर्म* से नर्क पापी पड़ै,
करम चंडाल की राह न्यारी ॥ ९ ॥
धन्न सौभाग जिन साध संगत करी,
ज्ञान की दृष्टि लीजै बिचारी ॥ १० ॥
सत्त दावा गहौ आपु निर्भय रहौ,
आपु को चीन्हि लखु नाम सारी ॥ ११ ॥

---

* कुकर्म।

कहैं कब्बीर तू सत्त पर नजर कर,
बोलता ब्रह्म सब घट उजारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

करो रे मन वा दिन की ततबीर* ॥ टेक ॥
जब जमराजा आनि पड़ैंगे, नेक घरत नहिं धीर ॥१॥
मुँगरिन मारि के प्रान निकासत, नैनन भरि आयो नीर॥२॥
भौसागर एक अगम पंथ है, नदिया बहुत गँभीर ॥३॥
नाव न बेड़ा लोग घनेरा, खेवट है बेपीर ॥४॥
घर तिरिया अरधंगी बैठी, मातु पिता सुत बीर ॥ ५ ॥
माल मुलुक की कौन चलावै, संग न जात सरीर ॥६॥
ले कै बोरत नरक कुंड में, ब्याकुल होत सरीर ॥७॥
कहत कबीर नर अब से चेतो, माफ होय तकसीर ॥८॥

॥ शब्द ४५ ॥

सुख सिंध की सैर का स्वाद तब पाइ है,
चाह का चौतरा भूलि जावै ।
बीज के माहिं ज्यों बृच्छ बिस्तार,
यों चाह के माँहि सब रोग आवै ॥ १ ॥
दृढ़ बैराग मैं होय आरूढ़ मन, चाह के चौतरे आग दीजै।
कहै कब्बीर यों होय निरबासना,
सत्त सों रत्त होय काज कीजै ॥ २ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

साधो भाई जीवत ही करो आसा ॥ टेक ॥
जीवत समुझै जीवत बूझै, जीवत मुक्ति निवासा ।
जियत करम की फाँसि न काटी, मुए मुक्ति की आसा ॥१॥

---

* तदबीर।

तन छूटे जिव मिलन कहतु है, सो सब झूठी आसा।
अबहुँ मिला सो तबहुँ मिलैगा, नहिं तो जमपुर बासा ॥२॥
दूर दूर ढूँढै मन लोभी, मिटै न गर्भ तरासा।
साध संत की करै न बँदगी, कटै करम की फाँसा ॥३॥
सत्त गहै सतगुरु को चीन्है, सत्त नाम बिस्वासा।
कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा ॥४॥

॥ शब्द ४७ ॥

आगे समुझि परैगा भाई ॥ टेक ॥
यहाँ अहार उदर भर खायो, बहु बिधि मास बढ़ाई ॥१॥
जीव जन्तु रस मार खातु हौ, तनिक दरद नहिं आई ॥२॥
यहँ तो परधन लूटि खातु हौ, गल बिच फाँसि लगाई ॥३॥
तिन के पीछे तीन पियादा, छिन छिन खबर लगाई ॥४॥
साध संत की निंदा कीन्हो, आपन जन्म नसाई ॥५॥
परग परग पर काँटा घसिहै, यह फल आगे आई ॥६॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, दुनियाँ है दुचिताई ॥७॥
साँच कहै तो मारा जावै, झूठे जग पतियाई ॥८॥

॥ शब्द ४८ ॥

रहना नहिं देस बिराना है ॥ टेक ॥
यह संसार कागद की पुड़िया, बूंद पड़े घुल जाना है ॥१॥
यह संसार काँट की बाड़ी, उलझ पुलझ मरि जाना है ॥२॥
यह संसार झाड़ औ झाँखर, आग लगे बरि जाना है ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है ॥४॥

॥ शब्द ४९ ॥

बागोँ ना जा रे ना जा, तेरे काया मैं गुलजार ॥टेक॥
करनी क्यारी बोइ के, रहनी करु रखवार।
दुर्मति काग उड़ाइ के, देखै अजब बहार ॥१॥
मन माली परबोधिये, करि संजम की बार।
दया पौद सूखै नहीं, छिमा सींच जल ढार ॥२॥
गुल औ चमन के बीच मैं, फूला अजब गुलाब।
मुक्ति कली सतमाल की, पहिरु गूँथि गल हार ॥३॥
अष्ट कमल से ऊपजैं, लीला अगम अपार।
कहैं कबीर चित चेत के, आवागवन निवार ॥४॥

॥ शब्द ५० ॥

सुमिरन बिन गोता खावोगे ॥टेक॥
मुट्ठी बाँधे गर्भ से आये, हाथ पसारे जावोगे ॥१॥
जैसे मोती फरत ओस के, बेर भये झरि जावोगे ॥२॥
जैसे हाट लगावै हटवा*, सौदा बिन पछितावोगे ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सौदा लेकर जावोगे॥४॥

॥ शब्द ५१ ॥

अरे मन समुझ के लादु लदनियाँ ॥टेक॥
काहेक टटुवा काहेक पाखर, काहेक भरी गौनियाँ ॥१॥
मन कै टटुवा सुरति कै पाखर, भरौं पुन्न पाप गौनियाँ ॥२॥
घर के लोग जगाती लागे, छ न लेयँ करधनियाँ ॥३॥
सौदा करु तो यहीं करु भाई, आगे हाट न बनियाँ ॥४॥

---

*दुकानदार।

पानी पी तो यहीं पी भाई, आगे देस निपनियाँ ।५।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सत्त नाम का बनियाँ ।६।

॥ शब्द ५२ ॥

दिवाने मन भजन बिना दुख पैहौ ॥टेक॥
पहिला जनम भूत का पैहौ, सात जनम पछितैहौ ।
काँटे पर लै पानी पैहौ, प्यासन ही मरि जैहौ ॥ १ ॥
दूजा जनम सुवा का पैहौ, बाग बसेरा लेइहौ ।
टूटे पंख बाज मँडराने, अधफड़ प्रान गँवैहौ ॥ २ ॥
बाजीगर के बानर होइहौ, लकड़िन नाच नचैहौ ।
ऊँच नीच से हाथ पसरिहौ, माँगे भीख न पैहौ ॥ ३ ॥
तेली के घर बैला होइहौ, आँखिन ढाँप ढँपैहौ ।
कोस पचास घरै मैं चलिहौ, बाहर होन न पैहौ ॥ ४ ॥
पँचवा जनम ऊँट के पैहौ, बिन तौले बोझ लदैहौ ।
बैठे से तो उठै न पैहौ, घुरच घुरच मरि जैहौ ॥ ५ ॥
धोबी घर के गदहा होइहौ, कटी घास ना पैहौ ।
लादी लादि आपु चढ़ि बैठे, लै घाटे पहुँचैहौ ॥ ६ ॥
पंछी माँ तौ कौवा होइहौ, करर करर गुहरैहौ ।
उड़ि के जाइ मैला पर बैठो, गहिरे चोंच लगैहौ ॥ ७ ॥
सत्तनाम की टेर न करिहौ, मनहीं मन पछितैहौ ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नरक निसानी पैहौ ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

माल जिन्होंने जमा किया, सौदापरि हारे* जाते हैं ॥टेक॥
ऊँचा नीचा महल बनाया, जा बैठे चौबारे हैं ।
सुबह तलक तो जागे रहना, साम पुकारे जाते हैं ॥ १ ॥

---

* छोड़ना ।

जग के रस्ते मत चल प्यारे, ठग या पार घनेरे हैं ।
इस नगरी के बीच मुसाफिर, अक्सर मारे जाते हैं ॥२॥
भाई बंध औ कुटुँब कबीला, सब ठग ठग के खाते हैं ।
आया जम जब दिया नगारा, साफ अलग हो जाते हैं ॥३॥
जोरू कौन खसम है किसका, कौन किसी के नाते हैं ।
कहैं कबीर जो बँदगी गाफिल, काल उन्हीं को खाते हैं ॥४॥

॥ शब्द ५४ ॥

साधो यह तन ठाठ तँबूरे का ॥ टेक ॥
ऐंचत तार मरोरत खूँटी, निकसत राग हजूरे का ॥१॥
टूटे तार बिखरि गइ खूँटी, हो गया धूरम धूरे का ॥ २ ॥
या देही का गर्ब न कीजे, उड़ि गया हंस तँबूरे का ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, अगम पंथ कोइ सूरे का ॥४॥

॥ शब्द ५५ ॥

नैहर में दाग लगाय आइ चुनरी ॥ टेक ॥
ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै,
नहिं मिलै धोबिया कौन करै उजरी ॥ १ ॥
तन की कूँड़ी ज्ञान कै सौंदन,
साबुन महँग बिकाय या नगरी ॥ २ ॥
पहिरि ओढ़ि के चली ससुररिया,
गौंवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो,
बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

अरे इन दूहुन राह न पाई ॥ टेक ॥
हिंदू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन न देई ।
बेस्या के पायन तर सोवै यह देखे। हिँदुआई ॥ १ ॥
मुसलमान के प र औलिया मुर्गी मुर्गा खाई ।
खाला केरी बेटी ब्याहै घरहिँ में करै सगाई ॥ २ ॥
बाहर से इक मुर्दा लाये धोय धाय चढ़वाई ।
सब सखियाँ मिल जेँवन बैठीं घर भर करै बड़ाई ॥ ३ ॥
हिंदुन की हिँदुआई देखी तुरकन की तुरकाई ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो कौन राह ह्वै जाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

सिपाही मन दूर खेलन मत जाव ॥ टेक ॥
दूर खेलन से मनुआँ दुखित होय, गगन मँडल मठ छाव ॥१॥
येहि पार गंगा वोहि पार जमुना, बीच सरसुती न्हाव ॥२॥
पाँच को मारि पचीस को बस करि, तीन को पकरि मँगाव ॥३॥
कहैं कबीरा धरमदास से, सब्द में सुरत लगाव ॥४॥

॥ शब्द ५८ ॥

डर लागै और हाँसी आवे, अजब जमाना आया रे ॥ टेक ॥
धन दौलत लै माल खजाना, बेस्या नाच नचाया रे ।
मुट्ठी अन्न साध कोइ माँगै, कहैं नाज नहिँ आया रे ॥१॥
कथा होय तहँ स्रोता सोवैं, बक्ता मूड़ पचाया रे ॥
होय जहाँ कहिं स्वाँग तमासा, तनिक न नींद सताया रे ॥२॥

भंग तमाखू सुलफा गाँजा, सूखा खूब उड़ाया रे।
गुरु चरनामृत नेम न धारै, मधुवा* चाखन आया रे ॥३॥
उलटी चलन चली दुनियाँ मैं, ता तैं जिय घबराया रे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, फिर पाछे पछिताया रे ॥४॥

॥ शब्द ५६ ॥

अवधू भजन भेद है न्यारा ॥ टेक ॥
क्या गाये क्या लिखि बतलाये, क्या भर्मे संसारा।
क्या संध्या तर्पन के कीन्हे, जो नहिं तत्त बिचारा ॥१॥
मूड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये, क्या तन लाये छारा†।
क्या पूजा पाहन की कीन्हे, क्या फल किये अहारा ॥२॥
बिन परिचे साहेब होइ बैठे, बिषय करै ब्यौपारा।
ज्ञान ध्यान का मर्म न जानै, बाद‡ करै हंकारा ॥३॥
अगम अथाह महा अति गहिरा, बीज न खेत निवारा§।
महा सो ध्यान मगन ह्वै बैठे, काट करम की छारा§ ॥४॥
जिनके सदा अहार अंतर मैं, केवल तत्त बिचारा।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, तारौं सहित परिवारा ॥५॥

॥ शब्द ६० ॥

अवधू अच्छरहू सोँ न्यारा ॥ टेक ॥
जो तुम पवना गगन चढ़ावो, करो गुफा में बासा।
गगना पवना दोनों बिनसैं, कहँ गयो जोग तुम्हारा ॥१॥

---

* शराब। † राख। ‡ झूठा। § इन डिंभी भेषों ने भजन भेद रूपी बीज को जो अगम अथाह और महा गहिरा है अपने हृदय-रूपी खेत में नहीं बोया, जिन सच्चे भक्तों ने उसे महा अर्थात् मथा वह कर्म की मैल को काट कर ध्यान में मगन हो बैठे।

गगना मद्धे जोती झलकै, पानी मद्धे तारा।
घटि गे नीर बिनसि गे तारा, निकर गयो केहि द्वारा ॥२॥
मेरुडंड पर डारि दुलैची,* जोगिन तारी लाया।
सोइ सुमेर पर खाक उड़ानी, कच्चा जोग कमाया ॥३॥
इँगला बिनसै पिँगला बिनसै, बिनसै सुखमनि नाड़ी ॥
जब उनमुनि की तारी टूटै, तब कहँ रही तुम्हारी ॥४॥
अद्वैत बैराग कठिन है भाई, अटके मुनिवर जोगी।
अच्छर लौं की गम्म बतावै, सो है मुक्ति बिरोगी ॥५॥
कह अरु अकह दोऊ तें न्यारा, सत्त असत्त के पारा।
कहैं कबीर ताहि लखि जोगी, उतरि जाव भव पारा ॥६॥

॥ शब्द ६१ ॥

अब से खबरदार रहो भाई ॥ टेक ॥

सतगुरु दीन्हा माल खजाना, राखो जुगत लगाई।
पाव रती घटने नहिं पावै, दिन दिन बढ़ै सवाई ॥१॥
छिमा सील की अलफी† पहिनै, जुगति लँगोट लगाई।
दया की टोपी सिर पर दै के, और अधिक बनि आई॥२॥
बस्तु पाय गाफिल मत रहना, निसि दिन करो कमाई।
घट के भीतर चोर लगतु हैं, बैठे घात लगाई ॥ ३ ॥
तन बंदूक सुमति का सिंगरा, प्रीति का गज ठहकाई।
सुरति पलीता हरदम सुलगै, कस पर राखु चढ़ाई ॥४॥

---

* ऊनी आसन। † साधुओं का बिना बँहोली का वस्त्र।

बाहर वाला खड़ा सिपाही, ज्ञान गम्म अधिकाई।
साहेब कबीर आदि के अदली, हर दम लेत जगाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

साधो देखो जग बौराना।
साँचि कहौ तौ मारन धावै, झूँठे जग पतियाना ॥टेक॥
हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोउ लड़े मरतु हैं, मरम कोई नहिं जाना ॥१॥
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी, प्रात करैं असनाना।
आतम छोड़ि पषानै पूजैं, तिनका थोथा ज्ञाना ॥२॥
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ बर्त भुलाना ॥ ३ ॥
माला पहिरे टोपी पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दै गावत भूले, आतम खबर न जाना ॥ ४ ॥
घर घर मंत्र जो देत फिरत हैं, माया के अभिमाना ॥
गुरुवा सहित सिष्य सब बूड़े, अंतकाल पछिताना ॥५॥
बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना।
करैं मुरीद कबर बतलावैं, उनहूँ खुदा न जाना ॥ ६ ॥
हिन्दू की दया मेहर तुरकन की, दोनों घर से भागी।
वह करैं जिबह वो झटका मारैं, आग दोऊ घर लागी ॥७॥
या बिधि हँसत चलत हैं हमको, आप कहावैं स्याना।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, इन में कौन दिवाना ॥८॥

॥ शब्द ६३ ॥

मोरे जियरा बड़ा अँदेसवा, मुसाफिर जैहो कौनी ओर ॥टेक॥
मोह का सहर कहर नर नारी, दुइ फाटक घनघोर।
कुमती नायक फाटक रोके, परिहौ कठिन झिँझोर ॥१॥
संसय नदी अगाड़ी बहती, बिषम धार जल जोर।
क्या मनुवाँ तुम गाफिल सोवो, इहवाँ मोर औ तोर ॥२॥
निसि दिन प्रीति करो साहेब से, नाहिन कठिन कठोर।
काम दिवाना क्रोध है राजा, बसैं पचीसो चोर ॥ ३ ॥
सत्त पुरुष इक बसैं पच्छिम दिसि, तासों करो निहोर।
आवै दरद राह तोहि लावैं, तब पैहौ निज ओर ॥ ४ ॥
उलटि पाछिलो पैंड़ा पकड़ो, पसरा मना बटोर।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, तब पैहो निज ठौर ॥५॥

॥ शब्द ६४॥

क्या माँगौं कछु थिर न रहाई, देखत नैन चल्यो जग जाई॥१॥
इकलख पूत सवा लख नाती, जा रावन घर दिया न बाती॥२॥
लंका सा कोट समुद्र सी खाई, जा रावन की खबर न पाई॥३॥
सोने के महल रूपे के छाजा, छोड़ि चले नगरी के राजा॥४॥
कोइ करै महल कोई करै टाटी, उड़ि जाय हंस पड़ी रहै माटी॥५
आवत संग न जात सँगाती, कहा भये दल बाँधे हाथी॥६॥
कहैं कबीर अंत की बारी, हाथ झारि ज्यों चला जुवारी॥७॥

॥ शब्द ६५ ॥

पी ले प्याला हो मतवाला,
प्याला नाम अमी रस का रे ॥ टेक ॥

बालपना सब खेलि गँवाया,
तरुन भया नारी बस का रे ॥ १ ॥
बिरध भया कफ बाय ने घेरा,
खाट पड़ा न जाय खिसका रे ॥ २ ॥
नाभि कँवल बिच है कस्तूरी,
जैसे मिरग फिरै बन का रे ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु इतना दुख पाया,
बैद मिला नहिँ इस तन का रे ॥ ४ ॥
मातु पिता बंधू सुत तिरिया,
संग नहीँ कोइ जाय सका रे ॥ ५ ॥
जब लग जीवै गुरु गुन गा ले,
धन जोबन है दिन दस का रे ॥ ६ ॥
चौरासी जो उबरा चाहै,
छोड़ु कामिनी का चसका रे ॥ ७ ॥
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो,
नख सिख पूर रहा बिष का रे ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

लखै रे कोइ बिरला पद निरबान ॥ टेक ॥
तीन लोक में यह जम राजा,
चौथे लोक में नाम निसान ॥ १ ॥
याहि लखन इन्द्रादिक थकि गे,
ब्रह्मा थकि गे पढ़त पुरान ॥ २ ॥

गोरख दत्त बशिष्ट ब्यास मुनि,
सिम्भू थकि गे धरि धरि ध्यान ॥ ३ ॥
कहैं कबीर लखै कोइ बिरला,
जिन पायो सतगुरु को ज्ञान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६७

जारौं मैं या जग की चतुराई ॥ टेक ॥
साँई को नाम न कबहूँ सुमिरै, जिन यह जुगति बताई॥१॥
जोरत दाम काम अपने को, हम खैहैं लरिका बिलसाई ॥२॥
सो धन चोर मूसि लै जावैं, रहा सहा लै जाय जमाई ॥३॥
यह माया जैसे कलवारिन, मद्य पियाय राखै बौराई ॥४॥
इक तो पड़े धूरि मैं लोटैं, एक कहैं चोखी दे भाई ॥५॥
सुरनर मुनि माया छलि मारे, पीर पयम्बर को धरि खाई । ६॥
कोइ इकभाग बचे सत संगति, हाथ मलै तिन को पछिताई॥७॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, लै फाँसी हमहूँ को आई । ८॥
गुरु की दया साध की संगति, बचिगे अभय निसान बजाई ।९।

॥ शब्द ६८ ॥

जियरा जावगे हम जानी ॥ टेक ॥
पाँच तत्त को बनो है पींजरा, जा में बस्तु बिरानी ।
आवत जावत कोइ न देख्यो, डूबि गयो बिनु पानी ।।१॥
राजा जैहैं रानी जैहैं, और जैहैं अभिमानी ।
जोग करंते जोगी जैहैं, कथा सुनंते ज्ञानी ॥ २ ॥

पापु पुन्न की हाट लगी है, धरम दंड दरबानी ।
पाँच सखी मिलि देखन आईं, एक से एक सियानो ॥३॥
चंदो जैहैं सुरजौ जैहैं, जैहैं पवन और पानी ।
कहैं कबीर इक भक्त न जैहैं, जिनकी मति ठहरानो ॥४॥

॥ शब्द ६९ ॥

मन तू क्यों भूला रे भाई । तेरी सुधि बुधि कहाँ हिराई ॥१॥
जैसे पंछी रैन बसेरा, बसै वृच्छ में आई ।
भोर भये सब आपु आपु को, जहाँ तहाँ उड़ि जाई ॥२॥
सुपने में तोहि राज मिल्यो है, हाकिम हुकम दुहाई ।
जागि पर्यो तब लाव न लसकर, पलक खुले सुधि पाई ॥३॥
मातु पिता बंधू सुत तिरिया, ना कोइ सगो सँगाई ।
यह तो सब स्वारथ के संगी, झूठी लोक बड़ाई ॥४॥
सागर माहीं लहर उठतु है, गनिता गनी न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, दरिया लहर समाई ॥५॥

॥ शब्द ७० ॥

मानत नहिं मन मोरा साधो, मानत नहिं मन मोरा रे ॥टेक॥
बार बार मैं कहि समुझावौं, जग में जीवन थोरा रे ॥१॥
या काया को गर्ब न कीजै, क्या साँवर क्या गोरा रे ॥२॥
बिना भक्ति तन काम न आवै, कोटि सुगंधि चभोरा रे ॥३॥
या माया जनि देखि रे भूलौ, क्या हाथी क्या घोड़ा रे ॥४॥
जोरि जोरि धन बहुत बिगूचे, लाखन कोटि करोरा रे ॥५॥
दुबिधा दुरमति औ चतुराई, जनम गयो नर बौरा रे ॥६॥

अजहूँ आनि मिलो सत संगति, सतगुरु मान निहोरा रे ॥७॥
लेत उठाइ परत भुइँ गिरिगिरि, ज्यों बालक बिन कोराँ*रे॥८॥
कहैं कबीर चरन चित राखो, ज्यों सूई बिच डोरा रे ॥९॥

॥ शब्द ७१ ॥

अवधू माया तजी न जाई ॥ टेक ॥
गृह को तजि के बस्तर बाँधा, बस्तर तजि के फेरी ।
लरिका तजि के चेला कीन्हा, तहुँ मति माया घेरी ॥१॥
जैसे बेल बाग में अरुझी, माँहि रही अरुझाई ।
छोरे से वह छूटै नाहीं, कोटिन करै उपाई ॥२॥
काम तजे तें क्रोध न जाई, क्रोध तजे तें लोभा ।
लोभ तजे अहंकार न जाई, मान बड़ाई सोभा ॥३॥
मन बैरागी माया त्यागी, सब्द में सुरत समाई ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, यह गम बिरले पाई ॥४॥

॥ शब्द ७२ ॥

नाम भजा सोइ जीता जग में, नाम भजा सोइ जीता रे ॥टेक
हाथ सुमिरिनी पेट कतरनी, पढ़े भागवत गीता रे ।
हिरदय सुद्ध किया नहिं बौरे, कहत सुनत दिन बीता रे ॥१॥
आन देव की पूजा कीन्ही, गुरु से रहा अमीता† रे ।
धन जोबन तेरा यहीं रहैगा, अंत समय चलि रीता‡रे॥२॥
बावरिया ने बावर डारो, फंद जाल सब कीता रे ।
कहत कबीर काल आइ खैहै, जैसे मृग को चीता रे ॥३॥

---

* गोद । † अजान । ‡ खाली ।

॥ शब्द ७३ ॥

दुलहिनी अँगिया काहे न धोवाई ॥ टेक ॥
बालपने की मैलो अँगिया, बिषय दाग परि जाई ॥१॥
बिन धोये पिय रीझत नाहीं, सेज से देत गिराई ॥ २ ॥
सुमिरन ध्यान कै साबुन करि ले, सत्त नाम दरियाई ॥३॥
दुबिधा के बँद खोल बहुरिया*, मन कै मैल धोवाई ॥४॥
चेत करो तीनों पन बीते, अब तो गवन नगिचाई ॥५॥
चालनहार द्वार हैं ठाढ़े, अब काहे पछिताई ॥६॥
कहत कबीर सुनो री बहुरिया, चित अंजन दे आई ॥७॥

॥ शब्द ७४ ॥

नाम सुमिरि पछितायगा ॥ टेक ॥
पापी जियरा लोभ करतु है, आज काल उठि जायगा ॥१॥
लालच लागी जनम गँवाया, माया भरम भुलायगा ॥२॥
धन जोबन का गर्ब न कीजै, कागद ज्यों गलि जायगा ॥३॥
जब जम आयकेस† गहि पटकै, ता दिन कछु न बसायगा ॥४॥
सुमिरन भजन दया नहिं कीन्ही, तो मुखचोट‡ खायगा ॥५॥
धर्मराय जब लेखा माँगे, क्या मुख लेके जायगा ॥ ६ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, साध संग तरि जायगा॥७॥

॥ शब्द ७५ ॥

अभागा तुम ने नाम न जाना ॥ टेक ॥
करिके कौल उहाँ से आयौ, इहवाँ भरम भुलाना ।
सत्त नाम बिसराय दियो है, मोह मया लिपटाना ॥१॥

---

* दुलिहन । † बाल । ‡ चोट ।

मात पिता सुत बंधु कुटुम्बी, और बहु माल खजाना।
बाँह पकरि जब जम लै चलिहै, सब ही होय बिगाना ॥२॥
लाल फूल सेमर लखे, सुगना लिपटाना।
मारत चुंच रुई उधियानों, फिर पाछे पछिताना ॥ ३ ॥
मानुस चोला पाइ कै, का करै गुमाना।
जस पानी कै बुलबुला, छिन माहिँ बिलाना ॥ ४ ॥
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, देखो जग बौराना।
अब के गये बहुरि नहिँ आवौ, लहौ जो सत परवाना ॥५॥

॥ शब्द ७६ ॥

मोरी चुनरी मे परि गयो दाग पिया ॥ टेक ॥
पाँच तत्त की बनी चुनरिया, सोरह से बँद लागे जिया ॥१॥
यह चुनरी मोरे मैके तेँ आई, ससुरे मेँ मनुवा खोय दिया॥२॥
मलि मलि धोई दाग न छूटे, ज्ञान को साबुन लाय पिया॥३॥
कहैँ कबीर दाग तब छुटिहै, जब साहेब अपनाय लिया ॥४॥

॥ शब्द ७७ ॥

गुरु से लगन कठिन है भाई।
लगन लगे बिन काज न सरिहै, जीव प्रलय होइ जाई ॥टेक॥
जैसे पपिहा प्यासा बुंद का, पिया पिया रटि लाई ॥
प्यासे प्रान तलफ दिन राती, और नीर ना भाई ॥ १ ॥
जैसे मिरगा सब्द सनेही, सब्द सुनन को जाई।
सब्द सुनै औ प्रान दान दे, तनिको नाहिँ डेराई ॥२॥

जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, पिय की राह मन भाई ।
पावक* देख डरे वह नाहीं, हँसत बैठ सरा* माई ॥३॥
दो दल सन्मुख आन जुड़े हैं, सूरा लेत लड़ाई ।
टूक टूक होइ गिरे धरनि पर, खेत छोड़ि नहिँ जाई ॥४॥
छोड़ो तन अपने की आसा, निर्भय ह्वै गुन गाई ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, नाहिँ तो जनम नसाई ॥५॥

॥ शब्द ७८ ॥

मेरा तेरा मनुआँ कैसे इक होई रे ॥टेक॥
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी ।
मैं कहता सुरझावनहारी, तू राख्यो उरझाइ रे ॥ १ ॥
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोइ रे ।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोहि रे ॥ २ ॥
जुगन जुगन समुझावत हारा, कही न मानत कोइ रे ।
तू तो रंडी फिरै बिहंडी, सब धन डारे खोइ रे ॥ ३ ॥
सतगुरु धारा निर्मल बाहै, वा में काया धोइ रे ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, तब ही वैसा होइ रे ॥४॥

॥ शब्द ७९ ॥

अवधू अंध कूप अँधियारा ॥ टेक ॥
या घट भीतर सात समुंदर, याही में नद्दी नारा ॥१॥
या घट भीतर कासी द्वारिका, याही में ठाकुरद्वारा ॥२॥

---

* आग ।

या घट भीतर चंद्र सूर है, याहि में नौ लख तारा ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, याही में सत करतारा ॥४॥

॥ शब्द ८० ॥

जाग री मेरी सुरत सोहागिन जाग री ॥ टेक ॥
का तुम सोवत मोह नींद में, उठि के भजनियाँ में लाग री ॥१॥
चित से सब्द सुनो सरवन दै, उठत मधुर धुनराग री ॥२॥
दोउ कर जोरि सीस चरनन दै, भक्ति अचल बर माँग री ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, जक्त पीठ दै भाग री ॥४॥

॥ शब्द ८१ ॥

भजो हो सतगुरु नाम उरी* ॥ टेक ॥
जप तप साधन कछु नहिं लागत, खर्चत ना गठरी ॥१॥
संपति संतति सुख के कारन, या सों भूलि परी ॥२॥
जेहि मुख सत्त नाम नहिं निकसत, सो मुख धूरि परी ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन सुधरी ॥४॥

॥ शब्द ८२ ॥

अवधू भूले को घर लावे, सो जन हम को भावे ॥टेक॥
घर में जोग भोग घर ही में, घर तजि बन नहिं जावे
बन के गये कलपना उपजे, तब धौं कहाँ समावे ॥ १ ॥
घर में जुक्ति मुक्ति घर ही में, जो गुरु अलख लखावे ॥
सहज सुन्न में रहै समाना, सहज समाधि लगावे ॥२॥

---

* हृदय से।

उनमुनि रहै ब्रह्म को चीन्है, परम तत्त को ध्यावै ।
सुरत निरत सौं मेला करिके, अनहद नाद बजावै ॥३॥
घर में बसत बस्तु भी घर है, घर ही बस्तु मिलावै ।
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, ज्यौं का त्यौं ठहरावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८३ ॥

को जाने बात पराये मन की ॥ टेक ॥
रात अँधेरी चोरा डाँटै, आस लगाये पराये धन की ॥१॥
आँधर मिरग बनै बन डोलै, लागो बान खबर ना तनकी॥२॥
महा मोह की नींद परी है, चूनर लेगा सुहागिल तन की ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु जाने हैं पराये मन की॥४॥

॥ शब्द ८४ ॥

समुझ नर मूढ़ बिगारी रे ॥ टेक ॥
आया लाहा कारने तैं, क्यौं पूँजी हारी रे ॥ १ ॥
गर्भ बास बिनती करी, सो तैं आन बिसारी रे ॥ १ ॥
माया देख तू भूलिया, और सुन्दर नारी रे ॥ ३ ॥
बड़े साह आगे गये, ओछा ब्यौपारी रे ॥ ४ ॥
लौंग सुपारी छाँड़ि के, क्यौं लादी खारी* रे ॥५॥
तीरथ बरत में भटकता, नहिं तत्त बिचारी रे ॥ ६ ॥
आन देव को पूजता, तेरी होगी ख्वारी रे ॥ ७ ॥

---

* नोन ।

क्या लाया क्या ले चला, करि पल्ला भारी रे ॥ ८ ॥
कहैं कबीर जग यों चला, जस हारा जुआरी रे ॥ ९ ॥

॥ शब्द ८५ ॥

हिलि मिलि मंगल गाओ मोरी सजनी, भई प्रभात*
बीति गई रजनी† ॥१॥
नाचे कूदे क्या होय भैना‡, सतगुरु सब्द समुझ ले सैना ॥२॥
स्वाँसा तारी सुरत सँग लाओ, तब हंसा अपना घर पाओ ॥३॥
अधर निरंतर फूलि फुलवारी, मनसा मारि करो रखवारी॥४॥
अमी सींच अमृत फल लागा, पावैगा कोइ संत सुभागा ॥५॥
कहैं कबीर गूँगे की सैना, अमी महा रस चाखे नैना ॥६॥

॥ शब्द ८६ ॥

सचमुच खेल ले मैदाना ॥ टेक ॥
सब्द गुरू को दृढ़ करि बाँधो, सुरति की खींच कमाना ।
कड़ाबीन करु मन को बस करि, मारो मोह निदाना ॥१॥
फाका फरी ज्ञान का गदका, बाँधि मरहटी बाना ।
सनमुख जाय लड़े जो कोई, वही सूर मरदाना ॥२॥
रंजक ध्यान ज्ञान की पट्टी, प्रेम बरूद खजाना ।
भरि भरि तोप झड़ाझड़ मारो, लूटो मुलुक बिगाना ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, प्रेम में हो मस्ताना ।
अमर लोक में डेरा दे के, सतगुरु हना§ निसाना ॥४॥

---

* सुबह । † रात । ‡ बहिन । § मारा ।

॥ शब्द ८७ ॥

भजु मन नाम उमिर रहि थोड़ी ॥ टेक ॥

चारि जने मिलि लेन को आये, लिये काठ की घोड़ी ।
जोरि लकड़िया फूँक अस दीन्हो, जस बृन्दाबन कीहोरी ॥१॥
सासमहल के दस दरवाजे, आन काल ने घेरी ।
आगर तोड़ी नागर तोड़ी, निकसे प्रान खुपड़िया फोड़ी ॥२॥
पाटी पकरि वाकी माता रोवै, बहियाँ पकरि सग भाई ।
लट छिटकाये तिरियारोवै, बिछुरत है मेरी हंस की जोड़ी ३
सत्तनाम का सुमिरन करि ले, बाँध गाँठ तू पोढ़ी ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, जिन जोड़ी तिन तोड़ी ॥४॥

॥ शब्द ८८ ॥

अरे मन मूरख खेतीवान, जतन बिन मिरगन खेत उजाड़ा ॥ टेक ॥

पाँच मिरग पच्चीस मिरगनी, ता मैं एक सिँगारा* ।
अपने अपने रस के भोगी, चरन फिरैं† न्यारा न्यारा ॥१
काम क्रोध दुइ मुख्य मिरग हैं, नित उठि चरत सबारा ।
मारे मरैं टरैं नहिं टारे, बिड़वत नाहिं बिडारा‡ ॥२॥
अति परचंड महा दुख दारुन, बेद सास्त्र पचि हारा ।
प्रेम बान लै चढ़ेव पराधी,§ भाव भक्ति करि मारा ॥३॥
सत की बेड़ धर्म‖ की खाईं, गुरुका सब्द रखारा¶ ।
कहैं कबीर चरन नहिं पावैं, अब की बार सम्हारा ॥४।

*सींग वाला । †सबेरे । ‡ हाँकने से । § शिकारी । ‖ चारदीवारी । ¶ रखवारा ।

॥ शब्द ८९ ॥

ना जानें तेरा साहेब कैसा है । टेक ॥

मसजिद्‌ भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहेब तेरा बहिरा है ।
चिउँटी के पग नेवर बाजै, सो भी साहेब सुनता है ॥१॥
पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है ।
अंतर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहेब लखता है ॥२॥
ऊँचा नीचा महल बनाया, गहिरी नैव जमाता है ।
चलने का मनसूबा नाहीं, रहने को मन करता है ॥३॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ि जमीं में धरता है ।
जिस लहना है सो ले जैहै, पापी बहि बहि मरता है ॥४॥
सतवन्ती को गजी मिलै नहिं, बिस्या पहिरे खासा है ।
जेहि घर साधू भीख न पावै, भडुवा खात बतासा है ॥५॥
हीरा पाय परख नहिं जानै, कौड़ी परखन करता है ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, हरि जैसे को तैसा है ॥६॥

॥ शब्द ९० ॥

मुखड़ा क्या देखै दर्पन में, तेरे दया धरम नहिं तन में ॥टेक॥

आम की डार कोइलिया बोलै, सुगना बोलै बन में ।
घरबारी तो घर में राजी, फक्कड़ राजी बन में ॥ १ ॥
ऐंठी धोती पाग लपेटी, तेल चुआ जुलफन में ।
गली गली की सखी रिझाई, दाग लगाया तन में ॥२॥
पाथर की इक नाव बनाई, उतरा चाहे छिन में ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, वे क्या चढ़ेंगे रन में ।

॥ शब्द ६१ ॥

करम गति टारे नाहिँ टरी ॥ टेक ॥

मुनि बसिष्ट से पंडित ज्ञानी, सोध के लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथ को, बन में बिपति परी* ॥१॥
कहँ वह फंद कहाँ वह पारधि†, कहँ वह मिरग चरी*।
सीता को हरि ले गयो रावन, सोने की लंक जरी* ॥२॥
नीच हाथ हरिचन्द‡ बिकाने, बलि§ पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग, गिरगिट जोनि परी‖ ॥३॥

---

* रामचन्द्र जी का बनोबास, उनके पिता दसरथ का उनके वियोग में प्रान तजना, मारीच को मृगा बना कर रावन का सीताजी को चुरा ले जाना और फिर रामचन्द्र का रावन को मारना और लंका को जलाना यह कथा प्रायः सब लोग जानते हैं।

† शिकारी।

‡ राजा हरिश्चन्द्र भारी दानी और सत्यवादी थे जिन्होंने विश्वामित्र जी को अपना सब राज पाट यज्ञ की दच्छिना में दे दिया इस पर मुनि जी ने तीन भार सोना दान-प्रतिष्ठा का अपना और निकाला। राजा हरिश्चन्द्र ने उस के लिये काशी में जाकर अपने को एक डोमड़े के हाथ और अपनी स्त्री और पुत्र को एक ब्राह्मण के हाथ बेच कर मुनि जी को संतुष्ट किया।

§ राजा बलि बड़े प्रतापी और दानी थे जिनके द्वारे पर आप भगवान बौना भेष धर कर तीन परग पृथ्वी माँगने गये जब राजा बलि ने संकल्प करदिया तब भगवान ने बैराट रूप धारन करके एक परग में स्वर्गादिक और एक मे सारी पृथ्वी नाप ली कहा कि अब बाकी तीसरा परग देव। राजा ने अपना शरीर भेंट किया जिसे तीसरे परग से नाप कर भगवान ने उन्हें अमर करके पाताल का राज दिया।

‖ राजा नृग रोज एक लाख गऊ दान दिया करते थे। एक बार कोई गऊ जो पहिले दिन दान हो चुकी थी नई गउवोँ में आ मिली और राजा ने उसे अनजान मे दूसरे ब्राह्मन को संकल्प कर दिया। इस पर पहिले और दूसरे दिन के दान पाने वाले ब्राह्मनाँ मे झगड़ा मचा और दोनों राजा के पास न्याव को गये। दोनों वही गऊ लेने पर हठ करते थे इस लिए राजा की बुद्धि चकराई

पाँडव जिन के आपु सारथी, तिन पर बिपति परी* ।
दुरजोधन को गर्ब घटाये, जदु कुल नास करी* ॥४॥
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा, बिधि संजोग परी ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, होनी होके रही ॥ ५ ॥

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

साधो एक आपु जग माहीं ।
दूजा करम भरम है किर्तम, ज्यों दर्पन में छाहीं ॥टेक॥
जल तरंग जिमि जल तें उपजे, फिर जल माहिं रहाई ।
काया झाँई पाँच तत्त की, बिनसे कहाँ समाई ॥ १ ॥
या बिधि सदा देह गति सब की, या बिधि मनहिं बिचारो ।
आया होय न्याव करि न्यारो, परम तत्व निरवारो ॥२॥
सहजे रहै समाय सहज में, ना कहुँ आय न जावै ।
धरै न ध्यान करै नहिं जप तप, राम रहीम न गावै ॥३॥
तीरथ बर्त सकल परित्यागै, सुन्न डोरि नहिं लावै ॥
यह धोखा जब समुझि परै तब, पूजै काहि पुजावै ॥४॥

और सोच में पड़ कर दोनों की दलील पर सिर हिला देते। इस पर उन ब्राह्मनों ने सराप दिया कि तुम गिरगिट की तरह सिर हिलाते हो वही बन जावगे। इस लिये राजा नृग मरने पर गिरगिट की जोनि पाकर एक अंधे कुएँ में पड़े हुए थे जब कृश्नावतार हुआ तब श्री कृश्न ने उनको तारा।

* पांडवों के रथ पर श्रीकृश्न महाभारत की लड़ाई में आप सारथी बने और दुरजोधन का घमंड तोड़ा और कौरवों के कुल का और परम धाम सिधारने के पहिले अपने जदु कुल का नाश किया। पांडवों पर यह बिपति पड़ी थी कि अपना सब राज पाट अपनी स्त्री द्रोपदी सहित कौरवों के हाथ जुए में हार गये और मुद्दत तक बनोबास में कष्ट उठाया।

जोग जुगत तें भरम न छूटै, जबलग आप न सूझै ।
कहैं कबीर सोइ सतगुरु पूरा, जो कोई समुझै बूझै ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

साधो एक रूप सब माहीं ।
अपने मनहिं बिचारि के देखो, और दूसरो नाहीं ॥ टेक ॥
एकै तुचा रुधिर पुनि एकै, बिप्र सूद्र के माहीं ।
कहीं नारि कहिं नर होइ बोलैं, गैब पुरुष वह आहीं ॥१॥
आपै गुरु होय मंत्र देत हैं सिष होय सवै सुनाहीं ।
जो जस गहै लहै तस मारग, तिन के सतगुरु आहीं ॥२॥
सब्द पुकार सत्त मैं भाषौं, अंतर राखौं नाहीं ।
कहैं कबीर ज्ञान जेहि निर्मल, बिरले ताहि लखाहीं ॥३॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो को है कहँ से आयो ॥ टेक ॥
खात पियत को बोलत डोलत, वाको अंत न पायो ।
केहि के मन धौं कहाँ बसतु है, को धौं नाच नचायो ॥१॥
पावक सर्ब अंग काठहिं में, को धौं डहकि जगायो ।
होइ गयो खाक तेज पुनि वा को, कहु धौं कहाँ समायो ॥२॥
भानु प्रकास कूप जल पूरन, दृष्टि दरस जो पायो ।
आभा करम अंत कछु नाहीं, जोति खींच ले आयो ॥३॥
कहै अपार पार कछु नाहीं, सतगुरु जिन्हे लखायो ।
कहैं कबीर जेहि सूझ बूझ जस, तेइ तस भाष सुनायो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सहजे कायासाधो ।
करता आप आपु में करता, लख मन को परमोधो ॥टेक॥
जैसे बट का बीज ताहि में, पत्र फूल फल छाया ।
काया मद्धे बुन्द बिराजै, बुन्दै मद्धे काया ॥१॥
अग्नि पवन पानी पिरथी नभ, ता बिनु मेला नाहीं ।
काजी पंडित करो निबेरा, का के माहिँ न साँईं ॥२॥
साँचे नाम अगम की आसा, है वाही में साँचा ।
करता बीज लिये है खेतै, त्रिगुन तीन तत पाँचा ॥३॥
जल भरि कुम्भ जलै बिच धरिया, बाहर भीतर सोई ।
उनको नाम कहन को नाहीं, दूजा धोखा होई ॥ ४ ॥
कठिन पंथ सतगुरु को मिलना, खोजत खोजत पाया ।
इक लग खोज मिटी जब दुबिधा, ना कहुँ गया न आया ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सत्त सब्द निज सारा ।
आपा मद्धे आपै बोलै, आपै सिरजनहारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

साधो दुबिधा कहँ से आई ।
नाना भाव बिचार करतु है, कौने मतिहिं चोराई ॥टेक॥
ऋग* कहै निराकार निरलेपी, अगम अगोचर साँईं ।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, रूप बरन कछु नाहीं ॥१॥
जजुर* कहै सरगुन परमेसुर, दस औतार धराया ।
गोपिन के संग रहस रचो है, सोई पुरानन गाया ॥२॥

* एक बेद का नाम ।

साम* कहै वह ब्रह्म अखंडित, और न दूजा कोई।
आपै अपरम अवगति कहिये, सत्त पदारथ सोई ॥३॥
अथरवन* कहै परो पथ दीसै, सत्त पदारथ नाहीं।
जे जे गये बहुरि नहिं आये, मरि मरि कहाँ समाहीं ॥४॥
यह परमान सभन कै लीन्हा, ज्यौं अँधरन को हाथी।
अछै बाप की खबर न जानी, पुत्र हुता नहिं साथी ॥५॥
जा प्रकार अँधरे को हाथी, या बिधि बेद बखानै।
अपनी अपनी सब कोइ भाषै, का को ध्यानहिं ठानै ॥६॥
साँच अहै अँधरे को हाथी, और साँचे हैं सगरे।
हाथ की टोई साषि कहतु हैं, हैं आँखिन के अँधरे ॥७॥
सब्द अतीत सब्द सो अपना, बूझै बिरला कोई।
कहैं कबीर सतगुरु की सेना,† आप मिटे तब सोई ॥८॥

॥ शब्द ६ ॥

सार सब्द गहि बाचिहौ‡ मानो इतबारा ॥ १ ॥
सत्तपुरुष अच्छै बिरिछ निरंजन डारा ॥ २ ॥
तीन देव साखा भये पाती संसारा ॥ ३ ॥
ब्रह्मा बेद सही किया सिव जोग पसारा ॥ ४ ॥
बिस्नु माया परगट किया उरले§ ब्योहारा ॥ ५ ॥
तिरदेवा ब्याधा‖ भये लिये बिष कर चारा ॥ ६ ॥
कर्म की बंसी डारि के फाँसा संसारा ॥ ७ ॥

---

* एक बेद का नाम है। † इशारा। ‡ बचोगे। § पहिला। ‖ चिड़ीमार।

जोति सरूपी हाकिमा जिन अमल पसारा ॥ ८ ॥
तीन लोक दसहूँ दिसा जम रोके द्वारा ॥ ९ ॥
अमल मिटावैाँ ताहि को पठवैाँ भव पारा ॥१०॥
कहैं कबीर अमर करैाँ जो होय हमारा ॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥

महरम होय सो जाने साधो, ऐसा देस हमारा ॥ टेक ॥
बेद कतेब पार नहिं पावत, कहन सुनन से न्यारा ।
जाति बरन कुल किरिया नाहीं, संध्या नेम अचारा ॥१॥
बिन जल बूंद परत जहँ भारी, नहिं मीठा नहिं खारा ।
सुन्न महल में नौबत बाजे, किंगरी बीन सितारा ॥२॥
बिन बादर जहँ बिजुरी चमकै, बिन सूरज उँजियारा ।
बिना सीप जहँ मोती उपजै, बिन सुर सब्द उचारा ॥३॥
जोति लजाय ब्रह्म जहँ दरसै, आगे अगम अपारा ।
कहैं कबीर वहँ रहनि हमारी, बूझै गुरुमुख प्यारा ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

अबधू बेगम देस हमरा ॥ टेक ॥
राजा रंक फकीर बादसा, सब से कहौं पुकारा ।
जो तुम चाहत अहौ परम पद, बसिहो देस हमारा ॥१॥
जो तुम आये झीने होइ के, तजो मनी को भारा ।
ऐसी रहनि रहो रे गोरख,* सहज उतरि जाव पारा ॥२॥
सतनाम की हैं महताबैं, साहेब के दरबारा ॥ ३ ॥
बचना चाहो कठिन काल से, गहो सब्द टकसारा ।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, सतनाम है सारा ॥४॥

---

* गोरखनाथ जोगी कबीर साहेब के समय मे थे ।

॥ शब्द ९ ॥

जहवाँ से आयो अमर वह देसवा ॥ टेक ॥
पानी न पौन न धरती अकसवा ।
चाँद न सूर न रैन दिवसवा ॥ १ ॥
बाम्हन क्षत्री न सूद्र बैसवा ।
मुगल पठान न सैयद सेखवा ॥ २ ॥
आदि जोति नहिँ गौर गनेसवा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस न सेसवा ॥ ३ ॥
जोगी न जंगम मुनि दुरवेसवा ।
आदि न अन्त न काल कलेसवा ॥ ४ ॥
दास कबीर ले आये सँदेसवा ।
सार सब्द गहि चलो वहि देसवा ।

॥ शब्द १० ॥

मोतिया बरसै रौरे देसवाँ दिन राती ॥ टेक ॥
मुरली सब्द सुन मन आनँद भयो, जोति बरै बिनु बाती ।
बिना मूल के कमल प्रगट भयो, फुलवा फुलत भाँति भाँती ॥१॥
जैसे चकोर चन्द्रमा चितवै, जैसे चातृक स्वाँती ।
तैसे संत सुरति के होइके, होइगे जनम सँघाती ॥२॥
या जग में बहु ठग लागतु हैँ पर धन हरत न डेराती ।
कहैँ कबीर जतन करो साधो, सत्तगुरू की थाथी ॥३॥

॥ शब्द ११ ॥

नहरवा हमकाँ नहिँ भावै ॥ टेक ॥
साँई की नगरी परम अति सुन्दर, जहँ कोई जाय न आवै ।
चाँद सुरज जहँ पवन न पानी, को सँदेस पहुँचावै,
दरद यह साँई को सुनावै ॥ १ ॥

आगे चलौं पंथ नहि सूझै, पीछे दोष लगावे।
केहि बिधि ससुरे जावँ मोरी सजनी, बिरहा जोर जनावै,
बिषै रस नाच नचावै ॥२॥
बिन सतगुरु अपनो नहिं कोई, जो यह राह बतावे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, सपने न प्रीतम पावे,
तपन यह जिय की बुझावे ॥३॥

॥ शब्द १२ ॥

गगन मठ गैब निसान गड़े ॥ टेक ॥
गुदा* मैं मेख सेस सिर ऊपर, डेरा अचल खड़े ॥ १ ॥
चंद्रहार चँदवा जहँ टाँगे, मुकृता मनिक मढ़े ॥ २ ॥
महिमा तासु देख मन थिर करि, रबि ससि जोति जड़े ॥३॥
रहत हजूर पूर पद सेवत, समरथ ज्ञान बड़े ॥ ४ ॥
संत सिपाही करैं चाकरी, जेहि दरबार अड़े ॥ ५ ॥
बिना नगाड़े नौबत बाजै, अनहद सब्द झरें ॥ ६ ॥
कहैं कबीर पियै जोई जन, माता+ फिरत मरे ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

वा घर की सुध कोइ न बतावैं, जा घर से
जिव आया हो ॥ टेक ॥
धरती अकास पवन नहि पानी, नहिं तब आदी माया हो १ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस नहीं तब, जीव कहाँ से आया हो ॥२॥
पानी पवन के दहिया जमायो, अगिन के
जामन दीन्हा हो ॥ ३ ॥

---

* बानी में ठेठ हिन्दी शब्द गुदा का लिखा है। माता = मस्त। दूसरा पाठ यों है "ममता तुरत हरे"।

चाँद सुरज दोउ बने अहीरा, मथि दहिया
घिउ काढ़ा हो ॥ ४ ॥
ये मनसा माया के लोभी, बारबार पछिताया हो ॥ ५ ॥
लख नहिं परै नाम साहेब का, फिर फिर
भटका खाया हो ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, वह घर बिरले पाया हो ॥७॥

॥ शब्द १४ ॥

गगन घटा घहरानी साधो, गगन घटा घहरानी ॥टेक॥
पूरब दिसि से उठी बदरिया, रिमझिम बरसत पानी ।
आपन आपन मेंड़ि सम्हारो, बह्यो जात यह पानी ॥१॥
मन के बैल सुरति हरवाहा, जोत खेत निर्बानी ।
दुबिधा दूब छोल करु बाहर, बोवो नाम की धानी ॥ २ ॥
जोग जुक्ति करि करु रखवारी, चर न जाय मृग धानी ।
बाली झार कूटि घर लावै, सोई कुसल किसानी ॥ ३ ॥
पाँच सखी मिलि कीन्ह रसोइयाँ, एक से एक सयानी ।
दूनौं थार बराबर परसे, जेवैं मुनि अरु ज्ञानी ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निर्बानी ।
जो या पद को परचा पावै, ता को नाम बिज्ञानी ॥५॥

॥ शब्द १५॥

झीनी झीनी बीनी चदरिया ॥ टेक ॥
काहे के ताना काहे के भरनी, कौने तार से बीनी
चदरिया ॥ १ ॥

इँगला पिँगला ताना भरनी, सुषमन तार से बीनी
चदरिया ॥ २ ॥
आठ कँवल दल चरखा डोलै, पाँच तत्त गुन तीनी
चदरिया ॥ ३ ॥
साँई को सियत मास दस लागे,
ठोक ठोक के बीनी चदरिया ॥ ४ ॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी,
ओढ़ि के मैली कीन्ही चदरिया ॥ ५ ॥
दास कबीर जतन से ओढ़ी,
ज्योँ की त्योँ धर दीन्ही चदरिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

फल मीठा पै ऊँचा तरवर*, कौनि जतन करि लीजै ।
नेक† निचोइ सुधारस वा को, कौनि जुगति से पीजै ॥१॥
पेड़ बिकट‡ है महा सिलहिला, अगह गह्यो नहिँ जावै ॥
तन मन डारि चढ़ै सरधा से, तब वा फल को खावै ॥२॥
बहुतक लोग चढ़ै बिन भेदै, देखा देखी याँहीँ ।
रपटि पाँव गिरि परे अधर तेँ, आइ परे भुइँ माहीँ ॥३॥
सत्त सब्द के खूँटे धरि पग, गहि गुरु-ज्ञानहिँ डोरा ।
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, तब वा फल को तोरा ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

मुनियाँ पिँजड़े वाली ना, तेरो सतगुरु है बेवपारी ॥टेक॥
पाँच तत्त का बना पीँजड़ा, ता में रहती मुनियाँ ।
उड़ि के मुनियाँ डार पै बैठी, झाँखन लागी सारी दुनियाँ॥१

---

* पेड़ । † थोड़ा सा । ‡ कठिन, अड़बड़ । § फिसलाने वाला ।

अलग डार पर बैठी मुनियाँ, पिये प्रेम रस बूटी ।
क्या करिहै जमराज तिहारो, नाम कहत तन छूटो ॥२॥
मुनियाँ की गति मुनियाँ जाने, और कहै सब झूठो ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन की भूखी ॥३॥

॥ शब्द १८ ॥

पिया ऊँची रे अटरिया तोरी देखन चली ॥ टेक ॥
ऊँची अटरिया जरद किनरिया, लगी नाम की डोरी ।
चाँद सुरज सम दियना बरतु है, ता बिच भूली डगरिया ॥१॥
पाँच पचीस तीन घर बनियाँ, मनुवाँ है चौधरिया ।
मुन्सी है कुतवाल ज्ञान को, चहुँ दिस लागी बजरिया ॥२॥
आठ मरातिब दस दर्वाजा, नौ में लगीं किवरिया ।
खिरकी बैठ गोरी चितवन लागी, उपराँ झाँप झोपरिया ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु के चरन बलिहरिया ॥
साध संत मिलि सौदा करि हैं, झाँखै मूरख अनरिया ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

रस गगन गुफा में अजर झरै ॥ टेक ॥
बिन बाजा झनकार उठै जहँ, समुझि परै जब ध्यान धरै ॥१॥
बिना ताल जहँ कँवल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केल करै ॥२॥
बिन चंदा उँजियारी दरसै, जहँ तहँ हंसा नजर परै ॥३॥
दसवँ द्वारे ताड़ी लागी, अलख पुरुष जाको ध्यान धरै ॥४॥
काल कराल निकट नहिं आवै, काम क्रोध मद लोभ जरै ॥५॥
जुगन जुगन की तृषा बुझानी, कर्म भर्म अघ ब्याधि टरै ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, अमर होय कबहूँ न मरै ॥७॥

॥ शब्द २० ॥

मुरसिद नैनोँ बीच नबी है ।
स्याह सपेद तिलोँ बिच तारा, अविगत अलख रबी है॥टेक॥
आँखी मद्धे पाँखी चमकै, पाँखी मद्धे द्वारा ।
तेहि द्वारे दुर्बीन लगावै, उतरै भौजल पारा ॥ १ ॥
सुन्न सहर में बास हमारी, तहँ सरबंगी जावै ।
साहेब कबीर सदा के संगी, सब्द महल ले आवै ॥ २ ॥

॥ शब्द २१ ॥

सत्त सुकृत सतनाम जक्त जानै नहीं ।
बिना प्रेम परतीत कहा मानै नहीं ॥ १ ॥
जिव अनंत संसार न चीन्हत पीव को ।
कितना कह समझाय चौरासि क जोव को ॥ २ ॥
आगे धाम अखंड सो पद निर्बान है ।
भूख नींद वहँ नाहिँ निअच्छर नाम है ॥३॥
कहैँ कबीर पुकारि सुनो मन भावना ।
हंसा चलु सतलोक बहुरि नहिँ आवना ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

कर नैनोँ दीदार महल में प्यारा है ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद लोभ बिसारो, सील सँतोष छिमा सत धारो ।
मद्द मांस मिथ्या तजि डारो,
हो ज्ञान घोड़े असवार भरम से *न्यारा है ॥१॥

---

* मालिक ।

धोती नेती बस्ती पाओ, आसन पदम जुगत से लाओ ।
कुम्भक कर रेचक करवाओ,
पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है ॥ २ ॥
मूल कँवल दल चतुर बखानो, कलिंग जाप लाल रँग मानो ।
देव गनेस तहँ रोपा थानो,
ऋध सिध चँवर ढुलारा है ॥ ३ ॥
स्वाद चक्र षटदल बिस्तारो, ब्रह्म* सावित्री रूप निहारो ।
उलटि नागिनी का सिर मारो,
तहाँ सब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥
नाभी अष्ट कंवल दल साजा, सेत सिंघासन बिस्नु बिराजा ।
हिरिंग जाप तासु मुख गाजा,
लछमी सिव आधारा है ॥ ५ ॥
द्वादस कँवल हृदय के माहीं, जंग गौर सिव ध्यान लगाईं ।
सोहं शब्द तहाँ धुन छाई,
गन करैं जैजैकारा है ॥ ६ ॥
दो दल कँवल कंठ के माहीं, तेहि मध बसे अबिद्या बाई ।
हरि हर ब्रह्मा चँवर ढुराई,
जहँ श्रँग नाम उचारा है ॥ ७ ॥
ता पर कंज कँवल है भाई, बग भौंरा† दुइ रूप लखाई ।
निज मन करत तहाँ ठकुराई,
सो नैनन पिछवारा है ॥ ८ ॥

---

* ब्रह्मा । † बकुला और भौंरा अर्थात सेत-श्याम पद ।

कँवलन भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मँझारा ॥
सतसँग कर सतगुरु सिर धारा,
वह सत नाम उचारा है ॥ ९ ॥

आँख कान मुख बन्द कराओ, अनहद झिंगा शब्द सुनाओ।
दोनों तिल इक तार मिलाओ,
तब देखो गुलजारा है ॥ १० ॥

चंद सूर एकै घर लाओ, सुषमन सेती ध्यान लगाओ।
तिरवेनी के संध* समाओ,
भौर उतर चल पारा है ॥ ११ ॥

घंटा संख सुनो धुन दोई, सहस कँवल दल जगमग होई।
ता मध करता निरखो सोई,
बंकनाल धस पारा है ॥ १२ ॥

डाकिनी साकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धर्म दूत हकारें।
सत्तनाम सुन भागें सारे,
जब सतगुरु नाम उचारा है ॥ १३ ॥

गगनमँडल बिच उर्धमुख कुइया, गुरुमुख साधू भरभर पीया।
निगुरे प्यास मरे बिन कीया,†
जा के हिये अँधियारा है ॥ १४ ॥

त्रिकुटी महल में बिद्या सारा, घनहर‡ गरजैं बजे नगारा।
लाल बरन सूरज उँजियारा,
चतुरकँवल मँझार सब्द ओंकारा है ॥१५॥

---

* संगम । † करनी । ‡ बादल ।

साध सोई जिन यह गढ़ लीन्हा, नौ दरवाजे परगट चीन्हा।
दसवाँ खोल जाय जिन दीन्हा,
जहाँ कुलुफ* रहा मारा है ॥ १६ ॥
आगे सेत सुन्न है भाई, मानसरोवर पैठि अन्हाई।
हंसन मिलि हंसा होइ जाई,
मिलै जो अमी अहारा है ॥ १७ ॥
किंगरी सारँग बजै सितारा, अच्छर ब्रह्म सुन्न दरबारा।
द्वादस भानु हँस उँजियारा,
खट दल कवल मँझार सब्द ररंकारा है ॥१८॥
महा सुन्न सिंध बिषमो घाटी, बिन सतगुरु पावै नहिं बाटी।
ब्याघर† सिंघ सरप बहु काटी,
तहँ सहज अचिंत पसारा है ॥ १९ ॥
अष्ट दल कँवल पारब्रह्म भाई, दहिने द्वादस अचिंत रहाई।
बायें दस दल सहज समाई,
योँ कँवलन निरवारा है ॥ २० ॥
पाँच ब्रह्म पाँचो अँड बीनो, पाँच ब्रह्म निःअच्छर चीन्हो।
चार मुकाम गुप्त तहँ कीन्हो,
जा मध बंदीवान पुरुष दरबारा है ॥ २१ ॥
दो पर्बत के संध निहारो, भँवर गुफा तेँ संत पुकारो।
हंसा करते केल अपारो,
तहाँ गुरन दरबारा है ॥ २२ ॥
सहस अठासी दीप रचाये, हीरे पन्ने महल जड़ाये।
मुरली बजत अखंड सदाये,
तहँ सोहं झनकारा है ॥ २३ ॥

---

* कुफ़ुल=ताला। † बाघ।

सोहं हद्द तजी जब भाई, सत्त लोक की हद पुनि आई।
उठत सुगंध महा अधिकाई,
जा को वार न पारा है ॥ २४ ॥
षोडस भानु हंस को रूपा, बीना सत धुन बजै अनूपा।
हंस करत चँवर सिर भूपा,
सत्त पुरुष दर्बारा है ॥ २५ ॥
कोटिन भानु उदय जो होई, एते ही पुनि चंद्र लखोई।
पुरुष रोम सम एक न होई,
ऐसा पुरुष दीदारा है ॥ २६ ॥
आगे अलख लोक है भाई, अलख पुरुष की तहँ ठकुराई।
अरबन सूर रोम सम नाहीं,
ऐसा अलख निहारा है ॥ २७ ॥
ता पर अगम महल एक साजा, अगम पुरुष ताहि को राजा।
खरबन सूर रोम एक लाजा,
ऐसा अगम अपारा है ॥ २८ ॥
ता पर अकह लोक है भाई, पुरुष अनामी तहाँ रहाई।
जो पहुँचा जानेगा वाही,
कहन सुनन ते न्यारा है ॥ २९ ॥
काया भेद किया निर्बारा, यह सब रचना पिंड मँझारा।
माया अवगति जाल पसारा,
सो कारीगर भारा है ॥ ३० ॥
आदि माया कीन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिंड दिखाई।
अवगति रचन रची अँड माहीं,
ता का प्रतिबिंब डारा ॥ ३१ ॥

सब्द बिहंगम चाल हमारी, कहैं कबीर सतगुरु दइ तारी।
खुले कपाट सब्द झनकारी,
पिंड अंड के पार सो देस हमारा है ॥३२॥

॥ शब्द २३ ॥

कर नैनों दीदार यह पिंड से न्यारा है।
तू हिरदे सोच बिचार यह अंड मँझारा है ॥ टेक ॥
चोरी जारी* निंदा चारो, मिथ्या तज सतगुरु सिर धारो।
सतसँग कर सत नाम उचारो,
सब सनमुख लहो दीदारा है ॥ १ ॥
जे जन ऐसी करी कमाई, तिनकी फैली जग रोसनाई।
अष्ट प्रमान जगह सुख पाई,
तिन देखा अंड मँझारा है ॥ २ ॥
सोई अंड को अवगत राई, अमर कोट अकह नकल बनाई।
सुद्ध ब्रह्म पद तहँ ठहराई,
सो नाम अनामी धारा है ॥ ३ ॥
सतवीं सुन्न अंड के माहीं, झिलमिलहट की नकल बनाई।
महा काल तहँ आन रहाई,
सो अगम पुरुष उच्चारा है ॥ ४ ॥
छठवीं सुन्न जो अंड मँझारा, अगम महल की नकल सुधारा।
निरगुन काल तहाँ पग धारा,
सो अलख पुरुष कहु न्यारा है ॥ ५ ॥

---

* पर स्त्री गमन।

पंचम सुन्य जो अंड के माहीं, सत्तलोक की नकल बनाई।
माया सहित निरंजन राई,
सो सत्त पुरुष दीदारा है ॥ ६ ॥
चौथी सुन्न अंड के माहीं, पद निर्बान की नकल बनाई।
अविगत कला है सतगुर आई।
सो सोहं पद सारा है ॥ ७ ॥
तीजी सुन्न की सुनो बड़ाई, एक सुन्न के दोय बनाई।
ऊपर महासुन्न अधिकाई,
नीचे सुन्न पसारा है ॥ ८ ॥
सतवीं सुन्न महाकाल रहाई, तासु कला महासुन्न समाई।
पारब्रह्म कर थाप्यो ताही,
सो निःअच्छर सारा है ॥ ९ ॥
छठवीं सुन्न जो निरगुन राई, तासु कला आ सुन्न समाई।
अच्छर ब्रह्म कहैं पुनि ताही,
सोई सब्द ररंकारा है ॥ १० ॥
पंचम सुन्न निरंजन राई, तासु कला दूजी सुन छाई।
पुरुष प्रकिरती पदवी पाई,
सुद्ध सरगुन रचन पसारा है ॥ ११ ॥
पुरुष प्रकृति दूजी सुन माहीं, तासु कला पिरथम सुन आई।
जोत निरंजन नाम धराई,
सरगुन स्थूल पसारा है ॥ १२ ॥
पिरथम सुन्न जो जोत रहाई, ताकी कला अबिद्या बाई।
पुत्रन सँग पुत्री उपजाई,
यह सिंध बैराट पसारा है ॥ १३ ॥

सतवें अकास उतर पुनि आई, ब्रह्मा बिस्नु समाधि जगाई ।
पुत्रन सँग पुत्री परनाई,
यहँ लिंग नाम उचारा है ॥ १४ ॥

छठे अकास सिव अवगति भौंरा, जंग गौर रिधि करती चौंरा।
गिरि कैलास गन करते सोरा,
तहँ सोहं सिर मौरा है ॥ १५ ॥

पंचम अकास में बिस्नु बिराजे, लछमी सहित सिंघासन गाजे
हिरिंग बैकुंठ भक्त समाजे,
जिन भक्तन कारज सारा है ॥ १६ ॥

चौथे अकास ब्रह्मा बिस्तारा, सावित्री सँग करत बिहारा ।
ब्रह्म ऋद्धि औंग पद सारा,
यह जग सिरजनहारा है ॥ १७ ॥

तीजे अकास रहे धर्म राई, नर्क सुर्ग जिन लीन्ह बनाई
करमन फल जीवन भुगताई,
ऐसा अदल पसारा है ॥ १८ ॥

दूजे अकास में इन्द्र रहाई, देव मुनी बासा तहँ पाई ।
रंभा करती निरत सदाई,
कलिंग सब्द उच्चारा है ॥ १९ ॥

प्रथम अकास मृत्तु है लोका, मरन जनम का नित जहँ धोखा ॥
सो हंसा पहुँचे सत लोका,
जिन सतगुरु नाम उचारा है ॥ २० ॥

चौदह तबक किया निरवारा, अब नीचे का सुनो बिचारा ।
सात तबक में छः रखवारा ।
भिन भिन सुनो पसारा है ॥ २१ ॥

सेस धौल बाराह कहाई, मीन कच्छ औ कुरम रहाई।
सो छः रहे सात के माहीं,
यह पाताल पसारा है ॥ २२ ॥

॥ शब्द २४ ॥

कोइ सुनता है गुरु ज्ञानी, गगन आवाज होती झीनी ॥१॥
पहिले होता नाद बिन्दु से, फेर जमाया पानी ॥ २ ॥
सब घट पूरन पूर रहा है, आदि पुरुष निर्बानी ॥ ३ ॥
जो तन पाया पटा लिखाया, त्रिस्ना नहीं बुझानी ॥४॥
अमृत छोड़ि विषय रस चाखा, उलटी फाँस फँसानी ॥५॥
ओअं सोहं बाजा बाजे, त्रिकुटी सुरत समानी ॥ ६ ॥
इड़ा पिंगला सुषमन सोधे, सुन्न धुजा फहरानी ॥ ७ ॥
दीदब दीद हम नजरों देखा, अजरा अमर निसानी ॥८॥
कह कबीर सुनो भाइ साधो, यही आदि की बानी ॥९॥

॥ शब्द २५ ॥

साधो ऐसा धुँध अँधियारा ॥ टेक ॥
या घट अंतर बाग बगीचे, याही में सिरजनहारा ॥१॥
या घट अंतर सात समुंदर, याही में नौ लख तारा ॥२॥
या घट अंतर हीरा मोती, याही में परखनहारा ॥३॥
या घट अंतर अनहद गरजै, याही में उठत फुहारा ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, याही में गुरू हमारा ॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

अवधू सो जोगी गुरु मेरा, या पद का करै निबेरा ॥ टेक॥
तरवर एक मूल बिन ठाढ़ा, बिन फूले फल लागे।
साखा पत्र नहीं कछु वा के, अष्ट कमल दल गाजे ॥१॥

चढ़ तरवर दो पंछी बैठे, एक गुरू इक चेला ।
चेला रहा सो चुन चुन खाया, गुरू निरन्तर खेला ॥२॥
बिन करताल पखावज बाजैं, बिन रसना गुन गावै ।
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु मिलै बतावै ॥ ३ ॥
गगन मँडल में उर्ध मुख कुइयाँ, जहाँ अमी को बासा ।
सगुरा होय सो भर भर पीवै, निगुरा जाय पियासा ॥४॥
सुन्न सिखर पर गइया बियानो, धरती छीर जमाया ।
माखन रहा सो संतन खाया, छाछ जगत भरमाया ॥५॥
पंछी को खोज मीन को मारग, कहैं कबीर दोउ भारी ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम, मूरत की बलिहारी ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

हंसा लोक हमारे अइहा, तातें अमृत फल तुम पइहा ॥टेक॥
लोक हमारा अगम दूर है, पार न पावै कोई ।
अति आधीन होय जो कोई, ता को देउँ लखाई ॥ १ ॥
मिरत लोक से हंसा आये, पुहुप दीप चलि जाई ।
जंबु दीप में सुमिरन करिहो, तब वह लोक दिखाई ॥२॥
माटी का पिँड छूटि जायगा, औ यह सकल बिकारा ।
ज्योँ जल माहिँ रहत है पुरइन*, ऐसे हंस हमारा ॥३॥
लोक हमारे अइहो हंसा, तब सुख पइहो भाई ।
सुख सागर असनान करोगे, अजर अमर होइ जाई ॥४॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, हंसन करो बधाई ।
सेत सिँघासन बैठक देहैाँ, जुग जुग राज कराई ॥५॥

---

* कोईं ।

॥ शब्द २८ ॥

ऐसा लो नत ऐसा लो, मैं केहि बिधि कथौं गँभीरा लो ॥टेक॥
बाहर कहौं तो सतगुरु लाजै, भीतर कहौं तो झूठा लो।
बाहर भीतर सकल निरंतर, गुरु परतापै दीठा लो ॥ १ ॥
दृष्टि न मुष्टि न अगम अगोचर, पुस्तक लिखा न जाई लो।
जिन पहिचाना तिन भल जाना, कहे न को पतियाई लो ॥२॥
मीन चलै जल मारग जोवै, परम तत्त धौं कैसा लो।
पुहुप* बास हूँ तें कछु भीना, परम तत्त धौं ऐसा लो ॥३॥
आकासे उड़ि गयौ बिहंगम, पाछे खोज न दरसी लो।
कहैं कबीर सतगुरु दाया तें, बिरला सतपद परसी लो ॥४॥

॥ शब्द २९ ॥

बाबा अगम अगोचर कैसा, तातें कहि समझाओं ऐसा ॥टेक
जो दीसै सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई।
सैना बैना कहि समझाओं, गूँगे का गुड़ भाई ॥ १ ॥
दृष्टि न दीसै मुष्टि न आवै, बिनसै नाहिं नियारा।
ऐसा ज्ञान कथा गुरु मेरे, पंडित करो बिचारा ॥ २ ॥
बिन देखें परतीत न आवै, कहे न कोउ पतियाना।
समुझा होय तो सब्दै चीन्है, अचरज होय अयाना ॥३॥
कोई ध्यावै निराकार को, कोइ ध्यावै आकारा।
वह तो इन दोऊ तें न्यारा, जानै जाननहारा ॥ ४ ॥
काजी कथै कतेब कुराना, पंडित बेद पुराना।
वह अच्छर तो लखा न जाई, मात्रा लागै न काना ॥५॥
नादी बादी पढ़ना गुनना, बहु चतुराई भीना।
कहैं कबीर सो पड़ै न परलय, नाम भक्ति जिन चीन्हा ॥६॥

---

*फूल।

झूलना

॥ शब्द १ ॥

ज्ञान का गेंद कर सुर्त का डंड कर,
खेल चौगान मैदान माहीं ॥ १ ॥
जगत का भरमना छोड़ दे बालके,
आया जा भेष भगवंत पाहीं ॥ २ ॥
भेष भगवंत की सेस महिमा करे,
सेस के सीस पर चरन डारै ॥ ३ ॥
काम दल जीति के कँवल दल सोधि के,
ब्रह्म को बेधि के क्रोध मारै ॥ ४ ॥
पदम आसन करै पवन परिचै करै ।
गगन के महल पर मदन जारै ॥ ५ ॥
कहत कब्बीर कोइ संत जन जौहरी,
करम की रेख पर मेख मारै ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

पाप पुन्न के बीज दोऊ,
बिज्ञान अगिन में जारिये जी ॥१॥
पाँचो चोर बिबेक से बस करि,
बिचार नगर में मारिये जी ॥ २ ॥
चिदानन्द सागर में जाइये,
मन चित दोऊ को डारिये जी ॥ ३

कहैं कबीर इक आप कहा,
कितने को पार उतारिये जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

तीरथ में सब पानी है,
होवै नहिं कछु न्हाय देखा ॥ १ ॥
प्रतिमा सकल बनी जड़ है,
बोलै नहिं बुलाय देखा ॥ २ ॥
पुरान कुरान सब बात ही बात है,
घट का परदा खोल देखा ॥ ३ ॥
अनुभव की बात कबीर कहैं,
यह सब है झूठी पोल देखा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

दो सुर* चलै सुभाव सेती,
नाभी से उलटा आवता है ॥ १ ॥
बीच इँगला पिंगला तीन नाड़ी,
सुषमन से भोजन पावता है ॥ २ ॥
पूरक करै कुम्भक करै,
रेचक करै झरि जावता है ॥ ३ ॥
कायम कबीर का झूलना जी,
दया भूल परे पछितावता है ॥ ४ ॥

---

* स्वर।

॥ शब्द ५ ॥

सूर को कौन सिखावता है,
  रन माहिं असी* का मारना जी ॥ १ ॥
सती को कौन सिखावता है,
  संग स्वामी के तन जारना जी ॥ २ ॥
हंस को कौन सिखावता है,
  नीर छीर का भिन्न बिचारना जी ॥ ३ ॥
कबीर को कौन सिखावता है,
  तत्त रंगौं को धारना जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

तख्त बना हाड़ चाम का जी,
  दाना पानी क भोग लगावता है ॥ १ ॥
मल नीर झरै लोहू माँस बढ़ै,
  आपु आपु को अंस बढ़ावता है ॥ २ ॥
नाद बिंदु के बीच कलोल करै,
  सो आतम राम कहावता है ॥ ३ ॥
अस्थान यही कहँ ढूँढ़ता है,
  दया देस कबीर बतावता है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

दरियाव की लहर दरियाव है जी,
  दरियाव और लहर मे भिन्न कोयम† ॥ १ ॥

---

* तलवार। † क्या।

उठो तो नीर है बैठे तो नीर है,
कहो दूसरा किस तरह होयम* ॥ २ ॥
उसी नाम को फेर के लहर धरा,
लहर के कहे क्या नीर खोयम† ॥ ३ ॥
जक्त ही फेर सब जक्त और ब्रह्म में,
ज्ञान करि देखि कब्बीर गोयम‡

होली

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु सँग होरी खेलिये, जा तें जरा मरन भ्रम जाय ॥टेक॥
ध्यान जुगत की करि पिचकारी, छिमा चलावनहार ।
आतम ब्रह्म जो खेलन लागे, पाँच पचीस मँझार ॥ १ ॥
ज्ञान गली में होरी खेलै, मची प्रेम की कीच ।
लोभ मोह दोऊ कटि भागे, सुन सुन सब्द अतीत ॥ २ ॥
त्रिकुटी महल में बाजा बाजै, होत छतीसो राग ।
सुरत सखी जहँ देखि तमाशा, सतगुरु खेलैं फाग ॥ ३ ॥
इँगला पिँगला सुषमना हो, सुरत निरत दोउ नारि ।
अपने पिया सँग होरी खेलैं, लज्जा कान निवारि ॥ ४ ॥
सुन्न सहर में होत कुतूहल, करैं राग अनुराग ।
अपने पुरुष के दरसन पावैं, पूरन प्रेम सुहाग ॥ ५ ॥
सतगुरु मिले फगुवा निज पायो, मारग दियो लखाय ।
कहैं कबीर जो यह गति पावै, सो जिव लोक सिधाय ॥६॥

---

* हो सकता है। † गुप्त हो गया। ‡ गुप्त।

॥ शब्द २ ॥

काया नगर मँझार संत खेलैँ होरी ।
गावत राग सरस सुर सोहै, अति आनंद भयो री ॥टेक॥
चंदन सील सबुद्धि अरगजा, केसर करनी गहो री ।
अगर अगम्म सुगम करि लीन्हो, अभय उर माँहि धरो री ॥१
प्रीति फुलेल गुलाल ज्ञान करि, लेहु जुगत भरि झोरी ।
चोवा चित चेतन परकासा, आवति बास घनो री ॥ २ ॥
त्रिकुटी महल में बाजा बाजै, जगमग जोत उजेरी ।
सहज रंग रचि रह्यो सकल तन, छूटत नाहिँ करेरी ॥३॥
अनहद बाजे बाजैँ मधुर धुन, बिन करताल तँबूरा ।
बिन रसना जहँ राग छतीसो, होत महानँद पूरा ॥४॥
सुन्न सहर इक रंग महल से, कहूँ टरत नहिँ टारी ।
कहैँ कबीर समुझि ल्यो साधो, निर्गुन कह्यो सदारी ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

हमारे को खेलै ऐसी होरी, जा में आवागवन लागी
डोरी ॥ टेक ॥
स्रवन न सुन्यौ नैन नहिँ देख्यौ, पिय पिय पिय लगी लौ री ।
पंथ निहारत जनम सिराना, परघट मिले न चोरी ॥१॥
जा कारन गृह तेँ कढ़ि निकसी, लोक लाज कुल तोरी ।
चोवा चंदन और अरगजा, कपरा रंग भरो री ॥ २ ॥
एकन हूँ मृगछाला पहिरी, एकन गुदरी झोरी ।
बहुत भेष घर स्वाँग बनाये, लौ नहिँ लगी ठगोरी ॥३॥

जगन्नाथ बद्री रामेसर, देस दिसंतर दौरी।
अठसठ तीरथ पृथी प्रदच्छिना, पुस्कर हूँ में लुटी री ॥४॥
बेद पुरान भागवत गीता, चारो बरन ढँढोरी* ।
कहैं कबीर दया सतगुरु बिनु, भर्म मिटे नहिं भव री ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरे साहिब आये आज, खेलन फाग री।
बानी बिमल सगुन सब बोले, अति सुख मंगल राग री ॥टेक
चाचरी† सरस सखा सँग बोले, अनहद बानी राग री।
सब्द सुनत अनुराग होतु है, क्या सोवै उठि जाग री ॥१॥
पानी आदर पवन बिछौना, बहुत करौं सनमान री।
देत असीस अमर पद याही, अबिचल जुग जुग बास री॥२।
चरन पखार लेहुँ चरनोदक, उठि उनके पग लाग री।
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, पिव अपने सँग पाग री ॥३॥
पंचामिर्त भाव से लेवौं, परम पुरुष भरतार री ।
महा प्रसाद संत मुख पावौं, आन खुला मेरा भाग री ॥४॥
चौरासी को बंद छुड़ावन, आये सतगुरु आप री।
पान पर्वाना देत जिवन को, वे पावैं सुख बास री।
चोवा चंदन अगर कुमकुमा, पुहुप माल गल हार री।
फगुवा माँग मुक्ति फल लेहूँ, जिव आपन के काज री ॥६॥
सोरहो सिंगार बतीसो अभरन, सुरत सिंगार सँवार री।
सत्त कबीर मिले सुख सागर, आवा गवन निवार री ॥७॥

---

* ढूँढ़ा। † फाग खेलने वालों की भीड़।

॥ शब्द ५ ॥

साधो हम घर कंत सुजान, खेल्यो रँग होरी ।
जनम जनम की मिटी कलपना, पायो जीवन प्रान री ॥टेक॥
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, गुरुमुख सब्द बिचार री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, अनहद सब्द गुँजार री ॥
खेलन चली पंथ प्रीतम के, तन की तपन गई री ॥
पिचुकारी छूटै अति अद्भुत, रस की कीच भई री ॥ २ ॥
साहेब मिलि आपा बिसरायो, लाग्यो खेल अपार री ॥
चहुँ दिस पिय पिय धूम मची है, रटना लगी हमार री ॥३॥
सुख सागर असनान कियो है, निर्मल भयो सरीर री ॥
आवागवन की मिटी कलपना, फगुवा पायो कबीर री ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

जहँ सतगुरु खेलत ऋतु बसंत । परम जोत जहँ साध संत ॥१॥
तीन लोक से भिन्न राज । जहँ अनहद बाजा बजे बाज ॥२॥
चहुँ दिसि जोति की बहै धार, बिरला जन कोइ उतरै पार॥३
कोटि कृस्न जहँ जोरैं हाथ । कोटि बिस्नु जहँ नवैं माथ ४
कोटिन ब्रह्मा पढ़ैं पुरान । कोटि महेस जहँ धरैं ध्यान॥५
कोटि सरस्वति धारैं राग । कोटि इन्द्र जहँ गगन लाग॥६
सुर गन्धर्व मुनि गने न जायँ । जहँ साहेब प्रगटे आप आय॥
चोवा चंदन औ अबीर । पुहुप बास रस रह्यो गँभीर ॥८॥
सिरजत हिय निवास लीन्ह । सो यहि लोक से रहित भिन्न॥९
जब बसंत गहि राग लीन्ह । सतगुरु सब्द उचार कीन्ह ॥१०॥
कहैं कबीर मन हृदय लाय । नरक-उधारन नाम आहि ॥११॥

रेख़ता

॥ शब्द १ ॥

रैन दिन संत यों सोवता देखता,
संसार की ओर से पीठ दोये ।
मन और पवन फिर फूट चालै नहीं,
चंद और सूर को सम्म कीये ॥ १ ॥
टकटकी चंद चकोर ज्यों रहतु है,
सुरत औ निरत का तार बाजै ।
नौबत घुरत है रैन दिन सुन्न में,
कहैं कब्बीर पिउ गगन गाजै ॥ २ ॥

॥ शब्द २ ॥

पाव और पलक की आरती कौन सी,
रैन दिन आरती संत गावै ।
घुरत निस्सान तहँ गैब की झालरा,
गैब के घंट का नाद आवै ॥ १ ॥
तहँ नीव बिन देहरा* देव निर्बान है,
गगत के तख्त पर जुगत सारी ।
कहैं कब्बीर तहँ रैन दिन आरती,
पासिया पाँव पूजा उतारी ॥ २ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साँई आप की सेव तो आप ही जानिहो,
आप का भेव कहो कौन पावै ।
आपनी आपनी बुद्धि अनुमान से,
बचन बिलास करि लहर लावै ॥ १ ॥

---

*मन्दिर ।

तू कहै तैसा नहीं, है सो दीखै नहीं,
निगम हूँ कहत नहिं पार जावै ।
कहैं कब्बीर या सैन गूँगा तईं,
होय गूँगा सोई सैन पावै ॥२॥

॥ ४ ॥

कर्म और भर्म संसारा सब करतु है,
पीव की परख कोइ संत जानै ।
सुरत औ निरत मन पवन को पकर करि,
गंग और जमुन के घाट आनै ॥ १ ॥
पाँच को नाथ करि साथ सौंहूँ* लिया,
अधर दरियाव का सुक्ख मानै ।
कहैं कब्बीर सोइ संत निर्भय धरा,
जन्म और मरन का भर्म भानै ॥ २ ॥

॥ ५ ॥

गंग उलटी धरी जमुन बासा करो†,
पलट पँच तीरथ पाप जावै ।
नीर निर्मल तहाँ रैन दिन झरतु है,
न्हाय जो बहुरि भव सिंध न आवैं ॥ १ ॥
फिर बौरे तहाँ बुद्धि को नास है,
बाज के झपट मैं सिंध नाहीं ।

---

* सन्मुख, संग । † गंग अर्थात दहिना स्वाँसा को चढ़ाओ और जमुन अर्थात बाँई स्वाँसा के साथ मिलाओ ।

कहैं कब्बीर उस जुक्ति को गहैगा,
जनम औ मरन तब अंत पाई ॥ २ ॥

॥ ६ ॥

देख वोजूद में अजब बिसराम है,
होय मौजूद तो सही पावै ।
फेर मन पवन को घेर उलटा चढ़ै,
पाँच पच्चीस को उलटि लावै ॥ १ ॥
सुरत की डोर सुख सिंध का झूलना,
घोर की सोर तहँ नाद गावै ।
नीर बिन कँवल तहँ देख अति फूलिया,
कहैं कब्बीर मन भँवर छावै ॥ २ ॥

॥ ७ ॥

चक्र के बीच में कँवल अति फूलिया,
तासु का सुक्ख कोइ संत जानै ।
कुलुफ* नौद्वार औ पवन को रोकना,
तिरकुटी मद्ध मन भँवर आनै ॥ १ ॥
सब्द की घोर चहुँ ओर ही होत है,
अधर दरियाव को सुक्ख मानै ।
कहैं कब्बीर यों झूल सुख सिंध मैं,
जन्म औ मरन का भर्म भानै† ॥ २ ॥

॥ ८ ॥

गंग औ जमुन के घाट को खोजि ले,
भँवर गुंजार तहँ करत भाई ।

---

* ताला । † तोड़ै ।

सरसुती नीर तहँ देखु निर्मल बहै,
तासु के नीर पिये प्यास जाई ॥ १ ॥
पाँच को प्यास तहँ देखि पूरी भई,
तीन की ताप तहँ लगे नाहीं ।
कहैं कबीर यह अगम का खेल है,
गैब का चाँदना देख माहीं ॥ २ ॥

॥ ९ ॥

माड़ि मतथान मन रई* को फेरना,
होत घमसान तहँ गगन गाजै ।
उठत झनकार तहँ नाद अनहद घुरै,
तिरकुटी महल के बैठ छाजै ॥ १ ॥
नाम को नेत† कर चित्त को फेरिया,
तत्त को ताय कर घिर्त लीया ।
कहैं कबीर यों संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहँ लागि जीया ॥ २ ॥

॥ १० ॥

गड़ा निस्सान तहँ सुन्न के बीच में ।
उलटि के सुरति फिर नाहिं आवै ।
दूध को मत्थ कर घिर्त न्यारा किया,
बहुरि फिर तत्त में ना समावै ॥ १ ॥
माड़ि मतथान तहँ पाँच उलटा किया,
नाम नौनीत‡ लै सुरत फेरी ।
कहैं कबीर यों संत निर्भय हुआ,
जन्म औ मरन की मिटी फेरी ॥ २ ॥

* मथानी । † रस्सी ‡ मक्खन ।

॥ ११ ॥

ससी परकास तैं सूर ऊगा सहो,
तूर बाजै तहाँ संत भूलै ।
तत्त झनकार तहँ नूर बरसत रहै,
रस्स पीवै तहाँ पाँच भूलै ॥ १ ॥
दरियाव औ बुन्द ज्यौं देखु अंतर नहीं,
जीव औ सीव यौं एक आहीं ।
कहैं कब्बीर या सैन गूँगा तई,
बेद कत्तेब की गम्म नाहीं ॥ २ ॥

॥ १२ ॥

अगम अस्थान गुरु-ज्ञान बिन ना लहै,
लहै गुरु-ज्ञान कोइ संत पूरा ।
द्वादस पलटि के खोड़सो परगटै,
गगन गरजै तहाँ बजै तूरा ॥ १ ॥
इंगला पिंगला सुषमना सम करै ।
अर्ध औ उर्ध बिच ध्यान लावै ।
कहैं कब्बीर सोइ संत निर्भय रहै,
काल की चोट फिर नाहिं खावै ॥ २ ॥

॥ १३ ॥

अधर आसन किया अगम प्याला पिया,
जोग की मूल गहि जुगति पाई ।
पंथ बिन जाइ चल सहर बेगमपुरे,
दया गुरुदेव की सहज आई ॥ १ ॥

ध्यान घर देखिया नैन बिन पेखिया,
अगम अगाध सब कहत गाई ।
कहैं कब्बीर कोइ भेद बिरला लहै,
गहै सो कहै या सैन भाई ॥ २ ॥

॥ १४ ॥

सहर बेगमपुरा गम्म को ना लहै,
होय बेगम्म सो गम्म पावै ।
गुनों की गम्म ना अजब बिसराम है,
सैन को लखै सोइ सैन गावै ॥ १ ॥
मुक्ख बानी तिको' स्वाद कैसे कहै,
स्वाद पावै सोई सुक्ख मानै ।
कहैं कब्बीर या सैन गूँगा तईं,
होय गूँगा सोई सैन जानै ॥ २ ॥

॥ १५ ॥

अधर ही ख्याल औ अधर ही चाल है,
अधर के बीच तहँ मठ्ठ कीया ।
खेल उलटा चला जाय चौथे मिला,
सिंघ के मुक्ख फिर सीस दीया ॥ १ ॥
सब्द घनघोर टंकोर तहँ अधर है,
नूर को परसि के पीर पाया ।
कहैं कब्बीर यह खेल अवधूत का,
खेलि अवधूत घर सहज आया ।

* तिस का ।

॥ १६ ॥

छका* अवधूत मस्तान माता रहै,
ज्ञान बैराग सुधि लिया पूरा ।
स्वाँस उस्वाँस का प्रेम प्याला पिया,
गगन गरजै तहाँ बजै तूरा ॥ १ ॥
पीठ संसार से नाम-राता रहै,
जतन जरना लिया सदा खेलै ।
कहैं कब्बीर गुरु पीर से सुरखरू,†
परम सुख धाम तहँ प्रान मेलै ॥ २ ॥

॥ १७ ॥

छका सो थका फिर धारै नहीं,
करम औ कपट सब दूर कीया ।
जिन स्वाँस उस्वाँस की प्रेम प्याला पिया,
नाम दरियाव तहँ पैसि‡ जीया ॥ १ ॥
चढ़ी मतवाल औ हुआ मन साबिता§,
फटिक ज्यौं फेर नाहिं फूटि जावै ।
कहैं कब्बीर जिन बास निर्भय किया,
बहुरि संसार में नाहिं आवै ॥ २ ॥

॥ १८ ॥

तरक संसार से फरक फर्क सदा,
गरक‖ गुरु ज्ञान में जुक्त जोगी ।
अर्ध औ उर्ध के बीच आसन किया,
बंक प्याला पिवै रस्स भोगी ॥ १ ॥

---

*सरशार †, आदर के योग्य । ‡ पैठ कर । §थिर ‖ डूबा हुआ ।

अर्ध दरियाव तहँ जाय डोरी लगी,
महल बारीक का भेद पाया ।
कहैं कबीर योँ संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहँ प्रान लाया ॥ २ ॥

॥ १६ ॥

माड़ि मतवाल तहँ ब्रह्म भाठी जरै,
पिवै कोइ सुरमा सीस मेलै ।
पाँच को पेल सैतान को पकरि के,
प्रेम प्याला जहाँ अधर झेलै ॥ १ ॥
पलटि मन पवन को उलटि सूधा कँवल,
अर्ध औ उर्ध बिच ध्यान लावै ।
कहैं कबीर मस्तान माता रहै,
बिना कर ताँतिया नाद गावै ॥ २ ॥

॥ २० ॥

आठ हूँ पहर मतवाल लागी रहै,
आठ हूँ पहर की छाक* पीवै ।
आठ हूँ पहर मस्तान माता रहै,
ब्रह्म की छौल† में साध जीवै ॥ १ ॥
साँच ही कहतु औ साँच ही गहतु है,
काँच को त्याग करि साँच लागा ।
कहैं कबीर यौं साध निर्भय हुआ,
जनम औ मरन का भर्म भागा ॥ २ ॥

---

* प्याला । † आनन्द ।

॥ २१ ॥

करत कलोल दरियाव के बीच में,
ब्रह्म की छौल* में हंस झूलै ।
अर्ध औ उर्ध की पैंग बाढ़ी तहाँ,
पलट मन पवन को कँवल फूलै ॥ १ ॥
गगन गरजै तहाँ सदा पावस† झरै,
होत झनकार नित बजत तूरा ।
बेद कत्तेब की गम्म नाहीं तहाँ,
कहैं कबीर कोइ रमै सूरा ॥ २ ॥

॥ २२ ॥

गगन की गुफा तहँ गैब का चाँदना,
उदय औ अस्त का नाँव नाहीं ।
दिवस औ रैन तहँ नेक नहिं पाइये,
प्रेम परकास के सिंध माहीं ॥ १ ॥
सदा आनंद दुख दुन्द व्यापै नहीं,
पूरनानंद भरपूर देखा ।
भर्म और भ्रांति तहँ नेक आवै नहीं,
कहैं कबीर रस एक पेखा ॥ २ ॥

॥२३ ॥

खेल ब्रह्मंड का पिंड में देखिया,
जगत की भर्मना दूरि भागी ।
बाहरा भीतरा एक आकासवत,
सुषमना डोरि तहँ उलटि लागी ॥ १ ॥

---

*आनन्द । † वर्षा ।

पवन को पलटि के सुन्न मैं घर किया,
घर* में अधर भरपूर देखा ।
कहैं कब्बीर गुरु पूर की मेहर से,
तिरकुटी मद्धि दीदार पेखा ॥ २ ॥

॥ २४ ॥

देख दीदार मस्तान मैं होइ रह्यो,
सकल भरपूर है नूर तेरा ।
सुभग दरियाव तहँ हंस मोती चुगैं,
काल का जाल तहँ नाहिं नेड़ा ॥ १ ॥
ज्ञान का थाल औ सहज मति बाति है,
अधर आसन किया अगम डेरा ।
कहैं कब्बीर तहँ भर्म भासै नहीं,
जन्म औ मरन का मिटा फेरा ॥ २ ॥

॥ २५ ॥

सूर परकास तहँ रैन कहँ पाइये,
रैन परकास नहिं सूर भासै,
ज्ञान परकास अज्ञान कहँ पाइये,
होइ अज्ञान तहँ ज्ञान नासै ॥ १ ॥
काम बलवान तहँ नाम कहँ पाइये,
नाम जहँ होय तहँ काम नाहीं ।
कहैं कब्बीर यह सत्त बीचार है,
समुझ बिचार करि देख माहीं ॥ २ ॥

---

* शरीर ।

॥ २६ ॥

एक समसेर[*] इकसार बजती रहै,
खेल कोइ सूरमा संत झेलै ।
काम दल जीत करि क्रोध पैमाल[†] करि,
परम सुख धाम तहँ सुरत मेलै ॥ १ ॥
सील से नेह करि ज्ञान की खड़ग ले,
आय चौगान मैं खेल खेलै ।
कहैं कबीर सोइ संत जन सूरमा,
सीस को सौंप करि करम ठेलै ॥ २ ॥

॥ २७ ॥

पकरि समसेर[*] संग्राम में पैसिये,
देह परजंत कर जुद्ध भाई ।
काट सिर बैरियाँ दाब जहँ का तहाँ,
आय दरबार मैं सीस नाई ॥ १ ॥
करत मतवाल जहँ संत जन सूरमा,
घुरत निस्सान तहँ गगन धाई ।
कहैं कबीर अब नाम से सुरखरू,
मौज दरबार की भक्ति पाई ॥ २ ॥

॥ २८ ॥

देँह बंदूक और पवन दारू[‡] किया
ज्ञान गोली तहाँ खूब डाटी ।
सुरत की जामकी मूठ चौथे लगी,
भर्म की भीत[¶] सब दूर फाटी ॥ १ ॥

---

[*] तलवार। [†] रौंदना। [‡] बारूत। रस्सी या दूसरी जलने वाली चीज़ जिसके द्वारा रंजक में आग पहुँचाते हैं। [¶] दीवार।

कहैं कब्बीर कोइ खेलिहै सूरमा,
कायराँ खेल यह होत नाहीं ।
आस की फाँस को काटि निर्भय भया,
नाम रस रस्स कर गरक माहीं ॥ २ ॥

॥ शब्द २६ ॥

ज्ञान समसेर को बाँधि जोगी चढ़ै,
मार मन मीर रन धीर हूआ ।
खेत को जीत करि बिसन* सब पेलिया,
मिला हरि माहिं अब नाहिं जूवा ॥ १ ॥
जगत में जस्स औ दाद दरगाह में,
खेल यह खेलिहै सूर कोई ।
कहैं कब्बीर यह सूर का खेल है,
कायराँ खेल यह नाहिं होई ॥ २ ॥

॥ शब्द ३० ॥

सूर संग्राम को देखि भागै नहीं,
देखि भागै सोई सूर नाहीं ।
काम औ क्रोध मद लोभ से जूझना,
मँडा घमसान तहँ खेत माहीं ॥ १ ॥
सील औ साँच संतोष साही भये,
नाम समसेर तहँ खूब बाजै ॥ २ ॥
कहैं कबीर कोइ जूझिहै सूरमा,
कायराँ भीड़ तँह तुरत भाजै ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

साध का खेल तो बिकट बेंड़ा तमी,
सती औ सूर की चाल आगे ।

* बिषय

सूर घमसान है पलक दो चार का,
सती घमसान पल एक लागे ॥ १ ॥
साध संग्राम है रैन दिन जूझना,
देह पर्जंत का काम भाई ।
कहैं कब्बीर टुक बाग ढीली करै,
उलटि मन गगन से जमीं आई ॥ २ ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

तन मन धन बाजी लागी हो ॥ टेक ॥
चौपड़ खेलूँ पीव से रे, तन मन बाजी लगाय ।
हारी तो पिय की भई रे, जीती तो पिय मोर हो ॥१॥
चौसरिया के खेल में रे, जुग्ग मिलन की आस ।
नर्द अकेली रह गई रे, नाहिं जीवन की आस हो ॥२॥
चार बरन घर एक है रे, भाँति भाँति के लोग ।
मनसा बाचा कर्मना, कोइ प्रीत निबाहो ओर हो ॥३॥
लख चौरासी भरमत भरमत, पौ पै अटको आय ।
जो अबके पौ ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो ॥४॥
कहैं कबीर धर्मदास से रे, जीती बाजी मत हार ।
अबके सुरत चढ़ाय दे रे, सोई सुहागिन नार हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

जन को दीनता जब आवे ॥ टेक ॥
रहै अधीन दीनता भाषै, दुरमति दूरि बहावै ।
सो पद देवें दास अपने का, ब्रह्मादिक नहिं पांवे ॥ १ ॥

औरन को ऊँचो करि जाने, आपुन नीच कहावे ।
तुम तें अवधू साँच कहतु हौं, सो मेरे मन भावे ॥२॥
सब घट एक ब्रह्म जो जाने, दुबिधा दूर बहावे ।
सकल भर्मना त्यागि के अवधू, इक गुरु के गुन गावे ॥३॥
होइ लैालीन प्रेम लौ लावें, सब अभिमान नसावे ।
सत्त सब्द में रहै समाई, पढ़ि गुनि सब बिसरावे ॥४॥
गुरु की कृपा साध की संगत, जोग जुक्ति तें पावे ।
कहैं कबीर सुनो हो साधो, बहुरि न भवजल आवे ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो सो जन उतरे पारा। जिन मन तें आपा डारा ॥टेक॥
कोई कहै मैं ज्ञानी रे भाई, कोई कहै मैं त्यागी ।
कोई कहै मैं इन्द्री जीती, अहं सबन को लागी ॥ १ ॥
कोई कहै मैं जोगी रे भाई, कोई कहै मैं भोगी ।
मैं तैं आपा दूरि न डारा, कैसे जीवे रोगी ॥ २ ॥
कोई कहै मैं दाता रे भाई, कोई कहै मैं तपसी ॥
निज तत नाम निस्चय नहिं जाना, सब माया में खपसी ॥३॥
कोई कहै जुगती सब जानौं, कोई कहै मैं रहनी ।
आतम देव से परिचय नाहीं, यह सब झूठी कहनी ॥४॥
कोई कहै धर्म सब साधे, और बरत सब कीन्हा ।
आपा की आँटो नहिं निकसी, करज बहुत सिर लीन्हा ॥५॥
गरब गुमान सब दूर निवारे, करनी को बल नाहीं ।
कहैं कबीर साहेब का बंदा, पहुँचा निज पद माहीं ॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

चरखे का सिरजनहार, बढ़ैया इक ना मरै ॥ टेक ॥
बाबुल मोरा ब्याह करा दो, अनजाया बर लाय ।
अनजाया बर ना मिले तो, तोहि से मोरा ब्याह ॥ १ ॥

हरे हरे बाँस का कटा मोरे बाबुल, पानन मड़वा छाय ।
सुरति निरति की भाँवरि डारो, ज्ञान की गाँठि लगाय ॥२॥
सास मरै ननदी मरै रे, लहुरा देवर मरि जाय ।
एक बढ़ैया ना मरै, चरखे का सिरजनहार । ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, चरखा लखो न जाय ।
या चरखे को जो लखे रे, आवा गवन छुटि जाय ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जहँ लोभ मोह के खंभ दोऊ, मन रच्यो है हिंडोर ।
तहँ झूलैं जीव जहान, जहँ कतहूँ नाहिं थिर ठौर ॥ १ ॥
चतुरा झूलैं चतुराइयाँ, औ झूलैं राजा सेव ।
चंद सूर दोऊ निस झूलैं, नाहीं पावैं भेव ॥२॥
चौरासी लच्छहुँ जिव झूलैं, झूलैं रवि ससि धाय ।
कोटिन कल्प जुग बीतिया, आये न कबहूँ हाय ॥ ३ ॥
धरनी आकासहु दोउ झूलैं, झूलैं पवनहुँ नीर ।
धरि देही हरि आपहु झूलैं, लखहीं संत कबीर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मोको कहाँ ढूँढ़ो बंदे, मैं तो तेरे पास में ॥ टेक ॥
ना मैं छगरी* ना मैं भेंड़ी, ना मैं छुरी गँडास में ॥१॥
नहीं खाल में नहीं पूँछ मैं, ना हड्डी ना मास में ॥२॥
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ॥३॥
ना तो कोनो क्रिया कर्म में, नहीं जोग बैराग मे ॥४॥
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में ॥५॥
मैं तो रहौं सहर के बाहर, मेरी पुरी मवास† में ।६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में ॥७॥

---

* बकरी। † सरन।

॥ शब्द ७ ॥

जो कोइ या बिधि मन को लगावै। मन के लगाये गुरु पावै १
जैसे नटवा चढ़त बाँस पर, ढोलिया ढोल बजावै।
अपना बोझ धरै सिर ऊपर, सुरति बाँस पर लावै ॥२॥
जैसे भुवंगम* चरत बनी में, ओस चाटने आवै।
कभी चाटै कभी मनि तन चितवै, मनि तज प्रान गँवावै ॥३
जैसे कामिनि भरत कूप जल, कर छोड़े बतरावै‡।
अपना रँग सखियन सँग राचै, सुरति डार पर लावै ॥४॥
जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, अपनी काया जरावै।
मातु पिता सब कुटुँब तियागै, सुरत पिया पर लावै ॥५॥
धूप दीप नैवेद अरगजा, ज्ञान की आरत लावै।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, फेर जनम नहिँ पावै ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

ऐसी दिवानी दुनियाँ, भक्ति भाव नहिँ बूझै जी ॥१॥
कोई आवे तो बेटा माँगै, यही गुसाँईं दीजै जी ॥२॥
कोई आवै दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी ॥३॥
कोई आवै तो दौलत माँगै, भेँट रुपैया लीजै जी ॥४॥
कोई करावे ब्याह सगाई, सुनत गुसाँईं रीझै जी ॥५॥
साँचे का कोइ गाहक नाहीं, झूठे जक्त पतीजै जी ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, अंधों को क्या कीजै जी ॥७॥

॥ शब्द ९ ॥

सतगुरु चारो बरन बिचारी ॥ टेक ॥
ब्राह्मन वही ब्रह्म को चीन्है, पहिरै जनेव बिचारी ॥१॥
साध के सौ गुन जनेव के नौ गुन, सो पहिरे ब्रह्मचारी ॥२॥

---

* साँप। ‡ बात। करती है।

छत्री वही जो पाप को छै करै, बाँधै ज्ञान तरवारी ॥३॥
ऊंसर दिल बिच दाया राखै, कबहूँ न आवै हारी ॥४॥
बैस वही जो बिषया त्यागै, त्याग देय पर नारी ॥५॥
ममता मारि के मंजन लावै, प्रान दान दैढारी ॥६॥
सूद्र वही जो सूधो राहै, छोड़ देय अपकारी ॥७॥
गुरु की दया साध की संगत, पावै अचल पद भारी ॥८॥
जो जन भजै सोई जन उबरै, या में जीत न हारी ॥९॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नामै गही सँभारी ॥१०॥

॥ शब्द १० ॥

संतन जात न पूछो निरगुनियाँ ॥ टेक ॥
साध बराम्हन साध छत्तरी, साधै जाती बनियाँ ।
साधन माँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुछनियाँ* ॥१॥
साधै नाऊ साधै धोबी, साध जाति है बरियाँ ।
साधन माँ रैदास संत हैं, सुपच ऋषी से भँगियाँ ॥२॥
हिन्दू तुर्क दुइ दीन बने हैं, कछू नाहिं पहिचनियाँ ।
लाखन जाति जगत माँ फैली, काल को फंद पसरियाँ ॥३॥
सब सन्तन माँ संत बड़े हैं, सब्द रूप जिन देहियाँ ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सत्तरूप वहि जनियाँ ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

चुनरिया हमरी पिय ने सँवारी ।
कोइ पहिरै पिय की प्यारी ॥ १ ॥

---

* सवाल ।

आठ हाथ की बनी चुनरिया ।
पँच रँग पटिया पारी ॥ २ ॥
चाँद सुरज जा में आँचल लागे ।
जगमग जोति उँजारी ॥ ३ ॥
बिनु ताने यह बनी चुनरिया ।
दास कबीर बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

काहू न मन बस कीन्हा, जग मेँ काहू न मन बस कीन्हा ॥टेक
सिंगी* ऋषि से बन में लूटे, बिषै बिकार न जाने ।
पठई नारि भूप दसरथ ने, पकरि अयोध्या आने ॥ १ ॥

---

*शृंगी ऋषी अकेले बन में रहते थे पवन का आहार करते थे और एक बार दरख़्त पर ज़बान मारते थे। राजा दसरथ के औलाद नहीं होती थी बशिष्ट जी जो कि उनके कुल के पुरोहित थे उन्होंने कहा कि बिधि पूर्वक जज्ञक्रिया और होम होगा तब बेटा होने की उम्मेद हो सकती है और ऐसी क्रिया सिवाय शृंगी ऋषि के और कोई नहीं कर सकता है। राजा दशरथ का हुक्म हुआ कि जो कोई शृंगी ऋषि को यहाँ लावेगा उसको हीरे जवाहिर का थाल भर कर मिलेगा। एक वेश्या ने कहा मैं ले आती हूँ वह वहाँ गई देखा कि ऋषि जी बड़ी समाधि में बैठे हैं। जिस दरख़्त पर ज़बान लगाते थे वहाँ एक उँगली गुड़ की लगा दी ऋषि जी ने जब ज़बान लगाई चाट लग गई। पहले एक दफ़ा ज़बान मारते थे उस रोज़ दो दफ़ा मारी। दूसरे रोज़ तीन बार मारी इसी तरह रस बढ़ता गया और ताक़त आने लगी। वह वेश्या जो छिप के बैठी थी उसने हलुवा पेश किया तब थोड़ा हलुवा खाने लगे बदन जो दुबला था वह पुष्ट होने लगा। ताक़त आई बेश्या पास थी सब कार्रवाई जारी हो गई, दो तीन लड़के हुए। किसी बहाने शृंगी जी से बेश्या ने कहा चलो राज दरबार में यहाँ जंगल में लड़के भूखे मरते हैं बिचारे उसके साथ हो लिये। दो लड़कों को दोनों कंधों पर उठाया और एक का हाथ पकड़ा पीछे वह बेश्या चली। इस दशा में राजा दशरथ के दरबार में पहुँचे और वहाँ होम वग़ैरह की क्रिया कराई। जब वहाँ किसी ने ताना मारा तब होश आया एक दम लड़कों को वहीं पटक के भागे और जाना कि माया ने लूट लिया।

सूखे पत्र पवन भषि रहते, पारासर* से ज्ञानी ।
भरमे रूप देख बनिता को, कामकन्दला† जानी ॥२॥
सोइ सुरपति‡ जा की नार सुची सी, निसदिनहीं सँग राखी ।
गौत्तम के घर नारि अहिल्या, निगम कहत है साखी ॥३॥
पारबती सी पतनी जा के, ता को मन क्यौं डोले ।
खलित भये छबि देखि मोहनी, हाहा करिके बोले§ ॥४॥
एकै नाल कँवलसुत ब्रह्मा, जग-उपराज ‖ कहावै ।
कहैं कबीर इक मन जीते बिन, जिव आराम न पावै ॥५॥

---

* पाराशर ऋषि ने मछोदरी से नाव में भोग किया (यह स्त्री उन्ही के बीज से मछली के पेट से पैदा हुई थी जो बीज गंगा में नहाते वक्त ऋषि जी का किसी समय में गिर गया था और एक मछली ने खा लिया था) उस मछोदरी ने कहा अभी दिन है लोग देखते हैं तब ऋषि ने अपनी सिद्ध शक्ति से अँधेरा कर दिया आकाश में बादल आ गये । फिर स्त्री ने कहा कि मेरे बदन से मच्छी की बदबू आती है ऋषि ने बदबू को बदल के खुशबू कर दिया । नतीजा इस संगम का यह हुआ कि व्यास जी उस मछोदरी से पैदा हुए ।

† कामकंदला एक परम सुन्दर स्त्री अयोध्या में हो गई है ।

‡ गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या पर राजा इन्द्र मोहित हुए सोचा कि गौतम पिछली रात नदी में नहाने जाते थे इस लिये चाँद को हुक्म दिया कि तुम आज रात को बारह बजे के वक्त जहाँ कि तीन बजे निकलते हो निकलना और मुर्ग को कहा कि तू बारह बजे रात को आवाज़ दे दोनों ने ऐसा ही किया और गौतम धोखा खाकर आधीरात को उठे मुवाफ़िक दस्तूर के नदी को चले गये । इन्द्र भीतर गौतम के घर में घुसे जब गौतम लौट के आये तब सब हाल मालूम हो गया—चाँद को सराप दिया कि तुमको कलंक लगेगा और अपनी स्त्री अहिल्या को सराप दिया कि पत्थर हो जायगी मुर्ग को कहा कि हिन्दू तुझको अपने घर में नहीं रक्खेंगे और इन्द्र को सराप दिया कि एक काम इन्द्री के बस तू ने ऐसा अत्याचार किया तेरे शरीर में हज़ार वैसी ही इन्द्री हो जायँगी ।

§ शिवजी जिन के पारबती ऐसी सुन्दर स्त्री थी उनको छोड़ के मोहनी स्वरूप माया का देख कर उसके पीछे दौड़े और जोश में बीज बाहर गिर गया (इसी बीज से पारा पैदा हुआ) जब देखा माया का चरित्र है तब अपने इष्टदेव को सराप दिया कि जैसे हम स्त्री के पीछे दौड़े हैं वैसे ही तुम भी दौड़ोगे—इसी से त्रेता जुग में राम औतार हुआ सीता के पीछे बन बन दौड़ना पड़ा ।

‖ सृष्टि का रचने वाला ।

॥ इति ॥

मूल्य केवल ६॥) । इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण ११ बहुरंगा और ८ रंगीन यानी कुल २० सुन्दर चित्र सहित और सजिल्द १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके काग़ज़ उमदा हैं ।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है । पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये । मूल्य ।॥=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है । यह मानस-कोश का भी काम देगा । मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है । मूल्य -)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है । मूल्य ।=)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूली उपन्यास है । मूल्य १)

संदेह—यह एक मौलिक क्रांतकारी उपन्यास नया है । बिना जिल्द ॥।) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह तथा परिचय है । मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है । मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है । पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है । इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं । तेरहों चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं । रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है । जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है । मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

घोंघा गुरू की कथा—इस देश में घोंघा गुरू की हास्यपूर्ण कहानियाँ बड़ी ही प्रचलित हैं । उन्हीं का यह संग्रह है । शिक्षा लीजिए और ख़ूब हँसिए । ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है । पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है । दाम ॥-)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)

कबीर साहेब की शब्दावली

दूसरा भाग

जिस में

उन महात्मा के अति मनोहर और हृदयबेधक भजन और उपकारक उपदेश बहुत सी लिखी हुई पुस्तकों से चुनकर और शोध कर मुख्य मुख्य अंगों में यथाक्रम रक्खे गये हैं

और गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग में प्रकाशित हुआ।

सन् १९३२ ई०

चौथी बार] [दाम ।।।)

Prin Published at The Belvedere Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर-सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्‌गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है जिसके विषय में बैकुंठ बासी श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा था—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है, देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापे गए हैं जिनका दाम क्रमशः ।।।) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

जूलाई १९३२ ई०

इलाहाबाद।

सूची शब्दों की।

शब्द	पृष्ठ

कबीर शब्दावली

दूसरा भाग

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

अरे मन धीरज काहे न धरै।
सुभ और असुभ करम पूरबले, रती घटै न बढ़ै ॥ १ ॥
होनहार होवै पुनि सोई, चिन्ता काहे करै।
पसु पंछी जिव कीट पतंगा, सब की सुद्ध करै ॥ २॥
गर्भ बास में खबर लेतु है, बाहर क्यों बिसरै।
माता पिता सुत सम्पति दारा, मोह के ज्वाल जरै ॥ ३ ॥
मन तू हंसन से साहिब के, भटकत काहे फिरै।
सतगुरु छोड़ और को ध्यावै, कारज इक न सरै ॥ ४ ॥
साधुन सेवा कर मन मेरे, कोटिन ब्याधि हरै।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज में जीव तरै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

मन तू मानत क्यों न मना रे।
कौन कहन को कौन सुनन को, दूजा कौन जना रे ॥ १ ॥
दर्पन में प्रतिबिंब जो भासै, आप चहूँ दिसि सोई।
दुबिधा मिटै एक जब होवै, तौ लखि पावै कोई ॥ २ ॥
जैसे जल तें हेम[1] बनतु है, हेम घूम जल होई।
तैसे या तत[2] वाहू तत[3] सो, फिर यह अरु वह सोई ॥३॥

---

(१) बरफ़। (२) जीव। (३) सार वस्तु।

जो समुझै तो खरी कहन है, ना समुझै तो खोटी ।
कहै कबीर दोऊ पख त्यागै, ता को मति है मोटी[१] ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तू थकत थकत थक जाई ।
बिन थाके तेरो काज न सरिहै, फिर पाछे पछिताई ॥ १ ॥
जब लग तोकर[२] जीव रहतु है, तब लग परदा भाई ।
टूटि जाय ओट तिनुका की, रसक रहै ठहराई ॥ २ ॥
सकल तेज तज होय नपुन्सक, यह मति सुन ले मेरी ।
जीवत मिर्तक दसा बिचारै, पावै बस्तु घनेरी ॥ ३ ॥
या के परे और कछु नाहीं, यह मति सब से पूरा ।
कहै कबीर मार मन चंचल, हो रहु जैसे धूरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रीति उसी से कीजिये, जो ओर निभावै ।
बिना प्रीति के मानवा, कहि ठौर न पावै ॥ १ ॥
नाम सनेही जब मिलै, तब ही सच पावै ।
अजर अमर घर ले चलै, भवजल नहिं आवै ॥ २ ॥
ज्यों पानी दरियाव का, दूजा न कहावै ।
हिलि मिलि ऐको ह्वै रहै, सतगुरु समुझावै ॥ ३ ॥
दास कबीर बिचारि के, कहि कहि जतलावै ।
आपा मिटि साहिब मिलै, तब वह घर पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

भजि ले सिरजनहार, सुघर तन पाइ के ॥ टेक ॥
काहे रहौ अचेत, कहाँ यह औसर पैहौ ।
फिर नहिं ऐसी देह, बहुरि पाछे पछितैहौ ॥

(१) दृढ़ । (२) हौंमैं-असित ।

लख चौरासी जोनि मैं, मानुष जन्म अनूप ।
ताहि पाइ नर चेतत नाहीं, कहा रंक कहा भूप ॥१॥

गर्भ बास मैं रह्यो कह्यो, मैं भजिहौं तोहीं ।
निसि दिन सुमिरौं नाम, कष्ट से काढ़ो मोहीं ॥
चरनन ध्यान लगाइ के, रहौं नाम लौ लाय ।
तनिक न तोहिं बिसारिहौं, यह तन रहै कि जाय ॥२॥

इतना कियौ करार, काढ़ि गुरु बाहर कीन्हा ।
भूलि गयौ वह बात, भयौ माया आधीना ॥
भूलौं बातैं उदर को, आनि पड़ी सुधि एत ।
बारह बरस बीत गे या बिधि, खेलत फिरत अचेत ॥३॥

बिषया बान समान, देह जोबन मद माते ।
चलत निहारत छाँह, तमक के बोलत बाते ॥
चोवा चंदन लाइ के, पहिरे बसन रँगाय ।
गलियाँ गलियाँ झाँकी मारै, पर तिरिया लख मुसकाय ॥४॥

तुरनापन गइ बीत, बुढ़ापा आन तुलाने ।
काँपन लागे [illegible] चलत दोउ चरन पिराने ॥
नैन नासिका [illegible] लागे, मुख तैं आवन बास ।
कफ पित कंठै घेर लियो है, छुटि गइ घर की आस ॥५॥

मातु पिता सुत नारि, कहौ का के संग जाई ।
तन धन घर औ काम धाम, सबही छुटि जाई ॥
आखिर काल घसीटिहै, परिहौ जम के फन्द ।
बिन सतगुरु नहिं बाचि हौ, समुझि देखि मतिमन्द ॥६॥

सुफल होत यह देह, नेह सतगुरु से कीजै ।
मुक्ती मारग जानि, चरन सतगुरु चित दीजै ॥

नाम गहौ निरभय रहौ, तनिक न ब्यापै पीर ।
यह लीला है मुक्ति की, गावत दास कबीर ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

बातौं मुक्ति न होइहै, छाड़ै चतुराई हो ।
एक नाम जाने बिना, भूला दुनियाई हो ॥१॥
बेद कतेब भवजाल है, मरि है बौराई हो ।
मुक्ति भेव कछु और है, कोइ बिरले पाई हो ॥२॥
काग छाड़ि बिन हंस है, नहिं मिलत मिलाई हो ।
जो पै कागा हंस है, वा से मिलि जाई हो ॥३॥
बसहु हमारे देसवा, जम तलब नसाई हो ।
गुरु बिन रहनि न होइहै, जम धै धै खाई हो ॥४॥
कहै कबीर पुकारि के, साधुन समुझाई हो ।
सत्त सजीवन नाम है, सतगुरु हि लखाई हो ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

नाम लगन छूटै नहीं, सोइ साधु सयाना हो ॥टेक॥
माटी कै बरतन बन्यो, पानी लै साना हो ।
बिनसत बार न लागिहै, राजा क्या राना हो ॥१॥
क्या सराय का बासना, सब लोग बिगाना हो ।
होत भोर सब उठि चलै, दूर देस को जाना है ॥२॥
आठ पहर सन्मुख लड़ै, सो बाँधे बाना[1] हो ।
जीत चला भवसागर सोइ, सूरा मरदाना हो ॥३॥
सतगुरु की सेवा करै, पावै परवाना[2] हो ।
कहै कबीर धर्मदास से, तेहि काल डेराना हो ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

सुकिरत करि ले नाम सुमिरि लै, को जानै कल की ।
जगत में खबर नहीं पल की ॥१॥

---

(१) हथियार । (२) स नद ।

झूठ कपट करि माया जोरिन, बात करैं छल की।
पाठ की पोट धरे सिर ऊपर, किस बिधि है हलकी ॥२॥
यह तन तो है हस्ती मस्ती, काया मट्टी की।
साँस साँस में नाम सुमिरि ले, अवधि घटै तन की ॥३॥
काया अंदर हंसा बोलै, खुसियाँ कर दिल की।
जब यह हंसा निकरि जाहिंगे, मट्टी जंगल की ॥४॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो, याही बात असल की।
ज्ञान बैराग दया मन राखो, कहै कबीरा दिल की ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

ए जियरा तैं अमर लोक को, पर्‍यो काल बस आई हो।
मनै सरूपी देव निरंजन, तोहि राख्यो भरमाई हो ॥१॥
पाँच पचीस तीन को पिंजरा, ता में तो को राखै हो।
तो को बिसरि गई सुधि घर की, महिमा आपन भावै हो ॥२॥
निरंकार निरगुन है माया, तो को नाच नचावै हो।
चमर दृष्टि की कुलफी दीन्हो, चौरासी भरमावै हो ॥३॥
चार बेद जा को है स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गावै हो।
सो कथि ब्रह्मा जगत भुलाये, तेहि मारग सब धावै हो ॥४॥
जोग जाप नेम ब्रत पूजा, बहु परपंच पसारा हो।
जैसे बधिक ओट टाटो के, दे बिस्वासे चारा हो ॥५॥
सतगुरु पीव जीव के रच्छक, ता से करो मिलाना हो।
जा के मिले परम सुख उपजै, पावो पद निर्बाना हो ॥६॥
जुगन जुगन हम आय जनाई, कोइ कोइ हंस हमारा हो।
कहै कबीर तहाँ पहुँचाऊँ, सत्त पुरुष दरबारा हो ॥७॥

॥ शब्द १० ॥

मन रे अब की बेर सम्हारो ॥टेक॥
जन्म अनेक दगा मैं खोयो, बिन गुरु बाजी हारो ॥१॥

बालपने ज्ञान नहिं तन में, जब जनमो तब बारो ॥२॥
तरुनाई सुख बास में खोयो, बाज्यो कूच नगारो ॥३॥
सुत दारा मतलब के साथी, ता को कहत हमारो ॥४॥
तीन लोक औ भवन चतुरदस, सबहि काल को चारो ॥५॥
पूर रह्यो जगदीस गुरू तन, वा से रह्यो नियारो ॥६॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब घट देखनहारो ॥७॥

॥ शब्द ११ ॥

मन करि ले साहिब से प्रीत ।
सरन आये सो सब ही उबरै, ऐसी उनकी रीत ॥१॥
सुन्दर देह देखि मत भूलो, जैसे तृन पर सीत[१] ।
काँची देह गिरै आखिर को, ज्यौं बारू की भीत ॥२॥
ऐसो जन्म बहुर नहिं पैहो, जात उमिरि सब बीत ।
दास कबीर चढ़े गढ़ ऊपर, देव नगारा जीत ॥३॥

॥ शब्द १२ ॥

साधो सार सबद गुन गाओ ॥ टेक ॥
काया कोट में काम बिराजै, सो जम के गढ़ छायो ।
चौदह बुरुज[२] दसो दरवाजा[३], कोठरी[४] अनेक बसायो ॥१॥
पाँचो यार पचीसो भाई, सगरि गुहार बुलाओ ।
तेगा तरकसि कसि के बाँधो, दुरमति दूर बहाओ ॥२॥
काढ़ि कटारी जम को मारो, तबै अमल गढ़ पाओ ।
त्रिकुटी मध तिरबेनी धारा, सूरमा भक्त कहाओ ॥३॥
मन बन्दूक औ ज्ञान पलीता, प्रेम पयाला लाओ ।
सबद कै गोली धुनि कै रंजक, काल मारि बिच लाओ ॥४॥

---

(१) पाला। (२) दस इन्द्री और चार अंतःकरण। (३) दस अंतरी द्वार। (४) अंतरी चक्र।

जो कोइ बीर चढ़ै लड़ने पर, मन के मैल धुवाओ।
द्वादस घाटी छेके बाटी, सुरत सँगीन चढ़ाओ ॥५॥
गगन मेँ गहगह होत महा धुन, साधक सुनि उठि धाओ।
संतन घोरा महा कबीरा, सूतल[1] ब्रह्म जगाओ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सुख सागर में आइ के, मत जा रे प्यासा ॥ टेक ॥
अजहु समझ नर बावरे, जम करत तिरासा ॥ १ ॥
निर्मल नीर भर्यो तेरे आगे, पी ले स्वासो स्वासा ॥ २ ॥
मृग-तृसना जल छाड़ बावरे, करो सुधा रस आसा ॥ ३ ॥
गोपीचंदा और भर्थरी, पिहिन प्रेम भर कासा[2] ॥ ४ ॥
ध्रू प्रहलाद भभीखन पीया, और पिया रैदासा ॥ ५ ॥
प्रेमहि संत सदा मतवाला, एक नाम की आसा ॥ ६ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मिटि गई भव की बासा ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

धुबिया[3] जल बिच मरत पियासा ॥ टेक ॥
जल में ठाढ़ पियै नहिं मूरख, अच्छा जल है खासा।
अपने घट कै मरम न जानै, करै धुबियन कै आसा ॥ १ ॥
छिन में धुबिया रोवै धोवै, छिन में होइ उदासा।
आपै बरै[4] करम की रसरी, आपन गर[5] कै फाँसा ॥ २ ॥
सच्चा साबुन लेहि न मूरख, है संतन के पासा।
दाग पुराना छूटत नाहीं, धोवत बारह मासा ॥ ३ ॥
एक रती कौ जोरि लगावै, छोरि दिये भरि मासा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आछत अन्न उपासा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सब बातन में चतुर है, सुमिरन में काँचा।
सत्तनाम को छाड़ि के, माया सँग राचा ॥ १ ॥

(१) जिसका हम को ज्ञान नहीं है। (२) प्याला। (३) नम। (४) बटै। (५) गला।

दीनबन्धु बिसराइया, आया दे बाचा ।
ज्योँहि नचाया कामिनी, त्योँ त्योँ ही नाचा ॥ २ ॥
इन्द्रि बिषे के कारने, सही नर्क की आँचा ।
कहै कबीर हरि जब मिलै, हरिजन हो साचा ॥ ३ ॥

॥ शब्द १६ ॥

घर घर दीपक बरै, लखै नहिं अंध है ।
लखत लखत लखि परै, कटै जम फंद है ॥ १ ॥
कहन सुनन कछु नाहिं, नहीं कछु करन है ।
जीते ही मरि रहै, बहुरि नहिं मरन है ॥ २ ॥
जोगी पड़े बिजोग, कहैं घर दूर है ।
पासहि बसत हजूर, तु चढ़त खजूर है ॥ ३ ॥
बाम्हन दिच्छा देत, सो घर घर घालि है ।
मूर सजीवन पास, सो पाहन पालि है ॥ ४ ॥
ऐसन दास कबीर, सलोना आप है ।
नहीं जोग नहिं जाप, पुन्न नहिं पाप है ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

पढ़ो मन ओनामासीधंग[1] ॥ टेक ॥
ओंकार सबै कोइ सिरजै, सबद सरूपी अंग ।
निरंकार निर्गुन अबिनासी, कर वाही को संग ॥ १ ॥
नाम निरंजन नैनन मद्धे, नाना रूप धरंत ।
निरंकार निर्गुन अबिनासी, निरखै एकै रंग ॥ २ ॥
माया मोह मगन होइ नाचै, उपजै अंग तरंग ।
माटी के तन थिर न रहतु है, मोह ममत के संग ॥ ३ ॥
सील संतोष हृदे बिच दाया, सबद सरूपी अंग ।
साध के बचन सत्त करि मानौ, सिर्जनहारो संग ॥ ४ ॥

---

(१) "ओं नमः सिद्ध" का अपभ्रंश ।

ध्यान धीरज ज्ञान निर्मल, नाम तत्त गहंत ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आदि अंत परयंत ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

मन तू जाव रे महलिया, आपन बिरना जगाव ॥ टेक ॥
भौजिया मरै जगाइ न जागै, लग न सकै कछु दाव ।
कायागढ़ तेरे निसि अँधियरिया, कौन करै वा को भाव ॥१॥
अकिल की आग दया की बाती, दीपक बारि लगाव ।
तत कै तेल चुवै दियना में, ज्ञान मसाल दिखाव ॥ २ ॥
भ्रम कै ताला लगा महल में, प्रेम की कुंजी लगाव ।
कपट किवरिया खोल के रे, यहि बिधि पिय को जगाव ॥३॥
चित्त चुनरिया भक्ति घाघरा, चोली चाव सिलाव ।
प्रेम कै पवन करौ प्रीतम पर, प्रीति पिछौरी उढ़ाव ॥४॥
बार बार पैहौ नहिं नर तन, फेरि भूलि मत जाव ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

समुझ देख मन मीत पियरवा, आसिक होकर सोना क्या रे ॥१॥
रूखा सूखा गम का टुकड़ा, चिकना और सलोना क्या रे ॥२॥
पाया हो तो दे ले प्यारे, पाय पाय फिर खोना क्या रे ॥३॥
जिन आँखन में नींद घनेरी, तकिया और बिछौना क्या रे ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सीस दिया तब रोना क्या रे ॥५॥

॥ शब्द २० ॥

जाके नाम न आवत हिये ॥ टेक ॥
काह भये नर कासी बसे से, का गंगा जल पिये ॥ १ ॥
काह भये नर जटा बढ़ाये, का गुदरी के सिये ॥ २ ॥
का रे भये कंठी के बाँधे, काह तिलक के दिये ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, नाहक ऐसे जिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

नाम सुमिर नर बावरे, तेरी सदा न देहियाँ रे ॥ टेक ॥
यह माया कहो कौन की, केकरे सँग लागी रे।
गुदरी[1] सी उठि जायगी, चित चेत अभागी रे ॥१॥
सोने की लंका बनी, भइ धूर की धानी रे।
सोइ रावन की साहिबी, छिन माँ बिलानी रे ॥२॥
सोरह जोजन के मद्ध में, चले छत्र की छाँही रे।
सोइ दुर्जोधन मिलि गये, माटी के माहीं रे ॥३॥
भवसागर में आइ के, कछु कियो न नेका रे।
यह जीयरा अनमोल है, कौड़ी को फेका रे ॥४॥
कहै कबीर पुकारि के, इहाँ कोइ न अपना रे।
यह जियरा चलि जायगा, जस रैन का सपना रे ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

है कोइ भूला मन समुझावै।
या मन चंचल चोर हेरि लो, छूटा हाथ न आवै ॥१॥
जोरि जोरि धन गहिरे गाड़ें, जहँ कोइ लेन न पावै।
कंठ क पौल[2] आइ जम घेरे, दै दै सैन बतावै ॥२॥
खोटा दाम गाँठि लै बाँधै, बड़ि बड़ि बस्तु भुलावै।
बोय बबूल दाख[3] फल चाहै, सो फल कैसे पावै ॥३॥
गुरु की सेवा साध की संगत, भाव भगति बनि आवै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बहुरि न भवजल आवै ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

जीवत मुक्त सोइ मुक्ता हो।
जब लग जीवन मुक्ता नाहीं, तब लग दुख सुख भुगता हो ॥टेक॥

---

(१) बाजार जो क़सबों में थोड़ी देर को तीसरे पहर लगता है। (२) कंठ का द्वार—गला घुँटाने से भाव है। (३) छुहारा।

देह संग ना होवै मुक्ता, मुए मुक्ति कहँ होई हो ।
तीरथ बासी होय न मुक्ता, मुक्ति न धरनी सोई हो ॥१॥
जीवन भर्म को फाँस न काटी, मुए मुक्ति की आसा हो ।
जल प्यासा जैसे नर कोई, सपने फिरै पियासा हो ॥२॥
है अतीत बंधन तेँ छूटै, जहँ इच्छा तहँ जाई हो ।
बिना अतीत सदा बंधन में, कितहूं जानि न पाई हो ॥३॥
आवागवन से गये छूटि के, सुमिरि नाम अबिनासी हो ।
कहै कबीर सोई जन गुरु है, काटी भ्रम की फाँसो हो ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

छिमा गहो हो भाई, धरि सतगुरु चरनी ध्यान रे ॥१॥
मिथ्या कपट तजो चतुराई, तजो जाति अभिमान रे ॥२॥
दया दीनता समता धारो, हो जीवत मृतक समान रे ॥३॥
सुरत निरत मन पवन एक करि, सुनो सबद धुन तान रे ॥४॥
कहै कबीर पहुँचै सतलोका, जहँ रहै पुरुष अमान रे ॥५॥

॥ शब्द २५ ॥

का जोगी मुद्रा करै, साहिब गति न्यारी ॥टेक॥
नेती धोती वह करै, बहु भाँति सँवारी ।
बाजीगर का पेखना[1], सब देखनहारी ॥ १ ॥
झाड़ी जंगल वे फिरैं, अंधे बैपारी ।
पूजा तर्पन जाप मेँ, भूले ब्रह्मचारी ॥ २ ॥
उलटा पवन चढ़ाइ के, जीवैं अधिकारी ।
तन तजि के अजगर भये, गये बाजी हारी ॥३॥
सुन्न महल कहा सोइये, जहँ निसि अँधियारी ।
कहै कबीर वहँ सोइये, रबि ससि उँजियारी ॥४॥

---

(१) तमाशा ।

॥ शब्द २६ ॥

खसम न चीन्है बावरी, का करत बड़ाई ॥ टेक ॥
बातन भगत न होहिगे, छोड़ौ चतुराई ।
कागा हंस न होहिंगे, दुबिधा नहिं जाई ॥ १ ॥
गुरु बिन ज्ञान न पाइहौ, मरिहौ भटकाई ।
चेत करौ वा देस, नहीं जम हाथ बिकाई ॥ २ ॥
दिल दरियाव की माछरी, गंगा बहि आई ।
कोटि जतन से धोवही, तहु बास न जाई ॥ ३ ॥
साखी सबद सँदेस पढ़ि, मत भूलो भाई ।
संत मता कछु और है, खोजा सो पाई ॥ ४ ॥
तीनि लोक दसहों दिसा, जम धै धै खाई ।
जाइ बसो सतलोक में, जहँ काल न जाई ॥ ५ ॥
कहै कबीर धर्मदास से, हंसा समुझाई ।
आदि अंत की बारता, सतगुरु से पाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द २७ ॥

गुरु से कर मेल गँवारा, का सोचत बारम्बारा ॥ १ ॥
जब पार उतरना चहिये, तब केवट से मिलि रहिये ॥ २ ॥
जब उतरि जाय भवपारा, तब छूटै यह संसारा ॥ ३ ॥
जब दरसन देखा चहिये, तब दर्पन माँजत रहिये ॥ ४ ॥
जब दर्पन लागत काई, तब दर्सन कहँ तें पाई ॥ ५ ॥
जब गढ़ पर बजी बधाई, तब देख तमासे जाई ॥ ६ ॥
जब गढ़ बिच होत सकेला[१], तब हंसा चलत अकेला ॥ ७ ॥
कह कबीर देख मन करनी, वा के अंतर बीच कतरनी ॥ ८ ॥
कतरनि कै गाँठि न छूटै, तब पकरि पकरि जम लूटै ॥ ९ ॥

---

(१) सिमटाव।

॥ शब्द २८ ॥

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो ॥ टेक ॥
यहि संसार काल है राजा, करम को जाल पसारा हो ।
चौदह खंड बसै जा के मुख, सबको करत अहारा हो ॥ १ ॥
जारि बारि कोइला करि डारत, फिरि फिरि दे औतारा हो ।
ब्रह्मा बिस्नु सिव तन धरि आये, और को कौन बिचारा हो ॥२॥
सुर नर मुनि सब छल छल मारिन, चौरासी में डारा हो ।
मद्ध आकास आप जहँ बैठे, जोति सबद उजियारा हो ॥३॥
सेत सरूप सबद जहँ फूले, हंसा करत बिहारा हो ।
कोटिन सूर चंदा छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो ॥४॥
वही पार इक नगर बसतु है, बरसत अमृत धारा हो ।
कहै कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो ॥५॥

॥ शब्द २९ ॥

सतसँग लागि रहो रे भाई, तेरी बिगरी बात बनि जाई ॥टेक॥
दौलत दुनियाँ माल खजाने, बधिया बैल चराई ।
जबही काल के डंडा बाजे, खोज खबरि नहिं पाई ॥१॥
ऐसी भगति करौ घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई ।
सेवा बँदगी अरु अधीनता, सहज मिलैं गुरु आई ॥२॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु बात बताई ।
यह दुनियाँ दिन चार दहाड़े, रहो अलख लौ लाई ॥३॥

॥ शब्द ३० ॥

मन न रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा ॥टेक॥
आसन मारि मन्दिर में बैठे ।
नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा ॥१॥
कनवाँ फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौलै ।
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैलै बकरा ॥२॥

जंगल जाइ जोगी धुनिया रमौलै ।
काम जराय जोगी होइ गैलै हिजरा ॥३॥
मथवा मुड़ाय जोगी कपरा रँगौलै ।
गीता बाँचि के होइ गैलै लबरा ॥४॥
कहहि कबीर सुनो भाई साधो ।
जम दरवजवाँ बाँधल जैबै पकरा ॥५॥

॥ शब्द ३१ ॥

मन को न तौल्यो तो का तौल्यो बनियाँ ॥टेक॥
काहे की पूँजी काहे का सौदा, काहे की कैले दुकनियाँ ।
काहे की डाँड़ी काहे का पलरा, काहे का मारै टेनियाँ ॥१॥
करम की पूँजी धरम का सौदा, चित की कैले दुकनियाँ ।
या तन कै जो डाँड़ो पलरा, प्रेम की मारै टेनियाँ ॥२॥
काया नगर के हाट में रे, ऊँची कैले दुकनियाँ ।
कैसन तोरी सोंठ औ आदी, कैसन तोरी धनियाँ ॥३॥
पकरि पैहैं बजार के बाहर, फेंक देहैं तोरी दुकनियाँ ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, छाड़ि दे तन की लदनियाँ ॥४॥

॥ शब्द ३२ ॥

निज बैपारी नाम का हाटै चलु भाई ॥ टेक ॥
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई ।
सार सबद कछु बस्तु है, सौदा करु भाई ॥१॥
भाव खुला पँच रंग का, बहु करत दलाली ।
जा के हाथ बिबेक है, करि देत सवाई ॥२॥
पाप पुन्न पलरा भये, सूरत भइ डाँड़ी ।
ज्ञान दुसेरा डारि कै, पूरा करु आई ॥३॥
करि सौदा घर को चले, रोका दरबानी ।
लेखा दे निज नाम का, कहँ का बैपारी ॥ ४ ॥

पानी सी बानी बही, गुरु छाप दिखाई ।
इतना सुन कायल भये, जम सीस नवाई ॥ ५ ॥
संत चले सतलोक को, छोड़ा संसारी ।
कुंदन भये दरबार में, प्रभु नजर गुजारी ॥ ६ ॥
कहै कबीर बैठो सही, सिख लेहु हमारी ।
काल कलप ब्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

कर गुजरान गरीबी से, मगरूरी किसपर करता है ॥१॥
गीदी काया देख भुलाया, दीनन से क्योँ डरता है ॥२॥
जगत पुकारै कूका मारै, हो हो कहि कर हलता है ॥३॥
रूह जलाली करत हलाली, क्योँ दोजख आगी जलता है ॥४॥
खाय खुराका पहिन पुसाका, जम का बकरा पलता है ॥५॥
जम बदजाती तोड़ै छाती, क्योँ नहिं उससे डरता है ॥६॥
तजि अभिमाना सीखो ज्ञाना, सतगुरु संगत तरता है ॥७॥
कहै कबीर कोइ बिरला हंसा, जीवत ही जो मरता है ॥८॥

॥ शब्द ३४ ॥

अब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई ॥टेक॥
किरिया कर्म अचार मैं छाड़ा, छाड़ा तिरथ का न्हाना ।
सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना ॥१॥
ना मैं जानूँ सेव बंदगी, ना मैं घंट बजाई ।
ना मैं मूरत धरी सिंहासन, ना मैं पुहुप चढ़ाई ॥२॥
जौ यह मूरत मुख से बोलै, कर अस्नान न्हवाई ।
पाँच टका हौं देत ठठेरे, एकहि हौं लै आई ॥३॥
ना हरि रीझै जप तप कीन्हे, ना काया के जारे ।
ना हरि रीझै धोती छाड़े, ना पाँचो के मारे ॥४॥

दाया राखि धरम को पालै, जग से रहै उदासी ।
अपनासा जिव सबका जानै, ताहि मिलै अबिनासी ॥५॥
सहै कुसबद बाद को तयागै, छाड़ै गर्ब गुमाना ।
सत्तनाम ताही को मिलिहै, कहै कबीर सुजाना ॥६॥

॥ शब्द ३५ ॥

साधो भजन भेद है न्यारा ॥टेक॥
का माला मुद्रा के पहिरे, चंदन घसे लिलारा ।
मूँड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये, अंग लगाये छारा ॥१॥
का पानी पाहन के पूजे, कंदमूल फरहारा ।
कहा नेम तीरथ ब्रत कीन्हे, जो नहिं तत्व बिचारा ॥२॥
का गाये का पढ़ि दिखलाये, का भरमे संसारा ।
का संध्या तरपन के कीन्हे, का षट कर्म अचारा ॥३॥
जैसे बधिक ओट टाटी के, हाथ लिये विख[1] चारा ।
ज्यौँ बक ध्यान धरै घट भीतर, अपने अंग बिकारा ॥४॥
दै परचे स्वामी ह्वै बैठे, करैं विषय ब्योहारा ।
ज्ञान ध्यान को मरम न जानैं, बाद करैं निःकारा ॥५॥
फूँके कान कुमति अपने से, बोझि लियो सिर भारा ।
बिन सतगुरु गुरु केतिक बहिगे, लोभ लहर की धारा ॥६॥
गहिर गँभीर पार नहिं पावै, खंड अखंड से न्यारा ।
द्रष्टि अपार चलब को सहजै, कटे भरम के जारा[2] ॥७॥
निर्मल द्रष्टि आत्मा जा की, साहिब नाम अधारा ।
कहै कबीर तेही जन आवै, मैं तैं तजै बिकारा ॥८॥

॥ शब्द ३६ ॥

साधो करता कर्म तैं न्यारा ।
आवै न जावै मरै नहिं जीवै, ता को करै बिचारा ॥१॥

---

(१) बिशिख का अपभ्रंश जिसका अर्थ "बान" है । (२) जाल ।

राम को पिता जो जसरथ कहिये, जसरथ कौने जाया।
जसरथ पिता राम को दादा, कहो कहाँ तें आया ॥२॥
राधा रुकमिन किसन की रानी, किसन दोऊ को मीरा।
सोलह सहस गोपी उन भोगी, वह भयो काम को कीरा ॥३॥
बासुदेव पितु मात देवको, नंद महर घरि आयो।
ता को करता कैसे कहिये, (जो) करमन हाथ बिकायो ॥४॥
जा के धरनि गगन है सहसै[1], ता को सकल पसारा।
अनहद नाद सबद धुनि जा के, सोई खसम हमारा ॥५॥
सतगुरु सबद हृदय दृढ़ राखो, करहु बिबेक बिचारा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, है सतपुरुष अपारा ॥६॥

॥ शब्द ३७ ॥

अनगढ़िया देवा, कौन करै तेरी सेवा ॥टेक॥
गढ़े देवा को सब कोइ पूजै, नित ही लावै सेवा।
पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ता को न जानै भेवा ॥१॥
दस औतार निरंजन कहिये, सो अपनो ना होई।
यह तो अपनी करनी भोगैं, करता औरहि कोई ॥२॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर कहिये, इन सिर लागी काई।
इनहिं भरोसे मत कोइ रहियो, इन हूँ मुक्ति न पाई ॥३॥
जोगी जती तपी सन्यासी, आप आप में लड़िया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद लखै सोइ तरिया ॥४॥

---

(१) हज़ारों

सत गुरु महिमा

॥ शब्द ॥

जग में गुरु समान नहिं दाता ॥टेक॥

बस्तु अगोचर दइ सतगुरु ने, भलो बताई बाटा ।
काम क्रोध कैद करि राखे, लोभ को लीन्ह्यो नाथा ॥१॥
काल्ह करै सो हालहि करि ले, फिर न मिलै यह साथा ।
चौरासी में जाइ पड़ोगे, भुगतो दिन और राता ॥२॥
सबद पुकार पुकार कहत है, करि ले संतन साथा ।
सुमिर बंदगी कर साहिब की, काल नवावै माथा ॥३॥
कहै कबीर सुनो हो धर्मन, मानो बचन हमारा ।
परदा खोलि मिलो सतगुरु से, आवो लोक दयारा[1] ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

साधो सो सतगुरु मोहिं भावै ।

सत्त नाम का भरि भरि प्याला, आप पिवै मोहि प्यावै ॥१॥
मेले जाय न महँत कहावै, पूजा भेंट न लावै ।
परदा दूरि करै आँखिन को, निज दरसन दिखलावै ॥२॥
जा के दरसन साहिब दरसै, अनहद सबद सुनावै ।
माया के सुख दुख करि जानै, संग न सुपन चलावै ॥३॥
निसि दिन सतसंगत में राचै, सबद में सुरत समावै ।
कहै कबीर ता को भय नाहीं, निर्भय पद परसावै ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

बलिहारी जाउँ मैं सतगुरु के, मेरा दरस करत भ्रम भागा ॥१
धर्मराय से तिनुका तोड़ा, जम दुसमन से दूर किया ॥२॥
सबद पान परवाना दीया, काग करम तजि हंस किया ॥६॥

---

(१) दयाल व निर्मल चेतन्य देश ।

गुरु की मिहर से अगम निगम लखि, बिन गुरु कोई न मुक्त भया ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन से राखि लिया ॥५॥

॥ दोहा ॥

कबीर फकीरी अजब है, जो गुरु मिलै फकीर।
संसय सोक निवारि के, निरमल करै सरीर॥

॥ शब्द ४ ॥

संत जन करत साहिबो तन में ॥टेक॥
पाँच पचीस फौज यह मन की, खेलैं भीतर तन में।
सतगुरु सबद से मुरचा काटो, बैठो जुगत के घर में ॥१॥
बंकनाल का धावा करिके, चढ़ि गये सूर गगन में।
अष्ठ कँवल दल फूल रह्यो है, परखे तत्त नजर में ॥२॥
पच्छिम दिसि की खिड़की खोलो, मन रहै प्रेम मगन में।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, लहरि लेहु या तन में ॥३॥
संख घंट सहनाई बाजै, सोभा सिंध महल में।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अजर साहिब लख घट में ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जब कोइ रतन पारखी पैहो, हीरा खोल भँजैहौ ॥१॥
तन कै तुला सुरत कै पलरा, मन कौ सेर बनैहौ।
मासा पाँच पचीस रती को, तोला तीन चढ़ैहौ ॥२॥
अगम अगोचर बस्तु गुरू की, लै सराफ पै जैहौ।
जहँ देख्यो संतन की महिमा, तहवाँ खोलि भँजैहौ ॥३॥
पाँच चोर मिलि घुसे महल में, इन से बस्तु छिपैहौ।
जम राजा के कठिन दूत हैं, उन से आप बचैहौ ॥४॥
दया धरम से पार उतरिहौ, सहज परम पद पैहौ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हीरा गाँठि लगैहौ ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

साचे सतगुरु की बलिहारी, जिन यह कुंजी कुफल उघारी ॥१
नख सिख साहिब है भर पूर, सो साहिब क्यों कहिये दूर ॥२॥
सतगुरु दया अमी रस भींजै, तन मन धन सब अर्पन कोजै ॥३॥
कहै कबीर संत सुखदाई, सुख सागर इस्थिर घर पाई ॥४॥

॥ शब्द ॥

वारी जाउँ मैं सतगुरु के, मेरा किया भरम सब दूर ॥टेक॥
चंद चढ़ा कुल आलम देखै, मैं देखूँ भ्रम दूर ॥१॥
हुआ प्रकास आस गइ दूजी, उगिया निरमल नूर ॥२॥
माया मोह तिमिर सब नासा, पाया हाल हजूर ॥३॥
बिषय बिकार लार[1] है जेता, जारि किया सब धूर ॥४॥
पिया पियाला सुधि बुधि बिसरी, हो गया चकना चूर ॥५॥
हूआ अमर मरै नहि कबहूँ, पाया जीवन मूर ॥६॥
बंधन कटा छूटिया जम से, किया दरस मंजूर ॥७॥
ममता गई भई उर समता, दुख सुख डारा दूर ॥८॥
समझे बनै कहे नहि आवै, भयो आनँद भरपूर ॥९॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बजिया निरमल तूर ॥१०॥

॥ शब्द ८ ॥

सतगुरु चीन्हो रे भाई ।
सत्तनाम बिन सब नर बूड़े, नरक पड़ी चतुराई ॥१॥
बेद पुरान भागवत गीता, इन को सबै दृढ़ावै ।
जा को जनम सुफल रे प्रानी, सो पूरा गुरु पावै ॥२॥
बहुत गुरू संसार कहावैं, मंत्र देत हैं काना ।
उपजैं बिनसैं या भौसागर, मरम न काहू जाना ॥३॥

(१) लाथ—एक लिपि में "रार" (झगड़ा) है ।

सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कढ़िहारा।
कहै कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि लैं औतारा ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

सतगुरु साह संत सौदागर, तहँ मैं चलि के जाऊँ जी ॥टेक॥
मन की मुहर धरौं गुरु आगे, ज्ञान के घोड़ा लाऊँ जी।
सहज पलान चित्त कै चाबुक, अलख लगाम लगाऊँ जी ॥१॥
बिबेक बिचार भरे तिर[1] तरकस, सुरत कमान चढ़ाऊँ जी।
घोर गँभीर खड़ग लिये दलमल, माया कै कोट ढ़हाऊँ जी ॥२
रिपु कै दल मैं सहजहि रौंदौं, आनँद तबल बजाऊँ जी।
कहै कबीर मेरे सिर पर साहिब, ताको सीस नवाऊँ जी ॥३॥

॥ शब्द १० ॥

सुन सतगुरु की बानी लो।
ताहि चीन्ह हम भये बैरागी, परिहर कुल की कानी लो ॥१॥
तब हम बहुतक दिन लौं अटके, सुनसुन बात बिरानी लो।
अब कुछ समझ पड़ी अंतरगत, आदि कथा परमानी लो ॥२
मनमति गई प्रगट भइ सम गति, रमता से रुचि मानी लो।
लालच लोभ मोह ममता की, मिट गइ ऐंचा तानी लो ॥३॥
चंचल तें मन निस्चल कीन्हा, सुरत निरत ठहरानी लो।
कहै कबीर दया सतगुरु तें, लखी अटल रजधानी लो ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

हमरे सत्तनाम धन खेती ॥टेक॥
मन कै बैल सुरत हरवाहा, जब चाहै तब जोती ॥१॥
सत्तनाम का बीज बोवाया, उपजै हीरा मोती ॥२॥
उन खेतन में नफा बहुत है, संतन लूटा सैंती ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, उलटि पलटि नर जोती ॥४॥

---

(१) तीर।

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु सोई दया करि दीन्हा, तातैं अनचिन्हार मैं चीन्हा ॥
बिन पग चलना बिन पर उड़ना, बिना चुंच का चुगना।
बिना नैन का देखन पेखन, बिन सरवन का सुनना ॥१॥
चंद न सूर दिवस नहिं रजनी, तहाँ सुरत लौ लाई।
बिना अन्न अमृत रस भोजन, बिन जल तृषा बुझाई ॥२॥
जहाँ हरष तहँ पूरन सुख है, यह सुख का से कहना।
कहै कबीर बल बल सतगुरु की, धन्य सिष्य का लहना[1] ॥३॥

॥ शब्द १३ ॥

मेरे सतगुरु पकड़ी बाँह, नहीं तो मैं बहि जाता ॥टेक॥
करम काटि कोइला किया, ब्रह्म अगिनि परिचार।
लोभ मोह भ्रम जारिया, सतगुरु बड़े दयार ॥१॥
कागा से हंसा किया, जाति बरन कुल खोय।
दया दृष्टि से सहज सब, पातक डारे धोय ॥२॥
अज्ञानी भटकत फिरै, जाति बरन अभिमान।
सतगुरु सबद सुनाइया, भनक पड़ी मेरे कान ॥३॥
माया ममता तजि दई, बिषया नाहिं समाय।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हद तजि बेहद जाय ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

सब जग रोगिया हो, जिन सतगुरु बैद न खोजा ॥१॥
सोखा सीखी गुरुमुख हूआ, किया न तत्त बिचारा ॥२॥
गुरु चेला दोउन के सिर पै, जम मारे पैजारा ॥ ३ ॥

---

(१) भाग।

झूठे गुरु को सब कोइ पूजै, साचे ना पतियाई ॥४॥
अँधे बाँह गहो अँधे की, मारग कौन दिखाई ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु रँग लागा सत रँग लागा, मेरे मन का संसय भागा ॥टेक
जब हम रहलो हठिल[1] दिवानो, तब पिय मुखहु न बोले।
जब दासी भइ खाक बराबर, साहिब अंतर खोले ॥१॥
साचे मन तेँ साहिब नेरे, झूठे मन तेँ भागा।
भक्त जनन अस साहिब मिलनो, [जस] कंचन संग सुहागा॥२
लोक लाज कुल की मर्यादा, तोरि दियो जस धागा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भाग हमारा जागा॥३॥

॥ शब्द १६ ॥

जाके रहनि अपार जगत में, सो गुर नाम पियारा हो ॥टेक॥
जैसे पुरइनि[2] रहि जल भीतर, जलहि में करत पसारा हो।
वा के पानी पत्र न लागे, ढरकि चले जस पारा हो ॥१॥
जैसे सती चढ़ै सत ऊपर, स्वामी बचन न टारा हो।
आप तरै औरन को तारै, तारै कुल परिवारा हो ॥२॥
जैसे सूर चढ़ै रन ऊपर, पाछे पग नहि डारा हो।
वा की सुरत रहै लड़ने में, प्रेम मगन ललकारा हो ॥३॥
भवसागर इक नदी अगम है, लख चौरासी धारा हो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बिरले उतरे पारा हो ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

धन सतगुरु जिन दियो उपदेस, भव बूड़त गहि राखे केस ॥१॥
साकित से गुरु अपना किया, सत्तनाम सुमिरन को दिया ॥२॥
जात बरन कुल करम नसाया, साध मिले जब साध कहाया॥३॥

---

(१) हठीलो। (२) कोईं।

पारस परसे कंचन होई, लोहा वाहि कहै नहिं कोई ॥४॥
पारस को गुन देखो आय, लोहा महँगे मोल बिकाय ॥५॥
स्वाँति बूँद कदली में परै, रूप बरन कछु औरहि धरै ॥६॥
नाम कपूर बासना[1] होई, कदली वा को कहै न कोई ॥७॥
निसि दिन सुमिरौ एकै नाम, जा सुमिरे तेरो झट है काम ॥८॥
कहै कबीर यह साचो खेल, फूल तेल मिलि भये फुलेल ॥९॥

॥ शब्द १८ ॥

सतगुरु सबद सहाई ॥ टेक ॥
निकटि गये तन रोग न ब्यापै, पाप ताप मिटि जाई।
अठवन पठवन दीठि न लागै, उलटे तेहि धरि खाई ॥१॥
मारन मोहन उचाटन बसिकरन, मनहिँ माहिँ पछिताई।
जादू जंतर जुक्ति भुक्ति नहिं, लागै सबद के बान ठहाई ॥२॥
ओझा डाइन डर से डरपैं, ज़हर जूड़[2] हो जाई।
बिषधर[3] मन मैं करि पछितावा, बहुरि निकट नहि आई ॥३॥
जहँ तक देवो कालो के गुन, संत चरन लौ लाई।
कह कबीर काटो जम फंदा, सुकृती लाख दुहाई ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

पिया मोरा मिलिया सत्त गियानी ॥ टेक ॥
सब मैं ब्यापक सब से न्यारा, ऐसा अंतरजामी।
सहज सिंगार प्रेम का चोला, सुरत निरत भरि आनी ॥१॥

---

(१) सुगंधि। (२) ठंढा। (३) साँप।

सील संतोष पहिरि दोउ सत गुन, हो रहि मगन दिवानी।
कुमति जराइ करौं मैं कोइला, पढ़ो प्रेम रस बानी ॥२॥
ऐसा पिय हम कबहु न देखा, सूरत देखि लुभानी।
कहै कबीर मिला गुरु पूरा, तन की तपन बुझानी ॥३॥

॥ शब्द २० ॥

अवधू कुदरत की गति न्यारी।
रंक निवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी ॥ १ ॥
जा से लौंग गाछ फर लागै, चंदन फूलन फूला।
मच्छ सिकारी रमै जँगल में, सिंह समुंदर झूला ॥ २ ॥
रेंड रूख भयौ मलयागिरि, चहुँ दिसि फूटै बासा।
तीनि लोक ब्रह्मंड खंड में, अँधरा देखि तमासा ॥ ३ ॥
पँगुला मेरु सुमेरु उड़ावै, त्रिभुवन माहीं डोलै।
गूँगा ज्ञान बिज्ञान प्रकासै, अनहद बानी बोलै ॥ ४ ॥
पतालै बाँध अकासै पठवै, सेस स्वर्ग पर राजै।
कहै कबीर समरथ है स्वामी, जो कछु करै सो छाजै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

है सब में सब ही तें न्यारा ॥ टेक ॥
जीव जंतु जल थल सब ही में, सबद बियापत बोलनहारा ॥१॥
सब के निकट दूर सब ही तें, जिन जैसा मन कीन्ह बिचारा ॥२॥
सार सबद को जो जन पावै, सो नहि करत नेम आचारा ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद गहै सो हंस हमारा ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

होइहै कस नाम बिना निस्तारा ॥टेक॥
देवी देवा भूतल पूजा, आतम नाम बिसारा।
बेस्या के पुत्र पितु कौन से कहिहै, ऐसो ही संसारा ॥ १ ॥

कंचन मेरु सुमेरु लैाँ द्रब्य, दीजै दान अपारा।
जो जस देइ सो तैसे पावै, मुक्ति भेद है न्यारा ॥२॥
नामहि नौका या जग माहीँ, जा चढ़ि उतरै पारा।
ज्ञान की कड़िया सतगुरु करि ले, खेइ लगा दें पारा ॥३॥
सतगुरु चीन्हि चरन चित लावो, उतरै भौजल पारा।
नाम बराबर और न दूजा, कहै कबीर पुकारा ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

अँखियाँ लागि रहन दो साधो, हिरदे नाम सम्हारा।
रीझै बूझै साहिब तेरा, कौन पड़ा है द्वारा ॥ १ ॥
जम जालिम के सब डर मिटिगे, जा दिन दृष्टि निहारा।
जब सतगुरु ने किरपा कीन्ही, लीन्ह्यो आप उबारा ॥ २ ॥
लख चौरासी बन्धन छूटे, सदा रहै गुरु संगी।
प्रेम पियाला हर दम पीवै, सदा मस्त बैरंगी ॥ ३ ॥
जब लग बस्तु पिछाने नाहीं, तब लग झूठी आसा।
झिलमिल जोति लखै कोइ गुरुमुख, उन मुनि घर के बासा ॥४॥
सब को दृष्टि पड़ै अबिनासी, बिरला संत पिछानै।
कहै कबीर यह भर्म किवाड़ो, जो खोलै सो जानै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

मन मैल न जाय कैसे कै धोवौं ॥ टेक ॥
गाँव गड़हिया मैं गादड़[1] पानी, धुबिया रसिया गुदरी पुरानी ॥१॥
बालू रेहिया साबुन घोट, बहै बयार कछु मिलै न ओट ॥२॥

---

(१) गदला।

सतगुरु घटिया सौंदन होइ, साधू संगति मिलि ले धोइ ॥३॥
कहै कबीर या गुदरी के भाग, मिलि गैल सतगुरु छुटि गैलैं दाग ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

कोइ कुच्छ कहै कोइ कुच्छ कहै, हम अटके हैं जहँ अटके हैं ॥१॥
सुरत काल पर अमल किया, महबूब के नाम से मटके हैं ॥२॥
संसार बिचार के छोड़ दिया, हम इसी बात पै सटके हैं ॥३॥
दास कबीर के भूलने में, सब पंडित काजी फटके हैं ॥४॥

चितावनी

॥ शब्द १ ॥

परमातम गुरु निकट बिराजै, जागु जागु मन मेरे ॥टेक॥
धाइ के सतगुरु चरनन लागौ, काल खड़ा सिर तेरे।
छिन छिन पल पल सबहि सँघारै, बहु बिधि देत न देरे ॥१॥
जुगन जुगन तोहि सोवत बीता, अजहुँ न जागु सबेरे।
काम क्रोध मद लोभ फंद तजि, छिमा दया दिल हेरे ॥२॥
भाई बंधु कुटम्ब कबीला, सब स्वारथ के चेरे।
जब जम जाल में आनि पकरि है, कोइ न संग चले रे ॥३॥
भौसागर बाँकी[1] है धारा, लख चौरासी फेरे।
कहै कबीर सुनो हो साधो, जग से किये निबेरे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

जाग पियारो अब का सोवै, रैन गई दिन काहे को खोवै ॥१॥
जिन जागा तिन मानिक पाया, तैं बौरो सब सोइ गँवाया ॥२॥

---

(१) टेढ़ी, कड़ी।

पिय तेरे चतुर तु मूरख नारी, कबहुँ न पिया की सेज सँवारी ॥३॥
तैं बौरी बौरा पन कीन्ह्यो, भर जोबन पिय अपन न चीन्ह्यो ॥४॥
जागु देखु पिय सेज न तेरे, तोहि छाड़ि उठि गये सबेरे ॥५॥
कहै कबीर सोई धन जागै, सबद बान उर अंतर लागै ॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

जतन बिन मिरगन खेत उजाड़े ॥ टेक ॥
पाँच मिरग पच्चीस मिरगनी, तिन में तीन चितारे[1] ॥
अपने अपने रस के भोगी, चुगते न्यारे न्यारे ॥ १ ॥
पाँच डार सूटन[2] की आई, उतरे खेत मँझारे ।
हा हा करत बाल ले भागे, टेरि रहे रखवारे ॥ २ ॥
सुनियो रे हम कहत सबन को, ऊँचे हाँक हँकारे ।
यह नर देह बहुरि नहिं पैहौ, काहे न रहत सँभारे ॥ ३ ॥
तन कर खेती मन कर बाड़ी, मूल सुरत रखवारे ।
ज्ञान बान और ध्यान धनुषकरि, क्यों नहिं लेत सँघारे[3] ॥४॥
सार सबद बन्दूख सुरत धरि, मारे तीन चितारे ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उबरे[4] खेत निहारे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सृष्टि गई जहँड़ाय[5] , दृष्टि करि देखि ले ॥ टेक ॥
चीन्ही करो बिचार, दयानिधि कहाँ बिराजैं ।
कहाँ पुरुष के देस, कहाँ बैठे बिलगाजैं ॥
जब लगि नैन न देखिये, तब लगि हिय न जुड़ाय ।
जल बिन मीन कंथ बिन बिरहिनि, तलफि तलफि जिय जाय ॥१

---

(१) चितकबरे, चीतल। (२) तोता। (३) मार लेना। (४) बच गये। (५) ठगाय।

बाढ़े बिरह बिरोग, रोग काहू ना चीन्हा ।
घर घर बाढ़े बैद, रोग अधिका रचि दीन्हा ॥
बिरह बियोग कैसे मिटै, कैसे तपन बुझाय ।
बैद मिलै जब औषदी, जिय कै भरम नसाय ॥ २ ॥
औरौ कहूँ बताय सुनो, परपंच कै फंदा ।
पूजैं भूत पिसाच, काल घर करैं अनंदा ॥
एकादसी निर्जल रहैं, भगता सुनैं पुरान ।
बकरा मारि माँस कै भोजन, ऐसे चतुर सुजान ॥ ३ ॥
अरे निपट चंडाल, महा पापी अपराधी ।
बिना दया अज्ञान, काया काहे नहिं साधी ॥
तोहिं अस निगुरा बहुत फिरत हैं, मन मैं करैं गुमान ।
कहै कबीर जो सबद से बिछुड़े, ता को नरक निदान ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

चार दिन अपनी नैाबत चले बजाइ ॥ टेक ॥
उतानै खटिया गड़िले मटिया, संग न कछु ले जाइ ॥१॥
देहरी बैठी मेहरी रोवै, द्वारे लैाँ सँग माइ ॥२॥
मरखट लैाँ सब लोग कुटुँब मिलि, हंस अकेला जाइ ॥३॥
वहि सुत वहि वित वहि पुर पाटन, बहुरि न देखै आइ ॥४॥
कहत कबीर भजन बिन बंदे, जनम अकारथ जाइ ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

कहा नर गरबस[1] थोरी बात ।
मन दस नाज टका चार गाँठो, ऐँड़ो टेढ़ो जात ॥१॥

---

(१) शेख़ी करता है ।

बहुत प्रताप गाँव से पाये, दुइके टका बरात[1] ।
दिवस चारि कै करो साहिबी, जैसे बन हर पात[2] ॥१॥
ना कोऊ लै आयो यह धन, ना कोऊ लै जात ।
रावन हूँ से अधिक छत्रपति, छिन में गये बिलात ॥३॥
मैं उन संत सदा थिर पूजौं, जो सतनाम जपात ।
जिन पर कृपा करत हैं सतगुरु, ते सतसंग मिलात ॥४॥
मात पिता बनिता सुत संपति, अंत न चलत सँगात ।
कहत कबीर संग कर सतगुरु, जनम अकारथ जात ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

रतन जतन करि प्रेम कै तत धरि,
  सतगुरु इमरित[3] नाम, जुगत कै राखब रे ॥१॥
बाबा घर रहलौं बउई कहैलौं,
  सैयाँ घर चतुर सयान, चेतब घरवा आपन रे ॥२॥
खेलत रहलौं मैं सुपली मौनिया[4],
  औचक आये लेनिहार, चलब केसिया[5] झारि रे ॥३॥
एक तो अँधेरी राती, चोरवा मुसल थातो,[1]
  सैयाँ कै बान कुबान, सुतल गोड़वा तानि रे ॥ ४ ॥
चुनि चुनि कलियाँ मैं सेजिया बिछौलौं,
  बिना रे पुरुषवा कै नारि, झँखैडे दिनवा राति रे ॥५॥
ताल झुराइ गैले फूल कुम्हिलाय गैले,
  ऊड़त हंसा अकेल, कोई नहिं देखल रे ॥ ६ ॥

---

(१) पूँजी । (२) हरा पत्ता । (३) अमृत । (४) बालकों के खेलने के नन्हे २ सूप मौनो । (५) बाल ।

अब का झँखेलु नारि, बैठलु मन मारि,
  यहि बाटे मोतिया हेराल[1] रे ॥ ७ ॥
दास कबीर इहै गावै निरगुनवाँ,
  अब की उहवाँ जाब, तो फिरि नहिं आउब रे ॥८॥

॥ शब्द ८ ॥

मोर बनिजरवा लादे जाय, मैं तो देखहु न पौल्यौं ॥ टेक ॥
करम कै सेर धरम कै पलरा, बैल पचीस लदाय ।
भूल गई है सुमारग पैंड़ा, कोइ नहिं देत बताय ॥ १ ॥
माया पापिन गर्बिया, बिपति न कहिये रोय ।
जो माया होती नहीं, बिपति कहाँ से होय ॥२॥
माया काली नागिनी, जिन डसिया संसार ।
एक डस्यौ ना साध जन, जिन के नाम अधार ॥३॥
मंगन से क्या माँगिये, बिन माँगे जो देय ।
कहै कबीर मैं हौं वाही को, होनी होय सो होय ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

खलक सब रैन का सपना । समझ मन कोइ नहीं अपना ॥१॥
कठिन है मोह की धारा । बहा सब जात संसारा ॥२॥
घड़ा ज्यों नीर का फूटा । पत्र ज्यों डार से टूटा ॥३॥
ऐसे नर जात जिंदगानी । अजहुँ तो चेत अभिमानी ॥४॥
निरखि मत भूल तन गोरा । जगत में जीवना थोरा ॥५॥
तजो मद लोभ चतुराई । रहो निःसंक जग माहीं ॥६॥
सजन परिवार सुत दारा । सभी इक रोज है न्यारा ॥७॥
निकसि जब प्रान जावैंगे । कोई नहिं काम आवैंगे ॥८॥
सदा जिनि जान यह देही । लगा ले नाम से नेही ॥९॥
कहत कब्बीर अबिनासी । लिये जम काल की फाँसी ॥१०॥

---

(१) खो गया।

॥ शब्द १० ॥

हिरवा भुलाय ससुरे जालू बारी धनियाँ ॥ टेक ॥
कौने तन तोरा कौने मन है, कौने बेद तुम जनियाँ ।
कौन पुरुष के ध्यान धरतु हौ, कौने नाम निसनियाँ ॥१॥
काया तन औँकार मन है, सूच्छम बेद हम जनियाँ ।
सत्तपुरुष के ध्यान धरतु हैँ, और सतनाम निसनियाँ ॥२॥
ई मत जानो हिरवा जिरवा, बनिया हाट बिकनियाँ ।
ई हिरवा अनमोल रतन है, अनहुन देस तँ अनियाँ ॥३॥
आयौ चोर सबन के मुसलस, राजा रैयत रनियाँ ।
लाखन मेँ कोइ बिरले बचिगे, जिनके अलख लखनियाँ ॥४॥
काया नगर इक अजब बृच्छ है, साखा पत्र तेहि झरियाँ ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पावै बिरले ठिकनियाँ ॥५॥

॥ शब्द ११ ॥

दुनिया झामर झूमर अरुझी ॥ टेक ॥
अपने सुत के मुँड़न करावै, छूरा लगन न पावै ।
अजया[1] के चिगना धरि मारै, तनिकौ दया न आवै ॥१॥
लैके तेगा चला बाँकुरा[2], अजया कै सिर काटा ।
पूजा रहो सो मालिन लै गइ, कूकुर मूरत चाटा ॥ २ ॥
माटी के चौतरा बनाइन, कुत्ता मुत मुत जाई ।
जो देउता में सक्तो होतो, कुत्ता धरि धरि खाई ॥ ३ ॥
गोबर लैके गौर बनाइन, पूजैँ लोग लुगाई ।
यह बोलै वह बोल न जानै, पानी मेँ डुबकाई ॥ ४ ॥
सोने की इक मुरति बनाइन, पूजन को सब धाई ।
बिपति पड़े गहने[3] धरि खाई, भल कीन्ह्यो सेवकाई ॥ ५ ॥

(१) बधिया किया हुआ बकरा । (२) बहादुर । (३) गिरवी ।

देबी जी को खस्सो भेड़ा, पीरन को नौ नेजा ।
उन साहिब को कुछ भी नाहीं, बाँह पकरि जिन भेजा ॥६॥
निरगुन आगे सरगुन नाचै, बाजै सोहँग तूरा ।
चेला के पाँव गुरू जी लागैं, यही अचम्भा पूरा ॥७॥
जाति बरन दूनौं हम देखा, झूठी तन की आसा ।
तीनों लोक नरक में बूड़े, बाम्हन के बिस्वासा ॥८॥
रही एक की भइ अनेक की, बेस्या सहस भतारी ।
कहै कबीर केहि के सँग जरिहै, बहुत पुरुष की नारी ॥९॥

॥ शब्द १२ ॥

साधो ई मुर्दन कै गाँव ॥ टेक ॥
पीर मरे पैगम्बर मरिगे, मरिगे जिन्दा जोगी ।
राजा मरिगे परजा मरिगे, मरिगे बैद्य औ रोगी ॥१॥
चाँदौ मरिहैं सुर्जौ मरिहैं, मरिहैं धरनि अकासा ।
चौदह भुवन चौधरी मरिहैं, इनहूँ कै का आसा ॥२॥
नौ हू मरिगे दस हू मरिगे, मरिगे सहस अठासी ।
तैंतिस कोट देवता मरिगे, परिगे काल की फाँसी ॥३॥
नाम अनाम रहै जो सदही, दूजा तत्त न होई ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भटकि मरै मत कोई ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

अब कहँ चले अकेले मीता, उठि क्यों करहु घर की चेता ॥१॥
खीर खाँड़ घृत पिन्ड सँवारा, सो तन लै बाहर करि डारा ॥२॥
जेहि सिर रचि रचि बाँधिसु पागा, सो सिर रतन बिडारैं कागा ॥३॥
हाड़ जरै जस सूखो लकरी, केस जरै जस तृन की कूरी ॥४॥
आवत संग न जात सँघाती,[1] कहा भये दल बाँधे हाथी ॥५॥

---

(१) साथी, संगी ।

माया के रस लेन न पाया, अंतर जम बिलार होइ धाया ॥६॥
कहै कबीर नर अजहुँ न जागा, जम को मुँगरा बरसन लागा ॥७॥

॥ शब्द १४ ॥

काया बौरी चलत प्रान काहे रोई ॥ टेक ॥

काया पाय बहुत सुख कीन्हो, नित उठि मलि मलि धोई ।
सो तन छिया छार होइ जैहै, नाम न लेहै कोई ॥१॥
कहत प्रान सुन काया बौरी, मोर तोर संग न होई ।
तोहि अस मित्र बहुत हम त्यागा, संग न लीन्हा कोई ॥२॥
ऊसर खेत कै कुसा मँगाये, चाँचर चवर[1] कै पानी ।
जीवत ब्रह्म को कोई न पूजै, मुरदा कै मेहमानी ॥३॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, सेस सहस मुख होई ।
जो जो जनम लियो बसुधा[2] में, थिर न रहो है कोई ॥४॥
पाप पुन्य हैं जनम सँघाती, समुझ देखु नर लोई ।
कहत कबीर अभिअंतर की गति, जानत बिरले कोई ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ॥ टेक ॥

ता दिन तेरे तन तरवर के, सबै पात झरि जैहैं ॥१॥
या देही को गर्ब न कीजै, स्यार काग गिध खैहैं ॥२॥
तन गति तीन बिष्ट किर्म ह्वै, ना तर खाक उड़ैहैं[3] ॥३॥
कहँ वह नैन कहाँ वह सोभा, कहँ वह रूप दिखैहैं ॥४॥

---

(१) परती ज़मीन की छिछली तलैया । (२) पृथ्वी ।

(३) मरने पर शरीर की तीन गति होती है—(१) लुटंत अर्थात जानवरों का आहार होकर बिष्टा हो जाना, (२) गड़ंत अर्थात क़बर में गड़ कर कीड़े पड़ जाना, (३) फुकंत अर्थात जल कर राख हो जाना ।

जिन लोगन तैं नेह करतु है, तेई देखि घिनैहैं ॥ ५ ॥
घर के कहत सवेरे काढ़ो, भूत होय धरि खैहैं ॥ ६ ॥
जिन पूतन को बहु प्रतिपाल्यो, देवी देव मनैहैं ॥ ७ ॥
तेइ लै बाँस दियो खोपरी मैं, सीस फोरि बिखरैहैं ॥ ८ ॥
अजहूँ मूढ़ करै सतसंगत, संतन मैं कछु पैहै ॥ ९ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आवागवन नसैहै[1] ॥१०॥

॥ शब्द १६ ॥

आपन काहे न सँवारै काजा ॥ टेक ॥
ना गुरु भगति साध की संगत, करत अधम निर्लाजा ।
मानुष जनम फेर नहिं पैहो, सब जीवन मैं राजा ॥१॥
पर नारी प्यारी करि जानै, सो नर नरक समाजा ।
जिनके पंथ भूलि गे भोंदू, करु चलने के साजा ॥२॥
इहाँ नहीं कोइ मीत तुम्हारा, मात पिता सुत आजा ।
ये हैं सब मतलब के साथी, काहे करत अकाजा ॥३॥
बृद्ध भये पर नाम भजतु हैं, निकसत सुरत अवाजा ।
टूटी खाट पुराना झिलँगा पड़े रहो दरवाजा ॥४॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस डिराने, सुनत काल कै गाजा ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो चढ़िले नाम जहाजा ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

जनम तेरो धोखे मैं बीता जाय ॥ टेक ॥
माटी कै गोंद हंस बनि जारा, उड़ि गे पंछी बोलनहारा ॥१॥
चार पहर धंधा मैं बीता, रैन गँवाय सुख सोवत खाट ॥२॥
जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे झरिगै तरवर पात ॥३॥

---

(१) इस शब्द को कोई कोई सूरदास जी का बताते हैं पर हमने इस को तीन लिपियों में जिन में से एक डेढ़ सौ बरस से अधिक पुरानी है कबीर साहिब के नाम से पाया ।

भौसागर मैं केहि गुहरैबौ, ऐंठो जीभ जम मारै लात ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि पछितैहौ मल मल हाथ ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

गाफिल मन काहे बिसारत धनी ॥ टेक ॥
पानी के बुंद से काया प्रगट कियो, काया सुघर बनी ।
यह काया तोरे संग न जैहै, कीरति रहै बनी ॥ १ ॥
रामनगर मैं बाजन बाजत, चादर लाल तनी ।
मारि मारि मुगदर प्रान निकासत, माथ मैं भाल[1] हनी ॥२॥
धीरे धीरे पग धरो मुसाफिर, सीढ़ी है अधबनी ।
मन मैं चिंता क्या करै बौरे, ना साहिब से बनी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब जो समुझ बड़ी ।
या घर से जब वा घर जैहौ, लिखनी सूझि पड़ी ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

चेत सवेरे चलना बाट ॥ टेक ॥
मन माली तन बाग लगाया, चलत मुसाफिर को बिलमाया ।
बिष के लेड़ुवा देत खिलाई, लूट लीन्ह मारग पर हाट ॥१॥
तन सराय मैं मन अरुझाना, भठियारिन के रूप लुभाना ।
निसि दिन वा से बचि के रहना, सौदा करु सतगुरु की हाट ॥२॥
मन कै घोड़ा लियो बनाई, सुरत लगाम ताहि पहिराई ।
जुगति कै एड़ा दियौ लगाई, भौसागर कै चौड़ा पाट ॥३॥
जल्दी चेतौ साहिब सुमिरौ, दसौ द्वार जम घेरि लियौ है ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब का सोवै छाये खाट ॥४॥

---

(१) भाला ।

॥ शब्द २० ॥

नैहर से जियरा फाटि रे ॥ टेक ॥
नैहर नगरी अस कै बिगरो, ठग लागैं घर बाट रे ।
तनिक जियरवा मोर न लागै, तन मन बहुत उचाट रे ॥१॥
या नगरी में दस दरवाजा बीच समुंदर पाट रे ।
कैसे कै पार उतरिहौ सजनी, अगम पंथ कौ घाट रे ॥२॥
अजब तरह का बना तँबूरा, तार लगे सौ साठ रे ।
खूँटो टूटि तार बिलगाना, कोऊ न पूछत बात रे ॥३॥
हँस हँस पूछै मातु पिता से, भोरै सासुर जाब रे ।
जो चाहैं सो वोही करिहैं, पत वाही के हाथ रे ॥४॥
न्हाय खोर[1] दुलहिन होय बैठी, जोहै[2] पिय की बाट रे ।
तनिक घुँघटवा दिखाव सखी री, आज सुहाग की रात रे ॥५॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पिया मिलन की आस रे ।
भोर होत बन्दे याद करोगे, नींद न आवै खाट रे ॥६॥

॥ शब्द २१ ॥

जनम सिरान भजन कब करिहौ ॥ टेक ॥
गर्भ बास में भगति कबूल्यौ, बाहर आय भुलान ॥ १ ॥
बालापन तो खेल गँवायौ, तरुनाई अभिमान ॥२॥
वृद्ध भये तन काँपन लागा, सिर धुन धुन पछितान ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जम के हाथ बिकान ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

मेरा दिल सतगुरु से राजी ॥ टेक ॥
नंगे हि आवन नंगे हि जावन, झूठी रचिया बाजी ।
या दुनिया में जीवन थोरा, गरब करे सो पाजी ॥ १ ॥

(१) नहाय और सज कर । (२) निहारै ।

स्याही गई सपेदी आई, हो गया राज बिराजी ।
बेद पढ़ंते पंडित भूले, कतेब पढ़ंते काजी ॥ २ ॥
सार सबद से सुरत लगाई, मारा रावन[1] पाजी ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतपुर नौबत बाजी ॥ ३ ॥

॥ शब्द २३ ॥

हमैं रे कोइ कातन देइ सिखाइ ॥ टेक ॥
कात ननदिया कात जिठनिया, कात परोसिन आइ ।
पिउनी पाँच पचीस रंग की, हम से कात न जाइ ॥१॥
ब्रह्मा काता बिसनू काता, नारद काता आइ ।
बिस्वामित्र बसिष्ट दोउ काता, तबहूँ न कात सिराइ ॥२॥
तन के काते का भया, जो मन ही कात न जाइ ।
टेकुआ साधन जो बनि आवै, महँगे मोल बिकाइ ॥३॥
बाला काता तरुना काता, बिरधै कात न जाइ ।
कहै कबीर तीनौं पन काता, चरखा धरा उठाइ ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

चलना है दूर मुसाफिर काहे सोवै रे ॥ टेक ॥
चेत अचेत नर सोच बावरे, बहुत नींद मत सोवै रे ।
काम क्रोध मद लोभ में फँसिगे, हो हुसियार उमरि काहे खोवै रे ॥१
सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवै रे ।
सो गठरी तोरी बीच में छिनि गइ, मूड़ पकरि कहा रोवै रे ॥२॥
रस्ता तो वह दूर बिकट है, तजि चलब अकेला होवै रे ।
संग साथ तेरे कोइ न चलैगा, डगरिया काके जोवै रे ॥३॥
नदिया गहरी नाव पुरानी, केहि बिधि पार तू होवै रे ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ब्याज के धोखे मूल मत खोवै रे ॥४॥

---

[1] मन ।

॥ शब्द २५ ॥

ससुरे का ब्यौहार, अनोखो बहु सीखि ले रे ॥टेक॥
पिया तुम्हारे रंग बिरंगे, तुम हो नार कुचाल ।
संग तुम्हारो कैसे निबहै, मूरख मूढ़ गँवार ॥१॥
इत उत तकना छोड़ि दे बहुवा, अपने महल चढ़ि आव ।
अंतर झाड़ू देके सजनी, कूड़ा दूर बहाव ॥२॥
ज्ञान ध्यान का कूड़ा पहिरै, सुखमन सेज बिछाव ।
हँसि के प्रीतम आन मिलैंगे, दुबिधा दूरि बहाव ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो हो बहुवा, सतसंगत को धाव ।
सार सबद निरवार के रे, अमर लोक चलि आव ॥४॥

॥ शब्द २६ ॥

या जग अंधा मैं केहि समुझावों ॥ टेक ॥
इक दुइ होयँ उन्हैं समुझावों ।
सबही भुलाना पेट के धन्धा (मैं केहि०) ॥१॥
पानी के घोड़ा पवन असवरवा ।
ढरकि परै जस ओस के बुन्दा (मैं केहि०) ॥२॥
गहिरी नदिया अगम बहै धरवा ।
खेवनहारा पड़िगा फंदा (मैं केहि०) ॥३॥
घर की बस्तु निकट नहिं आवत ।
दियना बारि के ढूँढ़त अंधा (मैं केहि०) ॥४॥
लागी आग सकल बन जरिगा ।
बिन गुरुज्ञान भटकिगा बन्दा (मैं केहि०) ॥५॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो ।
इक दिन जाइ लँगोटी झार बन्दा (मैं केहि०) ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

दुलहिनी तोहि पिय के घर जाना ॥ टेक ॥
काहे रोवो काहे गावो, काहे करत बहाना ॥१॥
काहे पहिरो हरि हरि चुरियाँ, पहिरो नाम कै बाना ॥२॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिन पिया नाहिं ठिकाना ॥३॥

॥ शब्द २८ ॥

तोर हीरा हिराइलबा किँचड़े मेँ ॥ टेक ॥
कोई ढूँढ़ै पूरब कोई ढूँढ़ै पच्छिम, कोई ढूँढ़ै पानी पथरे मेँ ॥१॥
सुर नर मुनि अरु पीर औलिया, सब भूलल बाड़े नखरे मेँ ॥२॥
दास कबीर ये हीरा को परखैँ, बाँधि लिहलैँ जतन से अचरे मेँ ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

काया सराय मेँ जीव मुसाफिर, कहा करत उनमाद[1] रे ।
रैन बसेरा करि ले डेरा, चला सबेरे लाद रे ॥ १ ॥
तन कै चोला खरा अमोला, लगा दाग पर दाग रे ।
दो दिन की जिंदगानी मेँ क्या, जरै जगत की आग रे ॥२॥
क्रोध केचुली उठी चित्त मेँ, भस मनुष तेँ नाग रे ।
सूझत नाहिं समुँद सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे ॥३॥
सरवन सबद बूझि सतगुरु से, पूरन प्रगटे भाग रे ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पाया अचल सुहाग रे ॥४॥

॥ शब्द ३० ॥

का लै जैबौ, ससुर घर ऐबौ ॥ टेक ॥
गाँव के लोग जब पूछन लगिहैं, तब तुम का रे बतैबो ॥१॥
खोल घुँघट जब देखन लगिहैं, तब बहुतै सरमैबो ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, फिर सासुर नहिं पैबौ ॥३॥

---

(१) मस्ती

॥ शब्द ३१ ॥

चल चल रे भँवरा[1] कवल पास। तेरी भँवरी बोलै अति उदास॥१॥
चौज करत वहु बार बार । तन बन फूल्यो डार डार ॥२॥
बनसपती का लियो है भोग। सुख न भयो तन बढ़्यो रोग॥३॥
दिवस चार के सुरँग फूल । तेहि लखि भँवरा रह्यो भूल ॥४॥
बनसपती जब लागै आग । तब भँवरा कहाँ जैहौ भाग ॥५॥
पुहुप पुराने गये सूख । तब भँवरा लागि अधिक भूख ॥६॥
उड़ि न सकत बल गयो छूट । तब भँवरा रोवै सीस कूट ॥७॥
चहुँ दिसि चितवै भुँइ पड़ाय । अब ले चल भँवरी सिर चढ़ाय ॥८॥
कहै कबीर ये मन के भाव । इक नाम बिना सब जम के दाव ॥९॥

॥ शब्द ३२ ॥

आयौ दिन गौने कै हो, मन होत हुलास ॥ टेक ॥
पाँच भीट कै पोखरा हो, जा में दस द्वार ।
पाँच सखी बैरिन भई हो, कस उतरब पार ॥ १ ॥
छोट मोट डोलिया चँदन कै हो, लागे चार कहार ।
डोलिया उतारै बीजा बनवाँ हो, जहँ कोइ न हमार ॥ २ ॥
पइयाँ तोरी लागौं कहरवा हो, डोली धरु छिन बार ।
मिलि लेवँ सखिया सहेलरि हो, मिलौं कुल परिवार ॥ ३ ॥
दास कबीर गावै निरगुन हो, साधो करि लो बिचार ।
नरम गरम सौदा करि लो हो, आगे हाट न बजार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

भजु मन जीवन नाम सवेरा ॥ टेक ॥
सुंदर देह देखि जिनि भूलौ, झपट लेत जस बाज बटेरा ॥ १ ॥
या देही कौ गरब न कीजै, उड़ि पंछी जस लेत बसेरा ॥ २ ॥

---

(१) मन।

या नगरी में रहन न पैहौ, कोइ रहि जाय न दुक्ख घनेरा ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मानुष जनम न पैहौ फेरा ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

मन तू पार उतरि कहँ जैहै।
आगे पंथी पंथ न कोई, कूच मुकाम न पैहै ॥ १ ॥
नहिं तहँ नीर नाव नहिं खेवट, ना गुन[1] खैंचनहारा।
धरनी गगन कल्प कछु नाहीं, ना कछु वार न पारा ॥ २ ॥
नहिं तन नहिं मन नाहिं अपनपौ, सुन में सुद्धि न पैहो।
बलवाना ह्वै पैठौ घट में, वहाँ हीं ठौरें होइ हो ॥ ३ ॥
बारहि बार बिचारि देखु मन, अंत[2] कहूँ मत जैहो।
कहै कबीर सब छाँड़ि कल्पना, ज्यों कै त्यों ठहरैहौ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

कर साहिब से प्रीत रे मन, कर साहिब से प्रीत ॥ टेक ॥
ऐसा समय बहुरि नहिं पैहौ, जैहै औसर बीत।
तन सुंदर छबि देख न भूलो, यह बारू की भीत ॥ १ ॥
सुख संपति सुपने की बतियाँ, जैसे तृन पर सीत।
जाही कर्म परम पद पावै, सोई कर्म करु मीत ॥ २ ॥
सरन आये सो सबहि उबारैं, यहि साहिब की रीत।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चलिहौ भवजल जीत ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

बंदे करिले आप निबेरा ॥ टेक ॥
आप चेत लखु आप ठौर करु, मुए कहाँ घर तेरा ॥ १ ॥
यहि औसर नहिं चेतो प्रानी, अंत कोई नहिं तेरा ॥ २ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, कठिन काल का घेरा ॥ ३ ॥

---

(१) डोरी जिसे मस्तूल में बाँध कर खींचती हैं। (२) दूसरे ठौर।

॥ शब्द ३८ ॥

भजन बिन योंही जनम गँवायो ॥ टेक ॥
गर्भ बास में कौल कियो थो, तब तोहि बाहर लायो ॥१॥
जठर अगिन तें काढ़ि निकारो, गाँठि बाँधि क्या लायो ॥२॥
बह बह मुवो बैल की नाईं, सोइ रह्यो उठ खायो ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चौरासी भरमायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

ऐसी नगरिया में केहि बिधि रहना,
नित उठि कलंक लगावै सहना[1] ॥ १ ॥
एकै कुवा पाँच पनिहारी।
एकै लेजुर[2] भरैं नौ नारी ॥ २ ॥
फटि गया कुवा बिनसि गइ बारी[3]।
बिलग भई पाँचो पनिहारी ॥ ३ ॥
कहै कबीर नाम बिन बेड़ा।
उठि गया हाकिम लुटि गया डेरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

चलो है कुल-बोरनी गंगा नहाय ॥ टेक ॥
सतुवा कराइन बहुरी भुँजाइन,
घूँघट ओटे भसकत[4] जाय ॥ १ ॥
गठरी बाँधिन मोटरी बाँधिन,
खसम के मूड़े दिहिन धराय ॥ २ ॥
बिछुवा पहिरिन औंठा पहिरिन,
लात खसम के मारिन धाय ॥ ३ ॥
गंगा न्हाइन जमुना न्हाइन,
नौ मन मैलहि लिहिन चढ़ाय ॥ ४ ॥

---

(१) कोतवाल। (२) रस्सी। (३) बगीचा। (४) चाबती।

पाँच पचीस कै धक्का खाइन,
घरहु की पूँजी आई गवाय ॥ ५ ॥
कहै कबीर हेत करु गुरु से ।
नहिं तोर मुक्ती जाइ नसाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

कलजुग में प्यारी मेहरिया ॥ टेक ॥
बात कहत मुँह फारि खातु है, मिली धमधुसरि धँगरिया ॥१।
भीतर रहत तो घूँघट काढ़त, बाहर मारत नजरिया ॥ २ ॥
सास ससुर को लातन मारत, खसम को मारत लतरिया[1] । ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जमपुर जावै मेहरिया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

लोगवै बड़ मतलब के यार, अब मोहिं जान पड़ी ॥ टेक ॥
जब लगि बैल रहे बनिया घर, तब लग चाह बड़ी ।
पौरुष थके कोइ बात न पूछे, घूमत गली गली ॥ १ ॥
बाँधे सत्त सती इक निकसी, पिया के फंद परी ।
साचा साहिब ना पहिचाना, मुरदे संग जरी ॥ २ ॥
हरा बृच्छ पंछी आ बैठा, रीति मनोरथ की ।
जला बृच्छ पंछी उड़ि चाला, यही रीति जग की ॥३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मनसा बिषय भरी ।
मनुवाँ तो कहिं औरहि डोलै, जपता हरी हरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

किसी दा भइया क्या ले जाना, ओहि गया ओहि गया भँवर निमाना ॥१॥
उड़ि गया तोता रहि गया पिंजरा, दसके[2] जो जाना ठिकाना ॥२॥
ना कोई भाई ना कोइ बंधू, जो लिखिया सो खाना ॥ ३ ॥

---

(१) जूता । (२) कह कर ।

काहू को नवा काहू को पुराना, काहू को अधुराना ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जंगल जाइ समाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

भाइ तैं ने बड़ाही जुलम गुजारा, जो सतगुरु नाम बिसारा ॥टेक॥
रखा ढका तोहि पूछन लागे, कुटँब पूत परिवारा ॥ १ ॥
दर्द मर्द की कोई न जाने, झूठा जगत पसारा ॥ २ ॥
महल मड़ैया छिन में त्यागी, बाँधि काठ पर डारा ॥ ३ ॥
साहू थे सो हुए बदाऊ,[1] लुटन लगे घर बारा ॥ ४ ॥
घर की तिरिया चरचन[2] लागी, क्यौं नहिं नाम सम्हारा॥५॥
काम क्रोध लोभ नहिं त्यागे, अब क्या करत बिचारा ॥६॥
सदा रंग महबूब गुमानी, यहो सरूप तुम्हारा ॥७॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अब क्यों रोवे गँवारा ॥८॥

॥ शब्द४४ ॥

हँसा सुधि कर अपनो देसा ॥ टेक ॥
इहाँ आइ तोरी सुधि बुधि बिसरी, आनि फँसे परदेसा ।
अबहूँ चेतु हेतु करु पिउ से, सतगुरु के उपदेसा ॥ १ ॥
जौन देस से आये हंसा, कबहुं न कीन्ह अँदेसा ।
आइ पर्‍यो तुम मोह के फंद में, काल गह्यो तेरो केसा ॥२॥
लाओ सुरत अस्थान अलख पर, जाको रटत महेसा ।
जुगन जुगन की संसय छूटै, छूटै काल कलेसा ॥३॥
का कहि आयौ काह करतु हौ, कहँ भूले परदेसा ।
कहै कबीर वहाँ चल हंसा, जनम न होय हमेसा ॥४॥

॥ शब्द ४५ ॥

कानर सोवत मोह निसा[3] में, जागत नाहिं कूच नियराना ॥टेक॥
पहिले नगारा सेत केस भे, दूजे बैन सुनत नहिं काना ॥१॥
तीजे नैन दृष्टि नहिं सूझै, चौथे आइ गिरा परवाना ॥२॥

(१) डाकू । (२) ताना मारना । (३) रात ।

मातु पिता कहना नहिँ माने, बिप्रन से कीन्हा अभिमाना॥३॥
धरम की नाव चढ़न नहिँ जानै, अब जमराज ने भेद बखाना॥४॥
होत पुकार नगर कसबे में, रैयत लोग सभै अकुलाना ॥५॥
पूरन ब्रह्म की होत तयारी, अंत भवन बिच प्रान लुकाना ॥६॥
प्रेम नगरिया में हाट लगतु है, जहँ रँगरेजवा है सतवाना[1] ॥७॥
कहै कबीर कोइ काम न ऐहै,माटी कै देहिया माटी मिलिजाना ॥८॥

॥ शब्द ४६ ॥

अरे दिल गाफिल, गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवैगा ॥ टेक ॥
सौदा करन को या जग आया, पूँजी लाया भूल गँवाया ।
प्रेम नगर का अंत न पाया, ज्योँ आया त्योँ जावैगा ॥१॥
सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता, या जीवन में क्या क्या कीता।
सिर पाहन का बोझा लीता, आगे कौन छुड़ावैगा ॥२॥
परलो पार मेरा मीता खड़िया, उस मिलने का ध्यान न धरिया ।
टूटो नाव ऊपर जा बैठा, गाफिल गोता खावैगा ॥३॥
दास कबीर कहै समुझाई, अंत काल तेरो कौन सहाई ।
चला अकेला संग न काई[2] , किया आपना पावैगा ॥४॥

(१) सत्य पुरुष । (२) कोई ।
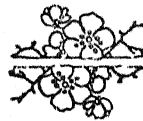
भेद

॥ शब्द १ ॥

[प्रश्न गोरखनाथ]

कबिरा कब से भये बैरागी, तुम्हारो सुरत कहाँ को लागो ॥

[उत्तर]

धुँधमई[1] का मेला नाहीं, नहीं गुरु नहिं चेला।
सकल पसारा जेहि दिन नाहीं, जेहि दिन पुरुष अकेला ॥
गोरख हम तब के बैरागी, हमरी सुरत नाम से लागो ॥१॥
ब्रह्मा नहिं जब टोपी दीन्हा, बिस्नु नहीं जब टीका।
सिव सक्ती के जन्मौ नाहीं, जबै जोग हम सीखा ॥२॥
सतजुग में हम पहिरि पाँवरी[2], त्रेता झोरी झंडा।
द्वापर में हम अड़बंद[3] पहिरा, कलउ फिरयौं नौ खंडा ॥३॥
कासी में हम प्रगट भये हैं, रामानंद चिताये।
समरथ कौ परवाना लाये, हंस उबारन आये ॥४॥
सहजै सहजै मेला होइगा, जागो भगति उतंगा।
कहै कबीर सुनो हो गोरख, चलो सबद के संगा ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

साहिब हम में साहिब तुम में, जैसे तेल तिलन में।
मत कर बंदा गुमान दिल में, खोज देखिले तन में ॥ टेक ॥
चाँद सुरज के खंभ गाड़ि के, प्रान आसन कर घट में।
इँगला पिंगला सुरत लगा के, कमल पार कर घर में ॥१॥
वा में बैठी सुखमन नारी, झूला झुलत बँगलन में।
कोटि सूर जहँ करते झिलि मिलि, नील सर सोतो गगन में ॥२॥

---

(१) धुंधूकार मात्र। (२) खड़ाऊँ। (३) कोपीन।

तीन ताप मिटि गे देँही के, निर्मल होइ बैठो घट में ।
पाँच चोर जहँ पकरि मँगाये, झंडा रोपे निरगुन में ॥३॥
पाँच सहेली करत आरती, मनसा बाचा सतगुरु में ।
अनहद घंटा बजै मृदंगा, तन सुख लेहि रतन में ॥४॥
बिन पानी लागी जहँ बरषा, मोती देख नदिन में ।
जहवाँ मनुआ बिमल रह्यो है, चलो हंस ब्रह्मँड में ॥५॥
इक्कइस ब्रह्मँड छाइ रह्यो है, समझैं बिर्ले सूरा ।
मुरख गँवार कहा समझैंगे, ज्ञान के घर है दूरा ॥६॥
बड़े भाग अलमस्त रंग में, कबिरा बोले घट में ।
हंस उबारन दुक्ख निवारन, आवागमन मिटै छिन में ॥७॥

॥ साखी ॥

साँझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हा रोइ ।
चल चकवी वा देस को, जहाँ रैन ना होइ ॥ ८ ॥
चकवी बिछुरी साँझ की, आन मिलै परभात[1] ।
जो नर बिछुरे नाम से, दिवस मिलैं नहिं रात ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साईं मोर बसत अगम पुरवा, जहँ गम न हमार ॥ टेक ॥
आठ कुँआ नौ बावड़ी, सोरह पनिहार ।
भरल घइलवा[2] ढरकि गे हो, धन ठाढ़ी पछितात ॥१॥
छोटि मोटि डँड़िया चँदन कै हो, छोटे चार कहार ।
जाय उतरि हैं वाही देसवाँ हो, जहँ कोइ न हमार ॥२॥
ऊँची महलिया साहिब कै हो, लगी बिषमी बजार ।
पाप पुन्न दोउ बनिया हो, हीरा लाल बिकात ॥ ३ ॥

---

(१) सबेरे । (२) घड़ा ।

कहै कबीर सुन साइयाँ, मोरे आ हिये देस ।
जो गये बहुरे नहीं, को कहत संदेस ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हो तुम हंसा सत्त लोक के, पड़े काल बस आई हो ।
मनै सरूपी देव निरंजन, तुम्हैं राखि भरमाई हो ॥१॥
पाँच पचीस तीन कै पिंजरा, तेहि माँ राखि छिपाई हो ।
तुमको बिसरि गई सुधि घर की, महिमा अपन जनाई हो ॥२॥
निरंकार निरगुन है माया, तुम को नाच नचाई है ।
चर्म दृष्टि का कुलफा देकै, चौरासी भरमाई हो ॥३॥
चार बेद है जाको स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गाई हो ।
सो कित ब्रह्मा जक्त भुलाये, तेहि मारग सब जाई हो ॥४॥
सतगुरु बहुरि जीव के रच्छक, तिन से कर समुताई हो ।
तिन के मिले परम सुख उपजै, पद निर्बाना पाई हो ॥५॥
चारों जुग हम आन पुकारा, कोइ कोइ हंस चिताई हो ।
कहै कबीर ताहि पहुंचाऊँ, सत्त पुरुष घर जाई हो ॥६॥

॥ शब्द ५ ॥

जागत जोगेसर[1] पाया मेरे रब जू, जागत जोगेसर पाया ॥टेक॥
हंसा एक गगन बिच बैठा, जिसके पंख न काया ।
बिना चोंच का चून चुगत है, दसवें द्वार बसाया ॥ १ ॥
मूसा जाय बिल्ली संग अरुझा, स्यारन सिंह डराया ।
जल की मछरी उदयचल ब्याई, ऊनज[2] रुंड जमाया ॥ २ ॥
अलख पुरुष की अचला बस्ती, जाको सीतल छाया ।
कहत कबीर सुन गोरख जोगी, जिन ढूंढ़ा तिन पाया ॥ ३ ॥

(१) भगवंत । (२) खंडित ।

॥ शब्द ६ ॥

एक नगरिया तनिक सी में, पाँच बसैं किसान ।
एक बसै धरती के ऊपर, एक अगिन में जान ॥ १ ॥
दोय बसैं पवना पानी में, एक बसै असमान ।
पाँच पाँच उनकी घरवाली, नित उठि माँगैं खान ॥ २ ॥
इनहीं से सब डुबकत डोलैं, मुकद्दम और दिवान ।
खान पान सब न्यारा राखैं, मन में उन के मान ॥ ३ ॥
जगत की आसा तजि दे हंसा, धरि ले पिय को ध्यान ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बैठो जाइ बिवान । ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

चुवत अमीं रस भरत ताल जहँ, सबद उठै असमानी हो ॥टेक॥
सरिता उमड़ सिन्ध को सोखै, नहिं कछु जात बखानी हो॥१॥
चाँद सुरज तारागन नहिं वहँ, नहिं वहँ रैन बिहानी हो ॥२॥
बाजे बजैं सितार बाँसुरी, ररंकार मृदु बानी हो ॥ ३ ॥
कोटि झिलिमिली जहँ वहँ झलकै, बिनु जल बरसत पानी हो ॥४॥
सिव अज[1] बिसनु सुरेस सारदा, निज निज मति उनमानी हो ॥५॥
दस अवतार एक तत राजैं, अस्तुति सहज से आनी हो॥६॥
कहै कबीर भेद की बातैं, बिरला कोइ पहिचानी हो ॥७॥
कर पहिचान फेर नहिं आवै, जम जुलमी की खानी हो॥८॥

॥ शब्द ८ ॥

नाम बिमल पकवान मनै हलवैया ॥ टेक ॥
ज्ञान कराहो प्रेम घीव करि, मन मैदा कर सान ।
ब्रह्म अगिनि उदगारि के, इक अजब मिठाई छान ॥१॥
तन बनावो पालरा, मन पूरा करि सेर ।
सुरत निरत कै डाँड़ी बनवो, तौलत ना कछु फेर ॥२॥

(१) ब्रह्मा ।

गगन मँडल में घर है तुम्हरा, त्रिकुटी लागि दुकान ।
उनमुनिया में रहनि बनावो, तब कछु सौदा बिकान ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, या गति अगम अपार ।
सत्त नाम साधु जन लादैं, बिष लादै संसार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सब का साखी मेरा साईं ।
ब्रह्मा बिस्नु रुद्र ईसुर लौं, औ अब्याकृत नाहीं ॥१॥
पाँच पचीस से सुमती करि ले, ये सब जग भरमाया ।
अकार ओंकार मकार मात्रा, इनके परे बताया ॥२॥
जागृत सुपन सुषोपति तुरिया, इन तें न्यारा होई ।
राजस तामस सातिक निर्गुन, इन तें आगे सोई ॥३॥
सथूल सूच्छम कारन महाकारन, इन मिलि भोग बखाना ।
बिस्व तेजस पराग आतमा, इन में सार न जाना ॥४॥
परा पसंती मधवा बैखरि, चौबानी नहिं मानी ।
पाँच कोष नीचे करि देखो, इन में सार न जानो ॥५॥
पाँच ज्ञान और पाँच कर्म हैं, ये दस इन्द्री जानो ।
चित सोइ अंतःकरन बखानी, इन में सार न मानो ॥६॥
कुरम सेस किरकिला धनंजय, देवदत्त[1] कँह देखो ।
चौदह इन्द्री चौदह इन्द्रा, इन में अलख न पेखो ॥७॥
तत पद त्वं पद और असो पद, बाच लच्छ पहिचाने ।
जहद लच्छना अजहद कहते, अजहद जहद बखाने ॥८॥
सतगुरु मिलै सत सबद लखावै, सार सबद बिलगावै ।
कहै कबीर सोई जन पूरा, जो न्यारा करि गावै ॥९॥

---

(१) पाँच पवनों के नाम ।

॥ शब्द १० ॥

हम से रहा न जाय, मुरलिया के धुनि सुनि के ॥ टेक ॥
पाँच तत्त को पूतला, ख्याल रच्यो घट माहिं ॥१॥
बिना बसंत फूल इक फूलै, भँवर रह्यो अरुझाय ॥२॥
गगन गराजै बिजुली चमकै, उठती हिये हिलोर ॥३॥
बिगसन कँवल औ मेघ बरीसै, चितवत प्रभु की ओर ॥४॥
तारी लगी तहाँ मन पहुँचा, गैब धुजा फहराय ॥५॥
कह कबीर कोइ संत बिबेकी, जीवत ही मरि जाय ॥६॥

॥ शब्द ११ ॥

मारग बिहँग बतावैं संत जन ॥ टेक ॥
कौने घर से जिव की उतपति, कौने घर को जावै ।
कहाँ जाइ जिव प्रलय होइगा, सो सुर तहाँ चढ़ावै ॥१॥
गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नखा से जावै ।
भू मंडल से परिचय करि ले, पर्बत धौल लखावै ॥२॥
द्वादस कोस[१] साहिब कै डेरा, तहाँ सुरत ठहरावै ।
वा को रंग रूप नहिं रेखा, कौन पुरुष गुन गावै ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जो यह पद लखि पावै ।
अमर लोक में झूलै हिंडोला, सतगुरु सबद सुनावै ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

हंसा कहो पुरातम[२] बात ॥ टेक ॥
कौन देस से आयौ हंसा, उतर्यो कौने घाट ।
कहँ हंसा बिसराम कियो है, कहाँ लगायो आस ॥१॥
बंक देस से आयौ हंसा, उतर्यो भौजल घाट ।
भूलि पर्यो माया के बसि में, बिसरि गयो वो बात ॥२॥

---

(१) स्थान (२) प्राचीन ।

अब ही हंसा चेतु सवेरा, चलो हमारे साथ।
संसय सोक वहाँ नहिं ब्यापै, नहीं काल कै त्रास ॥३॥
हुआँ मदन बनि[1] फूलि रहे हैं, आवै सोहं बास।
मन भौंरा जहँ अरुझि रहो है, सुख की ना अभिलास ॥४॥
मकर[2] तार तें हम चढ़ि करते, बंकनाल परबेस।
वहि डोरी चढ़ि चढ़ि चले हंसा, सतगुरु के उपदेस ॥५॥
जहँ संतन की चौकी बनी है, ढुरै सोहंगम चौर।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु के सिर मौर ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

सो पंछी मोहिं कोइ न बतावै, जो बोलै घट माहीं रे।
अबरन बरन रूप नहिं रेखा, बैठा नाम की छाहीं रे ॥टेक॥
या तरवर में एक पखेरू, रुँगत चुँगत वह डोलै रे।
वा की सन्ध लखै नहिं कोई, कौन भाव से बोलै रे ॥१॥
दुर्म[3] डारि तहँ अति घनि छाया, पंछि बसेरा लेई रे।
आवै साँझ उड़ि जाय सवेरा, मरम न काहू देई रे ॥२॥
दुइ फल चाखि जाय रह्यो आगे, और नहीं दस बीसा रे।
अगम अपार निरन्तर बासा, आवत जात न दीसा रे ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह कछु अगम कहानी रे।
या पंछी को कौन ठौर है, बूझो पंडित ज्ञानी रे ॥

॥ शब्द १४ ॥

ऐसा रंग कहाँ है भाई ॥ टेक ॥
सात दीप नौ खंड के बाहर, जहवाँ खोज लगाई।
वा देसवा कै मरम न जानै, जहँ से चूनरि आई ॥

---

(१) कामबन, बसंत। (२) मकड़ी। (३) पेड़।

या चूनर में दाग बहुत है, संत कहैं गुहराई ।
जो यह चूनर जुगति से ओढ़ै, काल निकट नहिं आई ॥२॥
प्रेम नगर की गैल कठिन है, वहँ कोइ जान न पाई ।
चाँद सुरज जहँ पौन न पानी, पतिया को लै जाई ॥३॥
सोहंकार से काया सिरजी, ता में रंग समाई ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिरले यह घर पाई ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

जियत न मार मुआ मत लैयो, मास बिना मत ऐयो रे ॥टेक॥
परली पार एक बेल का बिरवा, वा के पात नहीं है रे ।
होत पान चुगि जात मिरगवा, मृग के सोस नहीं है रे ॥१॥
धनुष बान ले चढ़ा पारधी, धनुआ के परच नहीं है रे ।
सरसर बान तकातक मारै, मिरगा के घाव नहीं है रे ॥२॥
उर बिनु खुर बिनु चरन चौंच बिन, उड़न पंख नहिं जाके रे ।
जो कोइ हंसा मारि लियावे, रक्त नहिं ता के रे ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद अतिल दुहेला[1] रे ।
जो यह पद को अर्थ बतावे, सोई गुरू हम चेला रे ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

सँग लागी मेरे ठगनी जानि पड़ी ॥ टेक ॥
हमरे बलम के प्रेम पटूका, चूनर लेत सुहाग भरी ॥१॥
रंग महल बिच नींद परी है, पाँचो चोर मसान मरी ॥२॥
साखी सबद नवौ दरवाजे, मूँदि खोल ले दस झँझरी[2] ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह दुनिया जंजाल भरी ॥

---

(१) कठिन। (२) तीसरा तिल अथवा शिव नेत्र जो जोगियों का दसवाँ द्वार है ।

॥ शब्द १७ ॥

मेरी नजर में मोती आया है, ॥ टेक ॥
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, दूनोँ भूल भुलाया है ॥१॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर थाके, तिनहूँ खोज न पाया है ॥२॥
संकर सेस औ सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया है ॥३॥
है तिल के तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है ॥४॥
चहुँ दिस कँवल तिर्कुटी साजे, औंकार दरसाया है ॥५॥
ररंकार पद सेत सुन्न मध, षटदल कँवल बताया है ॥६॥
पारब्रह्म महासुन्न मँझारा, सोइ निःअच्छर रहाया है ॥७॥
भँवर गुफा में सोहं राजै, मुरली अधिक बजाया है ॥८॥
सत्तलोक सत पुरुष बिराजै, अलख अगम दोउ भाया है ॥९॥
पुरुष अनामी सब पर स्वामी, ब्रम्हँड पार जो गाया है ॥१०॥
यह सब बातैं देही माहीं, प्रतिबिंब अंड जो पाया है ॥११॥
प्रतिबिंब पिंड ब्रम्हँड है निकली, असली पार बताया है॥१२॥
कहै कबीर सतलोक सार है, यहँ पुरुष नियारा पाया है ॥१३॥

॥ शब्द १८ ॥

तू सूरत नैन निहार, यह अंड के पारा है ।
तू हिरदे सोच बिचार, यह देस हमारा है ॥ १ ॥
पहिले ध्यान गुरन का धारो, सुरत निरत मन पवन चितारो ।
सुहेलना[1] धुन में नाम उचारो, तब सतगुरु लहो दीदारा है॥२॥
सतगुरु दरस होइ जब भाई, वे दें तुम को नाम चिताई ।
सुरत सबद दोउ भेद बताई, तब देखे अंड के पारा है ॥३॥
सतगुरु कृपा दृष्टि पहिचाना, अंड सिखर बेहद मैदाना ।
सहज दास तहँ रोपा थाना, जो अग्रदीप सरदारा है ॥४॥

---

(१) सहज ।

सात सुन्न बेहद के माहीं, सात संख तिन की ऊँचाई ।
तीनि सुन्न लौं काल कहाई, आगे सत्त पसारा है ॥५॥
पिरथम अभय सुन्न है भाई, कन्या निकल यहँ बाहर आई ।
जोग संतायन[१] पूछो वाही, (कहा)मम दारा[२] वह भरतारा है॥६॥
दूजे सकल सुन्न करि गाई, माया सहित निरंजन राई ।
अमर कोट कै नकल बनाई, जिन अँड मधि रच्यो पसारा है॥७॥
तीजे है महसुन्न सुखाली, महाकाल यहँ कन्या ग्रासी ।
जोग संतायन आये अबिनासी, जिन गल नख छेद निकारा है॥८॥
चौथे सुन्नअजोख कहाई, सुद्ध ब्रम्ह पुर्ष ध्यान समाई ।
आद्या यहँ बीजा ले आई, देखो दृष्टि पसारा है ॥९॥
पंचम सुन्न अलेल कहाई, तहँ अदली बंदीवान रहाई ।
जिनका सतगुरु न्याव चुकाई, जहँ गादी अदली सारा है॥१०॥
षष्ठे सार सुन्न कहलाई, सार भण्डार याही के माहीं ।
नीचे रचना जाहि रचाई, जा का सकल पसारा है ॥११॥
सतवँ सत सुन्न कहलाई, सत भंडार याही के माहीं ।
निःतत रचना ताहि रचाई, जो सबहिन तेँ न्यारा है ॥१२॥
सत सुन ऊपर सत की नगरी, बाट बिहंगम बाँकी डगरी ।
सो पहुँचे चाले बिन पग री, ऐसा खेल अपारा है ॥१३॥
पहिली चकरी समाध कहाई, जिन हंसन सतगुरु मति पाई ।
बेद भर्म सब दियो उड़ाई, तिरगुन तजि भये न्यारा है ॥१४॥
दूजी चकरी अगाध कहाई, जिन सतगुरु संग द्रोह कराई ।
पीछे आनि गहे सरनाई, सो यहँ आन पधारा है ॥१५॥
तीजी चकरी मुनिकर नामा, जिन मुनि यन सतगुरु मति जाना ।
सो मुनियन यहँ आइ रहाना, करम भरम तजि डारा है ॥

---

(१) कबीर साहिब । (२) स्त्री ।

चौथो चकरो धुनि है भाई, जिन हंसन धुनि ध्यान लगाई ।
धुनि सँग पहुँचे हमरे पाहीं, यह धुनि सबद मँझारा है ॥१७
पंचम चकरी रास जो भाखो, अलमीना है तहँ मधि झाँकी ।
लीला कोठ अनंत वहाँ की, जहँ रास बिलास अपारा है ॥१८
षष्ठम चकरी बिलास कहाई, जिन सतगुरु सँग प्रीति निबाही ।
छुट ते देह जगह यहँ पाई, फिर नहिं भव अवतारा है ॥१९॥
सतवीं चकरी बिनोद कहानो, कोटिन बंस गुरन तँह जानो ।
कलि में बोध किया ज्यों भानो, अंधकार खोया उजियारा है ॥२०
अठवीं चकरी अनुरोध बखाना, तहाँ जुलहदी ताना ताना ।
जा का नाम कबीर बखाना, जो सब संतन सिरधारा है ॥२१
ऐसी ऐसी सहस करोड़ी, ऊपर तले रची ज्यों पैड़ी[1] ।
गादी अदली रही सिर मौरी, जहँ सतगुरु बंदीछोरा है ॥२२
अनुरोधी के ऊपर भाई, पद निर्बान के नीचे ताही ।
पाँच संख है याहि उँचाई, जहँ अदभुत ठाठ पसारा है ॥२३
सोलह सुत हित दीप रचाई, सब सुत रहैं तासु के माहीं ।
गादी अदल कबीर यहाँ ही, जो सबहिन में सरदारा है ॥२४॥
पद निरबान है अनंत अपारा, नूतन सूरत लोक सुधारा ।
सत्त पुरुष नूतन तन धारा, जो सतगुरु संतन सारा है ॥२५॥
आगे सत्तलोक है भाई, संखन कोस तासु ऊँचाई ।
हीरा पन्ना लाल जड़ाई, जहँ अदभुत खेल अपारा है ॥२६॥
बाग बगीचे खिली फुलवारी, अमृत नहरैं हो रहिं जारी ।
हंसा केल करत तँह भारी, जहँ अनहद घुरै अपारा है ॥२७॥
ता मधि अधर सिंघासन गाजै, पुरुष सबद तहँ अधिक बिराजै ।
कोटिन सूर रोम इक लाजै, ऐसा पुरुष दीदारा है ॥२८॥

---

(१) सीढ़ी ।

हंस हंसनी आरत उतारैं, खोड़स भानू सुर पुनि चारैं ।
पद बीना सत सबद उचारैं, जो बेधत हिये मँझारा है ॥२९॥
तापर अगम महल इक न्यारा, संखन कोटि तासु बिस्तारा ।
बाग बावड़ी अमृत धारा, जहँ अधरी चलैं फुहारा है ॥३०॥
मोती महल औ हीरन चौंरा, सेत बरन तहँ हंस चकोरा ।
सहस सूर छबि हंसन जोरा, ऐसा रूप निहारा है ॥३१॥
अधर सिंघासनजिंदा साईं, अर्बन सूर रोम सम नाहीं ।
हंस हिरंबर चँवर ढुलाईं, ऐसा अगम अपारा है ॥३२॥
तहँ अधरी ऊपर अधर धराई, संखन संख तासु ऊँचाई ।
झिलमिल हठ सो लोक कहाई, जहँ झिलमिल झिलमिल सारा है ॥३३॥
बाग बगीचे झिलमिल कारी[1], रतनन जड़े पात औ डारी ।
मोती महल औ रतन अटारी, तहँ पुरुष बिदेह पधारा है ॥३४॥
कोटिन भानु हंस को रूपा, धुन है वहँ की अजब अनूपा ।
हंसा करत चँवर सिर भूपा, बिन कर चँवर ढुलारा है ॥३५॥
हंसा केल सुनो मन लाई, एक हंस के जो चित आई ।
दूजा हंसा समझि पुनि जाई, बिन मुख बैन उचारा है ॥३६॥
ता आगे निःलोक है भाई, पुरुष अनामी अकह कहाई ।
जो पहुँचे जानैंगे वाही, कहन सुनन तैं न्यारा है ॥३७॥
रूप सरूप वहाँ कछु नाहीं, ठौर ठाँव कछु दीसै नाहीं ।
अरज तूल[2] कछु दृष्टि न आई, कैसे कहूँ सुमारा[3] है ॥३८॥
जा पर किरपा करिहैं साईं, गगनी मारग पावै ताही ।
सत्तर परलय मारग माहीं, जब पावै दीदारा है ॥३९॥

---

(१) एक लिपि में "क्यारी" है । (२) चौड़ाई और लम्बाई । (३) गिनती ।

कहै कबीर मुख कहा न जाई, ना कागद पर अंक चढ़ाई।
मानो गूँगे सम गुड़ खाई, सैनन बैन उचारा है॥

॥ शब्द १९ ॥

सुरसरि[1] बुकवा[2] बटावै तो पिय के लगावैं हो॥ टेक॥
सत्त सोहंगम नारि तो कुमति छुड़ावैं हो॥१॥
घट हि में मानसरोवर घाट बँधावैं हो।
घट हि में पाँचौ कहार दुलहै नहवावैं हो॥२॥
घट हि में दाया के दरजी तो दरज मिटावैं हो।
घट हि में मन कर माली तो मौर ले आवैं हो॥३॥
घट हि में जुक्ति के जेवर जिवै[3] पहिरावैं हो।
घट हि में सोरहो सिंगार सु दुलहै करावैं हो॥४॥
घट हि में लोह लोहार कँगन लै आवैं हो।
तीनि गुनन कै कँगन दुलहै पहिरावैं हो॥५॥
घट हि में नेह कै नाउन चरन पखारैं हो।
घट हि में पाँचौ सोहागिन मंगल गावैं हो॥६॥
घट हि में चित कै चौका तो चौक पुरावैं हो।
सत सुकिरत कै कलस तहाँ धरवावैं हो॥७॥
घट ही में अनहद बाजन बजवावैं हो।
घट हि में सूरत नारि तो दुलहै रिझावैं हो॥८॥
बार बार गुन गाऊँ तो बरनि सुनाऊँ हो।
दुलहा कै न्योछावर परम पद पाऊँ हो॥९॥
तीन लोक ओहि पार हंसा उहाँ जाउब हो।
कहै कबीर धरमदास बहुरि नहिं आउब हो॥१०॥

---

(१) गंगा। (२) बटना। (३) जीव को।

॥ शब्द २० ॥

चरखा चलै सुरत बिरहिनि का ॥ टेक ॥
काया नगरी बनी अति सुन्दर, महल बना चेतन का ।
सुरत भाँवरी होत गगन में, पीढ़ा ज्ञान रतन का ॥
चित चमरख तिरगुन कै टेकुआ, माल मनोरथ मन का ।
पिउनी पाँच पचीस रंग की, कुखारी नाम भजन का ॥
द्रढ़ बैराग गाड़ि दुइ खूँटा, मंझा[१] जोग जुगत का ।
द्वादस नाम घरो दुइ पखुरी, हथिया सार सबद का ॥
मिहीन सूत संत जन कातैं, माँझा[२] प्रेम भगति का ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जुगन जुगन सत मत का ॥

॥ शब्द २१ ॥

दिन दस नैहरवाँ खेलि ले, निज सासुर जाना हो ॥ टेक ॥
इक तो अंधेरी कोठरी, ता में दिया न बाती हो ।
बहियाँ पकरि जम लै चले, कोइ संग न साथी हो ॥
कोठा ऊपर कोठरी, जोगी धुनिया रमाया हो ।
अँग भभूत लगाइ के, जोगी रैन गँवाया हो ॥
गंग जमुन बिच रेतवा, तहँ बाग लगाया हो ।
कच्ची कली इक तोरि के, मलिया पछिताया हो ॥
गिरि परबत कै माछरी, भौसागर आया हो ।
कहै कबीर धर्मदास से, जम बंसी लगाया हो ॥

॥ शब्द २२ ॥

कायागढ़ जीतो रे भाई ॥ टेक ॥
ब्रह्म को चहुँ ओर मँडो है, माया ख्याल बनाई ।
कनक कामिनी फंदा रोपे, जग राखे बिलमाई ॥

---

(१) मँगरी । (२) लेई जिससे सूत को माँजते हैं ।

पाँचौ मुरचा गढ़ के भीतर, तहाँ लाँघि कै जाई ।
आसा तृस्ना मनसा कहिये, तृगुन बनी जो खाई ॥२॥
पचिस सुभाव जहँ निसि दिन ब्यापै, काम क्रोध दोउ भाई ।
लालच लोभ खड़े दरवाजे, मोह करै ठकुराई ॥३॥
मूल कँवल पर आसन कीन्हो, गुरु को सीस नवाई ।
छवो कँवल इक सुर मेँ वेधे, चढ़ो गगन गढ़ जाई ॥४॥
ज्ञान कै घोड़ा ध्यान कै पाखर, जुक्ति को जीन बनाई ।
सत्त सुकृत दोउ लगी पावरी[1] , बिबेक लगाम लगाई ॥५॥
सील छिमा के बखतर पहिरे, तत तरवार गहाई ।
साजन सुरति चढ़ि छाजे ऊपर, निरत के साँग[2] गहाई ॥६॥
सतएँ कँवल त्रिकुट के भीतर, वहाँ पहुँचि के जाई ।
जोति सरूपी देव निरंजन, वेदन उनको गाई ॥७॥
बंकनाल की औघट घाटी, तहाँ न पग ठहराई ।
ओअं ररंग अड़े जहँ दुइ दल, अजपा नाम सहाई ॥८॥
जोजन एक खरब के आगे, पुरुष बिदेह रहाई ।
सेत कँवल निस बासर फूले, सोभा बरनि न जाई ॥९॥
सेत छत्र और सेत सिंघासन, सेत धुजा फहाराई ।
कोटिन भानु चन्द्र तारागन, छत्र की छाँह रहाई ॥१०॥
मन मेँ मन नैनन मेँ नैना, मन नैन एक ह्वै जाई ।
सुरत सोहागिनि मिलत पिया को, तन कै तपन बुझाई ॥११
द्वादस ऊपर अजपा फेरै, मनै पवन थकि जाई ।
कहै कबीर मिले गुरु पूरे, सबद मेँ सुरत मिलाई ॥१२॥

---

(१) रकाब। (२) बरछी, भाला।

॥ शब्द २३ ॥

सुगना बोल तैं निज नाम ॥ टेक ॥
आवत जात बिलम[1] नहिं लागै, मंजिल आठौ जाम ।
लखन कोस पलक में जावै, कहूँ न करै मुकाम ॥ १ ॥
हाथ पाँव मुख पेट पीठ नहिं, नहीं लाल ना सेत न स्याम ।
पंखन बिना उड़ै निसि बासर, सीत लगै नहिं घाम ॥ २ ॥
बेद कहै सरगुन के आगे, निरगुन का बिसराम ।
सरगुन निरगुन तजहु सोहागिनि, जाइ पहुँच निज धाम ॥३॥
लाल गुलाल बाग हंसन में, पंछी करै अराम ।
दुख सुख वहाँ कहूँ नहिं ब्यापै, दरसन आठौ जाम ॥४॥
नूरै ओढ़न नूरै डासन, नूरै का सिरहान ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नूर तमाम ॥५॥

॥ शब्द २४ ॥

चलो जहँ बसत पुरुष निर्बाना ॥ टेक ॥
अवगति गति जहँ गति गम नाहीं, दुइ अंगुल परिमाना ।
रबि ससि दूनों पौन चलतु हैं, तेहि बिच धरु मन ध्याना ॥१
तीन सुन्न के पार बसतु है, चौथा तहँ अस्थाना ।
उपजा ज्ञान ध्यान दृढ़ जागा, मगन भया मस्ताना ॥ २ ॥
पोहि के डोरी चढ़ौ गगन पर, सुरत धरो सत नामा ।
द्वादस चलै दसो पर ठहरै, ऐसा निरगुन नामा ॥ ६ ॥
अजर अमर जहँ जरा मरन नहिं, पहुँचै संत सुजाना ।
बहुतक चढ़ि चढ़ि के फिरि आये, बिरला जन ठहराना ॥४॥
सबदै निरखि परखि छबि झलकै, सुमिरन मूल ठिकाना ।
उलटि पवन षट चक्कर बेधै, नैनन पियत अघाना ॥ ५ ॥

---

(१) देर।

सबदै सबद प्रगट भये बाहर, करि गये बेद पुराना ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद में सुरत समाना ॥ ६ ॥

॥ शब्द २५ ॥

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपार ॥ टेक ॥
नहिं वहँ काया नहिं वहँ माया, नहिं वहँ त्रिगुन पसार ।
चार बरन उहवाँ हैं नाहीं, ना है कुछ ब्योहार ॥ १ ॥
नौ छः चौदह बिद्या नाहीं, नहिं वहँ बेद बिचार ।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार ॥ २ ॥
पाँच तत्त नहिं उतपति भइलैं, सो परलय के पार ।
तीन देव ना तैंतिस कोटी, नाहिं दसो अवतार ॥ ३ ॥
सोरह संख के आगे होई, समरथ कर दरबार ।
सेत सिंघासन आसन बैठे, जहाँ सबद झनकार ॥ ४ ॥
पुरुष रूप कहा बरनौं महिमा, तिन गति अपरम्पार ।
कोटि भानु की सोभा जिन्ह के, इक इक रोम उजार ॥ ५ ॥
छर अच्छर दूनों से न्यारा, सोई नाम हमार ।
सार सबद को लेइके आयो, मिरतू लोक मँझार ॥ ६ ॥
चार गुरू मिलि थापल हो, जग के हैं कड़िहार ।
उन कर बहियाँ पकरि रहो हो, हंसा उतरै पार ॥ ७ ॥
जम्बू दीप के तुम सब हंसा, गहि लो सबद हमार ।
दास कबीर अबकी दीहल, निर्गून कै टकसार ॥ ८ ॥

॥ शब्द २६ ॥

चलु हंसा वा देस, जहाँ तोर पिया बसै ॥ टेक ॥
वहि देसवा में अर्द्धमुख कुइयाँ, साँकर वाकै मोहड़[1] ।
सुरत सोहागिनि है पनिहारिनि, भरै ठाढ़ बिन डोर ॥ १ ॥

(१) जिसका मुँह तंग है ।

वहि देसवाँ बादर ना उमड़ै, रिमझिम बरसै मेह ।
चौबारे में बैठि रहो ना, जा भीजहु निर्देह ॥ २ ॥
वहि देसवाँ में नित्त पूर्निमा, कबहु न होइ अँधेर ।
एक सुरज कै कौन बतावै, कोटिन सुरज उँजेर[1] ॥ ३ ॥
लछमी वा घर झाड़ू देत है, सिव करते कोतवाली ।
ब्रम्हा वा के बने टहलुवा, बिस्नु करै चरवाही ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ई पद है निर्बानी ।
जो ई पद कै अरथ लगावै, पहुँचै मूल ठिकानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

चरखा नहीं निगोड़ा चलता ॥ टेक ॥
पाँच तत्त का बना है चरखा, तीन गुनन में गलता ॥ १ ॥
माल टूटि तीन भया टुकड़ा, टेकुवा होइ गया टेढ़ा ॥ २ ॥
माँजत माँजत हार गया है, धागा नहीं निकलता ॥ ३ ॥
मित्र बढ़ैया दूर बसत है, का के घर दे आया ॥ ४ ॥
ठोकत ठोकत हार गया है, तौ भी नहीं सम्हलता ॥ ५ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चले बिना नहिं छुटता ॥ ६ ॥

॥ शब्द २८ ॥

जिन पिया प्रेम रस प्याला, सोई जन है मतवाला ॥ १ ॥
मूल चक्र कौ बंद लगावै, उलटी पवन चढ़ावै ।
जरा मरन भय ब्यापै नाहीं, सतगुरु सरनी आवै ॥ २ ॥
बिन धरनी हरि मंदिर देखा, बिन सागर झर पानी ।
बिन दीपक मंदिर उँजियारा, बोलै गुरुमुख बानी ॥ ३ ॥
इँगला पिँगला सुखमन नाड़ी, उनमुन के घर मेला ।
अष्ट कँवल पर कँवल बिराजै, सो साहिब अलबेला ॥ ४ ॥

---

(१) प्रकाश ।

चाँद न सुरज दिवस नहिं रजनी, तहाँ सुरत लौ लावै ।
अमृत पियै मगन होय बैठै, अनहद नाद बजावै ॥५॥
चाँद सुरज एकै घरि राखै, भूला मन समुझावै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सहज सहज गुन गावै ॥६॥

प्रेम ।

॥ शब्द १ ॥

आजु मेरे सतगुरु आये ।
रहस रहस मैं अँगना बुहारौं, मोतियन चौक पुराये ॥१॥
चरन पखारि चरनामृत करिके, सब साधन बरताऊँ ॥
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, सबद सुरत लौ लाऊँ ॥२॥
करूँ आरती प्रेम निछावर, पल पल बलि बलि जाऊँ ॥
कहै कबीर दया सतगुरु की, परम पुरुष बर पाऊँ ॥३॥

॥ शब्द २ ॥

आज सुबेलो[1] सुहावनो, सतगुरु मेरे आये ।
चंदन अगर बसाये, मोतियन चौक पुराये ॥१॥
सेत सिंघासन बैठे सतगुरु, सुरत निरत करि देखा ।
साध कृपा तें दरसन पाये, साधू संग बिसेखा ॥२॥
घर आँगन मैं आनँद होवै, सुरत रहो भरपूर ।
झरि झरि पड़ै अमीरस दुर्लभ, है नेड़े नहिं दूर ॥३॥
द्वादस मद्ध देखि ले जाई, बिच है आपै आपा ।
त्रिकुटी मध तू सेज निरख ले, नहिं मंतर नहि जापा ॥४॥
अगम अगाध गती जो लखि है, सो साहिब को जीवा ।
कहै कबीर धरमदास से, भेंटि ले अपनो पीवा ॥५॥

---

(१) अच्छी बेला या समय।

॥ शब्द ३ ॥

आज दिन के मैं जाऊँ बलिहारी ॥ टेक ॥

सतगुरु साहिब आये मेरे पहुना ।

घर आँगन लगै सुहैाना ॥ १ ॥

साध संत लगे मंगल गावन ।

भये मगन लखि छबि मन भावन ॥ २ ॥

चरन पखारूँ बदन[१] निहारूँ ।

तन मन धन सब गुरु पर वारूँ ॥३॥

जा दिन आये साध धन सोई ।

होत अनन्द परम सुख होई ।

सतगुरु मिलि मोरी दुर्मति खोई ॥ ४ ॥

सुरत लगी सतनाम की आसा ।

कहै कबीर दासन कर दासा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सतगुरु हैं रँगरेज, चुनर मेरी रँगि डारी ॥ टेक ॥

स्याही रंग छुड़ाइ के रे, दियो मजीठा रंग ।
धोये से छूटै नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग ॥ १ ॥
भाव के कुंड नेह के जल में, प्रेम रंग दइ बोर ।
चसकी चास लगाइ के रे, खूब रँगी झकझोर ॥ २ ॥
सतगुरु ने चुनरी रँगी रे, सतगुरु चतुर सुजान ।
सब कुछ उन पर वार दूँ रे, तन मन धन औ प्रान ॥ ३ ॥
कहै कबीर रँगरेज गुरु रे, मुझ पर हुए दयाल ।
सीतल चुनरी ओढ़ि के रे, भई हौं मगन निहाल ॥ ४ ॥

---

(१) चिहरा ।

॥ शब्द ५ ॥

कब गुरु मिलिहौ सनेही आइ ॥ ठेक ॥
लोभ मोह को जार[1] बनो है, ता में रह्यो अरुझाय॥
जाको साची लगन लगी है, सो वा घर को जाइ ॥ १ ॥
सुरत समानी सबद कुंड में, निरत रही लौ लाइ ।
पिया बिना योँ प्यारी तलफै, तलफि तलफि जिय जाइ ॥२॥
चलो सखी वह देसै चलिये, जहाँ पुरुष को ठाँइ ।
हंस हिरंबर[2] चँवर ढुरत हैं, तन की तपन बुझाइ ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद सुनो चित लाइ ।
नाम पान पाँजी[3] जो पावै, सो वा लोकै जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रीति लगी तुम नाम की, पल बिसरै नाहीँ ।
नजर करो अब मिहर की, मोहिं मिलो गुसाईं ॥ १ ॥
बिरह सतावै मोहि को, जिव तड़पै मेरा ।
तुम देखन की चाव है, प्रभु मिलो सवेरा ॥ २ ॥
नैना तरसै दरस को, पल पलक न लागै ।
दर्दवंद दीदार का, निसि बासर जागै ॥ ३ ॥
जो अब के प्रीतम मिलैं, करूँ निमिष[4] न न्यारा ।
अब कबीर गुरु पाइया, मिला प्रान पियारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

जो तू पिय की लाड़ली, अपना करि ले री ।
कलह कल्पना मेट के, चरनन चित दे री ॥ १ ॥
पिय की मारग कठिन है, खाँड़े की धारा[5] ।
डिगमिगै तौ गिरि पड़ै, नहिं उतरै पारा ॥ २ ॥

---

(१) जाल । (२) सुनहरे रंग के । (३) रास्ता । (४) छिन भर । (५) धार, बोला रुख़ तलवार का ।

पिय कौ मारग सुगम है, तेरी चाल अनेड़ा।
नाचि न जानै बावरी, कहै आँगन टेढ़ा ॥ ३ ॥
जो तू नाचत नीकसी, तो घूँघट कैसा।
घूँघट का पट खोलि दे, मत करै अँदेसा ॥ ४ ॥
चंचल मन इत उत फिरै, पतिबर्त जनावै।
सेवा लागी आन की, पिय कैसे पावै ॥ ५ ॥
पिय खोजत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि देवा।
कहै कबीर बिचारि के, कर सतगुरु सेवा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ८ ॥

आज सुहाग की रात पियारी।
क्या सोवै मिलने की बारी ॥१॥
आये ढोल बजावत बाजन।
बनरी[1] ढाँपि रहो मुख लाजन।
खोल घूँघट मुख देखैगा साजन ॥२॥
सिर सोहै सेहरा हाथ सोहै कँगना।
झूमत आवै बन्ना[2] मेरे अँगना ॥३॥
कहत कबीर कर दरपन लीजै।
अब मन मानै सोइ सोइ कीजै ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

बहुत दिनन में प्रीतम आये।
भाग भले घर बैठे पाये ॥१॥
मंगलचार महा मन राखो।
नाम रसायन रसना[3] चाखो ॥२॥

---

(१) दुलहिन। (२) दुलहा। (३) जीभ।

मंदिर महा भयो उजियारा।
लै सूती अपनो पिय प्यारा ॥ ३ ॥
मैं निरास जो नौनिधि पाई।
कहा करूँ पिय तुमरी बड़ाई ॥ ४ ॥
कहै कबीर मैं कछु नहिं कीन्हा।
सहज सुहाग पिया मोहिं दीन्हा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

हूँ वारी[1] मुख फेर[2] पियारे।
करवट दे मोहिं काहे को मारे ॥ १ ॥
करवत[3] भला न करवट तोरी।
लाग गले सुन बिनती मोरी ॥ २ ॥
हम तुम बीच भया नहिं कोई।
तुमहिं सो कंत नारि हम होई ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो नर लोई।
अब तुम्हरी परतीति न होई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सूतल रहलूँ मैं नींद भरि हो, गुरु दिहलैं जगाइ ॥टेक॥
चरन कँवल कै अंजन हो, नैना लेलूँ लगाइ।
जा से निंदिया न आवै हो, नहिं तन अलसाइ ॥ १ ॥
गुरु के बचन निज सागर हो, चलु चलो हो नहाइ।
जनम जनम के पपवा हो, छिन में डारब धुवाइ ॥ २ ॥
वहि तन कै जग दीप कियो, सुत बतिया लगाइ।
पाँच तत्त कै तेल चुआये, ब्रम्ह अगिन जगाइ ॥ ३ ॥

(१) बलिहारी। (२) मेरी तरफ़ मुँह कर। (३) छुरी।

सुमति गहनवाँ पहिरलौं हो, कुमति दिहलौं उतार ।
निर्गुन मँगिया सँवरलौं हो, निर्भय सेंदुर लाइ ॥ ४ ॥
प्रेम पियाला पियाइ के हो, गुरु दियो बौराइ ।
बिरह अगिन तन तलफै हो, जिय कछु न सुहाइ ॥ ५ ॥
ऊँच अटरिया चढ़ि बैठलुं हो, जहँ काल न खाइ ।
कहै कबीर बिचारि के हो, जम देखि डेराय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

तेरो को है रोकनहार मगन से आव चली ॥ टेक ॥
लोक लाज कुल की मर्जादा, सिर से डारि अली ।
पटक्यो भार मोह माया को, निरभय राह गही ॥ १ ॥
काम क्रोध हंकार कलपना, दुरमति दूर करी ।
मान अभिमान दोऊ घर पटक्यो, होइ निसंक रली ॥२॥
पाँच पचीस करे बस अपने, करि गुरु ज्ञान छड़ी ।
अगल बगल के मारि उड़ाये, सनमुख डगर धरी ॥ ३ ॥
दया धर्म हिरदे धरि राख्यो, पर उपकार बड़ी ।
दया सरूप सकल जीवन पर, ज्ञान गुमान भरी ॥ ४ ॥
छिमा सील संतोष धीर धरि, करि सिंगार खड़ी ।
भई हुलास मिली जब पिय को, जगत बिसारि चली ॥ ५ ॥
चुनरी सबद बिबेक पहिरि के, घर की खबर परी ।
कपट किवरिया खोल अंतर की, सतगुरु मेहर करी ॥ ६ ॥
दीपक ज्ञान धरे कर अपने, पिय को मिलन चली ।
बिहसत बदन रु मगन छबीलो, ज्यों फूली कँवल कली ॥७॥
देख पिया को रूप मगन भइ, आनंद प्रेम भरी ।
कहै कबीर मिली जब पिय से, पिय हिय लागि रही ॥८॥

॥ शब्द १३ ॥

सबद की चोट लगी है तन में ।
घर नहिं चैन चैन नहिं बन में ॥ १ ॥
ढूँढ़त फिरौं पीव नहिं पावौं ।
औषधि मूर खाइ गुजरावौं[1] ॥ २ ॥
तुम से बैद न हम से रोगी ।
बिन दिदार क्यों जिये बियोगी ॥ ३ ॥
एकै रंग रँगी सब नारी ।
ना जानौं को पिय की प्यारी ॥ ४ ॥
कहै कबीर कोइ गुरुमुख पावै ।
बिन नैनन दीदार दिखावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

चली मैं खोज में पिय की, मिटी नहिं सोच यह जिय की ॥१॥
रहै नित पासही मेरे, न पाऊँ यार को हेरे ॥ २ ॥
बिकल चहुँ ओर को धाऊँ, तबहु नहिं कंत को पाऊँ ॥३॥
धरूँ केहि भाँति से धीरा, गयो गिरि हाथ से हीरा ॥४॥
कटी जब नैन की झाँई[2], लख्यो तब गगन में साईं ॥५॥
कबीरा सबद कहि भासा, नैन में यार को बासा ॥६॥

॥ शब्द १५ ॥

राखि लेहु हम तें बिगरी ॥ टेक ॥
सील धरम जप भगति न कीन्हो, हौं अभिमान टेढ़ पगरी[3] ॥१॥
अमर जानि संची यह काया, सो मिथ्या काँचो गगरी ॥२॥
जिन निवाज[4] साज सब कीन्हे, तिनहिं बिसारि और लगरी ॥३॥

---

(१) नाम के आधार से जिऊँ । (२) जाला । (३) पगड़ी । (४) दया करके ।

संधिक[1] साध कबहुँ नहिं भेट्यो, सरन परै जिनकी पग[2] री॥४॥
कहै कबीर इक बिनती सुनिये, मत घालो[3] जम की खव[4] री॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

दरस तुम्हारे दुर्लभ, मैं तो भइ हुँ दिवानो ॥ टेक ॥
ठाँव ठाँव पूजा करूँ, मिलि सखी सयानी।
पिय कै मरम न जानहीं, सब भर्म भुलानी ॥ १ ॥
बैस[5] गई पिय ना मिले, जरि जात जवानो।
आइ बुढ़ापा घेरि लियो, अब का पछतानो ॥ २ ॥
पानन सी पियरी भई, दिन दिन पियरानी।
आग लगै उहि जोबना, सोवै सेज बिरानी ॥ ३ ॥
अजहूँ तेरो ना गयो, सुमिरो सतनामा।
कहै कबीर धर्मदास से, गहु पद निर्बाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

दरमाँदा[6] ठाढो तुम दरबार ॥ टेक ॥
तुम बिन सुरत करै को मेरी, दरसन दीजै खोल किवार ॥१॥
तुम सम धनी उदार न कोऊ, सर्वन सुनियत सुजस तुम्हार ॥२॥
माँगौं कौन रंक[7] सब देखौं, तुम हो तें मेरो निस्तार[8] ॥३॥
कहत कबीर तुम समरथ दाता, पूरन पद को देत न बार[9] ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

सुनहु अहो मेरी रांध[10] परोसिन, आज सुहागिन अनँद भरी ॥टेक
सबद बान सतगुरु ने मार्‍यो, सोवत तें धन चौंक परी।
बहुत दिनन तें गइ मैं खेलन, बिनु सतगुरु अब भटकि मरो ॥१॥

(१) मालिक से मेला कराने वाला। (२) चरन। (३) डालो। (४) खई। (५) उमर। (६) दीन। (७) दरिद्र। (८) उबार। (९) देर। (१०) एक दिल।

या तन में बट मार बहुत हैं, छिन छिन रोकत घरी घरी ।
जब प्रीतम कि धुनि सुनि पाई, छाड़ि सखिन भइ बिलगखड़ी॥२॥
पाँच पचीस किये बस अपने, पिया मिलन को चाह धरी ।
सबद बिबेक चुनरिया पहिरे, ज्ञान गली में भई खड़ी ॥३॥
दीपक ज्ञान लिये कर अपने, निरखि पुरुष भइ मोद[1] भरी ।
मिटि गौ भर्म दूर भयो धोखो, उलटि महल में खबर परी॥४॥
देखि पिया को रूप मगन भइ, निरखि सेज पर धाय चढ़ी ।
करत बिलास पिया अपने सँग, पौढ़ि सेज पर प्रेम भरी ॥५॥
सुख सागर से बिलसन लागी, बिछुरे पिय धन[2] मिलि जो गई ।
कहै कबीर मिली जब पिय से, जनम जनम को अमर भई ॥६॥

॥ शब्द १९ ॥

अब तोहि जान न दैौं पिउ प्यारे ।
ज्यौं भावै त्यौं रहो हमारे ॥ १ ॥
बहुत दिनन के बिछुड़े पाये ।
भाग भले घर बैठे आये ॥ २ ॥
चरनन लागि करौं सेवकाई ।
प्रेम प्रीति राखौं अरुझाई ॥ ३ ॥
आज बसौ मम मंदिर चोखे ।
कहै कबीर पड़ौं नहिं धोखे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौ, भक्तन के रछपाल[3] ॥टेक॥
जल उपजी जल ही से नेहा, रटत पियास पियास ।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जोऊँ[4], प्रीतम तुम्हारी आस ॥१॥

---

(१) आनन्द । (२) स्त्री । (३) रक्षा करने वाले । (४) राह देखूँ ।

छोड़्यो गेह[१] नेह लगि तुम से, भई चरन लौलीन ।
तालाबेलि[२] होत घट भीतर, जैसे जल बिन मीन ॥२॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अँगना न सुहाय ।
सेजरिया बैरिनि भइ हम को, जागत रैन बिहाय[३] ॥३॥
हम तो तुम्हारी दासी सजना, तुम हमरे भरतार ।
दीनदयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार ॥४॥
कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव ।
दास कबीर बिरह अति बाढ़्यो, अब तो दरसन देव ॥५॥

॥ शब्द २१ ॥

हम तो एक ही करि जानो ॥ टेक ॥
दोय कहै तेहि को दुबिधा है, जिन सतनाम न जानो ॥१॥
एकै पवन एक ही पानी, एकै जोति समानो ॥ २ ॥
इक मट्टी कै घड़ा गढ़ैला, एकै कोहँरा[४] सानो ॥ ३ ॥
माया देखि के जगत भुलानो, काहे रे नर गरबानो[५] ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के हाथ काहे न बिकानो ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

मैं देख्यो तोरी नगरी अजब जोगिया ॥ टेक ॥
जोगी कै मढ़ैया अजब अनूप ।
उलटी नीम दई महबूब ॥ १ ॥
जट बिन लट बिन अँग न भभूत ।
लखि न पड़ै जोगी ऐसो अवधूत ॥ २ ॥
जोगिया की नगरी बसौ मत कोय ।
जो रे बसै सो जोगिया होय ॥ ३ ॥

---

(१) घर। (२) बेकली। (३) बीतती है। (४) कुम्हार। (५) घमंड करता है।

कहै कबीर जोगी बरनो न जाय ।
जहँ देखो गुरुगम पतियाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

मोरी रँगी चुनरिया धो धुबिया ॥ १ ॥
जनम जनम के दाग चुनर के, सतसँग जल से छुड़ा धुबिया ॥२॥
सतगुरु ज्ञान मिले फल चारी, सबद के कलप चढ़ा धुबिया ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के चरन चित ला धुबिया ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

चुनरिया पचरँग हमैं न सुहाय ॥ टेक ॥
पाँच रंग कै हमरी चुनरिया,
नाम बिना रँग फीक दिखाय ॥ १ ॥
यह चुनरी मोरे मैके से आई,
अपने गुरु से ल्योँ बदलाय ॥ २ ॥
चुनरि पहिरि धन निकसी बजरिया,
काल बली लिहले पछुवाय ॥ ३ ॥
तोरी चुनर पर साहिब रीझे,
जम दहिजरवा फिरि फिरि जाय ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
को अब आवै को घर जाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

कौन रँगरेजवा रँगै मोरी चुनरी ॥ टेक ॥
पाँच तत्त कै बनी चुनरिया,
चुनरी पहिरि के लागै बड़ सुँदरी ॥ १ ॥

टेकुआ तागा कर्म कै धागा,
गर बिच हरवा हाथ बिच मुँदरी ॥ २ ॥
सोरहो सिंगार बतीसो अभरन,
पिय पिय रटन पिया सँग घुमरी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
बिन सतसंग कौन बिधि सुधरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

हुआ जब इस्क़ मस्ताना । कहैं सब लोग दीवाना ॥ १ ॥
जिसे लागी सोई जाना । कहे से दर्द क्या माना ॥ २ ॥
कोट को ले उड़ो भृंगी । किया उन आप सों रँगी ॥ ३ ॥
सुषमना तत्त झनकारा । लखै कोइ नाम का प्यारा ॥ ४ ॥
मैं तेरा दास हूँ बंदा । तुझी के नेह में फंदा ॥ ५ ॥
ममत की खान में डूबा । कहो कस मिले महबूबा ॥ ६ ॥
साहिब टुक मिहर से हेरो । दास को जक्त से फेरो ॥ ७ ॥
कबीरा तालिबा[1] तेरा । किया दिल बीच में डेरा ॥ ८ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सुन सतगुरु की तान नींद नहिं आती ।
बिरहा में सूरत गई पछाड़े खाती ॥ टेक ॥
तेरे घट में हुआ अँधेर भरम की राती ।
भइ न पिय से भेंट रही पछिताती ॥ १ ॥
सखि नैन सैन से खोजि ढूँढ़ ले आती ।
मेरे पिया मिले भूख चैन नाम गुन गाती ॥ २ ॥

---

(१) खोजी ।

तेरि आवागवन की त्रास सबै मिटि जाती ।
छबि देखत भइ है निहाल काल मुरझाती ॥ ३ ॥
सखि मानसरोवर चलो हंस जहँ पाँती ।
कहै कबीर बिचार सीप मिलि स्वाँती ॥ ४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

तलफै बिन बालम मोरा जिया ॥ टेक ॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निँदिया ।
तलफ तलफ के भोर किया ॥ १ ॥
तन मन मोर रहट अस डोलै ।
सूनी सेज पर जनम छिया[1] ॥ २ ॥
नैन थकित भये पन्थ न सूझै ।
साईँ बेदरदी सुधि न लिया ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो ।
हरो पीर दुख जोर किया ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

खालिक खूबै खूब ही, मोहिं मिलन दुहेला[2] ।
महरम कोई ना मिलै, बन फिरूँ अकेला ॥ १ ॥
बिरह दिवाना मैं फिरूँ, दिल मैं लौ लागी ।
मरम न पाया दास ने, तन तपन न भागी ॥ २ ॥
मैं तरसत तोहि दरस को, तुम दरस न दीन्हा ।
नैन चहैं दीदार को, भये बहुत अधीना ॥ ३ ॥
सुरत निरत करि निरखिया, तन मन भये धीरा ।
नूर देखि दिलदार का, गुन गावै कबीरा ॥ ४ ॥

---

(१) बरबाद हुआ । (२) कठिन ।

॥ शब्द ३० ॥

प्रेम सखी तुम करो बिचार ।
बहुरि न आना यहि संसार ॥ १ ॥
जो तोहि प्रेम खिलनवा चाव ।
सीस उतारि महल में आव ॥ २ ॥
प्रेम खिलनवा यही सुभाव ।
तू चलि आव कि मोहिं बुलाव ॥ ३ ॥
प्रेम खिलनवा यही बिसेख[1] ।
मैं तोहि देखूँ तू मोहिं देख ॥ ४ ॥
खेलत प्रेम बहुत पचि हारी ।
जो खेलिहै सो जग से न्यारी ॥ ५ ॥
दीपक जरै बुझै चहे बाति ।
उतरन न दे प्रेम रस माति ॥ ६ ॥
कहत कबीरा प्रेम समान[2] ।
प्रेम समान[3] और नहिं आन ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

साचा साहिब एक तू, बंदा आसिक तेरा ॥ टेक ॥
निसदिन जप तुझ नाम का, पल बिसरै नाहीं ।
हर दम राख हजूर में, तू साचा साईं ॥ १ ॥
गफलत मेरी मेटि के, मोहिं कर हुसियारा ।
भगति भाव बिसवास में, देखौं दरस तुम्हारा ॥ २ ॥
सिफत तुम्हारी क्या करौं, तुम गहिर गँभीरा ।
सूरत में मूरत बसै, सोइ निरख कबीरा ॥ ३ ॥

---

(१) बड़ाई । (२) समाया । (३) बराबर ।

॥ शब्द ३२ ॥

ननदी जाव रे महलिया, आपन बिरना[1] जगाव ॥ टेक ॥
भौजी सोवै जगाये न जागै, लै न सकै कछु दाव ।
काया गढ़ में निसि अँधियरिया, कौन करै वा को भाव ॥१॥
मन कै अगिन दया कै दीपक, बाती प्रेम जगाव ।
तत्त कै तेल चुवै दीपक में, मदन[2] मसाल जराव ॥ २ ॥
भरम कै ताला लगे मन्दिर में, ज्ञान की कुंजी लगाव ।
कपट किवरिया खोलि के रे, यहि बिधि पिय को जगाव ॥३॥
ब्रम्हंड पार वह पति सुन्दर है, अब से भूलि जिनि जाव ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव ॥४॥

॥ शब्द ३३ ॥

घूँघट का पट खोल रे, तो को पीव मिलैंगे ॥ टेक ॥
घट घट में वहि साईं रमता ।
कटुक[3] बचन मत बोल रे, (तो को पीव) ॥१॥
धन जोबन का गर्ब न कीजै ।
झूठा पँचरँग चोल[4] रे, (तो को पीव) ॥२॥
सुन्न महल में दियना बारि ले ।
आसा से मत डोल रे, (तो को पीव) ॥३॥
जोग जुगत से रंगमहल में ।
पिय पाये अनमोल रे, (तो को पीव) ॥४॥
कहै कबीर अनंद भयो है ।
बाजत अनहद ढोल रे, (तो को पीव) ॥५॥

॥ शब्द ३४ ॥

सैयाँ बुलावे मैं जैहौं ससुरे ।
जल्दी से महरा डोलिया कस रे ॥१॥

(१) भाई। (२) काम। (३) कड़ुआ। (४) पाँच तत्वों का शरीर।

नैहर के सब लोग छुटत रे ।
कहा करूँ अब कछु नहिं बस रे ॥२॥
बीरन[1] आवो गरे तोरे लागौं ।
फेर मिलब है न जानौं कस रे ॥३॥
चालनहार भई मैं अचानक ।
रहौं बाबुल[2] तोरी नगरी सुबस रे ॥ ४ ॥
सात सहेली ता पै अकेली ।
संग नहीं कोउ एक न दस रे ॥ ५ ॥
गवना चाला तुराव[3] लगो है ।
जो कोउ रोवै वा को न हँस रे ॥ ६ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो ।
सैयाँ के महल में बसहु सुजस रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

गुरु दियना बारु रे, यह अन्ध कूप संसार ॥ टेक ॥
माया के रँग रची सब दुनियाँ, नहिं सूझ परत करतार ॥१॥
पुरुष पुरान बसै घट भीतर, तिनुका ओट पहार ॥२॥
मृग के नाभि बसत कस्तूरी, सूँघत भ्रमत उजार[4] ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, छूटि जात भ्रम जार ॥४॥

॥ शब्द ३६ ॥

पायौ सतनाम गरे कै हरवा ॥ टेक ॥
साँकर खटोलना रहनि हमारी, दुबरे दुबरे पाँच कहरवा ॥१॥
ताला कुंजी हमैं गुरु दीन्ही, जब चाहौं तब खोलौं किवरवा ॥२॥

---

(१) भाई । (२) बाप । (३) पंजाबी बोली में "तुरो" का अर्थ "चलो" है । (४) जंगल में दौड़ता है ।

प्रेम प्रीति कै चुनरी हमरी, जब चाहैं तब नाचैं सहरवा॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बहुरि न ऐबै एहि नगरवा॥४॥

॥ शब्द ३७ ॥

भजन में होत अनंद अनंद।
बरसत बिसद[1] अमी के बादर, भींजत है कोइ संत ॥ १ ॥
अगर बास जहँ तत की नदिया, मानो धारा गंग।
करि असनान मगन होइ बैठी, चढ़त सबद के रंग ॥ २ ॥
रोम रोम जा के अमृत भीना, पारस परसत अंग।
सबद गह्यो जिव संसय नाहीं, साहिब भये तेरे संग ॥ ३ ॥
सोई सार रच्यो मेरे साहिब, जहँ नहिं माया अहं।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जपो सोहं सोहं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

नाम अमल उतरै ना भाई ॥ टेक ॥
और अमल छिन छिन चढ़ि उतरै,
नाम अमल दिन बढ़ै सवाई ॥ १ ॥
देखत चढ़ै सुनत हिये लागै,
सुरत किये तन देत घुमाई ॥ २ ॥
पियत पियाला भये मतवाला,
पायौ नाम मिटी दुचिताई ॥ ३ ॥
जो जन नाम अमल रस चाखा,
तर गइ गनिका सदन कसाई ॥ ४ ॥
कहै कबीर गूँगे गुड़ खाया,
बिन रसना[2] क्या करै बड़ाई ॥ ५ ॥

---

(१) निर्मल। (२) ज़बान।

होली

॥ शब्द १ ॥

मैं तो वा दिन फाग मचैहौं, जा दिन पिय मोरे द्वारे ऐहैं ॥टेक॥
रंग वही रँगरेजवा वाहो, सुरँग चुनरिया रँगैहौं ॥ १ ॥
जोगिनि होइ के बन बन ढूँढ़ौं, वाही नगर में रहिहौं ॥२॥
बालपने गल सेल्हो बनैहौं, अंग भभूत लगैहौं ॥ ३ ॥
कहै कबीर पिय द्वारे ऐहैं, केसर माथ रँगैहौं ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

ये अँखियाँ अलसानी हो, पिय सेज चलो ॥ टेक ॥
खंभ पकरि पतंग अस डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥ १ ॥
फूलन सेज बिछाइ जो राख्यो, पिया बिना कुम्हिलानी ॥२॥
धीरे पाँव धरो पलँगा पर, जागत ननद जिठानी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, लोक लाज बिलछानी[1] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

होरी खेलत फाग बसंत, सतसँग होइ रहु जोधा ॥
तन मन भेंटि मिलो जिव साचे, अंतर बिछोह न राखो।
मगन होइ सेवा में सन्मुख, मधुर बचन सत भाखो ॥ १ ॥
होइ दयाल संत घर आवैं, चरनामृत करि पावो।
महा प्रसाद सीत मुख लेवो, या बिधि जनम सुधारो ॥ २ ॥
सील संतोष सदा सम द्रिष्टो, रहनि गहनि में पूरा।
जा के दरस परस भय भाजे, होइ कलेस सब दूरा ॥ ३ ॥
निसि बासर चरचा चित चंदन, आन कथा न सुहावे।
सीतल सबद लिये पिचुकारी, भरम गुलाल उड़ावै ॥४ ॥

(१) छोड़ा।

सबद सरूप अखंडित अविचल, निर्भय बेपरवाई ।
कहै कबीर ताहि पग परसौ, घट घट सब सुखदाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

उड़िजा रे कुमतिया काग उड़िजा रे ॥ टेक ॥
तुम्हरो बचन मोहिं नीक न लागै । स्रवन सुनत दुख जागै ॥१॥
कोइल बोल सुहावन लागै । सब सुनि सुनि अनुरागै ॥२॥
हमरे सैयाँ परदेस बसतु हैं । मोर चित चरनन लागै ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो । गुरू मिलैं बड़ भागै ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

आई गवनवाँ की सारी, उमिरि अबहीं मोरि बारी ॥टेक॥
साज समाज पिया लै आये, और कहरिया चारी ।
बम्हना बेदरदी अचरा पकरि के, जोरत गँठिया हमारी ।
सखी सब पारत गारी ॥१ ॥
बिधि[१] गति बाम कछु समभ परत ना, बैरी भई महतारी ।
रोइ रोइ अँखियाँ मोर पोंछत, घरवाँ से देत निकारी ।
भई सब कौ हम भारी ॥ २ ॥
गवन कराइ पिया लै चाले, इत उत बाट निहारी ।
छूटत गाँव नगर से नाता, छूटे महल अटारी ।
करम गति टरै न टारी ॥ ३ ॥
नदिया किनारे बलम मोर रसिया, दीन्ह घुँघट पट टारी ।
थरथराय तन काँपन लागे, काहू न देखि हमारो ।
पिया लै आये गोहारी ॥ ४ ॥

---

(१) ब्रह्मा ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद लेहु बिचारी ।
अब के गौना बहुरि नहिं औना, करि ले भेंट अँकवारी ।
एक बेर मिलि ले प्यारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

खेलै फाग सबै नर नारी, हाथ लकुट[1] मुख में गारी ॥टेक॥
घर से निकसीं बनी[2] सुन्दरी, भाँति भाँति पहिरे सारी ।
अबिर गुलाल लिये भर झोरी, मिलन चलीं पिय की प्यारी॥१॥
अपने अपने झुंडन मिल करि, गावत बिरध तरुन बारी[3] ।
पहुँचीं जाइ जहँ पिय मन्दिर है, बर बैठे मूरति धारी ॥२॥
को चितवै को बोलै का सोँ, निरजिव रूप कहूँ का री ।
निहुरि निहुरि सब पैयाँ परतु हैं, यह देखो अचरज भारी ॥३॥
सबै सखी मिलि मुरुक[4] चली हैं, कोइ न गहै सँग पिय प्यारी।
सुर नर मुनि सब ही अस भूले, परम पुरुष की गति न्यारी ॥४॥
ये सब भरम छोड़ि दे बौरी, क्यौं अब जनम जुआ हारी ।
कहै कबीर आपन पति चीन्हो, सुख सागर चेतन सारी[5] ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

बाअरो सखि ज्ञान है मेरा ॥ टेक ॥
मातु पिता मोहिं नितहि सिखावैं, बरजैं बेरै बेरा ।
जौन कौल करि आयो पिय से, सो गुन एक न हेरा,
कहैं औगुन बहुतेरा ॥ १ ॥
आय गयो अनुहार[6] रे सजनी, कियो दरवजवैं डेरा ।
जल्दी डोलिया फँदाय माँगे बलमू, लावै न तनिकौ देरा,
देखैं सब लोग घनेरा ॥ २ ॥

---

(१) छड़ी । (२) बनो ठनी । (३) बूढ़ी, जवान और लड़की । (४) मुड़ । (५) पूरा । (६) बुलानेवाला ।

रोय रोय सब पूछन लागीं, कब करिहौ तुम फेरा।
सत समुद्र पार तोरा सासुर, लौटब कठिन करेरा,
जहाँ कहुँ नाव न बेड़ा ॥ ३ ॥
कहै कबीर जब पिया से मिलौंगी, जिया न्यौछावर मेरा।
आवागवन न है या नगरी, यह लेखा सब केरा,
झूठ दुनिया का बसेरा ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

कैसे खेलौं पिया सँग होरी, दुबिधा रार मचाय रही रे ॥टेक
पाँच पचीसो फाग रच्यो है, ममता रंग बनाय रही रे।
नाचत काल करम के आगे, संसा भाव बताय रही रे ॥१॥
करिके सिंगार कुमति बनि बैठी, भरम के घुँघुरू बजाय रही रे।
तीनों ताल मृदंग बजावैं, मैं मैं रागिनि छाय रही रे ॥२॥
कपट कटोरा मद बिष भरि भरि, तृस्ना मन को छकाय रही रे।
याहि जीव को बस करि अपने, हंसा को काग बनाय रही रे ॥३
जानि बूझि के सुनो भाई साधो, संत जनन ने पीठ दई रे।
दास कबीर कहै कर जोरी, हमरी तो ऐसिही बीति गई रे ॥४

॥ शब्द ९ ॥

नित मंगल होरी खेलो, नित बसंत नित फाग ॥ टेक ॥
दया धर्म की केसर घोरो, प्रेम प्रीति पिचुकार।
भाव भगति से भरि सतगुरु तन, उमँग उमँग रँग डार ॥ १ ॥
छिमा अबीर चरच[1] चित चंदन, सुमिरन ध्यान धमार।
ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी, सुफल जनम नर नार ॥ २ ॥

---

(१) छिड़क कर।

चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाव ।
लोक लाज कुल कान छाड़ि के, निरभय निसान बजाव ॥३॥
कथा कीरतन मँगल महोछव, कर साधन की भीर ।
कभी न काज बिगरिहै तेरो, सत सत कहत कबीर ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

मन तोहिं नाच नचावै माया ॥ टेक ॥
आसा डोरि लगाइ गले बिच, नट जिमि कपिहि[१] नचाया ।
नावत सीस फिरै सबही को, नाम सुरत बिसराया ॥१॥
काम हेतु तुम निसिदिन नाचे, का तुम भरम भुलाया ।
नाम हेतु तुम कबहुँ न नाचे, जो सिरजल[२] तोरी काया ॥२॥
ध्रू प्रहलाद अचल भये जा से, राज बिभीखन पाया ।
अजहूँ चेत हेत कर पिउ से, हे रे निलज बेहाया ॥ ३ ॥
सुख सम्पति सब साज बड़ाई, लिखि तेरे साथ पठाया ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गनिका बिवान चढ़ाया ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

पिय बिन होरी को खेलै, बावरी भइ डोलै ॥ टेक ॥
बाबा हमारे ब्याह रच्यो है, बर बालक हूँ स्यानी ।
सैयाँ हमारे झूलैं पलना, हमहिं झुलावनहारी ॥१॥
नौवा भूले बारिया भूले, भूले पंडित ज्ञानी ।
मातु पिता दोउ अपनि गरज के, हमरो दरद न जानी ॥२॥
अनब्याही मन हौस[३] करतु हैं, ब्याही तौ पछितानी ।
गौने से मौने होइ बैठी, समुझ समुझ मुसकानी ॥३॥
वै मुसकानी वै हुलसानी, बिचलत ना दोउ नैना ।
दास कबीर कहै सोइ लखि गइ, सखा सहेलि की सैना ॥४॥

---

(१) बंदर को। (२) पैदा किया। (३) चाव।

॥ शब्द १२ ॥

गगन मँडल अरुझाई, नित फाग मची है ॥ टेक ॥
ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सखियाँ लै लै धाईं ।
उँमगि उँमगि रँग डारि पिया पर, फगुवा देहु भलाई ॥१॥
गगन मँडल बिच होरी मची है, कोइ गुरु गम तें लखि पाई ।
सबद डोर जहँ अगर ढरतु है, सोभा बरनि न जाई ॥२॥
फगुआ नाम दियो मोहि सतगुरु, तन की तपन बुझाई ।
कहै कबीर मगन भइ बिरहिनि, आवागवन नसाई ॥३॥

॥ शब्द १३ ॥

बिरहिनि झकोरा मारी, को बूझै गति न्यारी ॥टेक॥
चोवा चन्दन अबिर अरगजा, करनी कै केसर घोरी ।
प्रेम प्रीति कै भरि पिचुकारी, रोम रोम रँगी सारी ॥१॥
इँगला पिंगला रास रचो है, सुखमन बाट बहोरी ।
खेलत हैं कोइ संत बिरहिया, जोग जुगति लगी तारी ॥२॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, तुरही तान नफीरी[1] ।
सुरत निरत जहँ नाचन निकसे, बाढ़त रंग अपारी ॥३॥
फागुन के दिन आनि लगे री, अब कैसे काह करो री ।
दास कबीर आतम परमातम, खेलत बहियाँ मिरोरी ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

का सँग होरी खेलौं हो, बालम परदेसवा ॥ टेक ॥
आई है अब रितु बसंत की, फूलन लागे टेसुवा ।
बस्त्र रँगीले पहिरन लागे, बिरहिनि ढारत अँसुवा ॥१॥
भरि गये ताल तलैया सागर, बोलन लागे मेघवा[2] ।
उमड़ी नदी नाव कहँ पाओं, केहि बिधि लिखौं सँदेसवा ॥२॥

---

(१) एक बाजा शहनाई का सा जो मुँह से बजाया जाता है । (२) मेंढक ।

जो जो गये बहुरि नहिं आये, कैसन है वह देसवा ।
आवत जावत लखै न कोई, येही मोहि अँदेसवा ॥३॥
बालापन जोबन दोउ बीते, पाकन लागे केसवा ।
कहै कबीर निज नाम सम्हारी, लै सतगुरु उपदेसवा ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

कोइ मो पै रंग न डारौ, मैं तो भइ हूँ बौरी ॥टेक॥
इक तौ बौरी दूजे बिरह की मारी, तीजे नेह लगो री ॥१॥
अपने पिय सँग होरी खेलौं, येही फाग रचो री ॥२॥
पाँच सुहागिनि होरी खेलैं, कुमति सखी से न्यारी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन निवारी ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

ऐसो खेल ले होरी जोगिया, जा में आवागवन तजि डारी ॥
ज्ञान ध्यान कै अबिर गुलाल लै, सुरति किये पिचुकारी ।
भक्ति भभूत लै अंग पर डारौ, मृग मुद्रा नृतकारी ॥१॥
सील सँतोष कै पहिरि चोलना, छिमा टोप सिर धारी ।
बिरह बैराग कै कानन मुद्रा, अनहद लाओ तारी ॥२॥
प्रीति प्रतीति नारि सँग लैलै, केसर रंग बना री ।
ब्रम्ह नगर में होरी खेलौ, अलख रंग भरि झारी ॥ ३ ॥
काम क्रोध अरु मोह लोभ कै, कीच दूर तजि डारी ।
जनम मरन की दुबिधा मेटौ, आसा तृसना मारी ॥ ४ ॥
निर्गुन सर्गुन एकहि जानौ, भरम गुफा मत जा री ।
आनँद अनुभव उर में धारौ, अनहद मृदंग बजा री ॥५॥
जल थल जीव औ जन्तु चराचर, एकहि रूप निहारी ।
दास कबीर से होरी मचाओ, खेलो जग में धमारी ॥६॥

॥ शब्द १७ ॥

खेलौ नित मंगल होरी, नित बसंत नित मंगल होरी ॥टेक॥
दया धरम की केसर घोरी, प्रेम प्रीति पिचुकारी ।
भाव भक्ति छिड़कै सतगुरु पै, सुफल जनम नर नारी ॥१॥
प्रीति प्रतीति फूल चित चंदन, सुमिरन ध्यान तुम्हारी ।
ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी, उमँग उमँग रँग डारी ॥२॥
चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाई ।
लोक लाज कुल करम मेटि के, अभय निसान घुमाई ॥३॥
कथा कीरतन नाम गुन गावै, करि साधन की भीर ।
कौन काज बिगर्‍यो है तेरो, यों कथि कहत कबीर ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

कोइ है रे हमारे गाँव को, जा से परचा पूछौं ठाँव को ॥टेक॥
बिन बादर बरखै अखँड धार, बिन बिजुरी चमकै अति अपार ॥१
ससि भानु बिना जहँ है प्रकास, गुरू सबद तहँ कियो निवास ॥२॥
बृच्छ एक तहँ अति अनूप, साखा पत्र न छाँह धूप ॥३॥
बिन फूलन भँवरा करि गुँजार, फल लागे तहँ निराधार ॥४॥
ऊँच नीच नहिं जाति पाँति, त्रिगुन न ब्यापै सदा सांति ॥५॥
हर्ष सोग नहिं राग दोष, जरा मरन नहि बंध मोष ॥६॥
अखँडपुरी इक नग्र नाम, जहँ बसैं साध जन सहज धाम ॥७॥
मरै न जीवै आवै न जाय, जन कबीर गुरु मिले धाय ॥८॥

॥ शब्द १९ ॥

मानुषतन पायो बड़े भाग, अब बिचारि के खेलो फाग ॥टेक॥
बिन जिभ्या गावै गुन रसाल, बिन चरनन चालै अधर चाल ॥१॥
बिन कर बाजा बजै बैन, निरखि देखि जहँ बिना नैन ॥२॥

बिन ही मारे मृतक होइ, बिन जारे ह्वै खाक सोइ ॥३॥
बिन माँगे बिन जाँचे देइ, सो सालिम[1] बाजी जीति लेइ ॥४॥
बिन दीपक बरै अखंड जोति, पाप पुन्न नहिं लागे छोति[2] ॥५॥
चन्द सूर नहिं आदि अंत, तहँ कबीर खेलै बसंत ॥६॥

॥ शब्द २० ॥

खेलैं साध सदा होरी, तहँ दुन्द उपाधि नहीं खोरी[3] ॥टेक॥
ताल मूल सुर सदा बाट धरि, पछिम दिसा चढ़ि गहि डोरी ।
खोलि कपाट[4] सहज घर पाया, सुन्दर रूप सुरत गोरी ॥१॥
निर्तत[5] सखी चतुर सब गावैं, बाजत तुरही दै दै तारी ।
छिरकत चीर रंग चित चंचल, प्रेम केसर भरि पिचुकारी ॥२॥
जहँ राजत राम आप मन मूरति, अति रसाल[6] छत्रधारी ।
सुर नर मुनि तहँ होत कुलाहल, ज्ञान गुलाल उड़त भारी ॥३॥
कोइ निरगुन कोइ सरगुन राचा[7], आप बिसारि चले सबही ।
कहै कबीर चेतु नर प्रानी, सबद सरूप मिल्यो अबही ॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

मन मिलि सतगुरु खेलो होरी ॥ टेक ॥
संसय सकल जात छिन माहीं, आवागवन के फंदा तोरी ॥१॥
चित चंचल इसथिर करि राखो, सूरत निरत एक ठौरी ॥२॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, अनहद धुनि कै घनघोरी ॥३॥
गावत राग सबै अनुरागी, सार सबद अंतर मोड़ी ॥४॥
ज्ञान ध्यान की करि पिचुकारी, केसर गुरु किरपा घोरी ॥५॥
अगर बास महकै चहुँ ओरी, सेत अबीर लै भरि झोरी ॥६॥
अजर अमर फगुवा नित पावै, कहै कबीर गये जम जोरी[8] ॥७॥

---

(१) पूरन । (२) छूत । (३) ईर्षा । (४) किवाड़ । (५) नाचती है । (६) भारी ।
(७) मीना । (८) बल, जुल्म ।

॥ शब्द २२ ॥

सखी री ऐसी होली खेल, जा में हुरमत लाज रहै री ॥टेक॥
सील सिंगार करौ मोरी सजनी, धीरज माँग भरो री।
ज्ञान गुलाल उड़ाओ तन से, समता फेंट कसो री ॥१॥
मची धमार नगर तेरे में, अनहद बीन बजो री।
गुरु से फगुवा माँग सखी री, हिरदय साँति धरो री ॥२॥
खेती गऊ बनिज औ बछरा, चेला सिष्य करो री।
नाव भरी है पार होन को, कालोदह में परो री ॥३॥
संसकिरत भाषा पढ़ि लीन्हा, ज्ञानी लोग कहो री।
आस तृसना में बहि गयो सजनी, जम के डंड सहो री ॥४॥
मान मनी की मेटुकी सिर पर, नाहक बोझ भरो री।
मेटुकी पटकि मिलो सतगुरु से, दास कबीर कहो री ॥५॥

॥ शब्द २३ ॥

खेलि ले दिन चार पियारी, ये होरी रस खूब मचा री ॥
ज्ञान की ढोल बिबेक मजीरा, राग उठै झनकारी।
जंत्री संत भली बिधि जानै, बाजत अनहद तारी,
न जानै कारन अनाड़ी[१] ॥१॥
कर्म नाम की जेवरी[२] तोड़ी, धर्म गुलाल उड़ा री।
लोभ मोह के कंगन तोड़े, भर्म भाँडा फोड़ा री,
कपट जड़ मूल उखाड़ी ॥२॥
अर्ध उर्ध बिच फाग रचो है, सुखमन सुरत सम्हारी।
पिय प्यारी खेलैं अपने पिया सँग, छिरकैं रंग अपारी,
दृगन की चितवन न्यारी ॥३॥

---

(१) मूर्ख। (२) रस्सी।

होरी आवै फिरि फिरि जावै, यह तन बहुरि न पावै ।
पूर्न प्रताप दया सतगुरु की, आवागवन नसावै,
बात यह कठिन करारी ॥४॥
सबै संग मिलि होरी खेलैं, गगन में फाग रचा री ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बेद न पावै पारी ।
सेस की रसना[1] हारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

जहँ बारह मास बसंत होय, परमारथ बूझै साध कोय ॥टेक॥
बिन फूलन फूल्यो अकास, ब्रम्हादिक सिव लियो निवास ॥१॥
सनकादिक रहैं भँवर होइ, लख चौरासी जीव सोइ ॥ २ ॥
सातो सागर पिये हैं घोर, आन जुरे तैं तिस करोर ॥ ३ ॥
अमर लोक फल लियो है जाय, कहै कबीर जानै सो खाय ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

सत साहिब खेलैं ऋतु बसंत । कोटि दास सुर मुनि अनंत ॥टेक॥
हँसैं हंस जगमगैं दंत । सेत पुहुप बरखैं अनंत ॥ १ ॥
अग्र सबद को बास माहिं । निरखि हंस सबदै समाहिं ॥ २ ॥
नौ खेलैं तैंतोस तोन । लोक बेद बिष संग लोन ॥ ३ ॥
खेलैं प्रकृति पचोस संग । न्यारा न्यारा धरैं रंग ॥ ४ ॥
सब नर खेलैं गुनन माहिं । अधर बस्तु कोउ लखै नाहिं ॥५॥
जुगल जोरि दोउ रहै साध । जुग जुग लिख जो दीन्ह हाथ ॥६॥
बाको निकसै पकरि लेइ । बहुरि बहुरि जम त्रास देइ ॥ ७ ॥
कहै कबीर नर अजहूँ चेत, छाड़ु खेल धर सबद हेत ॥ ८ ॥

---

(१) जीभ ।

॥ शब्द २६ ॥

सखि आज हमारे गृह बसंत ।
सुख उपज्यौ अब मिले कंत ॥ टेक ॥

पिया मिले मन भयो अनंद, दूरि गये सब दोष दुंद ।
अब नहिं ब्यापै संस[1] सोग, पल पल दरसन सरस भोग ॥१॥
जहँ बिन कर बाजे बजैं बैन, निरखि देख तहँ बिना नैन ।
धुनि सुन थाक्यो चपल चित्त, पल न बिसारौं देखौं नित्त ॥२॥
जहँ दीपक जेहि[2] बरै आगि, सिव सनकादिक रहैं लागि ।
कहै कबीर जहँ गुरु प्रताप, तहँ तो नाहीं पुन्न पाप ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

तुम घट बसंत खेलो सुजान । सत्त सबद मैं धरो ध्यान ॥टेक॥
एक ब्रम्ह फल लगे दोय । सुबुधि कुबुधि लखि लेहु सोय ॥१॥
बिष फल खावे सब संसार । अमृत फल साधु करै अहार ॥२॥
पाँच पचीस जहँ फूलै फूल । भर्म भँवर डरि रहे भूल ॥३॥
काम क्रोध दोउ लागे पात । नर पसु खाहिं कोइ ना अघात ॥४॥
जहँ नौ द्वारे औ दस जुवार[3] । तहँ सींचनहारा है मुरार ॥५॥
मेरे मुक्ति बाग में सुख निधान[4] । देखै सो पावै अयन[5] जान ॥६॥
संत चरन जो रहै लाग । वह देखै अपनो मुक्ति बाग ॥७॥
कहै कबीर सुख भयो भोग । एक नाम बिन सकल रोग ॥८॥

॥ शब्द २८ ॥

चाचरि खेलो हो, समझि मन चाचरि खेलो ॥ टेक ॥
चाचरि खेलो संत मिलि, चित चरन लगाई ।
सतसंगत सत भाव करि, सुख मंगल गाई ॥ १ ॥

---

(१) संशय । (२) जैसे । (३) बैल । (४) भंडार । (५) घर ।

यह जग जम की खान है, या को न पतीजै[1] ।
सतगुरु सबद बिचारि ले, तो जुग जुग जीजै[2] ॥२॥
जनम जनम भरमत रह्यौ, जिव नेक न बूझेव ।
चौरासी के खेल में, निज पंथ न सूझेव ॥ ३ ॥
एक कनक और कामिनी, इन सँग मन बंधा ।
अंत नरक ले जातु हैं, चीन्है नहिं अंधा ॥ ४ ॥
तीनि लोक चाचरि रची, इन तीनौं देवा ।
सुर नर मुनि औ देवता, करैं इनकी सेवा ॥ ५ ॥
चौथा पद नहिं जानहीं, भूले भ्रम माया ।
सेवक की सेवा करैं, साहिब बिसराया ॥ ६ ॥
यह औसर अब जातु है, चेतो नर प्रानी ।
आदि नाम चित दृढ़ गहो, छूटै जम खानी ॥ ७ ॥
खेलो सुरत सम्हारि के, सुकिरत उर राखो ।
प्रेम मगन बहु प्रीति से, अमृत रस चाखो ॥ ८ ॥
नाद मृदंग सम्हारि, तार दोउ संग मिलावो ।
आदी मूल बिचारि के, निज धुन उपजावो ॥ ९ ॥
निसि बासर खेलो सदा, जा तें लौ लागै ।
पिव सेती परिचय करो, सकलै भ्रम भागै ॥ १० ॥
सील सँतोष को अरगजा, सब अंग लगावो ।
काम क्रोध मद लोभ, अबीर गुलाल उड़ावो ॥ ११ ॥
नचै नवेली नारि, सबै मिलि के इक ठौरा ।
चाचरि खेलो प्रीति से, छूटै सब औरा ॥ १२ ॥

---

(१) भरोसा करो । (२) जीओ ।

पिचुकारी भरि अगर बास, खेलो पिय संगा ।
महकै बास सुबास, खेल लागे अति रंगा ॥ १३ ॥
छूटै बिषय बिकार, सबै भौसागर केरा ।
सुख सागर में घर करै, फिर होइ न फेरा ॥ १४ ॥
खेल संत सुजान, सोई या गति को जानैं ।
अनजाने वादै[1] सबै, कोइ नेक न मानै ॥ १५ ॥
कहै कबीर बिचारि के छाड़ो सब आसा ।
ऐसी चाचरि खेलई, सोई निज दासा ॥ १६ ॥

॥ शब्द २६ ॥

मन रंगी खेले धमार, तीन लोक में सार ॥ टेक ॥
काहू को पाताल पठावा, काहू को आकास ।
काहू को बैकुंठ देतु है, फिरि मृत लोक की आस ॥ १ ॥
सुर नर मुनि सबही को छलिया, काम क्रोध के संग ।
अंतर और कहै कछु औरै, करत सबन मन भंग ॥ २ ॥
निसि बासर ममता उपजावत, बाजो देत भुलाइ ।
चौरासी पिचुकारी मारत, जनम जनम भरमाइ ॥ ३ ॥
षट दरसन पाखंड छानवे[2], भर्म पर्‍यो संसार ।
बेद पुरान सबै मिलि गावत, करम लगाये लार[3] ॥ ४ ॥
ज्ञानी गुनी चतुर कबि बाँधे, माया रसरी डारि ।
पछा पछी खेलत सब कोऊ, डारे पकरि पछार ॥ ५ ॥
आँधर करि राखे सबहिन को, नैनन डारि अबीर ।
काल कुटिल जो छलबल मारे, नेक न वा को पीर ॥ ६ ॥

(१) बकै । (२) अनेक । (३) साथ ।

खेलि न जानै खेलै निसि दिन, सुधि बुधि गई हिराय।
जिभ्या के लंपट नर भोंदू, मानुष जनम गँवाय ॥ ७ ॥
चीन्हो रे नर प्रानी या को, निसि दिन करत अँदोर[१]।
होइ साह सब को घर मूसत, तीनि लोक को चोर ॥ ८ ॥
सतगुरु सबद सत्त गहि निज करि, जा तें संसय जाइ।
आवागवन रहित ह्वै तेरो, कहै कबीर समुझाय ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३० ॥

मेरो साहिब आवनहार, होरी मैं खेलौंगो ॥ टेक ॥
करनी के कलस सँजोग सकल बिधि, प्रीति पावरी डारो।
चरन पखारि चरनामृत लेहौं, मन को मान उतारो ॥ १ ॥
तन मन धन सब अर्पन करिहौं, बहु बिधि आरत साज।
प्रेम मगन ह्वै होरी खेलौं, मेटौं कुल की लाज ॥ २ ॥
धोखा धूरि उड़ाइ सरीर तें, ज्ञान गुलाल प्रकास।
पारस पान लेउँ सतगुरु से, मेटौं दूसर आस ॥ ३ ॥
दया धरम कै केसर घोरौं, भाव भगति पिचुकारी।
सत्त सुकिरत अबीर अरगजा, देहौं पिय पर डारी ॥ ४ ॥
दास कबीर मिले मोहिं सतगुरु, फगुवा दीन्हो नाम।
आवागवन की मिटी कल्पना, पायौ आनँद धाम ॥ ५ ॥

(१) खलबल।

मंगल

॥ शब्द १ ॥

अब हम आनँद को घर पाये।
जब तेँ दया भई सतगुरु की, अभय निसान उड़ाये ॥१॥
काम क्रोध की गागर फोड़ी, ममता नीर बहाये।
तजि परपंच बेद बिधि किरिया, चरन कँवल चित लाये ॥२॥
पाँच तत्त कर तन कै गुदरिया, सुरत कै टोप लगाये।
हद घर छोड़ बेहद घर आसन, गगन मँडल मठ छाये ॥३॥
चाँद न सूर दिवस ना रजनी, तहाँ जाइ लौ लाये।
कहै कबीर कोइ पिय की प्यारी, पिया पिया रटि लाये ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

अखंड साहिब का नाम, और सब खंड है।
खंडित मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥ १ ॥
थिर न रहै धन धाम, सो जीवन धंध है।
लख चौरासी जीव, पड़े जम फंद है ॥ २ ॥
जा का गुरु से हेत, सोई निर्बन्ध है।
उन साधन के संग, सदा आनन्द है ॥ ३ ॥
चंचल मन थिर राखु, जबै भल रंग है।
तेरे निकट उलट भरि पीव, सो अमृत गंग है ॥ ४ ॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है।
कहै कबीर चित चेत, सो जगत पतंग है ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुनो सुहागिनि नारि, प्यार पिव से करो।
ये बेले[1] ब्यौहार तिन्हैँ तुम परिहरो ॥ टेक ॥ १ ॥

(१) बायल, बेमतलब।

दिनाँ चार को रंग, संग नहिं जायगा ।
यह तो रंग पतंग[1], कहाँ ठहरायगा ॥ २ ॥
पाँच चोर बड़ जोर, कुसंगी अति घने ।
ये ठगियन जिव संग, मुसत घर निसि दिने ॥ ३ ॥
सोवत जागत रैन, दिवस घर मूसहीं ।
ठाढ़े खड़े पुठवार[2], भली बिधि लूटहीं ॥ ४ ॥
इन ठगियन को राव[3], पकड़ि सो लीजिये ।
जो कहुँ आवै हाथ, छाड़ि नहिं दीजिये ॥ ५ ॥
चौथे घर इक गाँव, ठाँव पिव को बसै ।
बासा दस के मद्ध, पुरुष इक तहँ हँसै ॥ ६ ॥
होत है सिंध घमोर, संख धुनि अति घनी ।
तन्ती[4] की झनकार, बजत है झिनझिनी ॥ ७ ॥
महरम होय जो संत, सोई भल जानई ।
कहै कबीर समुझाय, सत्त करि मानई ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरत सरोवर न्हाइ के मंगल गाइये ।
दर्पन सबद निहारि, तिलक सिर लाइये ॥ १ ॥
चल हंसा सतलोक, बहुत सुख पाइये ।
परस पुरुष के चरन, बहुरि नहिं आइये ॥ २ ॥
अमृत भोजन तहाँ, अमी अचवाइये ।
मुख में सेत तँबूल, सबद लै लाइये ॥ ३ ॥
पुहुप अनूपम बास, घर हंस चलीजिये ।
अमृत कपड़े ओढ़ि, मुकट सिर दीजिये ॥ ४ ॥

---

(१) एक लकड़ी जिस से कच्चा लाल रंग निकला है। (२) ज़बरदस्त। (३) सरदार (४) सारंगी।

वह घर बहुत अनन्द हंसा सुख लीजिये ।
बदन मनोहर गात, निरखि के जीजिये ॥ ५ ॥
दुति[1] बिन मसि[2] बिन अंक, सो पुस्तक बाँचिये ।
बिन कर ताल बजाय, चरन बिन नाचिये ॥ ६ ॥
बिन दीपक उँजियार, अगम घर देखिये ।
खुलि गये सबद किवाड़, पुरुष से भेटिये ॥ ७ ॥
साहिब सन्मुख होइ, भक्ति चित लाइये ।
मन मानिक सँग हंस, दरस तहँ पाइये ॥ ८ ॥
कहै कबीर यह मंगल, भागन पाइये ।
गुरु संगत लै। लाय, हंसा चलि जाइये ॥ ९ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अगमपुरी को ध्यान, खबर सतगुरु करी ।
लीजे तत्त बिचार, सुरत मन में धरो ॥ १ ॥
सुरत निरत दोउ संग, अगम को गम कियो ।
सबर बिबेक बिचार, छिमा चित में दियो ॥ २ ॥
गुरु के सबद लौ लाय, अगोचर घर कियो ।
सबद उठै झनकार, अलख तहँ लखि लियो ॥ ३ ॥
अलख लखो लै। लाय, डोरि आगे घरो ।
जगमगार वह देस, केल हंसा करो ॥ ४ ॥
सतगुरु डोरो लाय, पुकारैं जीव को ।
हंसा चले सँभालि, मिलन निज पीव को ॥ ५ ॥
मंगल कहै कबीर, सो गुरुमुख पास है ।
हंसा आये लोक, अमर घर बास है ॥ ६ ॥

---

(१) दावात और सियाही ।

॥ शब्द ६ ॥

तुम साहिब बहुरंगी, रँग बहुतै किये ।
कब के बिछुड़े हंस, बाँहि गहि अब लिये ॥ १ ॥
प्रथम पठाये छाप, सुरत से लीजिये ।
पाइ परवाना पान, चरन चित दीजिये ॥ २ ॥

॥ छन्द ॥

पुरब पच्छिम देख दक्खिन, उत्तर रहै ठहराइ के ।
जहाँ देखो गम्म गुरु की, तहाँ तत्त समाइ के ॥ ३ ॥
सुरत उत्तर पास किलकै, पुहुप दीप तैँ आइके ।
लाइ लौ की डोरि बाँधै, संत पकरै जाइके ॥ ४ ॥

पकरि चरन कर जोरि, निछावर कीजिये ॥
तन मन धन औ प्रान, गुरू को दीजिये ॥ ५ ॥
तब गुरु होहिं दयाल, दया चित लावईं ।
गहि हंसा की बाँहि, सुघर पहुँचावईं ॥ ६ ॥

॥ छन्द ॥

दया करि जब मुक्ति दीन्हो, गह्यो तत्त बनाइ[१] के ।
परम प्रीतम जानि अपने, हृदय लियो समाइ के ॥ ७ ॥
जरा मरन को भय नसायो, जबै गुरु दाया करी ।
कर्म भर्म को छाड़ि जिय तैँ सकल ब्याधा परिहरी ॥ ८ ॥

तुम मेरे परम सनेही, हंसा घर चलौ ।
छाड़ि बिषय भौसागर, हँस हंसन मिलौ ॥ ९ ॥
सूरत निरत बिचार, तत्त पद सार है ।
बैठु हंस सत लोक, नाम आधार है ॥ १० ॥

(१) अच्छी तरह ।

॥ छन्द ॥

सत्त लोक अमान हंसा, सुखसागर सुख बास है।
सत्त सुकिरत पुरुष राजै, तहाँ नहिं जम त्रास है ॥११॥
अजर अमर जो हंस है, सुनि सत्त सबद चित लाइ के।
आवागवन से रहित होवै, कहै कबीर समुझाइ के ॥१२॥

॥ शब्द ७ ॥

देखि माया को रूप, तिमिर आगे फिरै।
तेरी भक्ति गई बड़ि दूर, जीव कैसे तरै ॥ १ ॥
जुन्हरी डार रस होय, तहू गुड़ ना पकै।
कोदक[1] कर्म कमाय, भक्ति बिन ना तरै ॥ २ ॥
ईखहि से गुड़ होय, भक्ति से क्रम कटै।
जम को बंद न होय, काल कागद फटै ॥ ३ ॥
कहै कबीर बिचारि, बहुरि नहिं आवई।
लोक लाज कुल मेटि, परम पद पावई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

साध संगत गुरुदेव, उहाँ चलि जाइये।
भाव भक्ति उपदेस, तहाँ तें पाइये ॥ १ ॥
अस संगत जरि जाव, न चरचा नाम की।
दूलह बिना बरात, कहो किस काम की ॥ २ ॥
दुबिधा को करि दूर, सतगुरू ध्याइये।
आन देव की सेव, न चित्त लगाइये ॥ ३ ॥
आन देव की सेव, भली नहिं जीव को।
कहै कबीर बिचारि, न पावै पीव को ॥ ४ ॥

---

(१) छोटे, ओछे।

॥ शब्द ९ ॥

दुबिधा को करि दूर, धनो को सेव रे।
तेरी भौसागर में नाव, सुरत से खेव रे ॥ १ ॥
सुमिरि सुमिरि गुरु नाम, चिरंजिव जोव रे।
नाम खाँड़ बिन मोल, घोल कर पोव रे ॥ २ ॥
काया में नहिं नाम, गुरू के हेत का।
नाम बिना बेकाम, मटोला[1] खेल का ॥ ३ ॥
ऊँचे बैठि कचहरी, न्याव चुकावते।
ते माटो मिलि गये, नजर नहिं आवते ॥ ४ ॥
तू माया धन धाम, देखि मत भूल रे।
दिना चार का रंग, मिलैगा धूल रे ॥ ५ ॥
बार बार नर देह, नहीं यह बीर[2] रे।
चेत सके तो चेत, कहै कब्बीर रे ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

यह कलि ना कोइ अपनो, का संग बोलिये रे।
ज्यों मैदानो रूख, अकेला डोलिये रे ॥ १ ॥
माया के मद माते, सुनैं नहिं कोई रे।
क्या राजा क्या रंक, बियाकुल दोई रे ॥ २ ॥
माया का बिस्तार, रहै नहिं कोई रे।
ज्यों पुरइनि[3] पर नोर, थीर नहिं होई रे ॥ ३ ॥
बिष बोयो संसार, अमृत कस पावै रे।
पुरब जन्म तेरो कोन्ह, दोस कित लावै रे ॥ ४ ॥
मन आवै मन जावै, मनहिं बटोरो रे।
मन बुड़वै मन तारै, मनहिं निहोरो[4] रे ॥ ५ ॥

---

(१) ढेला। (२) भाई (३) कोईं। (४) समझाओ, राज़ी करो।

कहै कबीर यह मंगल, मन समझावो रे ।
समझि के कहौं पयाम[1] ,बहुरि नहिं आवो रे ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

करि के कौल करार, आया था भजन को ।
अब तू मुरख गँवार, कुँवे लगा परन को ॥ १ ॥
पर्यो माया के जाल, रह्यो मन फूलि के ।
गर्भ बास को त्रास, रह्यो नर भूलि के ॥ २ ॥
ऊँचो अटरिया पैाल[2] , चढ़ी चढ़ि गिरि परौ ।
सतगुरु बुधि लइ नाहिं, पार कैसे परौ ॥ ३ ॥
सतगुरु होहु दयाल, बाँह मेरी गहौ ।
बूड़त लेव उबारि, पार अब के करौ ॥ ५ ॥
दास कबीर सिर नाय, कहै कर जोरि के ।
इक साहिब से जोरि , सबन से तोरि के ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

आरत कीजै आतम पूजा, सत्त पुरुष की और न दूजा ॥१॥
ज्ञान प्रकास दीप उँजियारा, घट घट देखौ प्रान पियारा ॥२॥
भाव भक्ति और नहि मेवा, दया सरूपो करि ले सेवा ॥३॥
सत संगत मिलि सबद बिराजै, धोखा दुंद भरम सब भाजै ॥४॥
काया नगरी देव बहाई, आनँद रूप सकल सुखदाई ॥५॥
सुन्न ध्यान सब के मन माना, तुम बैठो आतम अस्थाना ॥६॥
सबद सुरत ले हृदय बसावो, कपट क्रोध को दूरि बहावो ॥७॥
कहै कबीर निज रहनि सम्हारी, सदा अनन्द रहैं नर नारी॥८॥

॥ शब्द १३ ॥

कहै कबीर सुनो हो साधो, अमृत बचन हमार ।
जो भल चाहो आपनो, परखो करो बिचार ॥ १ ॥

---

(१) संदेस । (२) दर, ज़ीना ।

जुगन जुगन सब से कहो, काहु न दीन्हो कान ।
सुर नर मुनि मद माते, झूठे भर्म भुलान ॥ २ ॥
बरम्हा भूले परथमै, आद्या[१] का उपदेस ।
करता चीन्हि पस्यो नहीं, लायो बिरह बिदेस ॥ ३ ॥
जे करता तेँ ऊपजे, ता से परि गयो बीच ।
अपनी बुद्धि बिबेक बिन, सहज बिसाई[२] मीच ॥ ४ ॥
अपनी फहम[३] रु उक्ति[४] करि, बिबि[५] अच्छर धस्यो नाम ।
सबद अनाहद थापिया, सिरजे बेद पुरान ॥ ५ ॥
बेद कथे उन उक्ति तेँ, बिस्नु कथे बहु रूप ।
सहस नाम संकर कथे, जोग जुगत अँध कूप ॥ ६ ॥
इनकी माड़नि मड़ि[६] रही, चहुँ दिसि रोकी बाट ।
फैलि गई सब सृष्टि मेँ, समझ न मेटी फाट[७] ॥ ७ ॥
सनकादिक तप ठानिया, तत्त साधना कीन ।
गगन सुन्न मेँ पैठि के, अनहद धुन लौलीन ॥ ८ ॥
अपनो तत्त जो सोधि के, लीन्ही जोति निकास ।
जोति निरंजन थापिया, भई सबन कि उपास ॥ ९ ॥
यहि मेँ तेँ सब मत चले, यही चल्यो उपदेस ।
निस्चै गहि निर्भय रहौ, सुन परम तत्त संदेस ॥ १० ॥
सनकादिक मुनि नारदा, ब्यास रु गोरखदत्त ।
यही मते सब भूलि के, भूले कोटि अनन्त ॥ ११ ॥
ध्रू प्रहलाद भभीखना, भर्थरि गोपीचंद ।
जहिँ लौँ भक्ता जक्त मेँ, सब उरझे यहि फंद ॥ १२ ॥

(१) योग माया । (२) मोल ली । (३) समझ । (४) युक्ति । (५) दो । (६) बाँध चल रहा है । (७) फाही, जाल ।

या फन्दा तेँ नीकसहू, मानो बचन हमार ।
उलटि अपनपौ चीन्हहू, देखहु नजरि पसार ॥ १३ ॥
केहि गावो केहि ध्यावहू, छोड़हु सकल धमार[1] ।
हम हिरदे सब के बसे, कस सेवो सून उजाड़ ॥ १४ ॥
दूरहि करता थापि के, करी दूर की मान ।
जो करता दूरे हुते, तौ को जग सिरजे आन ॥ १५ ॥
जो जानो यहँ है नहीं, तौ तुम धावो दूर ।
दूरि के ढोल सुहावने, निस्फल मरो बिसूर[2] ॥ १६ ॥
दुर्लभ दरसन दूर के, नियरे सद सुख बास ।
कहै कबीर मोहिँ ब्यापिया, मत दुख पावे दास ॥ १७ ॥
आप अपनपौ चीन्हहू, नखसिख सहित कबीर ।
आनँद मंगल गावहू, होहि अपनपौ थीर ॥ १८ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सतगुरु सबद कमान, सुरत गाँसी भई ।
मारत हियरे बान, पीर भारी भई ॥ १ ॥
निसि दिन सालै घाव, नींद आवै नहीं ।
पिया मिलन को आस, नैहर भावै नहीं ॥ २ ॥
चढ़ि गैलूँ गगन अटारी, तो दीपक बारि के ।
होइ गैलै पुरुष से भेंट, तो तन मन हारि के ॥ ३ ॥
कागा बोली बोल, कहाँ लगि भाखिये ।
कहै कबीर धर्मदास, तीन गुन त्यागिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

बंदी छोर कबीर भक्ति मोहिँ दीजिये ।
बाँहि गहे की लाज, गहर[3] मत कीजिये ॥ १ ॥

---

(१) नाच, दौड़ धूप । (२) सिसक कर रोना (३) देर ।

कागा बरन छुड़ाइ, हंस बुधि लाइये ।
पूरन पद को देव, महा सुख पाइये ॥ २ ॥
जो तुम सरनै आयौं, बचन इक मानिये ।
भौसागर बहै जोर, सुरत निज राखिये ॥ ३ ॥
दसो द्वार बेकार, नवो नाटिका[१] बहै ।
सुरत नहीं ठहराय, लगन कैसे लगै ॥ ४ ॥
जैसे मीन सनेह, सदा जल में रहै ।
जल बिन त्यागै प्रान, लगन ऐसी लगै ॥ ५ ॥
मेटौ सकल बिकार, भार सिर लेइयो ।
तुमहिं में रहौं समाइ, आपन करि लेइयो ॥ ६ ॥
कहै कबीर बिचारि, सोई टकसार है ।
हंस चले सतलोक, तो नाम अधार है ॥ ७ ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

समुझि बूझि के देखो गुइयाँ, भीतर यह क्या बोले है ॥१॥
बलि बलि जाउँ आपने गुरु की, जिन यह भेद को खोले है ॥२॥
आदम में वह आप समाया, जो सब रँग में घोले है ॥३॥
कहत कबीर जगे का सुपना, कहि न सकै वह बोले[२] है ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

हम ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही ॥ टेक ॥
सत्त नाम कै पटा लिखायौ, सतगुरु आज्ञा पाई ।
चौरासी के दुक्ख मिटे, अनुभौ जागीरी पाई ॥ १ ॥

---

(१) नाड़ी। (२) शब्द, बचन।

सुरत सींगरा[1] साँग[2] समुझ को, तन की तुपक बनाई ।
दम को दारू सहज को सीसा, ज्ञान के गज ठहकाई ॥ २ ॥
सील सँतोष प्रेम की पथरी, चित चकमक चमकाई ।
जोग को जामा बुद्धि मुद्रिका, प्रीति पियाला पाई ॥ ३ ॥
सत कै सेल्ह[3] जुगत कै जमधर[4] , छिमा ढाल ठनकाई ।
मोह मोरचा पहिले मार्‌यो, दुबिधा मारि हटाई ॥ ४ ॥
सत्त नाम कै लगा पलीता, हरहर होत हवाई ।
गम गोला गढ़ भीतर मार्‌यो, भरम के बुर्ज ढहाई ॥ ५ ॥
सुरत निरत कै घेरा दीन्हो, बंद कियो दरवाजा ।
सबद सूरमा भीतर पैठा, पकरि लियो मन राजा ॥ ६ ॥
पाँचौं पकरे कामदार जो, पकरी ममता माई ।
दास कबीर चढ़्यो गढ़ ऊपर, अभय निसान बजाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दिन रातै गावो मोरी सजनी, सतगुरु को सिर नाइ हो ।
फिर पाछे पछितैहो सजनी, जब जम पकरै आइ हो ॥१॥
सुख सागर में परौ हो सजनी, दुख को देहु बहाइ हो ।
भक्ति घाँघरा पहिरौ सजनो, रैन दिवस गुन गाइ हो ॥ २ ॥
निरभय अँगिया कसि लेउ सजनो, भयहिं भगावो दूरि हो ।
प्रीति लगी साहिब सँग सजनी, डारि जगत पर धूरि हो ॥३॥
प्रेम चुनरिया ओढ़ौ सजनो, सतगुरु दीन्ह रँगाइ हो ।
जित देखौं तित साहिब सजनो, नैनन रह्यो समाइ हो ॥ ४ ॥
फहम[5] फुलेल बनाइ के सजनी, सिर में दीन्हो डारि हो ।
ज्ञान की कँगही लैकै सजनी, कर्म केस निरवारु[6] हो ॥ ५ ॥

---

(१) सींघ की सूरत की एक चीज़ बारूद रखने की। (२) बरछा। (३) बरछी। (४) कटार। (५) समझ बूझ। (६) सुलझाओ।

समुझ की पटिया पारो सजनी, चुटिया गुहौ सम्हारि हो ।
सँतोष सहेलरि गुहि ले आई, झाबिया सहज अपार हो ॥६॥
दयाभाव की टिकुली सजनी, बिरह बीज अनुसार हो ।
जा को दया न आवै सजनी, परै चौरासी धार हो ॥ ७ ॥
सील कै सेंदुर माँग भरु सजनी, सोभा अगम अपार हो ।
धीरज अंजन आँजी सजनी, छिमा की बेंदी लिलार[1] हो॥८॥
बेसर बनी बुद्धि की सजनी, मोती बचन सुधार हो ।
दीन गरीबी रहो गुरन से, सोई गले कै हार हो ॥ ९ ॥
बाजूबन्द बिबेक के सजनी, बहुँटा ब्रम्ह बिचारि हो ।
चाल की चुरियाँ पहिरो सजनी, परख पटोला डारि हो ॥१०॥
नेह निगरहो दुहरी सजनी, ककना अकिल के ढारि हो ।
मन की मुँदरी पहिरो सजनी, नाम नगीना सार हो ॥११॥
नाम जपो निसि बासर सजनी, काटै जम कै फाँसि हो ।
पहिरो चोप चुनरिया सजनी, चित मत करहु उदास हो ॥१२॥
सत सुकिरत दोउ नूपुर सजनी, उठै सबद झनकार हो ।
पहिरि पचीसो बिछिया सजनी, धरि ल्यो पाँव सम्हार हो ॥१३॥
तीनों गुन के अनवट सजनी, गुरु से ल्यो बदलाइ हो ।
काम क्रोध दोउ सम करि सजनी, अमर लोक को जाइ हो ॥१४॥
घर जो बाड़ा कुमति को सजनी, सहर से देव बहाइ हो ।
पिया जो सोवै महल में सजनी, उनको लेव जगाइ हो ॥१५॥
येहि बिधि सुन्दर साजि के सजनी, करि ल्यो सोरहो सिंगार हो ।
पाँच सहेलरि सँग ल्यो सजनी, गावो मंगलचार हो ॥१६॥
पिय मोर सोवै महल में सजनी, अगम अगोचर पार हो ।
अकिल आरसी लैकै सजनी, पिय को रूप निहार हो ॥१७॥

---

(१) माथे ।

घूँघट खोलि कपट कै सजनी, हेरो गुरुन की ओरि हो।
पान लेहु मुक्ती को सजनी, जम से तिनुका तोरि हो ॥१८॥
बिन सतगुरु चरचा के सजनी, सो पुनि बड़े लबार हो।
बिना पुरुष की तिरिया सजनी, उन कै झूठ सिंगार हो ॥१९॥
सो दिन जिन जानो मोरि सजनी, जो गावै संसार हो।
यह तो दिन मुक्ती कै सजनी, साधो लेहु बिचार हो ॥२०॥
दास कबीर की बिनती सजनी, सुन लेहु संत सुजान हो।
आवागवन न होइहै सजनी, पावो पद निर्बान हो ॥२१॥

॥ शब्द ४ ॥

अब कोइ खेतिया मन लावै ॥ टेक ॥
ज्ञान कुदार ले बंजर गोड़ै, नाम की बीज बोवावै।
सुरत सरावन[1] नय कर फेरै, ढेला रहन न पावै ॥ १ ॥
मनसा खुरपी खेत निरावै, दूब बचन नहिं पावै।
कोस पचीस इक बथुवा नीचे, जड़ से खोदि बहावै ॥ २ ॥
काम क्रोध के बैल बने हैं, खेत चरन को आवैं।
सुरत लकुटिया ले फटकारै, भागत राह न पावैं ॥ ३ ॥
उलटि पलटि के खेत को जोतै, पूर किसान कहावै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जब वा घर को पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अस कोइ मन हिं लोह सम[2] तावै ॥ टेक ॥
करम जारि के कोइला करि दे, ब्रम्ह अगिन परचावै।
ताय तूय के निर्मल करि ले, सील के नीर बुझावै ॥ १ ॥
इतनो जोरि जुगत करि लावै, लगन लुहार कहावै।
ज्ञान बिबेक जतन से करि ले, जा बिधि अजर झरावै ॥२॥

(१) हेंगा, पटरा। (२) लोहा के सदृश।

सुरत निरत की सँड़सो करि ले, जुगत निहाई जमावै ।
नाम हथौड़ा दृढ़ करि मारै, करम को रेख मिटावै ॥ ३ ॥
पाँच आत्मा दृढ़ करि राखै, यौं करि मन समुझावै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भूला अर्थ लगावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

साधो यह मन है बड़ जालिम ।
जा को मन से काम परो है, तिस ही ह्वैहै मालुम ॥ १ ॥
मन कारन जो उनको छाया, तेहि छाया में अटके ।
निरगुन सरगुन मन की बाजी, खरे सयाने भटके ॥ २ ॥
मन ही चौदह लोक बनाया, पाँच तत्त गुन कीन्हे ।
तीन लोक जीवन बस कीन्हे, परै न काहू चीन्हे ॥ ३ ॥
जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा ।
छिन छिन में कितनौं रँग ल्यावै, जे सुपनेहु नहि देखा ॥४॥
रसातल इकइस ब्रम्हंडा, सब पर अदल चलावै ।
षट रस में भोगी मन राजा, सो कैसे कै पावै ॥ ५ ॥
सब के ऊपर नाम निहच्छर, तहँ लै मन को राखै ।
तब मन की गति जान परै यह, सत कबीर मुख भाखै ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

यह मन जालिम जोर री, बरजे नहिं मानै ॥ टेक ॥
जो कोइ मन को पकरा चाहै, भागत साँकर तोर ॥ १ ॥
सुर नर मुनि सब पचि पचि हारे, हाथ न आवै चोर ॥२॥
जो हंसा सतगुरु कै होई, राखै ममता छोर ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बचो गुरुन को ओट ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

वाह वाह सरनागति ता की है ॥ टेक ॥
बोल अबोल अडोल अबाहक, ऐसो गतिया जा की है ॥१॥

अंतरगति में भया उजाला, बिन दीपक बिन बाती है ॥२॥
सुरत सुहागिनि भइ मतवारी, प्रेम सुधा रस चाखो है ॥३॥
निरखि निरखि अंतर पग धरना, अजब झरोखे झाँकी है ॥४॥
कहै कबीर इक नाम सुमिरि ले, आदि अंत जो साखी है ॥५॥

॥ शब्द ९ ॥

वाह वाह अमर घर पाया है, ॥ टेक ॥
दुक्ख दर्द काल नहिं ब्यापै, आनँद मंगल गाया है ॥१॥
मूलबीज बिन बिर्छ बिराजै, सतगुरु अलख लखाया है ॥२॥
कोटि भानु छबि भया उजारा, हंस हिरम्बर भाया है ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवा गवन मिटाया है ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

ना मैं धर्मी नाहिं अधर्मी, ना मैं जती न कामी हो ।
ना मैं कहता ना मैं सुनता, ना मैं सेवक स्वामी हो ॥१॥
ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता, ना निर्बंध सरबंगी हो ।
ना काहू से न्यारा हूआ, ना काहू को संगी हो ॥२॥
ना हम नरक लोक को जाते, ना हम सुरग सिधारे हो ।
सबही कर्म हमारा कीया, हम कर्मन तेँ न्यारे हो ॥३॥
या मत को कोइ बिरला बूझै, सो सतगुरु हो बैठै हो ।
मत कबीर काहू को थापे, मत काहू को मेटे हो ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

हीरा वहाँ भँजैये, जहँ कोइ रतन पारखो पैये ॥ टेक ॥
बस्तु हमारी अगम अगोचर, जाइ सराफा लैये ।
जहाँ जाइ जम हाथ पसारै, तहँ तुम बस्तु छिपैये ॥ १ ॥

मूल कै डाँड़ी तत्त कै पलरा, ज्ञान कै डोर लगैये ।
मासा पाँच पचीस रती कै, तोला तीन तुलैये ॥ २ ॥
तोल ताल के जमा सुलाखा, तब वा के घर जैये ।
जौहरि नाम अनादी के रे, तहँ तुम बस्तु दिखैये ॥ ३ ॥
चलत फिरत मेँ बहुतक ठग हैं, तिन को नहिँ दिखलैये ।
कहै कबीर भाव कै सौदा, पूरी गाँठि लगैये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

अपनपौ आपहु तैं बिसरौ ॥ टेक ॥
जैसे स्वान[१] काच मंदिर मेँ, भ्रम से भूँकि मरो ॥ १ ॥
ज्यौँ केहरि[२] बपु[३] निरख कूप[४] जल, प्रतिमा[५] देखि गिरो ॥२॥
वैसे ही गज[६] फटिक[७] सिला[८] मेँ, दसनन[९] आनि अड़ो ॥३॥
मरकट[१०] मूठि[११] स्वाद नहिँ बहुरै, घर घर रटत फिरो ॥४॥
कहै कबीर नलनी[१२] के सुगना[१३], तोहि कवन पकरो ॥५॥

॥ शब्द १३ ॥

हरि दरजी का मरम न पाया, जिन यह चोला अजब बनाया ॥१॥
पानी की सोई पवन कै धागा, आठ मास दस सोवत लागा ॥२॥
पाँच तत्त कै गुदरी बनाई, चाँद सुरज दुइ थेगली[१४] लगाई ॥३॥
जतन जतन करि मुकट बनाया, ता बिच हीरा लाल जड़ाया ॥४॥
आपहि सीवे आप बनावे, प्रान पुरुष को ले पहिरावे ॥५॥
कहै कबीर सोई जन मेरा, या चोले का करै निबेरा ॥६॥

॥ शब्द १४ ॥

हरि ठग जगत ठगौरी लाई ।
हरि के बियोगी कस जीवैँ भाई ॥ १ ॥

---

(१) कुत्ता । (२) बाघ । (३) शरीर । (४) कुवाँ । (५) छाया । (६) हाथी । (७) बिल्लौरी । (८) चट्टान । (९) दाँत । (१०) बंदर । (११) मुट्ठी । (१२) नली । (१३) जिससे तोता फंसाया जाता है । (१५) तोता । (१४) पैवँद ।

को का को पुरुष कौन का को नारी।
अकथ कथा जम दृष्ट पसारी ॥ २ ॥
को का को पुत्र कौन का को बापा।
को रे मरै को सहै संतापा ॥ ३ ॥
ठगि ठगि मूल[1] सबन को लीन्हा।
राम ठगौरी काहु न चीन्हा ॥ ४ ॥
कहै कबीर ठग से मन माना।
गई ठगौरी जब ठग पहिचाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जोगवै निस बासर जोग जती ॥ टेक ॥
जैसे सोना जोगवत सोनरा, जाने देत न एक रती ॥१॥
जैसे कृपिन कनी को जोगवै, क्या राजा क्या छत्रपती ॥२॥
जैसे ब्रम्हा बिस्नुहिं जोगवत, सिव को जोगवत पारबती ॥३॥
जैसे नारि पुरुष को जोगवत, जरति पिया सँग होत सती ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, कोइ कोइ बचि गये सूरसती ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

डुगडुगी सहर में बाजी हो ॥ टेक ॥
आदि साहिब अदली आये, पकरे पंडित काजी हो ॥१॥
कोतवालन के गुरुआ पकरे, पाँच पचीस समाजी हो ॥२॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, रैयत होगई राजी हो ॥३॥

॥ शब्द १७ ॥

रिमझिम बरसै बूँद सुरतिया।
का से कहौं दिल आपन बतिया ॥ १ ॥
अब सुन सजनी सरोवर गैलै।
सुखाइ कँवल कुम्हिलाइ गैलै ॥ २ ॥

---

(१) जमा।

औघट घटिया लगलि मोरी नैया ।
ताहि पै चढ़लैं पाँचो भैया ॥ ३ ॥
अब सुन सजनी भैलै मतवार ।
कस जाइब औघट के पार ॥ ४ ॥
चाँद सुरज तुम मोरे साथी ।
सैयाँ दरबरवा हमार पत राखी ॥ ५ ॥
दास कबीर गावै निरगुन ज्ञनियाँ ।
समुझि बिचारि जिय लेइ सरनियाँ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १८ ॥

कँवल से भँवरा बिछुड़ल हो, जहँ कोइ न हमार ॥ १ ॥
भौजल नदिया भयावन हो, बिन जल कै धार ॥ २ ॥
ना देखूँ नाव न बेड़ा हो, कैसे उतरब पार ॥ ३ ॥
सत्त की नैया सिर्जावल हो, सुकिरत करि यार ॥ ४ ॥
गुरु के सबद की नहरिया हो, खेइ उतरब पार ॥ ५ ॥
दास कबीर निरगुन गावल हो, संत लेहु बिचार ॥ ६ ॥

॥ शब्द १९ ॥

आऊँगा न जाऊँगा मरूँगा न जिऊँगा ।
गुरु के साथ अमी रस पिऊँगा ॥ १ ॥
कोई फेरै माला कोई फेरै तसबी ।
देखो रे लोगो दोनों कसबी ॥ २ ॥
कोई जावै मक्के कोई जावै कासी ।
दोऊ के गल बिच परि गइ फाँसी ॥ ३ ॥
कोइ पूजै मड़ियाँ कोइ पूजै गोरा[1] ।
दोऊ की मतियाँ हरि लई चोराँ ॥ ४ ॥

---

(१) क़बर ।

कहत कबीर सुनो नर लोई ।
हम न किसी के न हमरा कोई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

चली चल मग में का भरमावै ॥ टेक ॥
नई बहुरिया गौने आई, लहबर लहबर[1] होय ।
इन बातन में नफा नहीं है, सूधी सड़क टटोय[2] ॥ १ ॥
तोहुँ बहुरिया अजहुँ न मानै, डार्यो खलक बिलोय ।
पिया मिले पीहर को रोवै, लाज न आवै तोहि ॥ २ ॥
सृंगी ऋषि तो बन के बासी, वो भी डारे खोय ।
नैन मारि पलकों में राखे, पल में डारे बिगोय ॥ ३ ॥
सोहं नारी अधिक दुलारी, पिय की प्यारी होय ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जबरदस्त की जोय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

ज्ञान आरती इमरित बानी, पूरन ब्रह्म लेव पहिचानी ॥
जिनके हुकुम पवन अरु पानी, तिनकी गति कोइ बिलै जानी ॥
तिरदेवा मिलि जोति बखानी, निरंकार की अकथ कहानी ॥
द्रुष्टि बिना दुनिया बौरानी, भरम भरम भटकै नर खानी ॥
जो आसा सब हिलि मिलि ठानी, साहिब छाड़ि जम हाथ बिकानी ॥
गगन बाव गरजै असमाना, निःचै धुजा पुरुष फहराना ॥
कहै कबीर सोइ संत सियाना, जिन जिन सबद गुरुन कै माना ॥

॥ शब्द २२ ॥

हीरा नाम अमोल है, रहै घठ घठ थीरा ।
सिद्धी आसन सोधि के, बैठै वहि तीरा ॥ १ ॥

---

(१) पोशाक—भाव कपड़े को सम्हाल न हो सकने से लबर भबर चलने का है । (२) टटोल, ढूँढ़ ।

गंग जमुन के रेत पर, बहै झिरि झिरि नीरा ।
पुरब सोधि पच्छिम गये, करिके मन धीरा ॥ २ ॥
बिरहिनि बाजे बाँसुरी, सुनि गइ मोर पीरा ।
आठ पहर बाजत रहै, अस गहिर गँभीरा ॥ ३ ॥
हीरा झलकै द्वार पर, परखै जोइ सूरा ।
कहै कबीर गुरु गम्म से, पहुँचै कोइ पूरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

जग में सोइ बैराग कहावै ॥ टेक ॥
आसन मारि गगन में बैठै, दुर्मति दूर बहावै ॥ १ ॥
भूख प्यास औ निद्रा साधै, जियते तनहिं जरावै ॥ २ ॥
भौसागर के भरम मिटावै, चौरासी जिति[1] आवै ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भाव भक्ति मन लावै ॥ ४ ॥

निरख प्रबोध की रमैनी

(१)

अस सतगुरु बोले सत बानी । धनधन सत्त नाम जिन जानी ॥
नाम प्रतीति भई सब संता । एक जानि के मिटे अनंता ॥
अनँत नाम जब एक समाना । तब ही साध परम पद जाना ॥
बिरला संत परम गति जानै । एक अनंत सो कहा बखानै ॥
सब तें न्यारा सब के माहीं । माँझी सतगुरु दूजा नाहीं ॥
सत्त नाम जा के धन होई । धन जीवन ताही को सोई ॥

॥ दोहा ॥

जिनके धन सतनाम है, तिन का जीवन धन्न ।
जिनको सतगुरु तारहीं, बहुरि न धरई तन्न ॥ १ ॥

(१) जीत कर ।

सत्तनाम की महिमा जानै । मन बच करमै सरना आनै ॥
एक नाम मन बच करि लेई । बहुरि न या भवजल पग देई ॥
जोग जज्ञ जप तप का करई । दान पुन्न तेँ काज न सरई ॥
देवी देवा भूत परेता । नाम लेत भाजैँ तजि खेता ॥
टोना टामन पूजा पाती । नाम लेत सहजै तरि जाती ॥
जो इच्छा आवै मन माहीँ । पुरवै तुरत बिलँब कछु नाहीँ ॥
सो सतनाम हृदय अनुरागी । सो कहिये साचा बैरागी ॥
जब लग नाम प्रतीत न करई । तब लग जनम जनम दुख भरई ॥

॥ दोहा ॥

कबीर महिमा नाम की, कहना कही न जाय ।
चार मुक्ति औ चार फल, और परम पद पाय ॥२॥

सत्तनाम है सब तेँ न्यारा । निर्गुन सर्गुन सबद पसारा ॥
निर्गुन बीज सर्गुन फल फूला । साखा ज्ञान नाम है मूला ॥
मूल गहे तेँ सब सुख पावै । डाल पात मेँ मूल गँवावै ॥
सतगुरु कही नाम पहिचानी । निर्गुन सर्गुन भेद बखानी ॥

॥ दोहा ॥

नाम सत्त संसार मेँ, और सकल है पोच[1] ।
कहना सुनना देखना, करना सोच असोच ॥ ३ ॥

सब ही झूठ झूठ करि जाना । सत्त नाम को सत कर माना ॥
निसि बासर इक पल नहिँ न्यारा । जानै सतगुरु जाननहारा ॥
सुरत निरत ले राखै जहवाँ । पहुँचै अजर अमर घर तहवाँ ॥
सत्तलोक को देय पयाना । चार मुक्ति पावै निर्बाना ॥

॥ दोहा ॥

सत्तलोक सब लोक-पति, सदा समीप प्रमान ।
परम जोति से जोति मिलि, प्रेम सरूप समान ॥ ४ ॥

---

(१) तुच्छ ।

अंस नाम तैं फिरि फिरि आवै। पूरन नाम परम पद पावै॥
नहिं आवै नहिं जाय सो प्रानी। सत्तनाम की जेहि गति जानी॥
सत्तनाम में रहै समाई। जुग जुग राज करै अधिकाई॥
सत्त लोक में जाय समाना। सत्त पुरुष से भया मिलाना॥
हंस सुजान हंस ही पावा। जोग संतायन भया मिलावा॥
हंसा सुघर दरस दिखलावा। जनम जनम की भूख मिटावा॥
सुरत सुहागिनि आगे ठाढ़ी। प्रेम सुभाव प्रीति अति बाढ़ी॥
पुहुप दीप में जाइ समाना। बास सुबास चहूँ दिसि आना॥

॥ दोहा ॥

सुख सागर सुख बिलसही, मानसरोवर न्हाय।
कोटि काम सी कामिनी, देखत नैन अघाय॥ ५॥

सूरत नाम सुनै जब काना। हंसा पावै पद निर्बाना॥
अब तो कृपा करो गुरु देवा। ता तैं सुफल भई सब सेवा॥
नाम दान अब लेहु सुभागी। सत्त नाम पावै बड़ भागी॥
मन बच क्रम चित निस्चय राखै। गुरु के सबद अमीरस चाखै॥
आदि अंत कै भेदै पावै। पवन आड़ में ले बैठावै॥
सब जग झूठ नाम इक साचा। स्वास स्वास में साचा राचा॥
झूठा जानि जगत सुख भोगा। साचा साधू नाम सँजोगा॥
यह तन माठी इन्द्री छारी। सत्त नाम साचा अधिकारी॥
नाम प्रताप जुगै जुग भाखी। साध संत ले हिरदे राखी॥

॥ दोहा ॥

महिमा बड़ी जो साध की, जा के नाम अधार।
सतगुरु केरी दया तैं, उतरे भौजल पार॥ ६॥

(२)

प्रथम एक जो आपै आप। निराकार निर्गुन निर्जाप॥
नहिं तब भूमो पवन अकासा। नहिं तब पावक नीर निवासा॥

नहिं तब पाँच तत्त गुन तीनी । नहिं तब सृष्टी माया कीनी ॥
नहिं तब आदि अंत मधि तारा । नहिं तब अंध धुंध उजियारा ॥
नहिं तब ब्रम्हा बिस्नु महेसा । नहिं तब सूरज चाँद गनेसा ॥
नहिं तब मच्छ कच्छ बाराहा । नहिं तब भादौं फागुन माहा ॥
नहिं तब कंस कृस्न बलि बावन । नहिं तब रघुपति नहिं तब रावन ॥
नहिं तब सरगुन सकल पसारा । नहिं तब धारे दस औतारा ॥
नहिं तब सरसुति जमुना गंगा । नहिं तब सागर समुद तरंगा ॥
नहिं तब तीरथ ब्रत जग पूजा । नहिं तब देव दैत अरु दूजा ॥
नहिं तब पाप पुन्न गुरु सीखा । नहिं तब पढ़ना गुनना लीखा ॥
नहिं तब बिद्या बेद पुराना । नहिं तब भये कतेब कुराना ॥

॥ दोहा ॥

कहै कबीर बिचारि के, तब कछु किरतम नाहिं ।
परम पुरुष तहँ आपही, अगम अगोचर माहिं ॥ ७ ॥

करता एक अगम है आप । वा के कोई माय न बाप ॥
करता के बंधू नहिं नारी । सदा अखंडित अगम अपारी ॥
करता कछु खावै नहिं पीवै । करता कबहूँ मरै न जीवै ॥
करता के कछु रूप न रेखा । करता के कछु बरन न भेषा ॥
जाके जाति गोत कछु नाहीं । महिमा बरनि न जाय मो पाहीं ॥
रूप अरूप तहीं तेहि नाँव । बर्न अबर्न नहीं तेहि ठाँव ॥

॥ दोहा ॥

कहै कबीर बिचारि के, जाके बरन न गाँव ।
निराकार और निर्गुना, है पूरन सब ठाँव ॥ ८ ॥

करता किर्तिम बाजी लाई । ओंकार तें सृष्टि उपाई ॥
पाँच तत्त तीन गुन साजा । तातें सब किर्तिम उपराजा ॥
किर्तिम धर्ती क्रिर्तिम अकास । क्रिर्तिम चंद सूर परकास ॥

किर्तिम पाँच तत्त गुन तीनी । किर्तिम सृष्टि जु माया कीनी ॥
किर्तिम आदि अंत मध तारा । किर्तिम अंध कूप उजियारा ॥
किर्तिम सर्गुन सकल पसारा । किर्तिम कहिये दस औतारा ॥
किर्तिम कंस किर्तम बल बावन । किर्तिम रघुपति किर्तम रावन ॥
किर्तिम कच्छ मच्छ बाराहा । किर्तिम भादौं फागुन माहा ॥
किर्तिम सागर समुद तरंगा । किर्तिम सरसुति जमुना गंगा ॥
किर्तिम सिम्रिति बेद पुराना । किर्तिम काजी कतेब कुराना ॥
किर्तिम जोग जज्ञ ब्रत पूजा । किर्तिम देवी देव जो दूजा ॥
किर्तिम पाप पुन्न गुर सीषा । किर्तिम पढ़ना गुनना लीखा ॥

कहै कबीर बिचारि के, किर्तिम करता नहिं होय ।
यह बाजी सब किर्तिम है, साच सुनो सब कोय ॥९॥

करता एक और सब बाजी । ना कोइ पीर मसायख काजी ॥
बाजी ब्रम्हा बिस्नु महेसा । बाजी इन्द्र रु चन्द गनेसा ॥
बाजी जल थल सकल जहाना । बाजी जानु जमीं असमाना ॥
बाजी बरनो सिम्रिति बेदा । बाजीगर का लखै न भेदा ॥
बाजी सिद्ध साधक गुर सीषा । जहाँ तहाँ यह बाजी दीखा ॥
बाजी जोग यज्ञ ब्रत पूजा । बाजी देवी देवल दूजा ॥
बाजी तीरथ ब्रत आचारा । बाजी जोग जज्ञ ब्योहारा ॥
बाजी जल थल सकल किवाई[१] । बाजी से बाजी लिपटाई ॥
बाजी का यह सकल पसारा । बाजी माहिं रहै संसारा ॥
कहै कबीर सब बाजी माहीं । बाजीगर को चीन्हैं नाहीं ॥

॥ कबीर शब्दावली द्वितीय भाग समाप्त ॥

---

(१) काई ।

मूल्य (De Lux Edition) केवल ६॥) । इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण ११ बहुरंगा और ६ रंगीन यानी कुल २० सुन्दर चित्र सहित और सुनहरी जिल्द सहित १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके कागज़ उमदा हैं ।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है । पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये । मूल्य ।॥=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है । यह मानस-कोश का भी काम देगा । मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है । मूल्य -)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है । मूल्य ।=)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूस उपन्यास है । मूल्य १)

संग्रह—यह एक मौलिक क्रांतिकार नया उपन्यास है । मूल्य ॥।) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह तथा परिचय है । मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है । मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

टका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है । पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है । इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं । तेरहो चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं । रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है । जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है । मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

घोंघा गुरु की कथा—इस देश में घोंघा गुरु की हास्यपूर्ण कहानियाँ बड़ी ही प्रचलित हैं । उन्हीं का यह संग्रह है । शिक्षा लीजिए और खूब हँसिए । ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है । पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है । दाम ॥=)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)

चरनदास जी की बानी, पहला भाग	...	...	।।।-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	...	...	।।।-)
गरीबदास जी की बानी	...	...	१।-)
रैदास जी की बानी	...	...	॥)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	...	...	।≡)॥
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	..	...	।-)
दरिया साहिब (माड़वाड़ वाले) की बानी	...	...	।≡)
भीखा साहिब की शब्दावली	...	...	॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी	...	...	।।।=)
बाबा मलूकदास जी की बानी	...	...	।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	...	...	-)
यारी साहिब की रत्नावली	...	...	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	...	...	।)
केशवदास जी की अमींघूँट	...	...	-)॥
धरनी दास जी की बानी	...	...	।=)
मीराबाई की शब्दावली	...	...	॥=)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	...	...	।≡)॥
दया बाई की बानी	...	...	।)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	...	...	१॥)
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	...	...	१॥)
		कुल	२३॥≡)
अहिल्या बाई	...	...	≡)

दाम में डाकमहसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

कबीर साहेब की शब्दावली

॥ भाग ३ ॥

जिस में

उन महात्मा की आदि बानी, आदि धाम की महिमा और चुने हुए शब्द भिन्न भिन्न अंगों में छपे हैं।

और गूढ़ शब्दों के अर्थ [illegible]

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

चौथी बार]   [दाम ।=)

Printed and Published at The Belvedere Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी भी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर-सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है जिसके विषय में बैकुंठ वासी श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा था—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है, देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापे गए हैं जिनका दाम क्रमशः ॥।) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

इलाहाबाद।

दिसम्बर १९३२ ई०

॥ सूचीपत्र ॥

कबीर साहिब की शब्दावली

॥ तीसरा भाग ॥

॥ आदि बानी ॥

बलिहारी अपने साहिब की, जिन यह जुक्ति बनाई।
उनकी सोभा केहि बिधि कहिये, मो से कहो न जाई ॥१॥
बिना जोत की जहँ उँजियारी, सो दरसै वह दीपा।
निरतैं हंस करैं कंतूहल, वोही पुरुष समीपा ॥२॥
झलकै पद्म नाना बिधि बानी, माथे छत्र बिराजै।
कोटिन भानु चन्द्र की क्रांती, रोम रोम में छाजै ॥३॥
कर गहि बिहँसि जबै मुख बोले, तब हंसा सुख पावै।
अंस बंस जिन बूझि बिचारी, सो जीवन मुक्तावै ॥४॥
चौदह लोक बेद का मंडल, तहँ लगि काल दुहाई।
लोक बेद जिन फंदा काटी, ते वह लोक सिधाई ॥५॥
सात सिकारी चौदह पारिंद[1], भिन्न भिन्न निरतावै।
चार अंस जिन समुझि बिचारी, सो जीवन मुक्तावै ॥६॥
चौदह लोक बसै जम चौदह, तहँ लगि काल पसारा।
ता के आगे जोति निरंजन, बैठे सून्य मँझारा ॥७॥
सोरह खंड अच्छर भगवाना, जिन यह सृष्टि उपाई।
अच्छर कला से सृष्टी उपजी, उनहीं माहिं समाई ॥८॥
सत्रह संख पै अधर द्वीप जहँ, सब्दातीत[2] बिराजै।
निरतै संखी बहु बिधि सोभा, अनहद बाजा बाजै ॥९॥

---

१ पारिंद्र=बाघ, शेर। २ निर्णायक शब्द।

ता के ऊपर परम धाम है, मरम न कोऊ पाया ।
जो हम कहो नहीं कोउ मानै, ना कोउ दूसर आया ॥१०॥
बेदन साखी जब जिव अरुझे, परम धाम ठहराया ।
फिर फिर भटके आप चतुर होइ, वह घर काहु न पाया ॥११॥
जो कोइ होइ सत्य का किनका, सो हम को पतियाई ।
और न मिले कोटि कहि थाके, बहुरि काल घर जाई ॥१२॥
सोरह संख के आगे समरथ, जिन जग मोहिं पठाया ।
कहै कबीर आदि की बानी, बेद भेद नहिं पाया ॥१३॥

॥ महिमा आदि धाम ॥

॥ शब्द १ ॥

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहँ पूरन पुरुष हमारा ॥टेक॥
जहँ नहिं सुख दुख साच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा ।
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उँजियारा ॥१॥
नहिं तहँ ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, बेद कितेब न बानी ।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहाँ हिरानी ॥२॥
घर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्मंड कछु नाहीं ।
पाँच तत्त्व गुन तीन नहीं तहँ, साखी सब्द न ताहीं ॥३॥
मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना वृच्छ फल सोहै ।
ओअं सोहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहै ॥४॥
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूच्छम अस्थूलं ।
नहिं अच्छर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के भूलं ॥५॥
जहाँ पुरुष तहवाँ कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना ।
हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरबाना ॥६॥

॥ शब्द २ ॥

अबधू कौन देस निरबाना ॥ टेक ॥
आदो जोति तबै कछु नाहीं, नहिं रहे बीज अँकूरा।
बेद कितेब तबै कछु नाहीं, नहीं पिंड ब्रह्मंडा ॥१॥
पाँच तत्त गुन तीनों नाहीं, नहीं जीव अंकूरा।
जोगी जती तपी सन्यासी, नहीं रहे सत सूरा ॥२॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसुर नाहीं, नहिं रहे चौदह लोका।
लोक दीप की रचना नाहीं, तब कै कहो ठिकाना ॥३॥
गुप्त कली जब पुरुष उचारा, परगट भया पसारा।
कहै कबीर सुनो हो अबधू, अधर नाम परवाना ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

अबधू छोड़ो मन बिस्तारा।
सो पद गहो जाहि से सद गति, पारब्रह्म से न्यारा ॥१॥
नहीं महादेव नहीं मुहम्मद, हरि हजरत तब नाहीं।
आतम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं ॥२॥
असी-सहस मुनी तब नाहीं, सहस अठासी मुलना।
चाँद सुरज तारागन नाहीं, मच्छ कच्छ औतारा ॥३॥
बेद कितेब सिम्रित तब नाहीं, जीव न पारख आये।
आदि अंत मध मन ना होते, पिरथी पवन न पानी ॥४॥
बाँग निवाज कलमा ना होते, नहीं रसूल खुदाई।
गूँगा ज्ञान बिज्ञान प्रकासै, अनहद डंक बजाई ॥५॥
कहै कबीर सुनो हो अबधू, आगे करो बिचारा।
पूरन ब्रह्म कहाँ से प्रगटे, किरतिम किन उपचारा ॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरति से देखिले वहि देस ॥ टेक ॥
देखत देखत दीसन लागे, मिटिगे सकल अँदेस ॥१॥
वहँ नहिं चन्द वहाँ नहिं सूरज, नाहि पवन परवेस ॥२॥

वहँ नहिँ जाप वहाँ नहिँ अजपा, निःअच्छर परबेस ॥३॥
वहँ के गये बहुरि नहिँ आये, नहिँ कोउ कहा सँदेस ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गहु सतगुरु उपदेस ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

हंसन का इक देस है, तहँ जाय न कोई ।
काग बरन छूटै नहीं, कस हंसा होई ॥१॥
हंस बसै सुख सागरे, झीलर[1] नहिँ आवै ।
मुक्ताहल को छाड़ि कै, कहुँ चुंच न लावै ॥२॥
मानसरोवर की कथा, बकुला का जानै ।
उन के चित तलिया[2] बसै, कहो कैसे मानै ॥३॥
हंसा नाम धराइ कै, बकुला सँग भूलै ।
ज्ञान दृष्टि सूझै नहीं, वाही मति भूलै ॥४॥
हंसा उड़ि हंसा मिले, बकुला रहि न्यारा ।
कहै कबीर उठि ना सकै, जड़ जीव बिचारा ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

अबधू कौन देस निज डेरा ॥टेक॥
संसय काल सरीरे ब्यापै, काम क्रोध मद घेरा ।
भूलि भटकि रचि पचि मरि जैहै, चलत हंस जम घेरा ॥१॥
भवसागर औगाह अगम है, वहाँ नाव ना बेड़ा ।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, केचुली पंथ न हेरा ॥२॥
चित्रगुप्त जब लेखा माँगै, कवन पुरुष बल हेरा ।
मारै जीव दाव[3] फटकारे, अगिन कुंड लै डारा ॥३॥
मन बच कर्म गहो सतनामा, मान बचन गुरु केरा ।
कहै कबीर सुनो हो अबधू, सब्द में हंस बसेरा ॥४॥

---

१ छिछले पानी में। २ तलैया। ३ तबर, कुलहाड़ी।

॥ शब्द ७ ॥

हंसा चलो अगमपुर देसा ।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, मानि लेहु उपदेसा ॥ १ ॥
छाड़ो काम क्रोध औ माया, छाड़ो देस कलेसा ।
ममता मेटि चलो सुख सागर, काल गहै नहिं केसा ॥ २ ॥
तीन देव पहुँचैं नाहीं तहँ, नहीं सारदा सेसा ।
कुरम बराह तहँ पार न पावैं, नहिं तहँ नारि नरेसा ॥ ३ ॥
गुरु गम गहो सब्द की करनी, छोड़ो मति बहुतेसा ।
हंसा सहज जाइ तहँ पहुँचे, गहि कबीर उपदेसा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

हंसा अमरलोक निज देसा ॥ टेक ॥
ब्रह्मा बिसनु महेसुर देवा, परे भर्म के भेसा ।
जुगन जुगन हम आइ चिताये, सार सब्द उपदेसा ॥ १ ॥
सिव सनकादिक औ नारद हू, गे कर्म काल कलेसा ।
आदि अंत से हमैं न चीन्हे, धरत काल को भेसा ॥ २ ॥
कोइ कोइ हंसा सब्द बिचारे, निरगुन करे निबेरा ।
सार सब्द हिरदे में झलके, सुख सागर की आसा ॥ ३ ॥
पान परवाना सब्द बिचारे, नरियर लेखा पाये ।
कहै कबीर सुख सागर पहुँचे, छूटे कर्म को फाँसा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

हंसा जगमग जगमग होई ॥ टेक ॥
बिन बादर जहँ बिजुली चमकै, अमृत बर्षा होई ।
ऋषि मुनि देव करैं रखवारी, पिये न पावै कोई ॥ १ ॥
राति दिवस जहँ अनहद बाजै, धुनि सुनि आनँद होई ।
जोति बरै साहिब के निसु दिन, तकि तकि रहत समोई ॥ २ ॥

सार सब्द की धुनी उठत है, बूझै बिरला कोई।
झरना झरै जूह[1] के नाके, (जेहिं) पियत अमर पद होई ॥ ३ ॥
साहिब कबीर प्रभु मिले बिदेही, चरनन भक्ति समोई।
चेतनवाला चेत पियारे, नहिं तौ जात बहोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

हंसा गवन बड़ि दूर, साजन मिलना हो ॥ टेक ॥
ऊँची अटरिया पिया की दुअरिया, गगन चढ़ै कोइ सूर ॥१॥
यहि बन बोलत कोइल कोकिला, वोहि बन बोलत मोर ॥२॥
अंतर बीच प्रेम कै बिरवा, चढ़ि देखब देस हजूर ॥३॥
कहै कबीर सुनु पिय की प्यारी, नाचु घुँघट करि दूर ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

चलो हंसा वा लोक मेँ, जहँ प्रीतम प्यारा ॥ टेक ॥
अगम पंथ सूझै नहीं, नहि दिस ना द्वारा।
नाम क पेच घुमाइ कै, रहु जग से न्यारा ॥ १ ॥
रैन दिवस उहवाँ नहीं, नहि रबि ससि तारा।
जहाँ भँवर गुंजार है, ग[illegible] अगम अपारा ॥ २ ॥
मात पिता सुत बंधु है, सब जग्त पसारा।
इहाँ मिले उहाँ बीछुरे, हंसा होइ न्यारा ॥ ३ ॥
निरगुन रूप अनूप है, तन मन धन वारा।
कहै कबीर गुरु ज्ञान मेँ, रहु सुरति सम्हारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

कहौं उस देस की बतियाँ, जहाँ नहिं होत दिन रतियाँ ॥ १ ॥
नहीं रबि चन्द्र औ तारा, नहीं उँजियार अँधियारा ॥ २ ॥
नहीं तहँ पवन औ पानी, गये वहि देस जिन जानी ॥ ३ ॥
नहीं तहँ धरनि आकासा, करै कोइ संत तहँ बासा ॥ ४ ॥
उहाँ गम काल की नाहीं, तहाँ नहिं धूप औ छाहीं ॥ ५ ॥

---

१ नदी, नहर।

न जोगी जोग से ध्यावै, न तपसी देह जरवावै ॥ ६ ॥
सहज में ध्यान से पावै, सुरति का खेल जेहि आवै ॥ ७ ॥
सोहंगम नाद नहिं भाई, न बाजै संख सहनाई ॥ ८ ॥
निहच्छर जाप तहँ जापै, उठत धुन सुन्न से आपै ॥ ९ ॥
मँदिर में दीप बहु बारी, नयन बिनु भई अँधियारी ॥ १० ॥
कबीरा देस है न्यारा, लखै कोइ नाम का प्यारा ॥ ११ ॥

॥ महिमा नाम ॥

॥ शब्द १ ॥

सुरतिया नाम से अटकी ॥ टेक ॥
करम भरम और बेद बड़ाई, या फल से सटकी।
नाम के चूके पार न पैहो, जैसे कला नट की ॥ १ ॥
जागत सोवत सोवत जागत, मोहिं परै चट[1] सी।
जैसे पपिहा स्वाँति बुन्द को, लागि रहै रट सी ॥ २ ॥
भरम मेटुकिया सिर के ऊपर, सो मेटुकी पटकी।
हम तो अपनी चाल चलत हैं, लोग कहै उलटी ॥ ३ ॥
प्रीत पुरानी नई लगन है, या दिल में खटकी।
और नजर कछु आवत नाहीं, नहिं मानै हटकी ॥ ४ ॥
प्रेम की डोरी में मन लागा, ज्ञान डोर झटकी।
जैसे सलिता सिंधु समानी, फेर नहीं पलटी ॥ ५ ॥
गहु निज नाम खोज हिरदे में, चीन्हि परै घट की।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, फेर नहीं भटकी ॥ ६ ॥

---

१ चाट, खटक।

॥ शब्द २ ॥

अजर अमर इक नाम है सुमिरन जो आवै ॥ टेक ॥

बिन मुखड़ा से जप करो, नहिं जीभ डुलावो ।
उलटि सुरति ऊपर करो, नैनन दरसावो ॥ १ ॥
जाहु हंस पच्छिम दिसा, खिरकी खुलवावो ।
तिरबेनी के घाट पर, हंसा नहवावो ॥ २ ॥
पानी पवन कि गम नहीं, वोहि लोक मँझारा ।
ताही बिच इक रूप है, वोहि ध्यान लगावो ॥ ३ ॥
जिमीं असमान उहाँ नहीं, वो अजर कहावै ।
कहै कबीर सोइ साधु जन, वा लोक मँझावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हंसा निसु दिन नाम अधारा ॥ टेक ॥

सार सब्द हिरदे गहि राखो, सब्द सुरति करु मेला ।
नाम अमी रस निसु दिन चाखो, बैठो अधर अधारा ॥ १ ॥
यह संसार सकल जम फंदा, अरुझि रहा जग सारा ।
निरमल जोति निरंतर झलकै, कोऊ न कीन्ह बिचारा ॥ २ ॥
माया मोह लोभ में भूले, करम भरम व्योहारा ।
निस दिन साहिब संग बसतु है, सार सब्द टकसारा ॥ ३ ॥
आदि अंत कोइ जानत नाहीं, भूलि परा संसारा ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बैठो पुरुष दुआरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हंसा करौ नाम नौकरी ॥ टेक ॥

नाम बिदेही निसु दिन सुमिरै, नहि भूलै छिन घरी ॥ १ ॥
नाम बिदेही जो जन पावै, कभु न सुरति बिसरी ॥ २ ॥
ऐसो सब्द सतगुरु से पावै, आवा गवन हरी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पावै अमर नगरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ब्योपारी निज नाम का हाटे चलु भाई ॥ टेक ॥
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई ।
अग्र बस्तु इक मूल है, सौदागर लाई ॥ १ ॥
सील सँतोष पलरा भये, सूरति करि डाँड़ी ।
ज्ञान बटखरा चढ़ाइ कै, पूरा करु भाई ॥ २ ॥
करि सौदा घर को चले, रोके दरबानी ।
लेखा माँगे बस्तु का, कहँ के ब्योपारी ॥ ३ ॥
अच्छर पुरुष इक मूल है, गुरु दीन्ह लखाई ।
इतना सुनि लज्जित भये, सिर दीन्ह नवाई ॥ ४ ॥
हाट गली पचरंग की, भव करत दलाली ।
जो होवै वहि पार को, तिन्ह देत उतारी ॥ ५ ॥
अमर लोक दाखिल भये, तजि कै संसारा ।
खबर भई दरबार, पुरुष पै नजर गुजारा ॥ ६ ॥
कहै कबीर बैठे रहो, सिख लेहु हमारी ।
काल कष्ट ब्यापै नहीं, यही नफा तुम्हारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

धुनि सुनि के मनुवाँ मगन हुआ ॥ टेक ॥
लाइ समाज रहो गुरु चरना, अंत काल दुख दूरि हुआ ॥१॥
सुन्न सिखर पर झालर झलकै, बरसै अमी रस बुंद चुआ ॥२॥
सुरति निरति की डोरी लागी, तेहिं चढ़ हंसा पार हुआ ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अगम पंथ पर पाँव दिया ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

जो कोइ सत्तनाम धुनि धरता ॥ १ ॥
तन कर गुन[1] औ मन कर सूजा, सब्द परोहन[2] भरता ॥१॥
करु ब्योपार सहज है सौदा, टूटा कबहूँ न परता ॥२॥

---

१ सुतली । २ बरधी लादने की; माल ।

बेद कितेब से नाम सरस है, सोई नाम लै तरता ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, फँटा कोइ न पकरता ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सुमिरन बिन अवसर जात चली ॥ टेक ॥
बिन माली जस बाग सूखि गै, सींचे बिन कुम्हिलात कली ॥१॥
छमा सँतोष जबै तन आवै, सकल ब्याध तब जात टली ॥२॥
पाँचो तत्त बिचारि के देखो, दिल की दुरमति दूर करी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सकल कामना छोड़ि चली ॥४॥

॥ महिमा शब्द ॥

॥ शब्द १ ॥

हंसा सब्द परख जो आवै ।
करि अकास[1] चित तान पार को, मूल सब्द तब पावै ॥ १ ॥
पाँच तत्त पच्चीस प्रकिरती, तीनौं गुनन मिलावै ।
अंक परवाना जब ही पावै, तब वह संत कहावै ॥ २ ॥
अंक परवाना सब्द अतीत है, जो निसु दिन गोहरावै ।
अंस बंस ह्वै मलयागिरि परसत, सत्त सबै बिधि पावै ॥ ३ ॥
एकै सब्द सकल जग पूरा, सुरति रहनि जब आवै ।
चाँद सुरज दुइ साखी देई, सुखमनि चँवर ढुरावै ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ हंसा, या पद को अरथावै ।
जगमग जोत झलाझल झलकै, निर्मल पद दरसावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

हंसा परखु सब्द ठकसारा ॥ टेक ॥
बिन पारख कोइ पार न पावै, भूला जग संसारा ।
सब आये ब्योपार करन को, घर की जमा गँवाया ॥ १ ॥

---

१ आकाश के अर्थ छिद्र के भी हैं—यहाँ अभिप्राय तीसरे तिल से है ।

राम रतन पहलाद पारखी, नित उठि पारख कीन्हा।
इंद्रासन सुख श्रासन लीन्हा, सार सब्द नहिं चीन्हा॥ २॥
श्रब सुनि लेहु जवाहिर मोदी, खरा खोट नहिं बूझा।
सिव गोरख श्रस जोगी नाहीं, उनहूँ को नहिं सूझा॥ ३॥
बड़ बड़ साधू बाँधे छोरे, राम भाग दुइ कीन्हा।
'रारा' श्रच्छर पारख लीन्हा, 'मा'हिं भरम तज दीन्हा॥ ४॥
जो कोइ होय जौहरी जग में, सो या पद को बूझै।
तीन लोक श्री चार लोक लौं, सब घट श्रंतर सूझै॥ ५॥
कहै कबीर हम सब को देखा, सबै लाभ को धावै।
सतगुरु मिलै तो भेद बतावै, ठीक ठौर तब पावै॥ ६॥

॥ शब्द ३॥

इक दिन साहिब बेनु बजाई।
सब गोपिन मिलि धोखा खाई, कहैं जसुदा के कन्हाई॥१॥
कोइ जंगल कोइ देवल बतावै, कोई द्वारिका जाई।
कोइ श्रकास पाताल बतावै, कोइ गोकुल ठहराई॥२॥
जल निर्मल परबाह थकित भे, पवन रहे ठहराई।
सोरह बसुधा इकइस पुर लौं, सब मुर्छित होइ जाई॥३॥
सात समुद्र जबै घहरानो, तैंतिस कोटि श्रघानो।
तीन लोक तीनौं पुर थाके, इन्द्र उठो श्रकुलानो॥४॥
दस श्रौतार कृष्न लौं थाका, कुरम बहुत सुख पाई।
समुझि न परो वार पार लौं, या धुनि कहँ तें श्राई॥५॥
सेसनाग श्रौ राजा बासुक, बराह मुर्छित होइ श्राई।
देव निरंजन श्राद्या माया, इन दुनहुन सिर नाई॥६॥
कहैं कबीर सतलोक के पूरुष, सब्द केर सरनाई।
श्रमी श्रंक ते कुहुक निकारी, सकल सृष्टि पर छाई॥७॥

॥ साध महिमा ॥

॥ शब्द १ ॥

साधु घर सील सँतोष बिराजै ।
दया सरूप सकल जीवन पर, सब्द सरोतरि गावै ॥ १ ॥
जहाँ जहाँ मन पौरत धावै, ता के संग न जावै ।
आसन अदल अरु छमा अग्र धुज, तन तजि अंत न धावै ॥ २ ॥
ततबादी सतगुरु पहिचाना, आतम दीप प्रगासा ।
साधू मिलै सदा सीतल गति, निसु दिन सब्द बिलासा ॥ ३ ॥
कह कबीर प्रीति सतगुरु से, सदा निरंतर लागी ।
सतगुरु चरन हृदय मेँ धारे, सुखसागर मेँ बासी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

धन्य भाग जाके साध पाहुना आये ॥ टेक ॥
भयो लाभ चरन अमृत लै, महा प्रसाद की आसा ।
जौन मता हम जुग जुग ढूँढ़ो, सो साधन के पासा ॥ १ ॥
जौन प्रसाद देवन को दुर्लभ, साध से नित उठि पाये ।
दगाबाज दुरमति के कारन, जनम जनम डहकाये[1] ॥ २ ॥
कथा ग्रंथ होय द्वारे पर, भाव भक्ति समझावैँ ।
काम क्रोध मद लोभ निवारे, हिलि मिलि मंगल गावैँ ॥ ३ ॥
सील सँतोष बिबेक छमा धरि, मोह के सहर लुटावैँ ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अमर लोक पहुँचावैँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

बसै अस साध के मन नाम ॥ टेक ॥
जैसे हेत गाय बछवा से, चाटत सूखा चाम ॥ १ ॥
कामी के हिये काम बसो है, सूम की गाँठी दाम ॥ २ ॥
जस पुरइन जल बिन कुम्हिलावै, वैसे भक्त बिन नाम ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पद पाये निरबान ॥ ४ ॥

---

१ ठगाये ।

॥ शब्द ४ ॥

है साधू संसार में कँवला जल माहीं ।
सदा सर्बदा सँग रहै, जल परसत नाहीं ॥ १ ॥
जल केरी ज्यौं कूकुही, जल माहिं रहानी ।
पंख पानि बेधै नहीं, कछु असर न जानी ॥ २ ॥
मीन तिरै जल ऊपरे, जल लगै न भारा ।
आड़ अटक मानै नहीं, पैड़ै जल धारा ॥ ३ ॥
जैसे सीप समुद्र में, चित देत अकसा ।
कुँभकला[१] ह्वै खेलही, तस साहिब दासा ॥ ४ ॥
जुगति जमूरा[२] पाइ कै, सरपे लपटाना ।
बिष वा के बेधे नहीं, गुरु गम्म समाना ॥ ५ ॥
दूध भात घृत भोजन रु, बहु पाक मिठाई ।
जिभ्या लेस लगै नहीं, उन कै रुसनाई ॥ ६ ॥
बामी में बिषधर बसै, कोइ पकरि न पावै ।
कहै कबीर गुरु मंत्र से, सहजै चलि आवै ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

नगर में साधू अदल चलाई ॥ टेक ॥
सार सब्द को पटा लिखावो, जम से लेहु लड़ाई ।
पाँच पचीस करो बस आपन, सहजे नाम समाई ॥ १ ॥
सुरति सब्द एक सम राखो, मन का अदल उठाई ।
काम क्रोध की पूँजी तोलो, सहज काल टरि जाई ॥ २ ॥
सूरति उलटि पवन के सोधो, त्रिकुटी मधि ठहराई ।
सोहं सोहं बाजा बाजे, अजब पुरी दरसाई ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सतगुरु बस्तु लखाई ।
अधर उरध बिच तारी लावो, तब वा लोके जाई ॥ ४ ॥

---

१ घड़ों का खेल जिन्हें सिर पर रख कर नट बाँस पर चढ़ते हैं । २ ज़हर-मोहरा जिससे साँप का ज़हर असर नहीं करता ।

॥ शब्द ६ ॥

है कोइ अदली अदल चलावै ।
नगर मैं चोर मूसन नहिं पावै ॥ १ ॥

संतन के घर पहरा जागे ।
फिरि वो काल कहाँ होइ लागे ॥ २ ॥

पाँचो चोर छठे मन राजा ।
चित के चौतरा न्याव चुकावै ॥ ३ ॥

लालच नदिया निकट बहतु है ।
लोभ मोह सब दूरि बहावै ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो भाइ साधो ।
गगन मैं अनहद डंक बजावै ॥ ५ ॥

॥ बिरह और प्रेम ॥

॥ शब्द १ ॥

कौन मिलावै मोहिं जोगिया हो, जोगिया बिनु रह्यो न जाय ॥ टेक ॥

हौं[1] हिरनी पिया पारधी[2] हो, मारे सब्द के बान ।
जाहि लगी सो जानही हो, और दरद नहिं जानि हो ॥ १ ॥
मैं प्यासो हौं पीव की हो, रटत सदा पिव पीव ।
पिया मिलै तो जीव है, (नातो) सहजै तयागौं जीव हो ॥ २ ॥
पिय कारन पियरी भई हो, लोग कहै तन रोग ।
छः छः लंघन मैं करौं रे, पिया मिलन के जोग हो ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनु जोगिनी हो, तन मैं मनहिं मिलाय ।
तुम्हरी प्रीति के कारन जोगी, बहुरि मिलैंगे आय हो ॥ ४ ॥

---

१ मैं । २ शिकारी ।

॥ शब्द २ ॥

जो कोइ येहि बिधि प्रीति लगावै ॥ टेक ॥
गुरु का नाम ध्यान ना छूटै, परगट ना गोहरावै ॥ १ ॥
कुरम[1] सुतन[2] को धरतु है ऊँचे, आप उद्र को धावै ।
निसु दिन सुरत रहै अंडन पर, पल भर ना बिसरावै ॥ २ ॥
जैसे चात्रिक रटै स्वाँति को, सलिता निकट ना आवै ।
दीन दयाल लगन हितकारी, स्वाँती जल पहुँचावै ॥ ३ ॥
फूटि सुगंध कंज[3] की जैसे, मधुकर[4] के मन भावै ।
ह्वै गइ साँझि बंधि गै संपुट, ऐसो भक्ति कहावै ॥ ४ ॥
जैसे चकोर ससी तन निरखे, तन को सुधि बिसरावै ।
ससि तन रहत एक टक लागो, तब सीतल रस पावै ॥ ५ ॥
ऐसी जुगत करै जो कोई, तब सो भगत कहावै ।
कहै कबीर सतगुरु की मूरति, तेहि प्रभु दरस दिखावै ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साहिब हमरे सनेसी आये ॥ टेक ॥
आये सनेसी मोरे आदि घरा से, सोवत मोहिं जगाये ॥ १ ॥
पाती बाँचि जुड़ानी छाती, नैनन मेँ जल धाये ॥ २ ॥
धन्न भाग मोर सुनो हो सखी री, अजर अमर बर पाये ॥ ३ ॥
साहिब कबीर मोहिं मिलिगे सतगुरु, बिगरल मोर बनाये ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अमी रस भँवरा चाखि लिया ॥ टेक ॥
जा के घट में प्रेम प्रगासा, सो बिरहिन काहे बारै दिया ॥१॥
अंते न जाय अपन घट खोजै, सो बिरहिन निज पावै पिया ॥२॥
पाव पलक मेँ तसकर मारूँ, गुरु अपने को साखि दिया ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जियतै यह तन जीत लिया ॥४॥

---

१ कछुआ । २ बच्चे या अंडे । ३ कमल । ४ भँवरा ।

॥ शब्द ५ ॥

बिरहिनि तो बेहाल है, को जानत हाला ॥ टेक ॥
सजन सनेही नाम का, हर दम का प्याला ।
पीवैगा कोइ जौहरी, सतगुरु मतवाला ॥ १ ॥
पीवत प्याला प्रेम का, हम भइ हैं दिवानी ।
कहा कहूँ पिय रूप की, कछु अकथ कहानी ॥ २ ॥
नाचन निकसी हे सखी, का घूँघुट काढ़ो ।
नाच न जाने बावरी, कहे आँगन टेढ़ो ॥ ३ ॥
निःअच्छर के ध्यान में, मेटै अँधियाला ।
कहै कबीर कोइ संतजन, बिच लावत खयाला ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

पिय को सोई सुहागिन भावै ।
चित चंदन को निसु दिन रगरै, चुनि चुनि अंग चढ़ावै ॥१॥
अति सुगंध बोलै मुख बानी, यहि बिधि खसम मनावै ।
दाबत चरन दगा नहिं दिल में, काग कुबुधि बिसरावै ॥२॥
बीते दिवस रैन जब आई, कर जोरि सेवा लावै ।
इक इक कलियाँ चुनै महल में, सुंदर सेज बिछावै ॥३॥
सुरति चँवर लै सनमुख भारै, तबै पलँग पौढ़ावै ।
मगन रहै नित गगन झरोखे, झलकत बदन छिपावै ॥४॥
मिलि दुलहा जब दुलहिनि सोहै, दिल में दिलहिं मिलावै ।
कहै कबीर भाग वहि धन के, पतिब्रता बनि आवै ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

अलमस्त दिवानी, लाल भरो रँग जोबनियाँ ।
रस मगन भरी है, देखि लालन को सेजरियाँ ॥ १ ॥
कर पंखा डुलावै, संग सोहंग सहेलरियाँ ।
जहँ चंद न सूरा, रैन नहीं वहँ भोरनियाँ ॥ २ ॥

जहँ पवन न पानी, बिनु बादल घनघोरनियाँ।
जहँ बिजुली चमकै, प्रेम अमी की लगीं झरियाँ ॥ ३ ॥
वहँ काया न माया, कर्म नहीं कछु रेखनियाँ।
जहँ साहिब कबीर हैं, बिगसित पुहुप प्रकासनियाँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

दरस दिवाना बावरा, अलमस्त फकीरा।
एक अकेला ह्वै रहा, अस मत का धीरा ॥ १ ॥
हिरदे में महबूब है, हर दम का प्याला।
पीयेगा कोइ जौहरी, गुरुमुख मतवाला ॥ २ ॥
पियत पियाला प्रेम का, सुधरे सब साथी।
आठ पहर झूमत रहै, जस मैगल[१] हाथी ॥ ३ ॥
बंधन काटे मोह के, बैठा निरसंका।
वा के नजर न आवता, क्या राजा रंका ॥ ४ ॥
धरती तो आसन किया, तंबू असमाना।
चोला पहिरा खाक का, रहा पाक समाना ॥ ५ ॥
सेवक को सतगुरु मिले, कछु रहि न तबाही[२]।
कहै कबीर निज घर चलो, जहँ काल न जाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जेहि कुल भगत भाग बड़ होई ॥ टेक ॥
गनिये न बरन अबर न रंक धनी, बिमल बास निज सोई ॥१॥
बाम्हन छत्री बैस सुद्र सब, भगत समान न कोई ॥२॥
धन वह गाँव ठाँव अस्थाना, है पुनीत संग सब लोई ॥३॥
होत पुनीत जपे सतनामा, आपु तरै तारै कुल दोई ॥४॥
जैसे पुरइनि रहै जल भीतर, कहै कबीर जग में जन सोई ॥५॥

---

१ मस्त। २ दुख, क्लेश।

॥ सूरमा ॥

॥ शब्द १ ॥

लागा मोरे बान कठिन करका ॥ टेक ॥

ज्ञान बान धरि सतगुरु मारा, हिरदे माहिँ समाना ।
बीच करेजा पीर होत है, धीरज ना धरना ॥ १ ॥
करिया[१] काटे जिये रे भाई, गुरु काटे मरि जाई ।
जिनके लागे सब्द के डंडा, त्यागि चले पाच्छाई[२] ॥ २ ॥
यह दुनिया सब भई दिवानी, रोवत है धन काँ ।
दौलत दुनिया छोड़ि दिया है, भागि चलो बन काँ ॥ ३ ॥
चारि दिनाँ को है जिंदगानी, मरना है सब का ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गाफिल है कब का ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

बाजत कीँगरी निरबान ॥ टेक ॥

सुनि सुनि चित भइ बावरी, रीझै मन सुल्तान ।
सील सँतोष कै बख्तर पहिरो, सत दृष्टी परवान ॥ १ ॥
ज्ञान सरोही[३] कमर बाँधि लै, सूरा रनहिँ समान ।
प्रेम मगन ह्वै घायल खेलै, कायर रन बिचलान ॥ २ ॥
सूरा के मैदान मेँ, का कायर को काम ।
सूरा को सूरा मिलै, तब पूरा संग्राम ॥ ३ ॥
जीवत मिरतक ह्वै रहु जोधा, करो बिमल अस्नान ।
उन मुनि दृष्टि गगन चढ़ि जाओ, लागै त्रिकुटी ध्यान ॥ ४ ॥
रोम रोम जाको पद परगासा, ता को निरमल ज्ञान ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, करो इस्थिर मन ध्यान ॥ ५ ॥

---

१ साँप । २ बादशाही । ३ एक तरह की तलवार ।

॥ शब्द ३ ॥

भाई ऐन लड़ै सोइ सूरा ॥ टेक ॥

मन मारि अगमपुर लेहू, चित्रगुप्त परे डेरा करहू ॥ १ ॥
जहँ नाहिँ जनम अरु मरना, जम आगे न लेखा भरना ॥ २ ॥
जमदूत है तेरा बैरी, का सोवै नींद घनेरी ॥ ३ ॥
जहँ बाँधि सकल हथियारा, गुरु ज्ञान को खड़ग सम्हारा ॥ ४ ॥
गढ़ बस किये पाँचो थाना, जहँ साहिब है मिहरबाना ॥ ५ ॥
जहँ बाजै जुझावर[1] बाजा, सब कायर उठि उठि भाजा ॥ ६ ॥
कोइ सूर अड़े मैदाना, तहँ काटि किये खरिहाना ॥ ७ ॥
जहँ तीर तुपक नहिँ छूटे, तहँ सब्दन सौँ गढ़ टूटे ॥ ८ ॥
जहँ बाजै कबीर को डंका, तहँ लूटि लिये जम बंका ॥ ९ ॥

॥ बिनती ॥

॥ शब्द १ ॥

कब लखि हौँ बंदी-छोर ॥ टेक ॥

जरा मरन मेटो जिय केरो, जियत मरत दुख जोर ॥ १ ॥
हे साहिब मोहिँ अरज न आवै, पुरवो ललसा मोर ॥ २ ॥
हे साहिब मैं बारी भोरो, आखिर आमिन[2] तोर ॥ ३ ॥
हे साहिब मोर भरम मिटावो, राखो चरन कि ओर ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो मोर आमिनि, ले चलुँ फंदा तोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

अबकी बार उबारिये, मेरी अरजी दीनदयाल हो ॥ टेक ॥
आई थी वा देस से हो, भई परदेसिन नारि ।
वा मारग मोहिँ भूलि गो, (जासे) बिसरि गयो
निज नाम हो ॥ १ ॥

---

१ लड़ाई का । २ धनी धर्मदास की स्त्री का नाम शरणागत जीव ।

जुगन जुगन भरमत फिरी हो, जम के हाथ बिकाय।
कर जोरे बिनती करौं हो, मिलि बिछुरन
नहिं होय हो ॥२॥

बिषम नदी बिकरार है हो, मन हठ करिया धार।
मोह मगर वा के घाट में, (जिन) खायो
सुर नर झारि हो ॥३॥

सब्द जहाज कबीर के हो, सतगुरु खेवनहार।
कोइ कोइ हंसा उतरिहैं हो, पल में देउँ छोड़ाइ हो ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

साहिब मैं ना भूलौं दिन राती ॥ टेक ॥
जैसे सीपि रहै जल भीतर, चाहत नीर सुवाँती।
बारह मास अमी रस बरसै, ता से नाहि अघाती ॥ १ ॥
जैसे नारि चहै पिय आपन, रहै बिरह रस माती।
अंतर वा के उठै मलोला, बिरह दहै तन छाती ॥ २ ॥
गम्म अगम कोउ जानत नाहीं, रोकै काल अचानक घाटी।
या ते नाम से लगन लगाओ, भक्ति करो दिन राती ॥ ३ ॥
साहिब कबीर अगम के बासी, नाहिं जाति नहिं पाँती।
निसु दिन सतगुरु चरन भरोसे, साध के संग सँगाती ॥ ४ ॥

॥ दीनता ॥

॥ शब्द १ ॥

गरीबी है सब में सरदार ॥ टेक ॥
उलटि कै देखो अदल गरीबी, जा की पैनी धार ॥ १ ॥
सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग, परलय तारनहार ॥ २ ॥
दुखभंजन सुखदायक लायक, बिपति बिडारनहार ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, हंस उबारनहार ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

साहिब को मेहीं[1] होय सो पावै ॥ टेक ॥
मोटी माटी परै कोँहरा[2] घर, उठि चार लात लगावै ।
वो माटी कौ मेहीं करि सानै, तबै चाक बैसावै[3] ॥ १ ॥
मोटा सूत परे कोरिया घर, मेहीं मेहीं गोहरावै ।
वोही सूत को ताना तानै, मेहीं कहाँ से आवै ॥ २ ॥
बिखरी खाँड़ परै रेती मेँ, कुंजर मुख ना आवै ।
मान बड़ाई छोड़ बावरे, चिउटी होइ चुनि खावै ॥ ३ ॥
बड़े भये तो सब जग जानै, सब पर अदल चलावै ।
कहै कबीर बड़ बाँधा जैहै, वा को कौन छुड़ावै ॥ ४ ॥

॥ भेद बानी ॥

॥ शब्द १ ॥

पियत मरहमी यार, अमीरस बुंद झरै ॥ टेक ॥
बिन सागर के अमृत भरिया, बिना सीप के मोती ।
संत जवाहिर पारख कीन्हा, अग्र लै वस्तु धरी ॥ १ ॥
डोरी डगर गगर सिर ऊपर, गेंडुर मद्ध धरी ।
चेतन चलै सुरति नहिं चूकै, उलटा नीर चढ़ी ॥ २ ॥
टोह लिया सतसंग पाइ कै, बिन गुरु कौन कही ।
सोना थीर कसौटी नाहीं, कैसे कै समुझि परी ॥ ३ ॥
भेदी होय सो भरि भरि पीवै, अनभेदी भरम फिरी ।
कहै कबीर मिलैं जो सतगुरु, जीवन मुक्त करी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

जो कोइ निरगुन दरसन पावै ॥ टेक ॥
प्रथमे सुरति जमावै तिल पर, मूल मंत्र गहि लावै ।
गगन गराजै दामिनि दमकै, अनहद नाद बजावै ॥ १ ॥

---

१ महीन=बारीक अर्थात दीन । २ कुम्हार । ३ बैठावै ।

बिन जिभ्या नामहिं को सुमिरै, अमि रस अजर चुवावै।
अजपा लागि रहै सूरति पर, नैन न पलक डुलावै ॥२॥
गगन मँदिल में फूल फुलाना, उहाँ भँवर रस पावै।
इँगला पिंगला सुखमनि सोधै, प्रेम जोति लौ लावै ॥३॥
सुन्न महल में पुरुष बिराजै, जहाँ अमर घर छावै।
कहै कबीर सतगुरु बिन चीन्है, कैसे वह घर पावै ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

पिया कै खोजि करै सो पावै ॥ टेक ॥
ई करता बसिया घट भीतर, कहत न कछु बनि आवै।
स्वाँसा सार सुरति में राखै, त्रिकुटी ध्यान लगावै ॥१॥
नाभि कमल अस्थान जीव का, स्वाँसा लगि लगि जावै।
ठहरत नाहिं पलक निस बासर, हाथ कवन बिधि आवै ॥२॥
बंक नाल होइ पवन चढ़ावै, गगन गुफा ठहरावै।
अजपा जाप जपै बिनु रसना, काल निकट नहिं आवै ॥३॥
ऐसी रहनि रहै निस बासर, करम भरम बिसरावै।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो बहुरि न भव जल आवै ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

बिन गुरु ज्ञान नाम ना पैहो, मिरथा जनम गँवाई हो ॥टेक॥
जल भरि कुंभ धरे जल भीतर, बाहर भीतर पानी हो।
उलटि कुंभ जल जलहि समैहै, तब का करिहौ ज्ञानी हो ॥१॥
बिन करताल पखावज बाजै, बिनु रसना गुन गाया हो।
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु अलख लखाया हो ॥२॥
है अथाह थाह सबहिन में, दरिया लहर समानो हो।
जाल डारि का करिहौ धीमर, मीन के ह्वै गै पानी हो ॥३॥
पंछी क खोज औ मीन कै मारग, ढूँढ़े न कोइ पाया हो।
कहै कबीर सतगुरु मिल पूरा, भूले को राह बताया हो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

उतर दिसा पँथ अगम अगोचर, अधर अंग इक देस हो ।
चल हो सजन वो देस अमर है, जहँ हंसन को बास हो ॥ १ ॥
आवै जाय मरै ना कबहूँ, रहै पुरुष के पास हो ।
आलस मोह एको नहिं ब्यापै, सुपने सूरति जास हो ॥ २ ॥
पीवो हंस अमृत सुख धारा, बिन सुरही[1] के दूध हो ।
संसय सोग कछू नहिं मन मैं, बिन मुक्ता गुन सूझ हो ॥ ३ ॥
सेत सिंहासन सेत बिछौना, जहँ बसै पुरुष हमार हो ।
अच्छर मूल सदा मुख भाखौ, चित दै गहहु सुहाग हो ॥ ४ ॥
सेत तँबूल समरथ मुख छाजै, बैठे लोक मँझार हो ।
हंसन के सिर मटुक बिराजै, मानिक तिलक लिलार हो ॥ ५ ॥
आमिनि ह्वै उतरे भवसागर, जिन तारे कुल बंस हो ।
सतगुरु भाव कछनी तन कपरा, मिलि लेहु पुरुष कबीर हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अबधू हंस देस है न्यारा ॥ टेक ॥
तीरथ ब्रत औ जोग जाप तप, सुरति निरति से न्यारा ।
तीन लोक से बाहर डोलै, करम भरम पचि हारा ॥ १ ॥
कोटि कोटि मुनि ब्रह्मा होइगे, कोई न पाये पारा ।
मंतर जाप उहाँ ना पहुँचै, सुरति करो दरबारा ॥ २ ॥
सुख सागर मैं बासा कीजै, मुकता करो अहारा ।
बंकनाल चढ़ि गरजन गरजै, सतगुरु अधर अधारा ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो हो अबधू, आप करो निरवारा ।
हंसा हमरे मिले हंसन मैं, पुनि न लखे भवजारा ॥ ४ ॥

---

१ गाय ।

॥ शब्द ७ ॥

सतगुरु सब्द गही मोरे हंसा, का जड़ जन्म गँवावसु हो ॥ टेक ॥
त्रिकुटी धार बहै इक संगम, बिना मेघ झरि लावसु हो।
लौका लौके बिजुली तड़पै, अजब रूप दरसावसु हो ॥ १ ॥
करहु प्रीति अभि अंतर उर में, कवने सुर लै गावसु हो।
गगन मँदिर में जोति बरतु है, तहाँ सुरत ठहरावसु हो ॥ २ ॥
इँगला पिँगला सुखमनि सोधो, गगन पार ठहरावसु हो।
मकर तार के द्वारे निरखो, ऊपर गढ़ी उठावसु हो ॥ ३ ॥
बंकनाल षट खिरकि[१] उलटिगे, मूल चक्र पहिरावसु हो।
द्वादस कोस बसै मोर साहिब, सूना सहर बसावसु हो ॥ ४ ॥
दूनों सरहद अनहद बाजे, आगे सोहँग दरसावसु हो।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अमर लोक पहुँचावसु हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

हंसा कोइ सतगुरु गम पावै ॥ टेक ॥
उजल बास निस बासर देखै, सीस पदम झलकावै।
राव रंक सब सम करि जानै, प्रगट संत गुन गावै ॥ १ ॥
अति सुख सागर नर्क स्वर्ग नहिं, दुरमति दूर बहावै।
जहँ देखूँ तहँ परसत चंदा, फनि मनि जोति बरावै ॥ २ ॥
रमै जगत में ज्यों जल पुरइनि, यहि बिधि लेप न लावै।
जल के पार कँवल बिगसाना, मधुकर के मन भावै ॥ ३ ॥
बरन बिबेक भेद सब जाना, अबरन बरन मिलावै।
अटक भटक आड़ नहि कबही, घट फूटे मिलि जावै ॥ ४ ॥
जब का मिलना अब मिलि रहिये, बिछुरत छुरी लखावै।
कहै कबीर काया का मुरचा, सिकल किये बनि आवै ॥ ५ ॥

---

१ खिड़की, द्वार।

॥ शब्द ९ ॥

अविगति पार न पावै कोई ॥ टेक ॥

अविगति नाम पुरुष को कहिये, अगम अगोचर बासा ।
ता को भेद संत कोइ जानै, जा की सुरति समोई ॥ १ ॥
अविगति अच्छर जग से न्यारा, जिभ्या कहा न जाई ।
बेद कितेब पार नहिं पावै, भूलि रहे नर लोई ॥ २ ॥
अविगति पुरुष चराचर व्यापै, भेद न पावै कोई ।
चार बेद में ब्रह्मा भूले, आदि नाम नहिं पाई ॥ ३ ॥
अविगति नाम की अद्भुत महिमा, सुरति निरति से पाई ।
दास कबीर अमरपुर बासो, हंसा लोक पठाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

हंसा अमर लोक पहुँचावो ॥ टेक ॥

मन कै मरम धरो गुरु आगे, ज्ञान घोड़ चढ़ि आवो ।
सहज पलान चित्त कै चाबुक, अलख लगाम लगावो ॥ १ ॥
निरखि परखि के तरकस बाँधो, सुरति कमान चढ़ावो ।
रबि को रथ सहजे में मिलिहै, वोही को सान बुझावो ॥ २ ॥
कुमति काटि अलगे करि डारो, सुमति के नोर बुझावो ।
सार सब्द की बाँधि कटारी, वोहि से मारि हटावो ॥ ३ ॥
धिरज छमा का संग लिये दल, मोह के महल लुटावो ।
ताही समय मवासी राजा, वाहि को पकरि मँगावो ॥ ४ ॥
दिल को भेदो सहजहि मिलिहै, अनहद संख बजावो ।
कहै कबीर तोरे सिर पर साहिब, ताही से लव लावो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

निरभय होइ कै जागु रे मन मोर ॥ टेक ॥

दिन के जागो राति के जागो, मूसै ना घर चोर ॥ १ ॥
बावन कोठरो दस दरवाजा, सब में लागैं चोर ॥ २ ॥

आगे जेठ जिठनियाँ पाछे, सँग में देवर तोर ॥ ३ ॥
कहै कबीर चलु गुरु के मत मैं, का करिहै जम जोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

देखब साईं कै बजार, सखी सँग हमहुँ चलब अब ॥ टेक ॥
सासु के आये पाहुना, ननदो के चालनहार ।
खिरकी के पैंड़ा लै चले हैं, खुलि गये कपट किवार ॥ १ ॥
चार जतन का बना खटोलना, आले आले बाँस लगाय ।
पाँच जना मिलि लै चले हैं, ऊपर से लालि उढ़ाय ॥ २ ॥
भवसागर इक नदो बहतु है, रोवै कुल परिवार ।
एक न रोवै उनको तिरिया, जिन्ह के सिखावनहार ॥ ३ ॥
भवसागर के घाट पर, इक साध रहै बिकरार ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिररे उतरिगे पार ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

रासा परचे रास है, जानै कोइ जागृत सूरा ।
सतगुरु को दाया भई, लखो जगमग नूरा ॥ १ ॥
दो परबत के संधि में, लखो जगमग नूरा ।
अद्भुत कथा अपार है, कैसे लागे तारा ॥ २ ॥
तन मन से परिचय करौ, सहजै ध्यान लगावो ।
नाद बिंद दोइ बाँधि कै, उलटा गगन चढ़ावो ॥ ३ ॥
अधर मध्य के सुन्न में, बोलै सब्द गँभोरा ।
ज्यों फूलन में बास है, त्यों रमि रहे कबोरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

जुक्ति से परवान बाबा, जुक्ति से परवान बे ॥ टेक ॥
मूल बाँधो नाभि साधो, पियो हंसा पवन बे ।
सुषमना घर करो आसन, मिटै आवागवन बे ॥ १ ॥
तीन बाँधो पाँच साधो, आठ डारो काटि बे ।
आव हंसा पियो पानो, त्रिबेनी के घाट बे ॥ २ ॥

माय मार पिता को बाँधो, घर को देव जराय बे।
ऐसो बाबा चतुर भेदी, गगन पहुँचै जाय बे ॥ ३ ॥
मार ममता टार तृस्ना, मैल डारो धोय बे।
कहै कबीर सुनो साधो, आप करता होय बे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

अबधू जानि राखु मन ठौरा, काहे को बाहर दौरा ॥ टेक ॥
तो मैं गिरवर तो मैं तरवर, तो में रबि औ चन्दा।
तारा मंडल तोहि घट भीतर, तो मैं सात समुन्दा ॥ १ ॥
ममता मेटि पहिर मन मुद्रा, ब्रह्म बिभूति चढ़ावो।
उलटा पवन जटा कर जोगी, अनहद नाद बजावो ॥ २ ॥
सील कै पत्र छमा कै झोली, आसन दृढ़ करि कीजै।
अनहद सब्द होत धुन अंतर, तहाँ अधर चित दीजै ॥ ३ ॥
सुकदेव ध्यान धर्‌यो घट भीतर, तहाँ हती कहँ माला।
कहै कबीर भेष सोइ भूला, मूल छोड़ि गहि डाला ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

माई मैं तो दोनों कुल उँजियारो ॥ टेक ॥
सास ससुर को लातन मारी, जेठ की मूछ उखारी।
राँध पड़ोसिन कीन्ह कलेवा, धरि बुढ़िया महतारी ॥ १ ॥
पाँच पूत कोखिया के खाये, छठएँ ननद दुलारी।
स्वामी हमरे सेज बिछावैं, सूतब गोड़ पसारी ॥ २ ॥
पाँच खसम नैहर मैं कीन्हे, सोरह किये ससुरारी।
वा मुंडो[1] का मूड़ मुड़ाऊँ, जो सरवर करै हमारी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आपै करो बिचारी।
आदि अंत कोइ जानत नाहीं, नाहक जनम खुवारी ॥ ४ ॥

---

१ राँड़।

॥ शब्द १७ ॥

दिखलूँ मैं सजनवाँ, पियवा अनमोल के ॥ टेक ॥

दिखलैं मैं कायानगर में, काया पुरुषवा खोजि के।
काहे सजनवाँ बिराजे भवनवाँ, दूनों नयनवाँ जोरि के ॥ १ ॥
इँगला पिंगला सुषमन साधो, मनुवाँ आपन रोकि के।
दसईं दुअरिया लागी किवरिया, खोलो सब्द से जोरि के ॥ २ ॥
रिमिझिमि रिमिझिमि मोती बरसै, हीरालाल बटोरि के।
लौका लौके बिजुली चमके, झिंगुर बोले झनकोरि के ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निर्बान के।
या पद के जो अर्थ लगावै, सोई पुरुष अनमोल के ॥ ४ ॥

॥ चेतावनी ॥

॥ शब्द १ ॥

तोरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया का रे सोवै ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीन है चोरवा, यह सब कीन्हा सोर—
बटोहिया का रे सोवै ॥ १ ॥
जाग सबेरा बाट अनेड़ा, फिर नहिं लागे जोर—
बटोहिया का रे सोवै ॥ २ ॥
भवसागर इक नदी बहतु है, बिन उतरे जाव बोर[1]—
बटोहिया का रे सोवै ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जागत कीजे भोर—
बटोहिया का रे सोवै ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

दिन रात मुसाफिर जात चला ॥ टेक ॥
जिनका चलना रैन सबेरा, सो क्यों गाफिल रहत परा ॥ १ ॥

१ डूब।

चलना सहर का कौन भरोसा, इक दिन होइहै पवन कला ॥२॥
मात पिता सुत बंधू ठाढ़े, ओड़ि न सकै कोइ एक पला ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, देह धरे का यही फला ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

जागु हो काया गढ़ के मवासी ॥ टेक ॥
जो बंदे तुम जागत रहि हौ, तुमहिं को मिलत सुहाग हो ॥१॥
जागत सहर में चोर न मूसै, नहिं लूटै भंडार हो ॥२॥
अनहद सब्द उठै घट भीतर, चढ़ि के गगन गढ़ गाज हो ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सार सब्द ठकसार हो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

बंदे जागो अब भइ भोर ।
बहुतक सोये जन्म सिराये, इहाँ नहीं कोइ तोर ॥ १ ॥
लोभ मोह हंकार तिरिसना, संग लीन्हे कोर ।
पछिताहुगे तुम आदि अंत से, जइहौ कवनो ओर ॥ २ ॥
जठर अगिन से तोहि उबारे, रच्छा कीन्ह्यो तोर ।
एक पलक तुम नाम न सुमिरे, बड़े हरामोखोर ॥ ३ ॥
बार बार समझाय दिखाऊँ, कहा न माने मोर ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, धिग जीवन जग तोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

का सोवै सुमिरन की बेरिया, ॥ टेक ॥
जिन सिरजा तिन की सुधि नाहीं, झकत फिरो
झक झलनि झलरिया ॥१॥
गुरु उपदेस सँदेस कहत हैं, भजन करो चढ़ि
गगन अटरिया ॥२॥
नित उठि पाँच पचीस कै झगरा, ब्याकुल मोरी
सुरति सुँदरिया ॥३॥

कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भजन बिना तोरि
सूनी नगरिया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मन बौरा रे जग में भूल परी, सतगुरु सुधि बिसरी ॥ टेक ॥
आवत जात बहुत दिन बीते, जैसे रहट घरी।
निर्गुन नाम बिना पछितैहो, फिरि फिरि येहि नगरी ॥ १ ॥
मिथ्या बन तृस्ना के कारन, परजिव हतन करो।
मानुष जन्म भाग से पायो, सुधर के फिर बिगरी ॥ २ ॥
जेहि कारन तुम निसि दिन धायो, धरे पाप मोटरो।
मातु पिता सुत बंधु सहोदर, सुगना कै ललरी[1] ॥ ३ ॥
जग सागर मन भँवर भुलाना, नाना बिधि घुमरी।
तेहि से काल दिया बँदिखाना, चौरासी कोठरी ॥ ४ ॥
कालहिं धाय चीन्हि नहिं पाये, बहु प्रकार भभरो[2]।
ज्यों केहरि[3] प्रतिबिम्ब देखि के, कूप में कूदि परो ॥ ५ ॥
जोरि जोरि बहुत पत गूँधे, भूसा को रसरी।
सत्त लोक की गैल बिसरि गे, परे जोनि जठरी[4] ॥ ६ ॥
सतगुरु सरन हरन भव संकट, ता में चित न धरी।
पानी पाथर देव गोहराये, दर दर भटक मरो ॥ ७ ॥
सुख सागर आगर अबिनासी, ता में चित न धरी।
पासहिं रहा चीन्हि नहिं पाये, सुधि बुधि सकल हरो ॥ ८ ॥
निः चिंता निः तत्त्व निहच्छर, डोरो नहि पकरी।
जा घर से तुम या घर आये, घर की सुधि बिसरी ॥ ९ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरलहि सूझि परो।
सत्तनाम परवाना पावै, ता से काल डरो ॥ १० ॥

---

१ नलनी या कल जिस में तोता फँस जाता है। २ हदस या सहम जाना। ३ शेर। ४ जठराग्नि का स्थान अर्थात उदर॥

॥ शब्द ७ ॥

क्या सोवै गफलत के मारे, जागु जागु उठि जागु रे।
और तेरे कोइ काम न आवै, गुरु चरनन उठि लागु रे ॥ १ ॥
उत्तम चोला बना अमोला, लगत दाग पर दाग रे।
दुइ दिन का गुजरान जगत में, जरत मोह की आग रे ॥ २ ॥
तन सराय में जीव मुसाफिर, करता बहुत दिमाग रे।
रैन बसेरा करि ले डेरा, चलन सवेरा ताक रे ॥ ३ ॥
ये संसार बिषय रस माते, देखो समुझि बिचार रे।
मन भँवरा तजि बिष के बन को, चलु बेगम के बाग रे ॥ ४ ॥
कैंचुलि करम लगाइ चित्त में, हुआ मनुष ते नाग रे।
पैठा नाहिं समुझ सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे ॥ ५ ॥
साहिब भजै सो हंस कहावै, कामी क्रोधी काग रे।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, प्रगटे पूरन भाग रे ॥ ६ ॥

॥ शब्द ८ ॥

बिदेसी सुधि करु अपनो देस ॥ टेक ॥
आठ पहर कहँवाँ तुम भूलो, छाड़ि देहु भ्रम भेस ॥ १ ॥
ज्ञान ठौर सम ठौर न पाओ, या जग बहुत कलेस ॥ २ ॥
जोगी जती तपी सन्यासी, राजा रंक नरेस ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सतगुरु के उपदेस ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

तुम तौ दिये नर कपट किवारो ॥ टेक ॥
वहि दिन कै सुधि भूलि गये हौ, कियो जो कौल करारो।
जाते भजन करौं दिन राती, गहिहौं सरन तुम्हारो ॥ १ ॥
बार बार तुम अरज कियो है, कष्ट निवारु हमारो।
यहाँ आइ कै भूलि पर्यो है, कीयो बहुत लबारो ॥ २ ॥
आपु भुलायो जगत भुलायो, सब को कियो सँघारो।
नाम भजे बिनु कौन बचावै, बहुत कियो मतवारो[1] ॥ ३ ॥

---

१ मस्ती।

बार बार जंगल में धावै, आगि दियो परचारी ।
बहुत जीव तुम परलय कीन्हा, कस होय हाल तुम्हारी ॥४॥
तुम्हरे बदे[1] तो नरक बना है, अगिन कुंड में डारी ।
मार पीटि के जम लै डारै, तब को करत गोहारी ॥५॥
बिन गुरु भक्ति के माता कैसी, जैसो बाँझिन नारी ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भक्ती करो करारी ॥५॥

॥ शब्द १० ॥

मुसाफिर जैहौ कौनी ओर ॥ टेक ॥
काया सहर कहर है न्यारा, दुइ फाठक घनघोर ।
काम क्रोध जहँ मन है राजा, बसत पचीसो चोर ॥ १ ॥
संसय नदी बहै जल धारा, बिषय लहर उठै जोर ।
अब का गाफिल सोवै बौरा, इहाँ नहीं कोइ तोर ॥ २ ॥
उत्तर दिसा इक पुरुष बिदेही, उन पै करो निहोर ।
दाया लागै तब लै जैहैं, तब पावो निज ठौर ॥ ३ ॥
पाछल पैंड़ा समुझो भाई, ह्वै रहो नाम कि ओर ।
कहै कबीर सुनो हो साधो, नाहीं तौ पैहौ झकझोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सुल्तान बलख बुखारे का ॥ टेक ॥
जिनके ओढ़न साल दुसाला, नवो तार दस तारे का ।
सो तो लागे भार उठावन, नव मन गुदरा भारे का ॥ १ ॥
जिनके खाना अजब सराहन[2] , मिसरी खाँड़ छुहारे का ।
अब तो लागे बखत गुजारन, टुकड़ा साँझ सकारे[3] का ॥ २ ॥
जा के संग कटक दल बादल, नौ सै घोड़ कँधारे का ।
सो सब तजि के भये औलिया, रस्ता धरे किनारे का ॥ ३ ॥

---

१ वास्ते, लिये । २ प्रशंसा योग्य । ३ सबेरे ।

चुनि चुनि कलियाँ सेज बिछावै, डासन[1] न्यारे न्यारे का।
सो मरदों ने त्याग दिया है, देखो ज्ञान बिचारे का ॥४॥
सोलह सै साहेलरि[2] छाड़े, साहिब नाम तुम्हारे का।
कहै कबीरा सुनो औलिया, फक्कर भये अखाड़े का ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

धुबिया बन का भया न घर का ॥ टेक ॥
घाटै जाय धुबिनिया मारै, घर में मारै लरिका ॥ १ ॥
आज काल आपै फुटि जाई, जैसे ढेल डगर का ॥ २ ॥
भूला फिरै लोभ के मारे, जेसे स्वान सहर का ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भेद न कहो नगर का ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

भजन कर बीतो जात घरी ॥ टेक ॥
गरभ बास में भगति कबूले, रच्छा आन करी।
भजन तुहार करब हम साहिब, पक्का कौल करी ॥ १ ॥
वहँ से आय हवा जब लागी, माया अमल[3] करी।
दूध पिये मुसकात गोद में, किलकिल कठिन करी ॥ २ ॥
खात पियत अँड़ात गली में, चर्चा वह बिसरी।
ज्वान भये तरुनी सँग माते, अब कहु कैसे करी ॥ ३ ॥
वृद्ध भये तन काँपन लागे, कंचन जात बही।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरथा जनम गई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

करो भजन जग आइ कै ॥ टेक ॥
गरभ बास में भक्ति कबूले, भूलि गए तन पाइ कै ॥ १ ॥
लगी हाट सौदा कब करिहौ, का करिहौ घर जाइ कै ॥ २ ॥
चतुर चतुर सब सौदा कीन्हा, मूरुष मूल गँवाइ कै ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु के चरन चित लाइ कै ॥ ४ ॥

---

१ बिछौना । २ सहेली । ३ नशा ।

॥ शब्द १५ ॥

कोल्हुवा बना तेरा तेलिनी[१] ,पेरे संसार ॥ टेक ॥
करम काठ कै कोल्हुवा हो, संसय परो जाठ[२] ।
लोभ लहर के कातर[३] हो, जग पाचर[४] लाग ॥ १ ॥
तीरथ बरत के बैला हो, मन देहु नधाय[५] ।
लोक लाज कै आँतरि[६] हो, उबरि चलै न कोय ॥ २ ॥
तिरगुन तेल चुआवै हो, तेलहन[७] संसार ।
कोइ न बचे जोगी जती, पेरे बारम्बार ॥ ३ ॥
कुमति महल बसै तेलनी, नापै कड़ुवा तेल ।
दास कबीर दे हेला हो, देखो औरै खेल ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सब्दै चीन्ह मिलै सो ज्ञानी ॥ टेक ॥
गावत गीत बजावत ताली, दुनिया फिरै भुलानी ।
खोटा दाम बाँधि के गाँठी, खोजै बस्तु हिरानी ॥ १ ॥
पोथी बाँधि बगल में दाबे, थापै बस्तु बिरानी ।
मूल मंत्र कै मरम न जानै, कथनी बहुत बखानी ॥ २ ॥
आठो पहर लोभ में भूले, मोह चलै अगवानी ।
ये सब भूत प्रेत होइ धावैं, आगिला जनम नसानी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निरबानी ।
हंसा हमरे सब्द महरमी, सो परखैं निज बानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

तन बैरागी ना करै, मन हाथ न आवै ।
पुरुष बिहूनी नारि को, नित बिरह सतावै ॥ १ ॥

---

१ माया । २ कोल्हू का खंभा । ३ पीढ़ा कोल्हू का जिस पर बैठ कर बैल को हाँकते हैं । ४ पच्चड़ । ५ जोतना । ६ रस्सी जिससे बैल को कोल्हू से नाथ देते हैं । ७ घानी ।

चोवा चंदन अर्गजा, घसि अंग चढ़ावै।
रोकि रहै मग नागिनी, जुग जुग भरमावै ॥ २ ॥
मान बड़ाई उर बसै, कछु काम न आवै।
अष्ट[1] कोठ के भरम में, कस दरसन पावै ॥ ३ ॥
माया प्रान अकोर[2] दे, कर सतगुरु पूरा।
कहै कबीर तब बाचिहौ, जम कागद चीरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १८ ॥

जनम यहि धोखे बीता जात ॥ टेक ॥
जस जल अँचुली में भल सीझै।
छुटि गये प्रान जस तरवर पात ॥ १ ॥
चारि पहर धंधा में बीते।
रैन गँवाई सोवत खाट ॥ २ ॥
एकै पहर नाम को गहि ले।
नाम न गहौ तो कौने साथ ॥ ३ ॥
का लै आये का लै जावो।
मन में देख हृदय पछितात ॥ ४ ॥
जम के दूत पकरि लै जैहैं।
जीभ ऐंठि के मरिहैं लात ॥ ५ ॥
कहै कबीर अबहि नर चेतो।
यह जियरा कै नहिं बिस्वास ॥ ६ ॥

॥ शब्द १९ ॥

भजो सतनाम अहो रे दिवाना ॥ टेक ॥
गुदरी तोरी रंग बिरंगी, धागा अहै पुराना।
वा दरजी से परिचै नाहीं, कैसे पैहो ठिकाना ॥ १ ॥
चाल चलै जस मैगल[3] हाथी, बोली बोलै गुमाना।
ऐहै जम्म पकरि लै जैहै, आखिर नर्क निसाना ॥ २ ॥

---

१ पाँच तत्व और तीन गुन। २ चाट ; घूस। ३ मस्त।

पानी क सुइँस ऐसन सरि जैहै, तब ऐहै परवाना।
सिरजनहार बसै घट भीतर, तुम कस भरम भुलाना ॥ ३ ॥
लौका[1] लौके बिजुली तड़पै, मेघ उठै घमसाना।
कहै कबीर अमी रस बरसै, पीवत संत सुजाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द २०॥

हंसा हो यह देस बिराना ॥ टेक ॥
चहुँ दिसि पाँति बैठि बगुलन की, काल अहेरत[2]
साँझ बिहाना ॥ १ ॥
सुर नर मुनी निरंजन देवा, सब मिलि कीन्हा
एक बँधाना ॥ २ ॥
आपु बँधे औरन को बाँधे, भवसागर को कीन्ह पयाना ॥ ३ ॥
काजी मुलना दुइ ठहराना, इनका कलिया लेत जहाना ॥ ४ ॥
कोइ कोइ हंसा गे सत लोकै, जिन पायो अमर परवाना ॥ ५ ॥
कहै कबीर और ना जैहै, कोटि भाँति हो चतुर सयाना ॥ ६ ॥

॥ शब्द २१ ॥

इक दिन परलै होइ है हंसा, अबहिं सम्हारो हो ॥टेक॥
ब्रह्मा विस्नु जब ना रहै, नहिं सिव कैलासा हो ॥ १ ॥
चाँद सुरज जब ना रहै, नहिं धरनि अकासा हो ॥ २ ॥
जोत निरंजन ना रहै, नहिं भोग भगवाना हो ॥ ३ ॥
सत बिस्नू मन मूल है, परलय तर आई हो ॥ ४ ॥
सोरह संख जुग ना रहै, नहिं चौदह लोका हो ॥ ५ ॥
अंड पिंड जब ना रहै, नहिं यह ब्रह्मंडा हो ॥ ६ ॥
कबीर हंसा पुरुष मिले, मोरे और न भावै हो ॥ ७ ॥
कोटिन परलय टारि कै, तोहि आँच न आवै हो ॥ ८ ॥

---

१ बिजली। २ शिकार करता है।

॥ उपदेश ॥

॥ शब्द १ ॥

बिरहिनी सुनो पिया की बानी ॥ टेक ॥
सहज सुभाव मूल रहु रहनी, सुनो सब्द स्रुत तानी ।
सील सँतोष कै बाँधो कामरि, होइ रहो मगन दिवानी ॥ १ ॥
दुइ फल तोरि मिलो हंसन में, सोई नाम निसानी ।
तत्त भेष धारे जब बिरहिन, तब पिव के मन मानी ॥ २ ॥
कुमति जराइ सुमति उजियारी, तब सूरति ठहरानी ।
सो हंसा सुख सागर पहुँचे, भरै मुक्त जहँ पानी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निरबानी ।
जो या पद की निंदा करिहै, ता की नरक निसानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

सम्हारो सखी सुरति न फूटे गगरी ॥ टेक ॥
कोरा घड़ा नई पनिहारिनि, सील सँतोष की
लागी रसरी ॥ १ ॥
इक हाथ करवा दुसर हाथ रसरी, त्रिकुटी महल
को डगरो पकरी ॥ २ ॥
निसु दिन सुरति घड़ा पर राखो, पिया मिलन
की जुगती यहि री ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पिय तोर बसत
अमरपुर नगरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

बिना भजे सतनाम गहे बिनु, को उतरै भवपारा हो ॥ टेक ॥
पुरइनि[1] एक रहै जल भीतर, जलहिं में करत पुकारा हो ।
वा के पत्र नीर नहिं लागै, ढरकि परै जस पारा हो ॥ १ ॥

---

[1] कँवल के पेड़ ।

तिरिया एक रहै पतिबरता, पिय का बचन न टारा हो।
आपु तरै औरन को तारै, तारै सकल परिवारा हो ॥ २ ॥
सूरा एक चढ़े लड़ने को, पाछे पग नहिं धारा हो।
वा के सुरति रहे लड़ने मेँ, प्रेम मगन ललकारा हो ॥ ३ ॥
नदिया एक अगम्म बहतु है, लख चौरासी धारा हो।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, संत उतरि गे पारा हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अँधियरवा मेँ ठाढ़ गोरी का करलू ॥ टेक ॥
जब लग तेल दिया मेँ बाती, येहि अँजोरवा
बिछाय धलतू ॥ १ ॥
मन का पलँग सँतोष बिछौना, ज्ञान क तकिया
लगाय रखतू ॥ २ ॥
जरि गा तेल बुझाय गइ बाती, सुरति मेँ मुरति
समाय रखतू ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जोतिया मेँ जोतिया
मिलाय रखतू ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

जागि कै जनि सोवो बहुरिया ॥ टेक ॥
जो बहुरी तुम आइ जगत मेँ, जगत हँसै तुम
रोवो बहुरिया ॥ १ ॥
जो बहुरी तुम बनिहौ बनाई, अपने हाथ जनि
खोवो बहुरिया ॥ २ ॥
निसु दिन परी पाप सागर मेँ, लै साधन मेँ धोवो
बहुरिया ॥ ३ ॥
चाखो नाम अमी रस प्याला, तेज[1] बिषै रस
मोवो बहुरिया ॥ ४ ॥

---

१ तज या छोड़ कर।

कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सत्तनाम जपि
लेवो बहुरिया ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुन सुमति सयानी, तोहि तन सारी कौन दई ॥ टेक ॥
रँगरेज न चीन्हो, रँगरेज कछू लखि ना परै ॥ १ ॥
मिलो मिलो सतगुरु से, धर्मराय नहिं खूँट गहै ॥ २ ॥
जौ लौं अटक न छूटै, तौ लौं भर्म खुवार करी ॥ ३ ॥
दुबिधा के मारे, सुर नर मुनि बेहाल भये ॥ ४ ॥
कहि कहि समझाऊँ, तोहि मन ग़ाफ़िल ख़बर नहीं ॥ ५ ॥
भवसागर नदिया, साहिब कबीर गुरु पार करी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

ऐसी रहनि रहौ बैरागी।
सदा उदास रहै माया से, सत्तनाम अनुरागी ॥ १ ॥
छिमा की कंठी सील सरौनी[1], सुरति सुमिरनी जागी।
टोपी अभय भक्ति माथे पर, काल कल्पना त्यागी ॥ २ ॥
ज्ञान गूदरी मुक्ति मेखला, सहज सुई लै तागी।
जुगति जमात कूबरी करनी, अनहद धुनि लौ लागी ॥ ३ ॥
सब्द अधार अधारी कहिये, भीख दया की माँगी।
कहै कबीर प्रीति सतगुरु से, सदा निरंतर लागी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सोइ बैरागी जिन दुबिधा खोई ॥ टेक ॥
टोपी तंत सुमिरनी चितवै, सेली अनहद होई।
नाम निरंतर चोलना पहिरे, सो लै सुरति समोई ॥ १ ॥
छिमा भाव सहज की चोबो[2], झोरी ज्ञान की डोरी।
दिल माँगे तो सौदा कीजे, ऊँच नीच ना कोई ॥ २ ॥

---

१ कान में लगाने की डाट। २ छड़ो।

भुँइ कर आसन अकास को ओढ़न, जोति चंद्रमा सोई।
रैन पैान दुइ करै रखवारी, दृढ़ आसन करि सोई ॥ ३ ॥
उनमुनि दृष्टि उदास जगत मैं, भरम कै महल ढहाई।
करि असनान सोहं सागर मैं, बिमल अनहद धुनि होई ॥ ४ ॥
एक एक से मिलै रैन मैं, दिल की दुबिधा धोई।
कहै कबीर अमर घर पावै, हंस बिछोह न होई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अगम की सतगुरु राह उघारी ॥ टेक ॥
जतन जतन जो तन मन सिरजे, सुखमन सेज सँवारी।
जागत रहै पलक नहिं लागै, चाखत अमल करारी ॥ १ ॥
सुमति क अंजन भरि भरि दीजै, मिटै लहर अँधियारी।
छूटै त्रिबिधि भरम भय जन का, सहजे भइ उँजियारी ॥ २ ॥
ज्ञान गली मुक्ती के द्वारे, पच्छिम खुलै किवारी।
नैाबत बाजि धुजा फहरानी, सूरति चढ़ी अटारी ॥ ३ ॥
एही चाल मिलो साहिब से, मानो कही हमारी।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, चेत चलो नर नारी ॥ ४ ॥

॥ माया ॥

॥ शब्द १ ॥

साधो बाघिन खाइ गइ लोई ॥ टेक ॥
अंजन नैन दरस चमकावै, हँसि हँसि पारै गारी।
लुभुकि लुभुकि चरै अभि अंतर, खात करेजा काढ़ी ॥ १ ॥
नाक धरे मुलना कान धरे काजी, औालिया बछरू पछारी।
छत्र भूपती राम बिडारा, सोखि लीन्ह नर नारी ॥ २ ॥
दिन बाघिन चकचैाँधी लावै, राति समंदर सोखी।
ऐसन बाउर नगरि के लोगवा, घर घर बाघिन पोसी ॥ ३ ॥

इन्द्राजित औ ब्रह्मादिक दुनि, सिव मुख बाघिन आई ।
गिरि गोबरधन नख पर राख्यो[1], बाघिन उनहुँ मरोरी ॥ ४ ॥
उतपति परलै दोउ दिसि बाघिन, कहै कबीर बिचारी ।
जो जन सत्त कै भजन करत है, ता से बाघिन न्यारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

यह समधिन जग ठगै मजगूत[2] ॥ टेक ॥
यह समधिन के मात पिता नहिं, और धिया ना पूत ॥ १ ॥
यह समधिन के गाँव ठाँव नहिं, करत फिरै सगरे अजगूत[3] ॥ २ ॥
ठगत ठगत यह सुर पुर खाये, ब्रह्मा बिस्नु महेस को खात ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, ठगनी कै अंत काहु नहिं पात ॥ ४ ॥

॥ मिश्रित ॥

॥ शब्द १ ॥

ठगिया हाट लगाये भवसागर तिरवा ॥ टेक ॥
आगे आगे पंडित चालत, पाछे सब दुनियाई ॥ १ ॥
कोटिन बेदे[4] स्वान के लागे, मिटे न पूँछ टेढ़ाई ॥ २ ॥
इक दुइ होय ताहि समझाओं, सृष्टि गई बौराई ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, को बकि मरै लबराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

कुमतिया दारुन नितहिं लरै ॥ टेक ॥
सुमति कुमतिया दूनोँ बहिनी, कुमति देखि कै सुमति डरै ॥१॥
औषद न लागै दुाई न लागै, घूमि घूमि जस बीछु चढ़ै ॥२॥
कितना कहौं कहा नहिं मानै, लाख जीव नित भच्छ करै ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, वह बिष संत के झारे झरै ॥४॥

---

१ श्रीकृष्ण । २ मज़बूत । ३ अचरज । ४ बिधि, भाँति ।

॥ शब्द ३ ॥

नर तोहिं नाच नचावत माया ।

नाम हेत कबहीं नहिं नाचे, जिन यह सिरजल काया ॥ १ ॥

सकल बटोर करै बाजीगर, अपनी सुरति नचाया ।

नावत माथ फिरो बिषयन सँग, नाम अमल बिसराया ॥ २ ॥

भुगते अपनी करनी करि करि, जो यह जग में आया ।

नाम बिसारि यही गति सब की, निसु दिन भरम भुलाया ॥ ३ ॥

जेहि सुमिरे ते अचल अछय पद, भक्ति अखंडित पाया ।

कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भक्त अमर पद पाया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सखी हो सुनि लो हमरो ज्ञाना ॥ टेक ॥

मात पिता घर जन्म लियो है, नैहर भे अभिमाना ।

रैन दिवस पिय संग रहत है, मैं पापिनि नहिं जाना ॥ १ ॥

मात पिता घर जन्म बीति गे, आय गवन नगिचाना ।

का लै मिलौं पिया अपने से, करिहौं कौन बहाना ॥ २ ॥

मानुष जन्म तो बिरथा खोये, सत्तनाम नहिं जाना ।

हे सखि मेरो तन मन काँपै, सोई सब्द सुनो काना ॥ ३ ॥

रोम रोम जा के पद परगासा, ता को निर्मल ज्ञाना ।

कहै कबीर सुनो भाइ साधो, करो इस्थिर मन ध्याना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पायो निज नाम गले के हरवा ॥ टेक ॥

सतगुरु कुंजी दई महल की,

जब चाहो तब खोल किवरवा ।

सतगुरु पठवा अगवनिहरवा,[१]

छोटि मोटि डुलिया चारि कहरवा ॥ १ ॥

---

१ बुलाने वाला ।

प्रेम प्रीति की पहिरि चुनरिया,
निहुरि निहुरि नाचैाँ दरबरिया।
यह मेरो ब्याह यही मेरो गवना,
कहै कबीर बहुरि नहिँ अवना ॥ २ ॥

॥ शब्द ६ ॥

बिदेसी चलो अमरपुर देस।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, छाड़ो यह परदेस ॥ १ ॥
छाड़ो काम क्रोध औ माया, सुनि लीजे उपदेस।
ममता मेटि चलो सुख सागर, काल गहै नहिं केस ॥ २ ॥
तीनि देव पहुँचै नहिं तहवाँ, नहिं तहँ सारद सेस।
लोक अपार तहँ पार न पावे, नहिँ तहँ नारि नरेस ॥ ३ ॥
हंसा देस तहाँ जा पहुँचे, देखो पुरुष दरेस[1]।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, मानि लेहु उपदेस ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

परदेसिया तू मोर कही मानु हो ॥ टेक ॥
पाँच सखी तोरे निसु दिन ब्यापै, उनके रूप पहिचान हो ॥१॥
ब्रम्हा बिस्नु महेसुर देवा, घर घर ठाकुर दिवान हो ॥२॥
तिरगुन तीन मता है न्यारा, अरुझो सकल जहान हो ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आदि सनेही मोहिँ जान हो ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मोर पियवा ज्वान मैँ बारी ॥ टेक ॥
चारि पदारथ जगत बीचि मैँ, ता मैँ बरतन हारी ॥१॥
मेरी कही पिय एक न मानै, जुग जुग कहि के हारी ॥२॥
ऊँची अटरिया कैसे क चढ़बैाँ, बोलै कोइलिया कारी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, केहू न बेदन टारी ॥४॥

---

१ दर्शन।

॥ शब्द ९ ॥

संतो चूनर मोर नई ।
पाँच तत्त के बनल चुनरिया, सतगुरु मोहिं दई ॥ १ ॥
रात दिवस के ओढ़त पहिरत, मैली अधिक भई ।
अपने मन संकोच करत है, किन रँग बोर दई ॥ २ ॥
बड़े भाग हैं चूनर के रे, सतगुरु मिले सही ।
जुगन जुगन की छुटि मैलाई, चटक से चटक भई ॥ ३ ॥
साहिब कबीर यह रंग रचो है, संतन कियो सही ।
जो यह रँग की जुगत बतावै, प्रेम में लटक रही ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

पहिरो संत सुजान, भजन कै चोलनियाँ ॥ टेक ॥
गुरु हीरा करो हार, प्रेम कै झूलनियाँ[1] ।
कंकन रतन जड़ाव, पचीसो लागे घूँघुरियाँ ॥ १ ॥
पूरन प्रेम अनंद, धुनन की झालरियाँ ।
दही लै निकरी ग्वालिन, सुरति के डागरियाँ ॥ २ ॥
है कोइ संत सुजान, करै मोरी बोहनियाँ ।
चलो मोरे रंग महल में, करौं तोरी बोहनियाँ ॥ ३ ॥
लगि सेज सँवारे, छुटि गई तन तापनियाँ ।
मिले दास कबीरा, बहुरि न आवै संसारनियाँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

साधो मन कुँजड़ी नीक नियाई[2] ॥ टेक ॥
तन बारी तरकारी करि ले, चित करि ले चौराई ।
गुरू सब्द का बैंगन करि ले, तब बनिहै कुँजड़ाई ॥ १ ॥
प्रेम के परवर धरो डलिया में, आदि को आदी लाई ।
ज्ञान के गजरा दृढ़ कर राखो, गगन में हाट लगाई ॥ २ ॥

१ नथ । २ न्यायकारी, सुकर्मी ।

लौ की लौकी धरो पलरे में, सील कै सेर चढ़ाई।
लेत देत के जो बनि आवै, बहुरि न हाट लगाई ॥ ३ ॥
मन धोओ दिल जान से प्यारे, निर्गुन बस्तु लखाई।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सिंधु में बुंद समाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुँगवा नसा पियत भो बौरा ॥ टेक ॥
पी के नसा मगन होइ बैठा, तिरथ बरत नहिं दौड़ा ॥ १ ॥
खोलि पलक तीनि लोके देखा, पौढ़ि रहे जस पौढ़ा ॥ २ ॥
बड़े भाग से सतगुरु मिलिगे, घोरि पियाये जस मोहरा[1] ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गया साध नहिं बहुरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

नाम बिना कस तरिहै, भूला माली ॥ टेक ॥
माटी खोदि के चौरा बाँधा, ता पर दूब चढ़ाई।
सो देवता को कूकुर चाटै, सो कस जाग्रत भाई ॥ १ ॥
पत्थर पूजे जो हरि मिलते, तौ हम पुजत पहारा[2]।
घर की चक्की कोइ न पूजै, जा कै पीसल खाय संसारा ॥ २ ॥
भूला माली फूलहि तोरै, फूल पत्र में जीव।
जो देवता को फूल चढ़ाये, सो देवता निरजीव ॥ ३ ॥
पत्थर काटि कै मुरत बनाये, देइ छाती पर लात।
वा देवा में सक्ति जो होती, गढ़नहार को खात ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह सब लोक तमासा।
यह तन जात बिलम ना लागे, (जस) पानी पड़े बतासा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

कोइ ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही ॥ टेक ॥
ब्रह्म तेज की प्रेम कटारी, धीरज ढाल बनाई।
त्रिकुटी ऊपर ध्यान लगाई, सुरति कमान चढ़ाई ॥ १ ॥

---

१ ज़हर मोहरा—बिष दूर करने की दवा। २ पहाड़।

सिंगरा[1] सत्त समुझि कै बाँधो, तन बंदूक बनाई।
दया प्रेम का अड़बंद[2] बाँधो, आतम खोल लगाई॥ २॥
सत्त नाम लै उड़ै पलीता, हर दम चढ़त हवाई[3]।
दम के गोला घट भीतर में, भरम के मुरचा ढहाई॥ ३॥
सार सब्द का पटा लिखावो, चलत जगीरी पाई।
दया मूल संतोष धिरज लै, सहज काल टरि जाई॥ ४॥
सील छिमा की पारस पथरी, चित चकमक चमकाई।
पहिले मारे मोह के मुरचा, दुबिधा दूर बहाई॥ ५॥
अविगत राज बिबेक भये हैं, अजर अमर पद पाई।
ममता मोह क्रोध सब भागे, लायो पकरि मन राई॥ ६॥
पाँच पचीस तीन को बस करि, फेरी नाम दुहाई।
निर्मल पद निरबान गुरू का, संत सुरंग लगाई॥ ७॥
चुगुल चोर सब पकरि मँगाये, अनहद डंक बजाई।
साहिब कबीर चढ़े गढ़ बंका, निरभय बाज बजाई॥ ८॥

॥ शब्द १५॥

अबधू चाल चलै सो प्यारा॥ टेक॥
निसु दिन नाम बिदेही सुमिरै, कबहूँ न सूरति टारा॥ १॥
सुपने नाम न भूलै कबहूँ, पलक पलक ब्रत धारा॥ २॥
सब साधुन से इक ह्वै रहवै, हिल मिल सब्द उचारा॥ ३॥
कहै कबीर सुनो हो अबधू, सत्तनाम गहि तारा॥ ४॥

॥ शब्द १६॥

निरंजन धन तेरो परिवार॥ टेक॥
रंग महल में जंग खड़े हैं, हवलदार औ सूबेदार।
धूर धूप में साध बिराजे, काहे को करतार॥ १॥
बिस्वा ओढ़े खासा मलमल, मोती मूँगा के हार।
पतिब्रता को गजी जुरै नहि, रूखा सूख अहार॥ २॥

[1] बारूतदान। [2] लँगोट। [3] अग्निबान।

पाखंडी कौ आदर जग में, साच न मानै लबार ।
साचा मानै साध बिबेकी, झूठा मानै गँवार ॥ ३ ॥
कहै कबीर फकीर पुकारी, सब्द गहो टकसार ।
साचि कहौं जग मारन धावै, झूठा है संसार ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

काया नगर में अजब पेच है, बिरले सौदा पाया हो ॥ टेक ॥
ओहि दुकनिया के तीन सौदागर, पाँच पचीस भरि लाया हो ।
खाँड़ कपूर एक सँग लादै, कहु कैसे बिलमाया हो ॥ १ ॥
ऊँची दुकनिया क नीची दुवरिया, गाहक फिरि फिरि जाई हो ।
चतुर चतुर सब सौदा कीन्हा, मूरुख भाव न पाई हो ॥ २ ॥
सार सब्द के बने पालरा, सत कै डाँड़ो लागी हो ।
सतगुरु समरथ घट सौदागर, जो तौलत बनि आवै हो ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरले सौदा पाया हो ।
आपु तरै जग जिव मुक्तावै, बहुरि न भवजल आवै हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १८ ॥

कोइ कहा न मानै हम काहे के कही ॥ टेक ॥
पूजि आतमा पुजै पषाना, ताते दुनिया जात बही ॥ १ ॥
पर जिव मारि आपन जिव पालै, ता कै बदला तुरत चही ॥ २ ॥
लख चौरासी जीव जंतु है, ता में रमिता हमहिं रही ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सत्त नाम तुम काहे न गही ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये ॥ टेक ॥
एक जोइनि से चार बरन भे, हाड़ मास जिव गूदा ।
सुत परि दूजे नाम धराये, वा को करम न छूटा ॥ १ ॥
छेरी खाये भेड़ी खाये, बकरी टीका टाके[1] ।
सरब माँस एक है पंडित, गैया काहे बिलगाये ॥ २ ॥
कन्या जाति जाति की बेचत, कौने जाति कहाये ।
आपन कन्या बेचन लागे, भारी दाम चढ़ाये ॥ ३ ॥
जहँ लगि पाप अहै दुनियाँ में, सो सब काँध चढ़ाये ।
कहै कबीर सुनो हो पंडित, घर चौरासी मा छाये ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

पंडित सुनहु मनहिं चित लाई ॥ टेक ॥
जोई सूत कै बन्यो जनेऊ, ता की पाग[2] बनाई ।
धोती पहिरि के भोजन कीन्हा, पगरी में छूत लगाई ॥ १ ॥
रकत माँस को दूध बनो है, चमड़ा धरी दुराई ।
सोई दूध से पुरखा तरिगे, चमड़ा में छूत लगाई ॥ २ ॥
जनम लेत उढ़री[3] अबला[4] के, लै मुख छीर पियाई ।
जब पंडित तुम भये गियानी, चालत पंथ बड़ाई ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो हो पंडित, नाहक जग में आई ।
बिना बिबेक ठौर ना कतहूँ, बिरथा जनम गँवाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

पंडित बाद बेद से झूठा ।
राम के कहे जगत तरि जाई, खाँड़ कहे मुख मीठा ॥ १ ॥
पावक कहे पाँव जो जरई, जल कहे त्रिषा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भागै, तब दुनिया तरि जाई ॥ २ ॥

---

१ बकरा को बलिदान देने के पहिले उस के रोरो का टीका लगा देते हैं ।
२ पगड़ी । ३ धरूक, सुरैतिन । ४ स्त्री ।

नर के पास सुवा आइ बोलै, गुरु परताप न जाना ।
जो कबही उड़ि जान जँगल मैं, बहुरि सुरत नहिं आना ॥ ३ ॥
बिन देखे बिन दरस परस बिन, नाम लिये का होई ।
धन के कहे धनी जो होई, निरधन रहै न कोई ॥ ४ ॥
साँची हेत बिषै माया से, सतगुरु सब्द की हाँसी ।
कहै कबीर गुरू के बेमुख, बाँधे जमपुर जाहीं ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

नाम मैं भेद है साधो भाई ॥ टेक ॥
जो मैं जानूँ साचा देवा, खट्टा मीठा खाई ।
माँगि पानी अपने से पीवै, तब मोरे मन भाई ॥ १ ॥
ठुक ठुक करिके गढ़े ठठेरा, बार बार तावाई[1] ।
वा मूरत के रहो भरोसे, पछिला धरम नसाई ॥ २ ॥
ना हम पूजी देवी देवा, ना हम फूल चढ़ाई ।
ना हम मूरत धरी सिंघासन, ना हम घंट बजाई ॥ ३ ॥
कासी मैं जो प्रान तियागे, सो पत्थर भे भाई ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भरमे जन भकुवाई[2] ॥ ४ ॥

१ आग में ताव देकर । २ भकुआ या सिड़ी होकर ।

हिन्दी-पुस्तकमाला

नवकुसुम भाग १ }
नवकुसुम भाग २ } इन दोना भागों में छोटी छोटी रोचक शिक्षाप्रद कहानियाँ संग्रहित हैं। मूल्य पहला भाग ।॥) दूसरा भाग ॥)

सचित्र विनय पत्रिका—बड़े बड़े हर्फ़ों में मूल और सविस्तार टीका है। सुन्दर जिल्द तथा गुसाईंजी के ३ चित्र भिन्न भिन्न अवस्था के हैं मूल्य २॥) और सजिल्द ३)

करुणा देवी—यह सामयिक उपन्यास बड़ा मनमोहक और शिक्षाप्रद है। स्त्रियों को अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ॥=)

हिन्दी-कवितावली—छोटी छोटी सरल बालोपयोगी कविताओं का संग्रह है। मूल्य -)

सचित्र हिन्दी महाभारत—कई रंगीन मनमोहक चित्र तथा सरल हिन्दी में महाभारत की सम्पूर्ण कथा है। सजिल्द दाम ३)

गीता—(पाकेट एडिशन) श्लोक और उनका सरल हिन्दी में अनुवाद है। अन्त में गूढ़ शब्दों का कोश भी है। सुन्दर जिल्द मूल्य ।॥=)

उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा—इस उपन्यास को पढ़ कर देखिये। कैसी अच्छी सैर है। बार बार पढ़ने का ही जी चाहेगा। मूल्य ॥)

सिद्धि—यथा नाम तथा गुणः। अपने अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥)

महारानी शशिप्रभा देवी—एक विचित्र जासूसी शिक्षादायक उपन्यास मूल्य १।)

सचित्र द्रौपदी—इसमें देवी द्रौपदी के जीवन चरित्र का सचित्र वर्णन है। मूल्य ।॥)

कर्मफल—यह सामाजिक उपन्यास बड़ा शिक्षाप्रद और रोचक है। मूल्य ।॥)

दुःख का मीठा फल—इस पुस्तक के नाम ही से समझ लीजिये। मूल्य ।॥=)

लोक संग्रह अथवा संतति विज्ञान—इसे कोक शास्त्रों का दादा जानिए। मूल्य ।॥=)

हिन्दी साहित्य प्रदीप—कक्षा ५ व ६ के लिए उपयोगी है (सचित्र) मूल्य ॥=)

काव्य निर्णय—दास कवि का बनाया हुआ टीका-टिप्पणी सहित मूल्य १।)

सुमनोऽञ्जलि भाग १—हिन्दू धर्म सम्बन्धी अपूर्व और अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है। इसके लेखक मिश्रबन्धु महोदय हैं। सजिल्द मूल्य ॥=)

सुमनोऽञ्जलि भाग २ काव्यालोचना सजिल्द ॥=)

सुमनोऽञ्जलि भाग ३ उपदेश कुसुमावली मूल्य ॥=)

(उपरोक्त तीनों भाग इकट्ठे सुन्दर सुनहरी जिल्द बँधी है) मूल्य २)

सचित्र रामचरितमानस—यह असली रामायण बड़े हरफ़ों में टीका सहित है। भाषा बड़ी सरल और लालित्य पूर्ण है। इस रामायण में २० सुन्दर चित्र, मानस-पिंगल और गोसाईं जी की वृहत् जीवनी है। पृष्ठ संख्या १२००, चिकना कागज़

मूल्य (De Lux Edition) केवल ६॥) । इसी असली रामायण का एक सस्ता सस्करण ११ बहुरंगा और ८ रंगीन यानी कुल १० सुन्दर चित्र सहित और सुनहरी जिल्द सहित १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके काग़ज़ उमदा हैं।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ।॥=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। वह मानस-कोश का भी काम देगा। मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है। मूल्य -)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहो ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी त्रिवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।=)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

संदेह—यह एक मौलिक क्रांतिकारी नया उपन्यास है। मूल्य ।॥) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह तथा परिचय है। मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है। पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है। इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं। तेरहो चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं। रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है। जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

बोधा गुरु की कथा—इस देश में बोधा गुरु की हास्यपूर्ण कहानियाँ बड़ी ही प्रचलित हैं। उन्हीं का यह संग्रह है। शिक्षा लीजिए और ख़ूब हँसिए। ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है। पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है। दाम ॥-)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)

सावित्री और गायत्री—यह उपन्यास सब प्रकार की घरेलू शिक्षा देगा और रोज़ाना ब्योहार में आने वाली बातें बतावेगा। अवश्य पढ़िये। जी ख़ूब लगेगा। दाम ॥)

फ़्राँस की राज्य क्राँति का इतिहास मूल्य ।=)

हिन्दी साहित्य सरोज—तीसरी और चौथी कक्षा के लिए। मूल्य ॥-)॥

हिन्दी साहित्य रत्न—(७ वीं कक्षा के लिए) मूल्य ॥=)

बाल शिक्षा भाग १—बालकों के लिए बड़े बड़े हर्फ़ों में सचित्र रंगीन चित्र सहित है। इसमें शिक्षा भरी पड़ी है। मूल्य ।)

बाल शिक्षा भाग २—उसी का दूसरा भाग है। यह भी सचित्र और सुन्दर छपी है ।-)

बाल शिक्षा भाग ३—यह तीसरा भाग तो पहले दोनों भागों से सुन्दर है और फिर सचित्र छपा भी है। लड़के लोट पोट हो जायँगे। मूल्य ॥)

भारत की सती स्त्रियाँ—हमारी सती स्त्रियों की संसार में बड़ी महिमा है। इसमें २६ सती स्त्रियों का जीवन चरित्र है। और कई रंग बिरंगे चित्र हैं। पुस्तक सचित्र साफ़ सुथरी है। मूल्य १)

सचित्र बाल बहार—लड़कों के लायक सचित्र पद्यों में छपी है दाम =)

दो वीर बालक—यह सचित्र पुस्तक वीर बालक इलावंत और बभ्रुवाहन के जीवन का वृत्तांत है। यह पुस्तक बड़ी सुन्दर शिक्षा दायक और सरल है। दाम ।=)

नल-दमयन्ती (सचित्र) दाम ॥-)

प्रेम परिणाम—प्रेम सम्बन्धी अनूठा उपन्यास दाम ।॥)

योरप की लड़ाई—गत यूरोपीय महायुद्ध का रोमांचकारी वृत्तांत दाम ।-)

समाज-चित्र (नाटक सचित्र)—आज कल के समाज के कुप्रथाओं का जीता-जागता उदाहरण सम्मुख आ जाता है। सचित्र दाम ।॥)

पृथ्वीराज चौहान (ऐतिहासिक नाटक) ६ रंगीन और २ बहुरंगे कुल ८ चित्र हैं। नाटक रंग मंच पर खेलने योग्य है। पढ़ने में जी ख़ूब लगने के अलावा अपूर्व वीरता की शिक्षा भी मिलती है। १।)

सती सीता—सीता जी के अपूर्व चरित्रों का सरल हिन्दी में वृत्तांत। ॥=)

भारत के वीर पुरुष—प्रत्येक भारतीय वीर पुरुषों की जीवनी बड़े रोचक ढंग से लिखी है। पुस्तक पढ़ कर प्रत्येक भारतीय वीर बन सकता है। १।)

भक्त प्रह्लाद (नाटक) ।=)

स्कंद गुप्त (नाटक) १।)

बाल रामायण—सरल हिन्दी में रामायण की पूरी कथा बच्चों के लिए ॥)

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की पुस्तकें

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

पुस्तक	मूल्य
कबीर साहिब का अनुराग सागर	१)
कबीर साहिब का बीजक	॥)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	।=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।=)
कबीर साहिब की अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १ ...	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित ...	१=)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	१।-)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	१॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	१)
सुन्दर बिलास	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	॥)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया ...	॥)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	॥)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग	॥-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	॥-)
दूलन दास जी की बानी, ...	।)॥

चरनदास जी की बानी, पहला भाग	...	...	॥।-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	...	...	॥।-)
गरीबदास जी की बानी	...	...	१।-)
रैदास जी की बानी	...	...	॥)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	...	...	।=)॥
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	...	...	।-)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	...	...	।=)
भीखा साहिब की शब्दावली	...	...	॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी	...	...	॥।=)
बाबा मलूकदास जी की बानी	...	...	।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	...	...	-)
यारी साहिब की रत्नावली	...	...	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	...	...	।)
केशवदास जी की अमींघूँट	...	...	-)॥
धरनी दास जी की बानी	...	...	।=)
मीराबाई की शब्दावली	...	...	॥=)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	...	...	।=)॥
दया बाई की बानी	...	...	।)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	...	...	१॥)
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	...	...	१॥)
			कुल २३॥=)
अहिल्या बाई	...	...	=)

दाम में डाक महसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

कबीर साहेब की शब्दावली

॥ चौथा भाग ॥

जिस में

उन महात्मा का ककहरा और फुटकल शब्द सुंदर और अनूठी रागों में (जैसे राग गारी, राग जँतसार) छपे हैं।

और गूढ़ शब्दों के अर्थ नोट में लिखे हैं।

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

सन् १९३३ ई०

चौथी बार] [दाम ≡)

Printed and Published at The Belvedere Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियां हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मंगवाये। भर-सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट-नोट में लिख दिए गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में १९१६ में छपी है जिसके विषय में बैकुंठ बासी श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा था—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं, जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है, देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापे गए हैं जिनका दाम क्रमशः ॥।) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

जुलाई १९३२ ई०

इलाहाबाद।

सूचीपत्र

कबीर साहिब की शब्दावली

॥ चौथा भाग ॥

राग मंगल

(१)

पिया मिलन की आस, रहौं कब लौं खड़ी।
ऊँचे चढ़ि नहिं जाय, मनैं लज्जा भरी ॥ १ ॥
पाँव नहीं ठहराय, चढ़ूँ गिरि गिरि पड़ूँ।
फिरि फिरि चढ़हुँ सम्हारि, चरन आगे धरूँ ॥ २ ॥
अंग अंग थहराय, तो बहु बिधि डरि रहूँ।
कर्म कपट मग घेरि, तो भ्रम में भुलि रहूँ ॥ ३ ॥
निपठ बारि अनारि, तो झीनी गैल है।
अटपट चाल तुम्हारि, मिलन कस होइ है ॥ ४ ॥
तेजो[1] कुमति बिकार, सुमति गहि लीजिये।
सतगुरु सब्द सम्हारि, चरन चित दीजिये ॥ ५ ॥
अंतर पट दे खोल, सब्द उर लाव री।
दिल बिच दास कबीर, मिलैं तोहि बावरी ॥ ६ ॥

(२)

उठो सोहंगम नारि, प्रीति पिया सों करो।
यह उरले[2] ब्योहार, दूर दुरमति धरो ॥ १ ॥
पाँच चोर बड़ जोर, संगि एते घने।
इन ठगियन के साथ, मुसै घर निसु दिने ॥ २ ॥

---

(१) तजो, छोड़ो। (२) संसारी।

सोवत जागत चोर, करै चोरी घनी।
आपु भये कुतवाल, भलो बिधि लूटहीं ॥ ३ ॥
द्वादस नगर मँझार, पुरुष इक देखिये।
सोभा अगम अपार, सुरति छबि पेखिये ॥ ४ ॥
होत सब्द घनघोर, संख धुनि अति घनी।
तंतन की झनकार, बजत झीनी झिनी ॥ ५ ॥
है कोइ महरम साध, भले पहिचानिये।
सतगुरु कहे कबीर, संत की बानि ये ॥ ६ ॥

(३)

गुन करु बवरी गुन करु, जब लग नैहर बास हो।
पुनि धनि जैहै ससुरे, कंत पियारे पास हो ॥ १ ॥
जब लग राज पिता घर, गुन करि लेहु हो।
सासु ननद के बुलवन, उत्तर का देहु हो ॥ २ ॥
आये भाट बराम्हन, लगन धराइन हो।
लगन सुनत गवने कै, मुँह कुम्हिलाइन हो ॥ ३ ॥
बाजन बाजे गहगहा, नगर उठै झनकार हो।
प्रीतम कहूँ न देखल, आयो चालनहार हो ॥ ४ ॥
लै रे उतारिन तेहि घर, जहँ दिस न दुवार हो।
मन मन झुरवै दुलहिनि, काह कीन्ह करतार हो ॥ ५ ॥
जो मैं जनतिउँ ऐसन, गुन करि लेतिउँ हो।
जातिउँ साहिब के देसवाँ, परम सुख पैतिउँ हो ॥ ६ ॥
चेति ले बवरी चेति ले, चेति लेहु दिन चारी हो।
यह संगत सब छूटि है, कहत कबीर बिचारी हो ॥ ७ ॥

(४)

मंगल एक अनूप, संत जन गावहीं।
उपजै प्रेम बिलास, परम सुख पावहीं ॥ १ ॥

सतगुरु बिप्र बुलाय, तो लगन लिखावहीं।
संत कुटुम परिवार, तो मंगल गावहीं ॥ २ ॥
बहु बिधि आरति साजि, तो चौक पुरावहीं।
मोतियन थार भराइ के, कलस लेसावहीं ॥ ३ ॥
हीरा हंस बिठाय, तो शब्द सुनावहीं।
जेहि कुल उपजे संत, परम पद पावहीं ॥ ४ ॥
मिटो करम को अंक, जबै आगम भयो।
पायो सूरति सोहं, संसय सब गयो ॥ ५ ॥
भक्ति हेत चित लाय, तो आरति उर धरो।
तजि पाखँड अभिमान, तो दुरमति परिहरो ॥ ६ ॥
तन मन धन औ प्रान, निछावर कीजिये।
त्रिगुन फन्द निरुवारि, पान निज लीजिये ॥ ७ ॥
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीं।
कहैं कबीर समुझाय, बहुरि नहिं आवहीं ॥ ८ ॥

(५)

पूरनमासी आदि, जो मंगल गाइये।
सतगुरु के पद परसि, परम पद पाइये ॥ १ ॥
प्रथमे मँदिल झराइ के, चँदन लिपाइये।
नूतन बस्तर आनि के, चँदवा तनाइये ॥ २ ॥
(तब) पूरन गुरु के हेत, तो आसन बिछाइये।
गुरु के चरन प्रछालि, तहाँ बैठाइये ॥ ३ ॥
गज मोतियन को चौक, सो तहाँ पुराइये।
ता पर नरियर धोति, मिष्टान्न धराइये ॥ ४ ॥
केरा और कपूर, तो बहु बिधि लाइये।
अष्ट सुगंध सुपारि, तो पान मँगाइये ॥ ५ ॥

पल्लौ सहित सो कलसा, जोति बराइये।
ताल मृदंग बजाइ के, मंगल गाइये ॥ ६ ॥
साधु संत सँग लैके, आरति उतारिये।
आरति करि पुनि नरियर, तबहि मोराइये ॥ ७ ॥
पुरुष को भोग लगाइ, सखा मिलि पाइये।
जुग जुग छुधा बुझाइ, तो पाइ अघाइये ॥ ८ ॥
परमानन्दित होय, तो गुरुहिं मनाइये।
कहै कबीर सत भाय, तो लोक सिधाइये ॥ ९ ॥

(६)

सत्त सुकृत सत नाम, सुमिरु नर प्रानी हो।
सुमति से रचहु बियाह, कुमति घर छाड़ी हो ॥ १ ॥
सत्त सुकृत कै माँड़ो, तो रुचि रुचि छावो हो।
सतगुरु बिप्र बुलाय कै, कलस धरावो हो ॥ २ ॥
पहिली भँवरिया बेद, पढ़ै मुनि ज्ञानी हो।
दुसरि भँवरिया तिरथ, जा को निरमल पानी हो ॥ ३ ॥
तिसरी भँवरिया भक्ति, दुबिधा जिनि लावो हो।
चौथी भँवरिया प्रेम, प्रतीत बढ़ावो हो ॥ ४ ॥
पँचईं भँवरिया अलख, सँग सुमति सयानी हो।
छठईं भँवरिया छिमा, जहँ अमी नहानी हो ॥ ५ ॥
सतईं भँवरिया साहिब मिले, मिटि आवा जानी हो।
प्रेम मगन भइ भाँवर, उठत धुन तानी हो ॥ ६ ॥
सतगुर गाँठि प्रेम की, छोड़ि ना छूटै हो।
लागि रहो गुरु ज्ञान, डोरि ना टूटै हो ॥ ७ ॥
दास कबीर कै मंगल, जो कोइ गावै हो।
बसै सत लोक में जाइ, अमर पद पावै हो ॥ ८ ॥

(७)

मानुष जन्म अमोल, सुकृत को धाइये।
सुरति कुवारी कन्या, हंसा सँग ब्याहिये ॥ १ ॥
सतगुरु बिप्र बुलाइ के, लगन धराइये।
बेगे कन्या बराइ, बिलँब ना लाइये ॥ २ ॥
पाँच पचीस तरुनिया[1], तौ मंगल गाइये।
चौरासी के दुक्ख, बहुरि ना लाइये ॥ ३ ॥
सुरति पुरुष सँग बैठि, हाथ दोउ जोरिये।
जम से तिनुका तोरि, भँवरि भल फेरिये ॥ ४ ॥
सुरति कियो है सिंगार, पिया पहँ जाइये।
जनम करम के अंक, सो तुरत मिटाइये ॥ ५ ॥
हंसा कियो है बिचार, सुरति सोँ अस कहो।
जुग जुग कन्या कुँवारि, एतक दिन कहँ रही ॥ ६ ॥
सुरति कियो है प्रनाम, पिया तुम सत कहो।
सतगुरु कन्या कुँवारि, एतक दिन तहँ रही ॥ ७ ॥
प्रेम पुरुष कै साज, अखँड लेखा नहीं।
अमृत प्याला पियै, अधर महँ झूलही ॥ ८ ॥
पान पर्वाना पाय, तौ नाम सुनावही।
सतगुरु कहँ कबीर, अमर सुख पावही ॥ ९ ॥

(८)

आजु लगे पुनवासी, तो मंगल गाइये।
बस्तर सेत आनि के, चँदवा तनाइये ॥ १ ॥
प्रेम कै मंदिल झारि, चँदन छिरकाइये।
सतगुरु पुरा होय, तो चौक पुराइये ॥ २ ॥
जाजिम गद्दी बिछाइ के, तकिया सजाइये।
गुरु के चरन पखारि, तो आसन कराइये ॥ ३ ॥

---

(१) युवा स्त्री।

गज मोती मँगवाइ के, चौक पुराइये।
ता पर मेवा मिष्ठान्न, तो पान चढ़ाइये॥ ४॥
पल्लौ सहित तहँ कलस, तो आनि धराइये।
पाँच जोति कै दीपक, तहवाँ बराइये॥ ५॥
जल थल सील सुधारि, तो जोति जगाइये।
साध संत मिलि आइ के, आरति उतारिये॥ ६॥
ताल मृदंग बजाइ, तो मंगल गाइये।
आरति करु पुनवासी, तो नरियर मोरिये॥ ७॥
जम सोँ तिनुका तोरि, तो फंद छुडाइये।
पुरुष को भोग लगाइ, हंसा मिलि पाइये॥ ८॥
जुग जुग छुधा बुझाइ के, गुरु को मनाइये।
कहँ कबीर सत भाव, सो लोक सिधाइये॥ ९॥

(६)

सतगुरु जौहरि आय, तो मानिक लाइया।
काया नगर मँझारि, बजार लगाइया॥ १॥
चहुँ मुख लागि दुकान, तो झिलमिल ह्वै रहे।
पारख सौदा बिसाहि[1], अधर डोरि झुलि रहे॥ २॥
जिन जिन हंसा गाहक, बस्तु बिसाहिया।
पाया सब्द अमोल, बहुरि नहि आइया॥ ३॥
बारहबानी[2] के ज्ञान, तो सोई सुरंग है।
निर्गुन सब्द अमोल, साहिब को अंग है॥ ४॥
करि ले सोरहो सिँगार, तो पिया को रिझाइये।
दिल बिच दास कबीर, हंसा समुझाइये॥ ५॥

---

(१) मोल ले। (२) खालिस सोना।

(१०)

साहिब को नाम अखंड, और सब खंड है ।
खंड है मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥ १ ॥
नारी सुत धन धाम, से जीवन बंध है ।
लख चौरासी जीव, परे जम फंद है ॥ २ ॥
चंचल मन करु थीर, तबै भल रंग है ।
उलटि निरंतर पीव, तो अमृत संग है ॥ ३ ॥
जिन कै साहिब से नेह, सोई निरबंध है ।
उन साधन के संग, सदा आनंद है ॥ ४ ॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है ।
कहैं कबीर चित चेतो, जक्त पतंग है ॥ ५ ॥

(११)

[पंचायन मंगल]

सत्त सुकृत सत्त नामको, आदि मनाइये ।
सुर्त जोग-संतायन[1] , निसि दिन ध्याइये ॥
सतगुरु चरन मनाय, परम पद पाइये ।
करि दंडवत प्रनाम, तो मंगल गाइये ॥
गावै जो मंगल कामिनी, जहँ सत्त सीतल थान है ।
परम पावन ठाम अबिचल, जहँ ससि सुरज की खान है ॥
मानिक पुर इकगाँव अबिचल, जहँ न रैन बिहानि है ।
कहैं कबीर से हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है ॥१॥
अष्ट खंड जहँ कामिनि, आरति साजहीं ।
चार भानु की सोभा, अंग बिराजहीं ॥
दृष्टि भाव जहँ होत, हंस सुख पावहीं ।
हंसन हंस बिलास, कामिनि सचि[2] मानहीं ॥

---

(१) कबीर साहिब । (२) प्रीति भाव ।

सचि मानि कामिनि सुक्ख, हंसा आगे को पग धारहीं।
सुख सागर सुख बास में, जहँ सुकृत दरस निहारहीं॥
पतित-पावन भये हंसा, काया सोरह भान है।
कहँ कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥२॥

सुख सागर की सोभा, कहा बिसेखिये।
कोटिन रबि चहुँ ओर, उदय तहँ पेखिये॥
धरनि प्रकास जहाँ नहि, होरा जगमगे।
उहवाँ दीनदयाल, हंस के सँग लगे॥

सँग लागि उहवाँ हंस के, कहैं तुम हमैं भल चीन्ह हो॥
अंबु करि सो दीप दिखावौं, प्रथम पुर्ष जो कीन्ह हो।
असंख रबि औ कोटि दामिनी, पुहुप सेज अरघान[1] है॥
कहैं कबीर सो हंस पहुँचै, जो सत्त नामहिं जानि है॥

आदि अंत जोग-जीत, हंस के सँग लगे।
पंकज[2] करिय अँजोर, होत साहिब मिले॥
दोउ कर जोरि मनाय, बहुत बिनती करी॥
साहिब दरसन देव, हंस सरधा धरी॥

दया कीन्हा पुर्ष बिहँसे, मस्तक दरस दिखाइ हो।
अमृत फल जब चार दीन्हा, सकल हंस मिलि पाइ हो॥
अटल काया जब भई, मंजिल[3] करी अस्थान है।
कहै कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहि जानि है॥४॥

सदा बसंत जहँ फूला, कुंज सुहावहीं।
अछै बृच्छ तर हंसा, सेज बिछावहीं॥
चहुँ दिसि हंस की पाँती, हीरा जगमगे।
सोरह रबि को रूप, अंग मैं चमकहीं॥

---

(१) अति सुगंधित। (२) कँवल। (३) ठिकाना।

अंग हंसा चमक सोभा, सुर सोरह पावहीँ।
धन सतगुरु को सार बीरा, पुर्ष दरस दिखावहीँ॥
हंस सुजन जन अंस भैंटे, हंस को पहिचानि है।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिँ जानि है॥ ५॥

(१२)

[बेदी]

लगन लगी सत लोक, सुकृत मन भावहीँ।
सुफल मनोरथ होय, तो मंगल गावहीँ॥ १॥
चलु सखी सुरति संजोय, अगम घर उठि चलो।
हंस सरूप सँवारि, पुरुष सोँ तुम मिलो॥ २॥
कनक पत्र पर अंक, अनूपम अति कियो।
तुमहिँ सकल संदेस, लगन पिय लिख दियो॥ ३॥
लिखि दियो शब्द अमोल, सोहंग सुहावता।
पूरन परम-निधान, ताहि बल जम जिता॥ ४॥
तत करनी कर तेल, हरदि हित लावहीँ।
कंकन नेह बँधाय, मधुर धुन गावहीँ॥ ५॥
अच्छत थार भराय, तो चौक पुरावहीँ।
हीरा हंस बिठाय, तो सब्द सुनावहीँ॥ ६॥
कंचन खंभ अँजोर, अधर चारो जुगा।
बाजत अनहद तूर, सेत मंडप छजा॥ ७॥
अगर अमी भरि कुम्भ, रतन चौरी रची।
हंस पढ़ैँ तहँ शब्द, मुक्ति बेदी रची॥ ८॥
हस्त लिये सत केल, ज्ञान गढ़ बंधना।
मोच्छ सरूपी मौर, सीस सुन्दर बना॥ ९॥

सुरति पुरुष सोँ मेल, तो भाँवरि परि गई।
अमर तिलक ताम्बूल, सुघर माला दई ॥ १०॥
दीन्हो सुरति सुहाग, पदारथ चारि को।
निस दिन ज्ञान बिचार, सब्द निर्वार को ॥ ११॥
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीँ।
कहैँ कबीर समुझाय, बहुरि नहि आवहीँ ॥ १२॥

॥ राग गारी ॥

सतगुरु साहिब पाहुन आये, का ले करोँ मेहमानी जी ॥ १ ॥
निरति के गेँडुवा गंगाजल पानी, परसे सुमति सयानी जी ॥ २ ॥
प्रथम लालसा लुचई[१] आई, जुगत जलेबी आनी जी ॥ ३ ॥
भाव कि भाजी सील कि सेमा, बने कराल करेला जी ॥ ४ ॥
हिय कै हीँग हृदय कै हरदी, तत्त के तेल बघारे जी ॥ ५ ॥
डारे धोइ बिचार के जल से, करमन कै करुवाई जी ॥ ६ ॥
यह जेवनार रच्यो घट भीतर, सतगुरु न्योति बुलाये जी ॥ ७ ॥
जेवन बैठे साहिब मोरे, उठत प्रेम रस गारी जी ॥ ८ ॥
कहैँ कबीर गारी की महिमा, उपमा बरनि न जाई जी ॥ ९ ॥

(२)

जो तूँ अपने पिय की प्यारी, पिया कारन सिंगार करो ॥टेक॥
जा के जुगुत की ककही, करम केस निरुवार करो।
जा के तत के तेल, प्रेम कि डोरी से चोटी गुहो ॥ १ ॥

---

(१) पूरी।

जा के अलख के काजर, बिरह कि बैंदी लिलार दई ।
जाके नेह नथुनिया, गुँज के लटकन झूलि रहे ॥ २ ॥
जा के सुमति के सूत, दया हमेल हिये माहिँ परी ।
जा के चित की चौकी, अकिल के कँगना झलकि रहे ॥३॥
जा के चोप की चुनरी, ज्ञान पछेलो चमक रही ।
जाके तिल के छल्ले, सब्द के बिछुवा बाजि रहे ॥ ४ ॥
तुम एतन धनि पहिरो, रूसल पिया के मनाइ लई ।
उठि के चलो सुहागिनि, निरखत बदन हुलास भरी ॥ ५ ॥
पिय तुम मो तन हेरो, मैं हौं दासी तुम्हार खड़ी ।
गारो गावै कबीरा, साधो सुनो बिचार धरी ॥ ६ ॥

(३)

[नरियर मोरन]

बनजारिन बिनती करै, सुन साजना ।
नरियर लीन्हो हाथ, संत सुन साजना ॥ १ ॥
बिना बीज को बृच्छ है, सुन साजना ।
बिना धरती अंकूर, संत सुन साजना ॥ २ ॥
ता को मूल पताल है, सुन साजना ।
नरियर सीस अकास, संत सुन साजना ॥ ३ ॥
बिना सब्द जिनि मोरहू, सुन साजना ।
जीव एकोतर हानि, संत सुन साजना ॥ ४ ॥
गुरु के सब्द ले मोरहू, सुन साजना ।
फूटै जम को कपार, संत सुन साजना ॥ ५ ॥
सखियाँ पाँच सहेलरी, सुन साजना ।
नौ नारी बिस्तार, संत सुन साजना ॥ ६ ॥

कहैं कबीर बघेल[१] सौं, सुन साजना ।
रानी इन्द्रमती सरदार, संत सुन साजना ॥ ७ ॥

॥ राग झूलना ॥

(१)

करेगा सोई करता ने हुकुम किया,
सब्द का संग समसेर बंका ।
ज्ञान का चौंर ले प्रेम का पंखा ले,
खैंच के तेग छोड़ाव संका ॥ १ ॥
कड़ी कमान जब ऐंठि के खैंचिया,
तीन बेर ठनकार सहज ठंका ।
मगन मुसक्यात गगन में कूदिया,
ढील कर बाग मैदान हंका ॥ २ ॥
पाँच पच्चीस औ तीन भागा फिरै,
बड़े सहुकार औ राव रंका ।
कहैं कबीर कोउ संत जन जौहरी,
बड़े मैदान मों दियो डंका ॥ ३ ॥

(२)

खुदी को छाड़ि खुदाय को याद कर,
वो खुदाय क्या दूर है जी ॥ १ ॥
खुद बोलते को तहकीत[२] करि ले,
हर दम हजूर जरूर है जी ॥ २ ॥

---

(१) बघेलखंड के निवासी धर्म्मदास जी। (२) तहकीक।

ठौर ठौर क्या भटकत फिरो,
करो गौर तुम हीं में नूर है जी ॥ ३ ॥
कबीर का कहना मानि ले अब,
परवाना सहित मंजूर है जी ॥ ४ ॥

(३)

चलु रे जीव जहँ हंस को देस है,
बसत कबीर आनंद सोई ।
काल पहुँचै नहीं सोग ब्यापै नहीं,
रहैगा हंस तहँ संग होई ॥ १ ॥
यह परपंच है सकल जाहि को,
ता में रहे का पार पावे ।
कठिन दरियाव जहँ जीव सब बाझिया,
माया रूप धरि आपै खेलावै ॥ २ ॥
[तहँ] खेलावै सिकार जम त्रिगुन के फंद में,
बाँधि के लेत सब जीव मारी ।
मोह के रूप तहँ नारि इक ठाढ़ि है,
जहाँ तुम जाहु तहँ मारि डारी ॥ ३ ॥
तेहि देखि सब जीव जल के सरूप भे,
तदपि परतीत कोई नाहिं पाई ।
कहैं कबीर परतीत कर सब्द की,
काम औ क्रोध कमान तोरी ॥ ४ ॥

॥ राग कहरा ॥

(१)

सुनो सयानी अकथ कहानी, गुरु अपने का सनेसा हो ॥ १ ॥
जो पिय मारै औ झझकारै, बाहर पगु ना दीन्हा हो ॥ २ ॥

निरत पिया को अंतर ता को, सब्द नेह ना छूटै हो ॥ ३ ॥
जैसे डोरी उड़ै अकासा, सब्द डोरि नहिं टूटै हो ॥ ४ ॥
डोरी टूटे खसै भूमि पर, तब पिय बाद गँवावा हो ॥ ५ ॥
सिर पर गागर बात सखिन सोँ, चित से गगर न छूटै हो ॥ ६ ॥
दास कबीर के निर्गुन कहरा, मरहम होय सो बूझै हो ॥ ७ ॥

(२)

बिमल बिमल अनहद धुनि बाजे,
समुझि परै जब ध्यान धरै ॥ टेक ॥
कासी जाइ कर्म सब त्यागै,
जरा मरन से निडर रहै ।
बिरले समुझि परै वह गलिया,
बहुरि न प्रानी देँह धरै ॥ १ ॥
किंगरी संख झाँझ डफ बाजे,
अरुझा मन तहँ ख्याल करै ।
निरंकार निरगुन अबिनासी,
तीन लोक उँजियार करै ॥ २ ॥
इँगला पिँगला सुखमन सोधे,
गगन मँदिल मेँ जोति बरै ।
अष्ट कँवल द्वादस के भीतर,
वहँ मिलने की जुगत करै ॥ ३ ॥
जीवन मुक्ति मिले जेहि सतगुरु,
जन्म जन्म के पाप हरै ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो,
धिरज बिना नर भटकि मरै ॥ ४ ॥

॥ दस मुकामी रेख़ता ॥

चला जब लोक को सोक सब त्यागिया।
हंस को रूप सतगुरु बनाई ॥
भृंग ज्यों कीटि को पलटि भृंगै किया,
आप सम रंग दै लै उड़ाई ॥ १ ॥
छोड़ि नासूत मलकूत को पहुँचिया,
बिस्नु की ठाकुरी दीख जाई।
इन्द्र कुबेर रंभा जहाँ नृत करैं,
देव तैंतीस कोठिक रहाई ॥ २ ॥
छोड़ि बैकुंठ को हंस आगे चला,
सून्य में जोति जगमग जगाई।
जोति परकास में निरखि निःतत्व को,
आप निर्भय भया भय मिठाई ॥ ३ ॥
अलख निर्गुन जेहो बेद अस्तुति करै,
तीनहूँ देव को है पिताई।
भगवान तिन के परे सेत मूरत धरे,
भग की आनि[1] तिनको रहाई ॥ ४ ॥
चार मोकाम बर खंड सोरह कहे,
अंड को छोर ह्याँ तें रहाई।
अंड के परे अस्थान आचिंत को,
निरखिया हंस जब उहाँ जाई ॥ ५ ॥
सहस औ द्वादसौ रूह है संग में,
करत किलोल अनहद बजाई।

---

(१) क़दर।

तासु के बदन की कौन महिमा कहौं,
भासती देंह अति नूर छाई ॥ ६ ॥
महल कंचन बने मनी ता में जड़े,
बैठ तहँ कलस अखंड छाजे ।
अचित के परे अस्थान सोहंग का,
हंस छत्तीस तहवाँ बिराजे ॥ ७ ॥
नूर का महल औ नूर की भूमि है,
तहाँ आनन्द सोँ दुंद भाजे ।
करत किलोल बहु भाँति से संग इक,
हंस सोहंग के जो समाजे ॥ ८ ॥
हंस जब जात षट चक्र को बेधि के,
सात मोकाम में नजर फेरा ।
परे सोहंग के सुरति इच्छा कही,
सहस बावन जहाँ हंस डेरा ॥ ९ ॥
रूप की रासि[१] तें रूप उन को बनो,
नाहिं उपमाहि दूजी निबेरा ।
सुर्त से भेंट के सब्द की टेक चढ़ि,
देखि मोकाम अंकूर केरा ॥ १० ॥
सून्य के बीच में बिमल बैठक तहाँ,
सहज अस्थान है गैब केरा ।
नवो मोकाम यह हंस जब पहुँचिया,
पलक बिलंब ह्वाँ कियो डेरा ॥ ११ ॥
तहाँ से डोरिमक[२] तार ज्योँ लागिया,
ताहि चढ़ि हंस गौ दै दरेरा ।

(१) ढेर । (२) मकड़ी ।

भये आनन्द सोँ फन्द सब छोड़िया,
पहुँचिया जहाँ सतलोक मेरा ॥ १२ ॥
हंसनी हंस सब गाय बजाय के,
साजि के कलस वोहि लेन आये ।
जुगन जुग बीछुरे मिले तुम आइ के,
प्रेम करि अंग सोँ अंग लाये ॥ १३ ॥
पुरुष ने दरस जब दीन्हि वा हंस को,
तपनि बहु जन्म की तब नसाये ।
पलटि के रूप जब एक सोँ कीन्हिया,
मनहुँ तब भानु षोड़स उगाये ॥ १४ ॥
पुहुप के दीप पियूष[1] भोजन करै,
सब्द की देह जब हंस पाई ।
पुष्प के सेहरा हंस औ हंसिनी,
सच्चिदानन्द सिर छत्र छाई ॥ १५ ॥
दिपै बहु दामिनी दमक बहु भाँति की,
जहाँ घन सब्द की घुमड़ लाई ।
लगे जहँ बरसने गरज घन घोर के,
उठत तहँ सब्द धुनि अति सुहाई ॥ १६ ॥
सुनैं सोइ हंस तहँ जुत्थ के जुत्थ हैं,
एक ही नूर इक रंग रागे ।
करत बिहार मन भावनी मुक्ति मे,
कर्म औ भर्म सब दूरि भागे ॥ १७ ॥
रंक औ भूप कोइ परखि आवै नहीं,
करत किलोल बहु भाँति पागे ।

(१) अमृत ।

काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब,
छाड़ि पाखंड सत सब्द लागे ॥ १८ ॥

पुरुष के बदन की कौन महिमा कहौं,
जगत में उभय[1] कछु नाहिं पाई ।

चन्द्र औ सूर गन जोति लागै नहीं,
एकहू नख की परकास भाई ॥ १९ ॥

पान परवान जिद बंस का पाइया,
पहुँचिया पुरुष के लोक जाई ।

कहैं कबीर यहि भाँति सोँ पाइ है ।
सत्त की राह सो प्रगट गाई ॥ २० ॥

॥ राग जँतसार[2] ॥

(१)

सुरति मकरिया[3] गाड़हु हे सजनी—अहे सजनी ।
दूनौं रे नयनवाँ जोतिया लावहु रे की ॥ १ ॥

मन धरु मन धरु मन धरु हे सजनी—अहे सजनी ।
अइसन समइया फिरि नहिं पावहु रे की ॥ २ ॥

दिन दस रजनी हे सुख करु सजनी—अहे सजनी ।
इक दिन चाँद छपायल रे की ॥ ३ ॥

सँगहिं अछत पिय भरम भुलइली—अहे सजनी ।
मोरे लेखे पिया परदेसहिं रे की ॥ ४ ॥

नव दस नदिया अगम बहे सोतिया हो—अहे सजनी ।
बिचहिं पुरइनि[4] दह[5] लागल रे की ॥ ५ ॥

---

(१) दूसरा अर्थात सदृश । (२) जाँता या चक्की पर गाने की गीत । (३) चक्की का कीला । (४) कौंई । (५) तलाव ।

फुल इक फुलले अनुप फुल सजनी—अहे सजनी।
तेहि फुल भँवरा लुभाइल रे की ॥ ६ ॥
सब सखि हिलि मिलि निज घर जाइब—अहे सजनी।
समुँद लहरिया समाइब रे की ॥ ७ ॥
दास कबीर यह गवलैं लगनियाँ हो—अहे सजनी।
अब तो पिया घर जाइब रे की ॥ ८ ॥

(२)

अपने पिया की मैं होइबौं सोहागिनी—अहे सजनी।
भइया तजि सइयाँ सँग लागब रे की ॥ १ ॥
सइयाँ के दुअरिया अनहद बाजा बाजै—अहे सजनी।
नाचहिं सुरति सोहागिनि रे की ॥ २ ॥
गंग जमुन के औघट घटिया हो—अहे सजनी।
तेहि पर जोगिया मठ छावल रे की ॥ ३ ॥
देहौं सतगुरु सुर्ती के बिरवा हो—अहे सजनी।
जोगिया दरस देखे जाइब रे की ॥ ४ ॥
दास कबीर यह गवलैं लगनियाँ हो—अहे सजनी।
सतगुर अलख लखावल रे की ॥ ५ ॥

॥ राग बसंत ॥

खेलत सतगुरु ऋतु बसंत। मुक्ति पदारथ मिले कंत ॥ टेक ॥
धरती रथ चढ़ि देखो देस। घर घर निरखो नृप नरेस ॥ १ ॥
जोजन चार पैतरे फेर। बाँधि मवासी गढ़ मैं घेर ॥ २ ॥
अधर निअच्छर गहो ढाल। भागि चलै जब धरै काल ॥ ३ ॥
सर[1] सुधारि घट कर कमान। चंदचिला[2] गहि मारी बान ॥ ४ ॥

---

(१) तीर। (२) चिल्ला = कमान की डोर।

साधु संग रन करो जोर । तब घट छोड़ै चतुर चोर ॥ ५ ॥
ऐसी बिधि से लड़ै सूर । काल मवासी होय दूर ॥ ६ ॥
अधर निअच्छर गहो डोर । जो निज मानो बचन मोर ॥ ७ ॥
धरती तुरँग[1] होय असवार । कहै कबीर भव उतरो पार ॥ ८ ॥

॥ राग होली ॥

(१)

सतगुरु दीन-दयाल पिरीतम पाइया ॥ टेक ॥
बंदीछोर मुक्ति के दाता, प्रेम सनेही नाम ।
साध संत के बसी अभिलाषा, सब बिधि पूरन काम ॥ १ ॥
जैसे चात्रिक स्वाँती जल को, रटतु है आठो जाम ।
ऐसी सुरति लगी जिन सतगुरु, सो पाये सुख धाम ॥ २ ॥
आनँद मंगल प्रेम चारि[2] गुरु, अमर करत हैं जीव ।
सुमिरन दे सतलोक पठाये, ऐसे समरथ पीव ॥ ३ ॥
चरन कमल सतगुरु की सेवा, मन चित गहु अनुराग ।
कहैं कबीर अस होरी खेलै, जा के पूरन भाग ॥ ४ ॥

(२)

ऐसी होरी खेल, जा में हुरमत लाज रहो री ॥ टेक ॥
सील सिंगार करो मोर सजनी, धीरज माँग भरो री ।
ज्ञान गुलाल लगावो सजनी, अगम घर सूझि परोरी ॥ १ ॥
उठत धमार काया गढ़ नगरी, अनहद बेनु बजो री ।
फगुवा खेलूँ अपने साहिब सँग, हिरदे साँच धरो री ॥ २ ॥
खेती करो जग आइ कै साधो, चेला सिष न बटोरी ।
नइया अपने पार उतरन को, सतगुरु दया करो री ॥ ३ ॥
मने मने की सिर पर मेटुकी, नाहक बोझ मरो री ।
मेटुकि उतारि मिलो तुम पिय सोँ, सत्त कबीर कहो री ॥ ४ ॥

---

(१) घोड़ा । (२) आचार्य ।

(३)

माया भ्रम भारी सगरो जग जीति लियो ॥ टेक ॥

गज गामिनि कठोर है माया, संसय कीन्ह सिंगारा।
लै के डारै मोह नदी में, कोइ न उतरै पारा ॥ १ ॥
निज आँखिन में अंजन दीन्हा, पंडित आँखि में राई।
जोगी जती तपी सन्यासी, सुर नर पकरि नचाई ॥ २ ॥
गोरख दत्त बसिष्ठ ब्यास मुनि, खेलन आये फागा।
सिंगी ऋषि पारासर आये, छोड़ि छोड़ि बैरागा ॥ ३ ॥
सात दीप और नवो खंड में, सब से फगुवा लीन्हा।
ठाढ़ कबीर सोँ अरज करतु है, तुमहीं ना कछु दीन्हा ॥ ४ ॥

(४)

खेलो खेलो सोहागिनि होरी,
चरन सरोज[1] पिया हित जानो, रज कै केसर घोरी ॥ १ ॥
सोहँग नारि जहँ रंग रचो है, बिच मेँ सुखमन जोरी।
सदा सजीवन प्रेम पिया को, गहि लीजे निज डोरी ॥ २ ॥
लिये लकुट कर बरन बिचारो, प्रेम प्रीति रँग ओरी।
रँग अनेक अनुभव गहि राचो, पिय के पाँव परो री ॥ ३ ॥
कहैं कबीर अस होरी खेलो, कोई नहिं झकझोरी।
सतगुरु समरथ अजर अमर ह, तिन के चरन गहो री ॥ ४ ॥

॥ राग दादरा ॥

(१)

बलम सँग सोइ गइ दोइ जनी ॥ टेक ॥

इक ब्याही इक अरधी[2] कहावै, दूनोँ सुभग सुहाग भरी ॥ १ ॥
ब्याही तो उँजियार दिखावै, अरधी ले अँधियार खड़ी ॥ २ ॥
ब्याही ते सुख निंदिया सोवे, अरधी दुख सुख माथ धरी ॥ ३ ॥
कह कबीर सुनो भाइ साधो, दूनोँ पिया पियारि रहीं ॥ ४ ॥

---

(१) कमल। (२) धरूक, सुरैतिन।

(२)

रमैया की दुलहिन ने लूटा बजार ॥ टेक ॥
सुरपुर लूटा नागपुर लूटा, तिन लोक मचि गइ हाहाकार ॥ १ ॥
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे, नारद मुनी के परी पिछार[१] ॥ २ ॥
स्त्रिंगी की मिंगी करि डारी, पारासर के उदर बिदार ॥ ३ ॥
कनफूँका चिदाकासी लूटे, जोगेसुर लूटे करत बिचार ॥ ४ ॥
हम तो बचि गये साहिब दया से, सब्द डोर गहि उतरे पार ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, इस ठगनी से रहो हुसियार ॥ ६ ॥

ककहरा

[क] काया कुंज करम की बाडी, करता बाग लगाया।
किनका ता मैं अजर समाना, जिन बेली फैलाया ॥
पाँच पचीस फूल तहँ फूले, मन अलि[२] ताहि लुभाया।
वोहि फूलन के बिषै लपटि रस, रमता राम भुलाया ॥
मनभँवरा यह काल है, बिषै लहरि लपटाय।
ताहि संग रमता बहै, फिरि फिरि भटका खाय ॥ १ ॥
[ख] खालिक की तो खबर नहीं कछु, खाब खयाल में भूला ॥
खाना दाना जोड़ा घोड़ा, देखि जवानी फूला ॥
खासा पलँग सेजबँद तकिया, तोसक फूल बिछाया ॥
नवल नारि लै ता पर पौढ़ा, काम लहर उमड़ाया ॥
लागी नारी प्यारि अति, छुटा धनी सोँ नेह।
काल आय जब ग्रासि है, खाक मिलेगी देह ॥ २ ॥
[ग] गुरू कीजिये निरखि परखि कै, ज्ञान रहनि का सूरा।
गर्ब गुमान माया मद त्यागे, दया छिमा सत पूरा ॥

---

(१) पीछे। (२) भँवरा।

गैल बतावै अमर लोक को, गावै सतगुरु बानी।
गज मस्तक अंकुस गहि बैठे, गरुवा गुन गलतानी॥
पाप पुन्य की आस नहिं, करम भरम से न्यार।
कृतम पाखँड परिहरे, अस गुरु करो बिचार॥ ३॥

[घ] घट गुरु ज्ञान बिना अँधियारा, मोह भरम तम छाया।
सार असार बिचारत नाहीं, अमी धोख बिष खाया॥
घर का घित रेत मैं डारै, छाछ ढूँढ़ता डोलै।
कंचन देके काँच बिसाहै[1], हरू गरू[2] नहिं तौलै॥
ज्ञान बिना नर बावरा, अंध कूर मतिहीन।
साँच गहे नहिं परखि कै, झूठै के आधीन॥ ४॥

[ङ] ङंभ मनै मत मानियो, सत्त कहौं परमारथ जानी।
उपजै सुख तब हृदय तुम्हारे, जब परखो मम बानी॥
ऊँचा नीचा कोइ नहीं रे, करम कहावै छोटा।
जासु के अंदर करकै नखरा, सोई माल है खोटा॥
ऊपर जटा जनेऊ पहिने, माला तिलक सुहाय।
संसय सोक मोह भ्रम अंदर, सकले में रहु छाय॥ ५॥

[च] चित से चेतहु चतुर चिकनियाँ, चैन कहा तुम सोया।
चतुराई सब भाड़ परैगी, जन्म अचेते खोया॥
चौथा पन तेरा अब लागा, अजहुँ चेत गुरु ज्ञान।
नहिं तो परैगो घोर अँधेरो, फिरि पाछे पछितान॥
ऐसे पाटन आइकैं, सौदा करौ बनाय।
जो चूकौ तुम जन्म यह, तो दुख भुगतौ जाय॥ ६॥

[छ] छन मैं छल बल सब निकसत हैं, जब जम छैंकै आई।
छटपट करिहौ बिष जवाला तैं, तब कहु कौन सहाई

---

(१) मोल ले। (२) हलका भारी।

जम का मुगदर ऊपर बरसै, तब को करै उबारो ।
तात मातु भ्राता सुत सज्जन, काम न आवै नारी ॥
छूट्यो सर्ब सगाई, भया चोर का हाल ।
संगी सब न्यारे भये, आप गये मुख काल ॥ ७ ॥
[ज] जम के पाले पड़े जीव, तब कछू बात नहिं आवै ।
जोर कछू काबू नहीं, सिर धुनि धुनि पछितावै ॥
जब ले पहुँचावैं चित्रगुप्त पहँ, लिखनी लिखै बिचारि ।
दयाहीन गुरुबिमुखी ठहरै, अग्नि कुंड लै डारि ॥
जन्म सहस अजगर को पावै, विष ज्वाला अकुलाय ।
ता पाछे कृमि बिष्ठा कीन्हा, भूत खानि को जाय ॥ ८ ॥
[झ] झंखन झुरवन सबही छोड़ो, झमकि करो गुरु सेव ।
झाँई मन की दूर करो अब, परखि सब्द गुरु देव ॥
झगरा झूठ झाल झल त्यागो, झटक भजो सतनाम ।
झीन करो मन मेलो मंदिर, तब पावो बिस्राम ॥
होइ अधीन गुरु चरन गहु, कपट भाव करि दूर ।
पतिव्रता ज्यौं पिव को चाहै, ताके न दूजा कूर ॥ ९ ॥
[ञ] इस्क बिना नहिं मिलि है साहिब, केतो भेष बनावै ।
इस्क मासूक न छिपै छिपाये, केतो छिपै छिपावै ।
इत उत इहाँ उहाँ सब छोड़ो, निःचल गहु गुरु चरना ।
या से सुक्ख होय दुख नासै, मेटे जीवन मरना ॥
आदि नाम है जाहि पहँ, सोई गुरु है सार ।
जे कृत्तम कहँ ध्यावही, ते भव होय न पार ॥१०॥
[ट] टीम टाम बाहर बहुतेरे, दिल दासी से बंधा ।
करै आरती संख बाज धुनि, छुटै न घर कै धंधा ॥
टिकुली सेंदुर टकुवा चरखा, दासी ने फरमाया ।
कचे बचे ने माँगि मिठाई, मगन भया मन आया ॥

जिन सेवक पूजा दियो, ताहि दियो आसीस।
जहाँ नहीं कछु तहँ भे ठाढ़े, भसम करैं जगदीस ॥११॥

[ठ] ठग बहुतेरे भेष बनावैं, गले लगावैं फाँसी।
स्वाँग बनाये कौन नफा है, जो न भजे अबिनासी ॥
ठोकर सहै गुरू के द्वारे, ठीक ठौर तब पावै।
ठकठक जन्म मरन का मेटै, जम के हाथ न आवै ॥
मृतक होय गुरु पद गहै, ठीस[1] करै सब दूर।
कायर तें नहिं भक्ति है, ठानि रहै कोइ सूर ॥१२॥

[ड] डगमग तें तो काज सरै नहिं, अडिग नाम गुन गहिये।
डर मेटै तब बिषम काल का, अछै अमर पद लहिये ॥
डरते रहिये गुरू साधु से, डम्भि काम नहिं आवै।
डिम्भी होय के भवसागर में, डहन मरन दुख पावै ॥
डेढ़ रोज का जीवना, डारो कुबुधि नसाय।
डेरा पावो सत्त लोक में, सतगुरु सब्द समाय ॥१३॥

[ढ] ढूँढ़त जिसे फिरो सो ढिंग है, तेरा तैं उलटि निरेखो।
ढोल मारि के सबै चेतावौं, सतगुरु सब्द बिबेखो ॥
तुम हो कौन कहाँ तें आये, कहँ है निज घर तेरा।
केहि कारन तुम भरमत डोलो, तन तजि कहाँ बसेरा ॥
को रच्छक है जीव का, गहो ताहि पहिचानि।
रच्छक के चीन्हे बिना, अंत होयगी हानि ॥ १४ ॥

[ण] निर्गुन गुनातीति अबिनासी, दया-सिंधु सुख-सागर।
निःचल निःठौर निरबासी, नाम अनादि उजागर ॥
निरमल अमी क्रांति अद्भुत छबि, अकह अजावन[2] सोई।
नख सिख नाभि नयन मुख नासा, स्रवन चिकुर[3] सुभ होई ॥

---

(१) अकड़। (२) बिना जामन के। (३) बाल।

चिकुरन के उजियार तेँ, बिधु[1] कोटिक सरमाय ।
कहा क्रांति छबि बरनौँ, बरनत बरनि न जाय ॥१५॥

[त] ताहि पुरुष की ग्रंस जोव यह, धर्मराय ठगि राखा ।
तारन तरन ग्राप कहलाई, बेद सास्त्र ग्रभिलाखा ॥
तत्त्व प्रकृति तिरगुन से बंधा, नीर पवन की बारी ।
धर्मराय यह रचना कीन्हो, तहाँ जीव बैठारी ॥
जीवहिँ लाग ठगौरी, भूला ग्रपना देस ।
सुमिरन करही काल को, भुगतै कष्ट कलेस ॥१६॥

[थ] थकित होय जिव भरमत डोले, चौरासो के माहीँ ।
नाना दुक्ख परे जम फाँसो, जरै मरै पछिताही ॥
थाह न पावै बिपति कष्ट को, बूड़े संसय धारा ।
भवसागर को बिषम लहर है, सूझै वार न पारा ॥
तन बिलखै[2] ग्रघ योनि मेँ, पड़े जोव बिकरार ।
सतगुरु सब्द बिचार नहिँ, कैसे उतरै पार ॥१७॥

[द] दुंद बाद है ग्रौर देँह मेँ, परिचै तहाँ न पावै ।
नर तन लहि जो मोहिँ गहै, तो जमके निकट न ग्रावै ॥
दरस कराग्रौँ सत्त पुरुष का, देँह हिरम्बर पाइहो ।
सुख सागर सुख बिलसो हंसा, बहुरि जोनि नहिँ ग्राइहो ॥
ग्रपना घर सुख छाड़ि के, ग्रँगवै[3] दुख को भार ।
कहाँ भरम बसि परे जिव, लखै न सब्द हमार ॥१८॥

[ध] धर्मराय को सबै पुकारै, धर्म चीन्ह न पावै ।
धर्मराय तिहुँ लोकहिँ ग्रासै, जोवहिँ बाँधि झुलावै ॥
धोखा दै सब को भरमावै, सुर नर मुनि नहिं बाचै ।
नर बपुरे की कौन बतावै, तन धरि धरि सब नाचै ॥

---

(१) चन्द्रमा । (२) बिलखै, रोवै । (३) सहै ।

असुर होय सतावही, फिर रच्छक को भाव।
रच्छक जान के जपै जिव, पुनि वे भच्छ कराव ॥१९॥

[न] निरभै निडर नाम लौ लावै, नकल चीन्हि परित्यागै।
नाद बिंद तैं न्यार बतायो, सुरति सोहंगम जागै॥
निराधार निःतत्त्व निअच्छर, निःसंसय निःकामो।
निःस्वादी निर्लिप्त बियापित, निःचिंत अगुन सुख धामी॥
नाम-सनेही चेतहू, भाखौं घर की डोरि।
निरखो गुरु गम सुरति सौं, तब चलि तृन जम तोरि ॥२०॥

[प] पाप पुन्य में जिव अरुझाना, पार कौन बिधि पावै।
पाप पुन्य फल भुक्तै तन धरि, फिर फिर जम संतावै॥
प्रेम भक्ति परमातम पूजा, परमारथ चित धारै।
पावन जन्म परसि पद पैहै, पारस सब्द बिचारै॥
पीव पीव करि रठन लगावै, परिहरि कपट कुचाल।
प्रीतम बिरह बिजोग जेहिं, पाँव परै तेहिं काल ॥२१॥

[फ] फरामोस[1] कर फिकर फेल बद, फहम करै दिल माहीं।
परफुल्लित सतगुरु गुन गावै, जम तेहि देखि डेराही॥
फाजिल सो जो आपा मेटै, फना[2] होय गुरु सेवै॥
फाँसी काटै कर्म भर्म की, सत्त सब्द चित देवै॥
फिरै फिरै नर भरम बस, तीरथ माहिं नहाय।
कहा भये नर थोर के पीये, ओस तें प्यास न जाय ॥२२॥

[ब] ब्रह्म बिदित है सर्ब भूत में, दूसर भाव न होय।
बर्त्तमान चित चेतै नाहीं, भूत भविष्य बिलोय॥
बड़े पढ़े ते बिषम बुद्धि लिये, बोलनहार न जोहै[3]।
ब्रह्म दुखित करि पाहन पूजै, बरबस आप बिगोहै[4]॥

---

(१) भुलाकर। (२) मृतक। (३) खोजै। (४) बिगाड़ै।

बन्दि परै नर काल के, बुद्धि ठगाइन जानि।
बन्दी छोरैाँ लैचलौं, जो मोहि गहि पहिचानि ॥ २३॥

[भ] भाड़ परै यह देस बिराना, भवसागर अवगाहा[1]।
भक्त अभक्त सभन को बौरै, कोइ न पावै थाहा ॥
भच्छक आप लीला बिस्तारा, कला अनंत दिखावै।
भच्छक को रच्छक करि जानै, रच्छक चीन्हि न पावै ॥

भजै जाहि सो भच्छक, रच्छक रहा निनार।
भर्म चक्र मेँ परे जीव सब, लखै न शब्द हमार ॥ २४॥

(म) मन मयगर[2] मद मस्तदिवाना, जीवहिं उलटि चलावै।
अकरम करम करै आपहि, पीछे जिव दुख पावै ॥
मोह बस जीव मनहि नहिं चीन्है, जानै यह सुखदाई।
मार परै तब मन ह्वै न्यारो, नरक परै जिव जाई ॥

मन गज अगुवा काल को, परखो संत सुजान।
अंकुस सतगुरु ज्ञान है, मन मतंग भयमान[3] ॥ २५॥

(य) जो जिव सतगुरु सब्द बिबेकै[4], तौ मन होवै चेरा।
जुक्ति जतन से मन को जीतै, जियतै करै निबेरा ॥
जहँ लगि जाल काल बिस्तारा, सो सब मन की बाजी।
मनै निरंजन धर्मराय है, मन पंडित मन काजी ॥

गुरु प्रताप भौ जोर जिव, निर्बल भौ मन चोर।
तस्कर संधि न पावही, गृह-पति जगे अँजोर ॥ २६॥

(र) रहनि रहै रजनी नहिं ब्यापै, रते मते गुरु बानी।
राह बतावैाँ दया जानि जिव, जा तेँ होय न हानी ॥
रमता राम काम करि अपना, सुपना है संसारा।
रार रोर तजि रच्छक सेवो, जा तेँ होय उबारा ॥

(१) अथाह। (२) मस्त हाथी। (३) भयानक। (४) बिचारै।

रैन दिवस उहवाँ नहीं, पुरुष प्रकास अँजोर।
राखो तेई ठाँव जिव, जहाँ न चाँपै चोर ॥ २७॥
(ल) लगन लगी जेहि गुरु चरनन की, लच्छन प्रगटलेहि ऐसा।
लगन लगी तब मगन भये मन, लोक लाज कुल कैसा ॥
लगा रहै गुरु सुरत परेखै, निज तन स्वार्थ न सूझै।
लागै ठोकर पीठ न देवै, सूरा सन्मुख जूझै ॥
लहर लाज मन बुद्धि की, निकट न आवै ताहि।
लोटै गुरु चरनन तरे, गुरु सनेह चित जाहि ॥ २८॥
(व) वाके निकट कालनहिं आवै, जो सत सब्द समाना।
वार पार की संसय नाहीं, वाही में मन माना ॥
वासिलबाकी का डर नाहीं, वारिस हाथ बिकाना।
वारिस को सौंपै अपने तईं, वाही हृदय समाना ॥
वाकिफ हो सो गमि लहैं, वाजिब सखुन अजूब।
वाही की करु बन्दगी, पाक जात महबूब ॥ २९॥
(श) शहर चोर घनघोर करेरे, सोवै सब घरबारी।
शोर कर निर्भरमै सोवै, लागी बिषम खुमारी ॥
साहिब सेतो फेर दिल अपना, दुनियाँ बीच बँधाया।
साला साली ससुरा सरहज, समधी सजन सुहाया ॥
सतगुरु सब्द चेतावहीं, समुझि गहै कोइ सूर।
सम बल लीजे हाथ करि, जाना है बड़ दूर ॥ ३०॥
(ष) खलक सयाना मन बौराना, खोय जान निज कामा।
खबर नहीं घर खरच घटाना, चेतै रमता रामा ॥
खोलि पलक चित चेतै अजहूँ, खाविंद सों लौ लावै।
खाम खयाल करि दूर दिवाना, हिरदे नाम समावै ॥

खाल भरी है बायु तें , खाली होत न बार ।
खैर[१] परै जेहि काम तें , सो करु बेगि बिचार ॥ ३१॥

(स) सहज सील संतोष धरन[२] धर, ज्ञान बिबेक बिचार ।
दया छिमा सतसंगति साधो , सतगुरु सब्द अधार ॥
सुमिरन सत्त नाम का निस दिन, सूर भाव गहि रहना ।
समर[३] करै औ जोर परै जो , मन के संग न बहना ॥
सैन कहा समुझाय कै , रहनी रहै सो सार ।
कहे तरै तो जग तरै , कहनि रहनि बिनु छार ॥ ३२॥

[ह] हरि आवै हरि नाम समावै, हरि माँ हरि को जानै ।
हरि हरि कहे तरै नहिं कोई , हरि भज लोक पयानै ॥
हरि बिनसै हरि अजर अमर है , हरी हरी नहिं सूझै ।
हाजिर छाँड़ि बुत्त[४] को पूजै , हसद[५] करै नहि बूझै ॥
हम हमार सब छाड़ि कै , हक्क राह पहिचान ।
हासिल हो मकसूद तब , हाफिज अमन अमान ॥ ३३॥

[क्ष] छैल चिकनियाँ अभैवनेरे, छका फिरै दीवाना ।
छाया माया इस्थिर नाहीं , फिरि आखिर पछिताना ॥
छर अच्छर निःअच्छर बूझै , सूझि गुरू परिचावै ।
छरपरिहरि अच्छर लौलावै , तब निःअच्छर पावै ॥
अच्छर गहै बिबेक करि, पावै तेहि से भिन्न ॥
कहै कबीर निःअच्छरहिं , लहै पारखी चीन्ह ॥ ३४॥

(१) कुशल । (२) धारना । (३) युद्ध । (४) मूरत । (५) द्रोह ।

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की पुस्तकें

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का अनुराग सागर	१)
कबीर साहिब का बीजक	॥।)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	।=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।=)
कबीर साहिब की अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१=)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	१।-)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	१॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	१।)
सुन्दर बिलास	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया	॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया ...	॥।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	॥।)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग	॥।-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	॥।-)
दूलन दास जी की बानी, ...	।)॥

चरनदास जी की बानी, पहला भाग ... ... |||-)

चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग ... ... |||-)

गरीबदास जी की बानी ... ... १|-)

रैदास जी की बानी ... ... ||)

दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर ... ... |=)||

दरिया साहिब के चुने पद और साखी ... ... |-)

दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी ... ... |=)

भीखा साहिब की शब्दावली ... ... ||=)||

गुलाल साहिब की बानी ... ... |||=)

बाबा मलूकदास जी की बानी ... ... |)||

गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी ... ... -)

यारी साहिब की रत्नावली ... ... =)

बुल्ला साहिब का शब्दसार ... ... |)

केशवदास जी की अमींघूँट ... ... -)||

धरनीदास जी की बानी ... ... |=)

मीराबाई की शब्दावली ... ... ||=)

सहजो बाई का सहज-प्रकाश ... ... |=)||

दया बाई की बानी ... ... |)

संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित] ... ... १||)

संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं] ... ... १||)

कुल ३३||=)

अहिल्या बाई ... ... =)

दाम में डाक महसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

संस्करण ११ बहुरंगा ६ और रंगीन यानी कुल २० सुन्दर चित्र और सुनहरी जिल्द सहित १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥)। प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके कागज़ चिकने हैं।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥।≈)

विनय कोश—विनय पत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। यह मानस-कोश का भी काम देगा। मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है। मूल्य ~)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।≈)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

संदेह—यह एक मौलिक क्रांतिकारी नया उपन्यास है। मूल्य ॥।) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह तथा परिचय है। मूल्य ॥।)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य ॥।)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है। पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है। इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं। तेरहो चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं। रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है। जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है। मूल्य केवल १॥)

घोंघा गुरू की कथा—इस देश में घोंघा गुरू की हास्यपूर्ण कहानियां बड़ी ही प्रचलित हैं। उन्हीं का यह संग्रह है। शिक्षा लीजिये और खूब हँसिए। ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है। पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है। दाम ॥~)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)

सावित्री और गायत्री—यह उपन्यास सब प्रकार की घरेलू शिक्षा देगा और रोज़ाना व्योहार में आने वाली बातें बतावेगा। अवश्य पढ़िये। जी खूब लगेगा। दाम ॥)